बचपन की यादें

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

बचपन की यादें

माधविकुट्टि

अनुवाद

अरविन्दन एम.



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-2771-2

पहला संस्करण : 1999 *(शक 1921)*

Original Title : Balyakala Smaranakal *(Malayalam)*
Translation : Bachpan Kee Yadĕn *(Hindi)*

रु. 35.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,
ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

भूमिका

वर्षों तक कथा और कविता लिखते-लिखते मैं थक गई। मैंने महसूस किया कि या तो मुझे लिखना बंद कर देना चाहिए या फिर किसी ऐसी विधा का चयन करना चाहिए जो पूरी तरह अलग हो। डा. रमणलाल पटेल, प्रसिद्ध मनोविश्लेषक हैं और हमारे पारिवारिक दोस्त हैं। एक बार उन्होंने अतीत के टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर आत्म केंद्रित होकर सोचने की सलाह दी।

जब मैंने अतीत के भूले हुए संवाद और सतह पर बिखरे दृश्यों को खंड-खंड स्मृतियों में जोड़ने का प्रयास किया तो मेरी इच्छा हुई कि मैं उन सारी यादों को पुनर्जीवित करूं, जिन्हें अपने विकास के क्रम में मैंने खो दिया है।

मैं चाहती थी कि प्रत्येक अध्याय को एक मुकम्मल कहानी बनाऊं और वे सारी कहानियां मिलकर उस असाधारण बचपन की बड़ी कहानी हो जो एक पश्चिमीकृत नगर कलकत्ता और एक समुद्रतटीय कला विहीन गांव के बीच बीता है।

मूल मलयालम में मैंने मालाबार गांव के विभिन्न आंचलिक शब्दों, वाक्यों का इस्तेमाल किया है, पर मुझे डर है कि अनुवाद में इसकी ग्राम्य-गंध आ नहीं पाएगी।

मेरा बचपन ब्रिटिश शासित भारत में बीता है। इसलिए इस पुस्तक में नई पीढ़ी के पाठकों को हमारे उस इतिहास के क्षण की भी अनुभूति मिल सकती है।

—माधविकुट्टि

वह दिन मुझे अभी भी याद है जब मेरी नानी मुझे कोविलकम्[1] ले गई थीं। जाति-भेद का पहला पाठ मैंने उसी दिन सीखा।

मुझे याद है कि कोविलकम् के फाटक पर पत्थर की दो मूर्तियां मौजूद थीं। नानी ने मुझसे कहा कि वे द्वारपाल हैं। तब कलकत्ता के पार्कस्ट्रीट में दिखाई पड़नेवाले उस द्वारपाल को मैंने प्रेम के साथ याद किया, जहां मेरे मां-बाप रह रहे थे। सजीव द्वारपाल। चारपाई पर मुझे पास बिठाकर, मेरी टीचर तथा आया के बारे में पूछनेवाला प्रिय मित्र।

कोविलकम् के बरामदे में टहलते तथा अथाई पर उठंगकर लेटते अनेक अधनंगे मर्द दिखाई पड़े। उन्होंने कुर्ते नहीं पहने थे। उन्होंने माथे पर ही नहीं, छाती पर भी चंदन लगाया था। रेत पर पान-रस बिखरा पड़ा था।

नानी दहलीज को नजर अंदाज कर मुझे कसकर पकड़ती हुई उत्तरी ओसारे की ओर चलीं। कोमल चमक के साथ सरोवर के हंसों की भांति कोठरी के अंधकार से कुछ सुंदर महिलाएं प्रकट हुईं। प्रत्येक के हाथ में पंखा था। हमें देखते ही पंखे रुक गए। वे जल्दी दरवाजे पर आ गईं।

"कोच्चू ! कौन है यह लड़की ?"

"यह बाला की बेटी है, कमला। गर्मी की छुट्टियों में आई है। आषाढ़ की बारह तारीख को कलकत्ता लौटेगी।"

"बैठो कोच्चू।"

"बैठ कमला।"

हमें बैठने के लिए एक स्त्री ने एक चटाई बिछा दी, जिस पर बाघ का चित्र अंकित था। उनमें से कोई भी हमारी चटाई पर नहीं बैठीं। चारपाई, अथाई तथा फर्श पर बैठकर वे हमें देख मुस्कुराने तथा पंखा झलने लगीं। उनके सफेद कपड़ों तथा पंखों की वजह से मुझे ऐसा लगा कि वे सफेद चिड़ियां हैं। स्वर्ग में उड़नेवाली चिड़ियां। प्रत्येक के बाल लंबे और घुंघराले थे, आंखें चमकीली तथा होठ लाल थे। उन्होंने अड्डिकाएं, कटक आदि पहन रखे थे। वे मेरी ओर देखकर बार-बार मुस्कुराती रहीं।

---

1. **कोविलकम्**—क्षत्रिय राजवंश के लोगों की हवेली।

"इसका रंग बाला जैसा तो नहीं है न ?"

"पर, माधवन नायर जैसा सांवलापन भी नहीं है।"

"सुंदर बाल ! कोच्चू, इस बच्ची के सिर पर कौन-सा तेल मलती हो ?"

"उबाला हुआ नारियल का तेल। मैं हर साल तेल बनाकर कलकत्ता भेज देती हूं। कारण, वहां बनाने की सुविधा तो है नहीं।"

"यह बच्ची का सौभाग्य समझो कि इसे एक नानी मिल गई।"

"वह खुशनसीब है, इसमें कोई संदेह नहीं।"

"अम्मा तंपुरान[1] सो रही हैं क्या ?"

"नहीं, अभी आएंगी।"

अम्मा तंपुरान ने क्रंचुकी नहीं पहनी थी। एक दुपट्टे से अपनी छाती ढक ली थी। वे गोरे रंग की स्थूल शरीरवाली थीं। उनके थोड़े-से बाल पक गए थे। मेरी ओर घूरकर देखती हुई उन्होंने नानी से पूछा, "यह बाला की बच्ची है न ?"

"जी हां।"

"नाम कमलम् है न ?"

"कमला कहकर पुकारते हैं।"

"बच्ची को बोलने दो कोच्चू, मेरे सवालों के लिए तू क्यों जवाब देती है ? क्या बच्ची को मलयालम बोलने नहीं आती ?"

"जी, बच्ची को मलयालम आती है। उनके घर मलयालम ही बोली जाती है।"

"कलकत्ते में अक्सर दूसरी भाषाएं ही सुनती होगी, है न ? अंग्रेजी, बंगला वगैरह-वगैरह।"

"जी हां।"

"क्या बच्ची को स्कूल नहीं जाना है ?"

"जी हां।"

"किस स्कूल जाती है ?"

"सेंट सिसिलियस यूरोपियन स्कूल।"

"इस बच्ची को माधवन नायर, यूरोपियन स्कूल क्यों भेजते हैं ?"

"वह माधवन नायर की मर्जी।"

"तुझे यह गांव पसंद है न ? यहां नारियल का पानी मिलेगा, पके आम मिलेंगे, नंपिडि मास्टर से मलयालम पढ़ सकेगी और कोच्चू के लिए एक सहारा भी बन जाएगी। क्यों कमला, कलकत्ता जाना जरूरी है ?" उस वक्त मुझे अम्मा तंपुरान की अक्लमंदी पर असीम आदर महसूस हुआ। मुझे पिताजी से डर था।

---

1. **अम्मा तंपुरान**—बड़ी मालकिन

उतना डर मुझमें मां के मामा ने पैदा नहीं किया था। अपनी संतानों को लेकर पिता के मन में काफी आशाएं थीं। उन आशाओं के अनुरूप मैं कभी भी ऊंचा नहीं उठ पाती थी। पिताजी की निकटता में मैं अपने को छोटी महसूसकर मन ही मन कुढ़ रही थी। मामा की दृष्टि में मैं अत्यंत चतुर थी।

कोविलकम् से पुए खाकर लौटते वक्त नानी ने कहा कि उनमें से किसी को छूने का अधिकार हमें नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी जाति और हमारी जाति अलग-अलग है।

"मैं अम्मा तंपुरान को छूऊंगी तो क्या होगा ?"

"छूएगी तो अम्मा तंपुरान को तालाब जाकर डुबकियां लेनी पड़ेंगी। हम नायर जाति के हैं न ? नायर के छूने से वे अपवित्र हो जाएंगी न ?"

नानी ने जाति-भेद के बारे में विस्तार से बता दिया। पहले नंबूदिरी, फिर तंपुरान, उनके नीचे नायर, तीय्यर, वेट्टुवर, पुलयर, परयर, नायाड़ी आदि। बेचारे नायाड़ी को खेत के दूसरे छोर से ऊंची आवाज में सिर्फ 'नालाप्पाट[1]-की बड़ी मालकिन' पुकारने का अधिकार प्राप्त है। बड़े-बड़े पेड़ों की ऊंची डालियों में अदृश्य रहकर कराहने वाली चिड़ियों की भांति हैं नायाड़ी लोग। मुझे उनसे मिलने की इच्छा हुई। परंतु उनके लिए सूप में चावल ले जानेवाली तीय्य जाति की औरतें मुझे कभी भी साथ नहीं ले गईं।

"छोटी मालकिन नायाड़ी को देखते ही डर के मारे चीखने-चिल्लाने लगेंगी।"

"नायाड़ी देखने में काल-मुर्गा[2] जैसा है।"

"क्या काल-मुर्गा को देखा है कभी ? सर्पक्काव[3] के बछनाग वृक्ष पर बैठकर कूआ...आ...कूआ...आ चीखनेवाली चिड़िया ! नायाड़ी भी उसी की भांति है। छोटी मालकिन को इस जनम में मैं नायाड़ी से मिलने नहीं दूंगी।"

एक दिन मैं चूनी की कंजी पी रही थी इसी बीच नानी पापड़ परोसने लगीं तो मैंने कहा, "अड़ियन[4] को पापड़ नहीं चाहिए।"

"कमला 'अड़ियन' क्यों कहती है ? 'मैं' क्यों नहीं कहती ?"

"वल्ली इस प्रकार अड़ियन बोलती है न ?"

"वल्ली तीय्य जाति की है न ? पर कमला तीय्य जाति की नहीं।"

"मैं किस जाति की हूं ?"

"कमला किस जाति की है, अभी तक यह नहीं मालूम ? अभी तक इसका पता नहीं तो किसी के कहने पर भी नहीं समझ पाएगी।"

---

1. **नालाप्पाट**—एक खानदान का नाम
2. **काल-मुर्गा**—एक विशेष प्रकार का उल्लू जिसकी चीख डरावनी तथा मृत्यु सूचक है।
3. **सर्पक्काव**—वह स्थान जहां सर्पों की प्रतिष्ठा कर उनकी पूजा की जाती है।
4. **अड़ियन**—गुलाम (Servent)

नानी ने जो बात कही थी, उसका मतलब आज मेरी समझ में आ रहा है।

एक बार पिताजी कलकत्ते से आ गए थे तब सर्पक्काव के झाड़-झंखाडों को साफकर वहां बच्चों के खेलने लायक बनाया। बूढ़ी औरतें डर के मारे पीली पड़ गईं। पिताजी से सीधे शिकायत करने की हिम्मत उनमें नहीं थी। इसलिए उन्होंने आपस में कहा कि सर्प कोप होगा।

स्त्रियों ने कहा कि किसी भी हालत में नागयक्षि, शिवलिंग तथा चित्रखचित पत्थरों को न हिलाएं। फिर भी पिताजी ने वहां सीमेंट का एक बैठका बना लिया। सर्पक्काव के चारों ओर बैठने का एक चबूतरा बनाया गया। शायद इतना काफी न समझकर उन्होंने सर्पक्काव में दो म्लेच्छ पेड़ भी लगाए—गुलमोहर के पेड़।

उन्हीं दिनों मौलसिरी का एक बड़ा पेड़ भी गायब हुआ। वह स्वयं गिरा था या गिराया गया था, यह मुझे अब याद नहीं। नालाप्पाट के दक्षिणी आंगन में झरे हरे फूल तथा उनकी हल्की महक केवल स्मृति बनकर रह गई।

सर्पक्काव के परी नामक वृक्ष की डालियों पर हमें बिठाकर पिताजी ने फोटो खींचा। उन्होंने नानियों को समझा दिया कि अंधविश्वासों की उपेक्षा करनेवाले पर कोई विपत्ति नहीं आएगी।

इसे समझाने के सिलसिले में चिड़ियों के घोंसले धराशायी हुए। अंडे चकनाचूर हो गए। पिप्पलि की लताएं धराशायी हो गईं। अधखिले फूल भी झर गए। पिताजी ने नौकरों से कहा कि जिस मौलसिरी पर झूला डाला गया है, वह मत काटें। अनार का पेड़ भी बच गया।

मामाजी तथा नानी दक्षिणी कोठरी में एक मंदिर बनाकर उसमें पिताजी को पुरस्कार में मिले शालिग्राम पत्थर की प्रतिष्ठा कर पूजा करते थे। पूजा के वक्त नानी केवल नए कपड़े ही पहनती थीं। उस मंदिर में किसी का घुसना नानी को कतई पसंद न था। नानी को संदेह था कि वे सब मंदिर को अपवित्र कर देंगे।

महिलाएं ऋतुमति होते ही उत्तरी ओसारे की ओर जाती थीं। फिर तीन दिन वहीं ठहरती थीं। घरेलू काम करने की इजाजत उन्हें नहीं दी जाती थी। इसलिए वक्त काटने के लिए वे किताबें पढ़ती थीं। चंगमपुषा का 'रमणन', कुमारनाशान की 'नलिनी' तथा 'लीला', कप्पना कृष्णमेनोन के उपन्यास आदि के अलावा आत्मपोषिणी, कैरली, महिला आदि पुरानी मासिक पत्रिकाएं उनकी सहेलियां होती थीं। ऋतुवेला के अलावा किताब पढ़नेवाली महिलाएं उस गांव में दुर्लभ थीं। उस दुर्लभ श्रेणी में मेरी मां और छोटी मां भी शामिल थीं। नालाप्पाट में रसोइए की सुविधा हमेशा उपलब्ध रहने के कारण स्त्रियों ने पाक-कला में पटु होने की चेष्टा नहीं की। स्त्रियों का काम भारी नहीं था। दीया साफ करना, बत्तियां बनाना, सांध्य-वेला

में दीया जलाना, विल्व वृक्ष के चबूतरे पर, सर्पक्काव में तथा चारों ओर के बरामदों में बत्तियां जलाकर रखना, सांध्य-वेला में दीया के पास बैठकर ऊंची आवाज में साप्ताहिक पत्रिकाएं पढ़ना, उबालने के लिए धान नापकर देना, पूजा-सामग्रियां साफ करना...आदि छोटे-छोटे काम उनके होते। शेष सारे काम नौकरों के होते थे। विशेष प्रकार के कुछ तेल बनाने की देख रेख भी घर की स्त्रियां ही करती थीं।

एक दिन दोपहर को मैं ऊपर के बरामदे में चटाई बिछाकर लेटी हुई थी। नानी तकली से सूत कात रही थीं। तब गोयिश्शार नामक एक आदमी मैला अंगोछा पहने दक्षिणी कमरे के बाहर दरवाजे पर आया।

उसने कहा, "अंबाषत्त वालों को एक लेह बनाने के लिए एक कड़ाह चाहिए।"

नानी सीढ़ियां उतरकर नीचे आई। मैं भी उनके पीछे हो लिया। नानी ने नौकरानी को एक कड़ाह दे देने का आदेश दिया।

नानी ने कहा, "अभी ला देगी। जरा वहां रुको गोयिश्शार।"

"अरे गोयिश्शार, तुम्हारे कहने का मतलब यह तो नहीं कि अंबाषत्त में कड़ाह नहीं ?" नौकरानी ने पूछा।

"वहां का कड़ाह बहुत बड़ा है न ? वहां का सबसे छोटा कड़ाह यहां के सबसे बड़े कड़ाह के बराबर है।" गोयिश्शार अपने लाल दांतों को दिखाते हुए बोला।

"मैं ऐसी बातें सुनना नहीं चाहती हूं।" नौकरानी बड़बड़ाई। कड़ाह लेकर आंखों से ओझल होने तक मैं उस बूढ़े के कौपीन के छोर को देखती खड़ी रही।

जब मैं और नौकरानी ही वहां रह गईं तो नौकरानी बोली, "ऐसी बातें सुनने पर मुझे गुस्सा आता है। वह अपना रौब जता रहा है। उसके कहने का मतलब है, अंबाषत्त वाले यहां के लोगों की अपेक्षा काफी पैसे वाले हैं। चाहें तो बच्ची के पिता इस पूरे गांव को खरीद सकते हैं। क्या बच्ची को इसका पता है ? वहां के अमीर लोगों में बच्ची के पिता को छोड़कर ही और किसी का नाम आता है। क्या यह मालूम है ? बच्ची की मां सफेद खद्दर के कपड़े पहनकर चलती हैं न, इसीलिए दूसरे लोग सोचते हैं कि इनके पास कुछ हैं नहीं। अंबापत्त की स्त्रियों की तरह क्या वे चल नहीं सकती ? आठ-दस पवन[1] की हार और चूड़ियां बनवा नहीं सकती ? क्या अच्छी धोती पहन नहीं सकती ? पैसे की कमी तो नहीं है। कोई बच्ची की मां की खिल्ली उड़ाए तो गांधीजी को क्या हर्ज है ? कोई बच्ची की मां का परिहास करे तो उसका दोष बच्ची पर ही लगेगा न ? अपनी मां से कहना कि वे अच्छी तरह सज-धजकर चलें ताकि दूसरे भी देख लें। इसे देखने पर प्रत्येक का होंठ सिकुड़ जाएगा। बच्ची को जिद करना होगा कि आगे से उसकी मां का मजाक कोई न उड़ाए।"

---

1. **पवन**—आठ ग्राम सोना

"क्या मेरी मां का मजाक उड़ाया जाता है ? कौन है, मेरी मां का मजाक उड़ानेवाला ?" मैंने पूछा। मैं रुलाई को संभालकर बोल रही थी।

"जब मैं तालाब में नहाने गई थी, तब सुना—वह पणिक्कर की बीवी है न ? हमेशा दांत निपोरती रहनेवाली कोता ! वह कह रही थी कि बालामणिअम्मा कोग्रस है।"

"कोग्रस ? वह क्या बला है ?"

"मुझे नहीं पता। मैं इंग्लिश और परंद्रीस, कुछ नहीं जानती। इतना जरूर जानती हूं कि वह शब्द अच्छा नहीं है। जो गांधी के आदमी हैं न, उन्हें कोग्रस कहते हैं। बड़ी शरम की बात है, मेरी बच्ची, बड़ी शरम की।"

जिस दिन आंधी आई थी, उस दिन अंबाषत्त के किसी की वर्षगांठ थी। मैं और मेरे भाई अंबाषत्त के घर में हुई दावत में आमंत्रित थे। भोजन के पूर्व हम मालतिकुट्टि के साथ सर्पक्काव गए। वहां हमने देखा कि मीनाक्षी दीदी सांपों के लिए हल्दी का चूर्ण, दूध तथा फल रखकर बत्ती जला रही थीं। मीनाक्षी दीदी अंबाषत्त वालों की, दूर की रिश्तेदार थीं। गरीब होने की वजह से उन पर आश्रित भी थीं। वे सांवले रंग की अधेड़ उम्रवाली औरत थीं। हमेशा सभी से क्षमा-प्रार्थी की मुद्रा में वे उस घर तथा परिसर में बिना विश्राम के दौड़-धूप करती थीं। परक्कार[1] के आते वक्त धान सहित उनका स्वागत-सत्कार करना, बत्तियां जलाना, बच्चों के लिए दही-मंथनकर मक्खन निकालना, निरा[2] के दिन चावल के गीले आटे में हाथ डुबोकर उससे दरवाजों पर छापे लगाना आदि छोटे-छोटे काम ही उन्हें निभाने थे। अन्य सारे कामों के लिए असंख्य नौकर-चाकर मौजूद थे। फिर भी मीनाक्षी दीदी के अभाव में एक दिन भी चैन से काटना उस परिवार के लिए असंभव था। कितना धान उसनना है, कितनी धोतियां धोबी को दी गई हैं, बच्चों का पेट साफ करने के लिए कब रेंडी का तेल देना है, आदि बातें मीनाक्षी दीदी के अलावा और किसी को मालूम न थीं।

"सांप क्यों नहीं आता ?" मैंने पूछा।

"आदमी के देखते रहने पर सांप कैसे आएगा, बच्ची ? हमारे चले जाने पर रेंगते हुए आएगा, काला नाग।" मीनाक्षी दीदी ने कहा।

---

1. **परा**—दस सेर के माप का बर्त्तन है। कुछ विशेष अवसर पर मंदिर की ओर से कुछ लोग परा लेकर घर-घर आते हैं। घरवाले मंदिर के लिए परा भर धान दक्षिणा के रूप में देते हैं। परा ले आनेवालों को 'परक्कार' कहते हैं।
2. **निरा**—केरल का एक विशेष पर्व।

भोजन करते ही मुझे नींद आने लगी। नालाप्पाट लौटते वक्त हमारे साथ मालतिकुट्टि भी आ गई। घर पहुंचकर एक घंटा बीता ही होगा कि हमने हवा की आवाज सुनी।

दक्षिणी अहाते के नारिकेल-कुंजों के बीच से तेज आवाज के साथ एकाएक हवा ऊपर उठी। तालाब के किनारे पड़े सूखे पत्ते खड़खड़ाते हुए ऊपर उठे। वृक्षों ने अपनी शाखाएं हिला दीं। मौलसिरी पर लटके झूले का तख्त नीचे गिरा।

"कहीं आंधी तो नहीं आ रही ? आवाज सुनने पर डर लगता है।" नानी ने कहा। उन्होंने हमें छत के बीच के कमरे में बिठा दिया और खेलने के लिए कांसे के पांसे दिए। रोशनी के मंद पड़ने पर एक दीया जलाकर रख दिया।

"कोच्चू, दरीचियां बंद की है न ?" परनानी ने नीचे दक्षिणी कोठरी से ऊंचे स्वर में पूछा।

"बंद करती हूं मां, मैं सब बंद कर लेती हूं।" नानी ने जवाब दिया। तभी दक्षिणी-पश्चिमी कोने से भीड़ के शोरगुल-सी बारिश की आवाज हमने सुनी। नानी ने खिड़की के किवाड़ों को बलपूर्वक बंद कर दिया। उनके चेहरे पर पानी के छींटे चमक उठे।

"चार भी नहीं बजा था। पर आंगन में अंधेरा छा गया है।" नानी ने कहा।

"मुझे कुट्योप्पु[1] से मिलना है।" मालतिकुट्टि बोली।

"कुट्योप्पु सांझ होते ही आ जाएगी।" नानी ने कहा।

"मुझे अभी अंबाषत्त जाना है।" मालतिकुट्टि बोली।

"हवा और बारिश को थम जाने दें। फिर बच्ची को अंबाषत्त भेज दूंगी।" नानी ने मालती को शांत करने की चेष्टा की। मालतिकुट्टि ऊंचे स्वर में सिसकने लगी। तब हमें नारियल के पेड़ के गिरने की आवाज सुनाई पड़ी।

"कोच्चु, क्या गिरा है ? मकान गिरेगा तो नहीं ?" परनानी का सवाल था।

"मां, डरने की कोई बात नहीं। नारियल का एक पेड़ ही गिरा है।...बारिश के थमते ही जाकर देख लूंगी। अब नाम जपते आराम से बैठना अच्छा है।" नानी बोलीं।

मामाजी की मां के आदेश के मुताबिक सभी ने नीचे की मंजिल के दक्षिणी कोठरी का आश्रय लिया। बड़ी मां का कहना है कि उस कोठरी की छत ही काफी मजबूत है। दक्षिणी आंगन में पानी उमड़कर बहने लगा। बीच के आंगन में भी पानी भर गया। दक्षिणी कोठरी की चारपाई पर मामाजी और हम बच्चे बैठ गए। फर्श पर तहकर रखी रजाइयों पर नानियों ने आसन जमाया। नौकरानी ने बाहर के एक कमरे में आश्रय लिया। बारिश, मेघ गर्जन तथा बिजली की परवाह किए

---

1. **कुट्योप्पु**–छोटी दीदी

बिना मामी भी भीगती हुई चली आई।

"बाला, यह कैसी मूर्खता है ? बुखार आ गया तो ?" मामा ने पूछा।

मामी हंसी।

"कुट्योप्पु आ गई।" मालतिकुट्टि ने खुशी के साथ कहा। नानी ने मालतिकुट्टि को गले लगाया। छोटी मां ने एक राय प्रकट की कि घबराहट से बचने के लिए अक्षर श्लोक गाया करें। छोटी मां ने वल्लत्तोल की कृति 'बंदी अनिरुद्ध' के कुछ पद सुनाए। पर अक्षर श्लोक की प्रतियोगिता में किसी ने दिलचस्पी नहीं ली।

"मुझे कोई श्लोक याद नहीं आ रहा है।" नानी बोलीं।

"मकान न गिरे तो अच्छा है।" परनानी बड़बड़ाई।

मामाजी और मामी के ऊपर जाते ही नौकरानी जोर से चीखने लगी। चीखने के साथ वह अपने माथे को हाथों से पीट भी रही थी।

"यह क्या पागलपन है ? सिर क्यों फोड़ रही है ?" नानी ने पूछा।

"मैं अपने घरवालों को अबसे कैसे देख पाऊंगी।"

"मेरे गुरुवायूरप्पा[1]! मैं अपना घर कैसे देख पाऊंगी ?"

"बारिश के थमते ही कल सुबह घर चली जाना, क्यों ?" नानी ने पूछा।

"यह बारिश नहीं थमेगी। यह आंधी है न ? इसमें हम सब मर जाएंगे।" नौकरानी सिसकने लगी।

"यह क्या पागलपन है ?" नानी ने कहा ।

हमें पेड़ों के गिरने की आवाज सुनाई पड़ी और पश्चिमी अहाते से एक कुत्ते की चीख भी।

"हाय शंकरा...वह गोशाला गिरेगी तो नहीं ? गायों को ओसारे पर बांध दो न ?" नानी ने कहा।

शंकरन लालटेन लेकर गोशाला की ओर भागा। गाएं रंभा उठीं।

"गोशाला नहीं गिरेगी मालकिन। उसके खंभे काफी मजबूत हैं।" शंकरन लौटकर बोला।

"तो गायों को वहीं रहने दो।"

"आंगन में घुटनों तक पानी है।" शंकरन बोला।

"हम तैरना चाहते हैं।" मैंने आग्रह किया।

"बीच के आंगन में तैरेंगे।" बड़े भाई ने कहा।

"पानी बर्फ-सा ठंडा है।" मैंने बीच के आंगन के पानी को छूते हुए कहा।

"बच्चो ! पानी में मत खेला कर" नानी ऊंचे स्वर में बोलीं। हम फिर से चारपाई पर बैठ गए।

---

1. **गुरुवायूरप्पा**—केरल के सबसे प्रसिद्ध मंदिर गुरुवायूर में प्रतिष्ठित भगवान महाविष्णु की मूर्ति।

हमें ऐसा लगा कि दक्षिणी द्वार पर कोई दस्तक दे रहा है। शंकरन ने दरवाजा खोला। बरामदे में पानी से तर-ब-तर कुत्ता। अंबाषत्त का पालतू कुत्ता—तुंबी। श्वेत-श्याम रंग का जानवर।

"अरे तुंबी ? पूरा भीग गया क्या ? बालामणिअम्मा के साथ आ गया क्या ? बेचारा !" शंकरन बोला।

हमने तुंबी की ओर तथा तुंबी ने हमारी ओर देखा। वह ठंड के मारे ठिठुर रहा था।

शंकरन ने एक बोरा बरामदे में बिछा दिया।

"यहीं लेट जा। आंधी है न ? इस वक्त इंसान कौन और कुत्ता कौन ? यह देखने की जरूरत नहीं। तुंबी, लेटकर सो जा।" बोरे पर लेटकर एहसान के साथ तुंबी ने मेरी तथा मेरे भैया की ओर देखा।

रात हमने दक्षिणी कोठरी में बिताई। सबेरे उठने पर बारिश थम गई थी।

"ड्योढ़ी का दरवाजा खोलिए न ?" किसी के अनुरोध को सुनती हुई मैं जाग उठी। ड्योढ़ी का दरवाजा खोला गया। कमर तक पानी में भीगा बालन नामक युवक मुस्कुराता खड़ा था।

"वड़ेक्करा से आ रहा हूं...यहां किसी को कुछ हुआ तो नहीं ?"

"किसी को कुछ नहीं हुआ।" नानी बोलीं।

"बालन कैसे यहां आ पहुंचा ?"

"मैं मुंह अंधेरे ही चला आया। पानी में ही चल पड़ा।"

"बालन को मानना ही पड़ेगा।"

"कितने मकान गिरे पड़े हैं ! कितने ही पेड़ गिरे हुए हैं ! बहुत सारी मुर्गियां मरी पड़ी हैं—बकरियां मर गई हैं ! दृश्य बड़ा खौफनाक है !"

"अरे बालन, भीतर आकर धोती बदल डालो न ?"

"वड़ेक्करा से हमारे लिए कुछ भिजवा तो नहीं दिया ? मुरूक[1] है ? खजूर है ?" मैंने पूछा।

"नहीं बच्ची ! बालन खाली हाथ ही चला आया।" बालन कुछ ज्यादा उभरे दांतों को दिखाते हुए बोला।

"यह मुरूक और खजूर के बारे में पूछने का वक्त है क्या ?" मामा की मां बड़बड़ाई। मैंने शरम के मारे सिर झुकाया।

मेरे बचपन में कलकत्ता शहर में शॉपिंग की सिर्फ चार ही दुकानें प्रसिद्ध थीं—हाल

---

1. **मुरूक**—चावल के आटे से बनाए जाने वाला पकवान

एंड एंडरसन, आर्मी एंड नेवी स्टोर्स, वाच्चल मोल्ला स्टोर्स तथा कमलालया स्टोर्स। पिताजी अपने कोट तथा पतलून सिलाने लायक ट्वीड और ट्विल आदि कपड़े पहली दो दुकानों से खरीद लेते थे। पाश्चात्य संस्कृति के ज्ञान में मैं और मेरे बड़े भाई पिताजी से काफी पीछे थे। पिताजी हमारी पोशाक के लिए वाच्चल मोल्ला से ही सफेद कपड़े खरीदते थे। मां के लिए प्रिय रेडिमेड कुर्तियां पिताजी कमलालया स्टोर्स से खरीदते थे। गले के इर्द-गिर्द तथा आस्तीन पर फूल कढ़ी हुई सफेद कुर्ती उन दिनों वहां सुलभ थी। मां प्रायः हल्की पीली साड़ियां ही पहनती थीं। ये भी पिताजी कमलालया से ही खरीदते थे। पिताजी के साथ शॉपिंग के लिए जाना एक दुखदायी चीज थी। दुकान के भीतर बच्चों का मुंह खोलना पिताजी को बिल्कुल पसंद न था। हमारे परिवार में अपनी-अपनी राय प्रकट करने की आजादी पिताजी के अतिरिक्त और किसी को प्राप्त न थी। हम बच्चे जिस गुलामी के आदी थे उतनी गुलामी हमारी परिचित दुनिया में और किसी बच्चे को सहनी न पड़ती थी।

बहुत कम लोग ही हमारे पारिवारिक मित्र थे। बैंक के कर्मचारी राघव मेनोन, उनकी पत्नी पद्मावतिअम्मा, उनके बेटे उण्णिदा तथा मांजू; हाइकोर्ट रजिस्ट्रार पणिक्कर, उनकी पत्नी तथा बेटे और रामचन्द्र अय्यर, उनकी पत्नी तथा उनका इकलौता बेटा रामस्वामी आदि हमारे पारिवारिक मित्र थे। महीने में एक बार पिताजी हमें साथ लेकर इन तीनों परिवारों में जाते थे। राघव मेनोन का कनिष्ठ पुत्र मांजू एक खुशनसीब लाड़ला बेटा था। के. एस. मेनोन ने गुड़ियों को रखने के लिए मुझे और मेरे बड़े भाई को एक दुमंजिला मकान भेंट दिया था। इसकी देखा-देखी एक सप्ताह बीतते ही मांजू के लिए भी एक मकान खरीदकर देने को उसके मां-बाप मजबूर हुए। पणिक्कर दंपतियों के बच्चे लाड़-प्यार से वंचित थे। परंतु किसी को उन्हें डांटते हमने नहीं देखा। वे दीवार, पेड़, अलमारी आदि पर चढ़ जाते थे। कभी-कभी वे पेड़ से गिरकर जोर से चिल्लाते भी थे। मैं भी उनके स्तर तक पहुंचने की इच्छा से दो-तीन बार पिताजी की अलमारी पर चढ़कर नाच उठी थी। उस समय ऐसी हरकतें सिर्फ धीरता प्रदर्शन के उद्देश्य से ही की जाती थीं। अय्यर का बेटा स्वामी पीला छरहरा लड़का था। उसके मां-बाप उसे हमारे घर से कुछ भी खाने को मना करते थे। उसे खेलने की इजाजत भी नहीं दी जाती थी। श्रीमती अय्यर हमसे कहती थी, "तुम खेलो, स्वामी उसे देखता रहेगा।" बाद में पिताजी के दोस्तों की संख्या में वृद्धि होने लगी। पी. जी. मेनोन, उनकी पत्नी आनक्करा वटक्कत्तु पद्मावतिअम्मा, तथा उनकी बेटियां लक्ष्मी, मृदुला, ललिता और पार्वती हमारे करीब आ गईं। श्री एम. आर. नायर, उनकी पत्नी, शकुंतला, कृष्णन, विनोदिनी आदि बेटे-बेटियां; मूर्कोत्तु कुंजप्पा, उनकी पत्नी सीता दीदी और बेटा उण्णि हमारे प्रिय हो गए। पिताजी ने सिर्फ मलयाली परिवारों के साथ मित्रता स्थापित की थी। पिताजी गुरुवायूर में पले-बढ़े थे और मांजी पुन्नयूरकुलम् में। इस कारण से गैर मलयालियों से मेलजोल स्थापित

करने में उन्हें दिक्कत महसूस हुई। हम बच्चों के लिए ऐसी कोई परेशानी नहीं थी। परंतु गैर मलयालियों से मिलते-जुलते वक्त पिताजी हमें डांटते तथा निरुत्साहित करते थे। खासकर, पिताजी हमें असभ्य गंवार मानते थे। वे हमें सभ्यों के समक्ष मुंह दिखाने लायक नहीं मानते थे। मेरी और मेरे भाई, की हालत पत्थर खाकर दुम दबाकर भागने वाले लावारिश कुत्तों की भांति थी। हम हीन भावना से त्रस्त थे। शायद इसलिए ही हम अथक परिश्रम के मार्फत पढ़ाई तथा ज्ञान संपादन के क्षेत्र में अव्वल आ गए थे। हमें दुनिया को बहुत कुछ कर दिखाना था।

कुञ्जन नंबीशन छोटे कद के व्यक्ति थे, जो कास के बीमार थे। नंबीशन की शक्ल पानी में डालकर उबाले गए केले के जर्जर टुकड़ों की याद दिलाती थी। उन्हें उसे देखने पर कहीं कुछ गड़बड़ी महसूस होती थी। उनकी सूरत में रत्तीभर भी सुघड़ता नहीं थी। नंबीशन का रंग काला है या गोरा या दोनों का सम्मिश्रण है, यह कहना किसी के वश की बात नहीं थी। उनके शरीर पर कहीं-कहीं दाग दिखाई पड़ते थे। उनकी आवाज पुरुष तथा स्त्री की आवाज के बीच में स्थित थी। जैसे घायल उल्लू की आवाज या तो सर्दी लगी फुदकी की आवाज। नंबीशन की आवाज में हुंकार भरा था। हां, नहीं, चाहिए, नहीं चाहिए आदि शब्दों के बदले एक विशेष तान में हुंकार भरते हुए नंबीशन अपना दिल खोलते थे। उनकी निकटता अंबाषत्त केशवदास मेनोन को काफी पसंद थी। हफ्ते में कम से कम दो बार नंबीशन से मिलना केशुदा के लिए जरूरी था। वे जानते थे कि उनकी सभी बातों को सुनकर हामी भरने में नंबीशन की पटुता या क्षमता और किसी में प्राप्त न थीं। वेतन भोगी नौकर के, बार-बार 'जी हुजूर' कहते रहने पर भी केशुदा तृप्त न होते थे मण्णागंडन नाम से पुकारे जानेवाला बूढ़ा नौकर अपनी काबिलियत के मुताबिक केशुदा की खुशामद करता रहता था। परंतु प्रशंसा की उन लड़ियों में केशुदा को ईमानदारी का अभाव महसूस हुआ होगा।

उच्च जाति में पैदा होने के कारण कुञ्जन नंबीशन के लिए अपनी गरीबी उनके सुखी सामाजिक जीवन में बाधा नहीं डालती थी। अंबाषत्त खानदान में ही नहीं, तेड़ियत्तु, पालश्शेरी तथा एलियंगोट कोविलकम् में भी नंबीशन काफी सम्मानित व्यक्ति थे। एक उत्तम श्रोता की हैसियत से नंबीशन से तुलना करने योग्य और कोई पुन्नयूरकुलम् में मौजूद न था। बात सुनते रहने की सहिष्णुता, चुगलखोरी को अनसुनाकर ऊंघते रहने की क्षमता...ये सब और किसमें मौजूद हो सकते हैं? किसी ने भी नंबीशन की निंदा नहीं की। परंतु उनकी पत्नी नंगेलि ब्राह्मणिअम्मा के बारे में सभी लोग शिकायत करते थे। वे जवानी में ही अंगिया पहनने लगी थीं। उन दिनों अंगिया पहननेवाली औरतें समाज की नजर में आधुनिक मानी जाती

थीं। धीरे-धीरे सभी औरतों ने छाती ढंकना शुरू किया। फिर भी ब्राह्मणिअम्मा के प्रति समाज का जो वैमनस्य था, वह नहीं बदल पाया। वे खूबसूरत नहीं थीं। उनकी आवाज भी सुंदर नहीं थी।

वे मंदिर के द्वार पर खड़े होकर खुरखरी आवाज में गाना शुरू करती तो लोग दबी आवाज में हंसने लगते। पड़ोसियों ने यह अफवाह फैला रखी थी कि वे अपने पति को फटकारती हैं। उनकी बातचीत फटकार की भांति खुरखुरी आवाज में होने से ही शायद यह गलतफहमी पैदा हुई होगी। बुढ़ापे में ब्राह्मणिअम्मा अपने आपसे बात करने लगी थीं। एक दफा खेत के किनारे से मैं पुन्नाग के फूलों को रौंदती चली जा रही थी तो उनकी बड़बड़ाहट मुझे सुनाई पड़ी, "बदमाशी करने पर तो पिटाई होगी ही।"

वह संकेत मेरी ओर है, ऐसा समझकर मैं मुड़कर भागी। उसके बाद ब्राह्मणिअम्मा को देखते ही मैं छिप जाती थी। एकादशी, षष्ठी आदि के दिनों में किए जानेवाले व्रतादि के बारे में उन्हें गहरा ज्ञान था। वे नालाप्पाट की नानियों के साथ इस विषय पर बातें करती थीं। नंगेली ब्राह्मणिअम्मा ने नानी को यह समझा दिया था कि एकादशी का मुख्य भोजन सांवां-कंजी है। उन्होंने कहा, "दोनों बखत गेंहू की कंजी पिए तो पेट खराब हो जाएगा।"

"गेंहूं गरम मिजाज का होता है न ?"

"हां, गेंहूं गरम मिजाज का है। यह तबीयत के लिए बिल्कुल अच्छा नहीं।"

"पर, पंजाबी तो गेंहूं की रोटी ही खाते हैं न ? उनके स्वास्थ्य में क्या खराबी है ?" परनानी का सवाल ब्राह्मणिअम्मा को अखर गया।

"पंजाबियों को किसने देखा है ? वे तंदुरुस्त हैं या नहीं, हम क्या जानें ?"

"सो तो ठीक है। हमने पंजाबियों को नहीं देखा।"

"फिर अम्मुकुट्टि ने कैसे मान लिया कि वे तंदुरुस्त हैं ?"

ब्राह्मणिअम्मा अपने घिसे दांतों को दिखाती हुई हंस पड़ीं। थकी हुई परनानी ने सिर हिलाया।

"सांवां गरम मिजाज का है न ?" नानी ने पूछा।

"सांवां ठंडे मिजाज का है। वह साबूदाने और अरारूट की भांति नरम है। इस पर भरोसा नहीं तो कुञ्जुण्णि नंबीशन से पूछ लें।"

"मुझे किसी से पूछने की जरूरत नहीं। मैं ब्राह्मणिअम्मा की बात मान लेती हूं।"

"सांवां कंजी के साथ नारियल की चटनी भी अच्छी रहेगी। आम का अचार भी मिले तो बहुत मजा आएगा। इससे एकादशी का व्रत रखने वाले को थकान महसूस नहीं होगी।"

नौकरानी बोली, "आइंदा मैं कभी भी एकादशी नहीं मनाऊंगी। पिछले महीने

एकादशी मनाने के बाद मैं शाम को परूर मंदिर गई हुई थी। एकाएक मेरे पैर में दर्द होने लगा। मैं मंदिर की परिक्रमा कर रही थी। तभी अचानक मेरे पांव में दर्द महसूस हुआ। मेरे साथ तेंडियत्त में रहनेवाली कालिकुट्टि भी थी। वह घबरा गई। दर्द के मारे मैं वहां उकडूं बैठ गई। पांव में मोच लगी थी। कालिकुट्टि के मसलने पर ही मैं उठ सकी। मंदिर में दर्शन के लिए आए सभी लोग मेरे इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गए। मर्द लोग मेरे पांव की ओर नजर टिकाए खड़े थे। हाय, ब्राह्मणिअम्मे, मेरी जान चली गई। नंबूदरी बता रहा था, ''आइंदा तुम एकादशी मत मनाओ। तुम उस उम्र की नहीं हुई हो।''

''नंबूदरी ने ठीक ही कहा। लक्ष्मी एकादशी मनाने की उम्र की नहीं हुई है।''

''एकादशी मनाने के लिए विशेष उम्र का होना जरूरी नहीं है।'' ब्राह्मणिअम्मा ने कहा। उन्होंने आगे बताया, ''मुझे ऐसा कोई जमाना याद नहीं, जब एकादशी न मनाई हो। हिंदू हो तो एकादशी मनानी ही चाहिए। चाहे औरत हो या मर्द, एकादशी मनाना जरूरी है। श्रीपरमेश्वर को प्रसन्न किए बिना हम कैसे जी पाएंगे ?''

सभी ने ब्राह्मणिअम्मा की बात को सही मान लिया। वर्षाहीन मौसम हो तो उत्तरी अहाते के आम्रवृक्ष के तले बैठकर बढ़ई कुंजू काम करता रहता है। ऐसा कहना ही वाजिब होगा कि वह अध्यक्ष पद को संभाल रहा है। धान उसनाना, चटाई पर चटपटी चीजों को सुखाना आदि कामों का निर्वाह भी इसी आम्रवृक्ष के तले ही होता था। वहां बैठनेवाला व्यक्ति चौके के ओसारे पर खड़े रसोइया, ओखलीखाने में बैठनेवाली औरतों, खेत से होकर जानेवाले आदि से आसानी से बात कर सकता है। आम्रवृक्ष की यह छाया ही दुनिया की तमाम गतिविधियों का केंद्र थी। कुंजू वहां बैठे-बैठे पान और तंबाकू चबाते हुए बैठने की चौकी, बुड्ढियों की पुतलियां तथा काठ की अन्य सामग्रियां बनाता था। सभी पुतलियों की शक्ल-सूरत वल्ली की जैसी होती थी। सिर पर बांधी हुई चोटी, लटके उरोज और कछौटा, यही पुतली की सूरत होती थी।

''थोड़ी सुंदर पुतली बना दोगे न ?'' एक दिन मैंने कुंजू से पूछा।

''क्या कुंजू की बनाई गई पुतलियां सुंदर नहीं हैं ?'' उसने मुझसे पूछा।

''सुंदर तो हैं, पर...''

''औरत हो तो सिर और उरोज का होना जरूरी है। इसके सिवा और कुछ नहीं चाहिए।'' कुंजू बोला। मैंने सिर हिलाया। एक पुतली हाथ में लेकर कुंजू ने आगे कहा, ''क्या इसको सिर नहीं ?''

''हां।''

''क्या इसे उरोज नहीं ?''

''हां।'

"फिर क्या चाहिए।"

"कुछ नहीं। पर मुझे यह पुतली नहीं चाहिए। कुंजू ही यह पुतली अपने घर ले जाए।"

मैं दौड़कर नानी की गोद में जा बैठी। नानी रामायण बांच रही थीं।

"कमला, क्यों हांफ रही है ? तुझे क्या हुआ ?" नानी ने पूछा।

"कुंजू के अलावा और कोई बढ़ई नहीं है ?"

"कमला को कुंजू से इतना गुस्सा क्यों है ?"

"कुंजू की बनाई पुतली मुझे नहीं चाहिए। सब की सब पुतलियां वल्ली जैसी हैं। और किसी बढ़ई को क्यों नहीं बुलाती ?"

"इतनी देर तक और कौन यहां बैठा रहेगा ? उन लोगों को और काम हैं न ?"

कुंजू बालू पर केले का पत्ता बिछाकर खाना खाता था। रसोइया पत्ते पर दो कलछी भात परोस देता है। कुंजू अनार के आकार के बड़े-बड़े कौर बनाकर उनका एक छोर सांभर में भिगोकर अतीव लालसा से मुंह में डाल देता था। मैं इसी को देखती हुई ओसारे पर बैठी रहती थी। भात के साथ बीच-बीच में आग में भूनी लाल मिर्च भी खाता था। भोजन करते वक्त हमेशा कुंजू की आंखें छलछला आती थीं।

"क्या कुंजू को सांभर पसंद है ?" मैंने पूछा।

"यहां के सांभर में मिर्च और इमली नहीं डाली जाती। मिर्च और इमली के बिना मैं कंजी और भात खा ही नहीं सकता।"

"क्या कुंजू सौ मिर्च एक साथ पीसकर खा सकते हो ?

"सौ नहीं, हजार मिर्च खा सकता हूं। यह तो बचपन की आदत है। कणियार पणिक्कर ने कहा था, "अरे कुंजू, तू असुर जाति का है...तेरा जन्म नक्षत्र तृक्केट्टा है। असुर लोग थोड़ी मिर्च-इमली तो खाते हैं, ताड़ी पीते हैं और मांस-मछली खाते हैं।" कुंजू के मोटे शरीर का रंग तांबे का था और चेहरे का गहरा लाल। धान उसनाते वक्त कड़ाह से उमड़नेवाला नीला धुआं कभी-कभी उसके रूप को ढक लेता था। तब मुझे कभी-कभी लगता था कि वह कुंड से निकला हुआ जिन है।

कुंजू ने बड़े भाई के लिए विभिन्न प्रकार की माप-सामग्रियां बना दीं। बड़े भाई ने वे सब ड्योढ़ी में स्थित अपने अध्ययन-कक्ष में संभालकर रख लीं।

ड्योढ़ी का निर्माण कंडारन नामक बड़े बढ़ई ने किया था। सिर पर बंधी शिखा, मुंह में बाघ-नख की भांति टेढ़ा एक दांत, झुर्रियोंदार सांवला शरीर—यही कंडारन का हुलिया था। वे जब नालाप्पाट पहुंचे, तब मामा ने उनकी अगवानी की।

"दूसरा कोई यह काम कर ही नहीं सकता।" मामा ने कहा। कंडारन हंस पड़े। उनका दांत धीरे से हिला।

"आंखें कमजोर हो रही हैं। मैं कहीं जाता नहीं।" वे बोले।

कंडारन के आने-जाने की बात कुंजू जान गया। परंतु वह आम्रवृक्ष के तले से उठा ही नहीं। कंडारन की अगवानी भी उसने नहीं की।

"कंडारन पुतली नहीं बनाते ?" मैंने नानी से पूछा।

"कंडारन से पुतली बनाने को कहना उचित नहीं।" नानी ने कहा।

"नाप-माप के लिए किसी-किसी को ले आते हैं। पर कोई काम करने के लिए आखिर कुंजू ही रह जाता है।" कुंजू बोला। कुंजू की यह बात सुनकर अहाते, बाड़े तथा ओसारे में खड़ी औरतें जोर से हंस पड़ीं।

"ठीक है आखिर जरूरत पड़े तो कुंजू ही रह जाता है।" उनमें से कोई बोली।

उन दिनों पुन्नयूरकुलम् में करुप्पन नामक एक सुनार रहते थे। उन्होंने तमिल वंशज सुनारों से यह कला सीखी थी। उस गांव में सुनारी की कला में करुप्पन को हराने की क्षमता रखनेवाला और कोई नहीं था। उनके दो बेटे थे—शंकर नारायणन और शिवरामन, जो अपने पिता के पद चिह्नों का अनुसरण करनेवाले थे। उनका रंग कम गुणवत्ता वाले सोने की भांति पीला था। वे सुंदर और सुशील थे। पुन्नयूरकुलम् के सब लोग शंकर नारायणन को सिर्फ नारायणन पुकारते थे।

मेरी नानी को नारायणन की दक्षता पर पूरा भरोसा था। नानी मुझे आभूषण पहनाने की इच्छा रखती थीं। परंतु नानी उतनी संपन्न न थीं। नारियल के बेचने से प्राप्त छोटी-सी रकम के साथ पिताजी द्वारा कलकत्ते से भेजे जानेवाले सौ रुपए को मिलाकर नानी मां गृहस्थी संभाल रही थीं। कभी-कभार पत्र-पेटी में जमा करनेवाले सिक्कों के साथ चिट्ठी से प्राप्त रकम को मिलाकर नानी बालियां, हार तथा चूड़ियां बनवाती थीं। एक बार अठारह चोरदराजों वाली पत्र-पेटी को औंधा करने पर इक्कीस रुपए के सिक्के फर्श पर बिखर गए। नानी ने नारायण को बुला लिया और आधा पवन सोना खरीदने के लिए वे सिक्के सौंप दिए।

"अरे नारायण, इससे एक चूड़ी बना सकते हो ?"

"क्यों नहीं ? चूड़ी तो दो ग्राम सोने से भी बनाई जाती है। लाह कुछ ज्यादा भरना पड़ेगा।"

"तो कल ही आ जाओगे न ?"

"हां।"

अगले दिन सबेरे पूर्वी बरामदे में उण्णिमाया ने कच्चे गोबर से लिपाई-पुताई की। एक घंटे बाद गोबर सूख गया। फर्श से महक आ रही थी। पश्चिमी कोने

में एक अंगीठी बनाई गई। उण्णिमाया ने उसमें भूसा भर दिया।

मैं नाश्ता कर चुकी थी, तब फाटक पारकर नारायणन आ पहुंचा। वह नहा चुका था। उसने धुली हुई धोती में नील और मांड़ देकर पहन रखी थी। नारायण की मुद्रा मंदिर की ओर आनेवाले पुजारी जैसी थी।

नानी नारायणन के लिए कांसे की सुराही में चाय ले आई। फिर केले के पत्ते में चार इडलियां परोस दीं। फिर उन्होंने कहा, ''नारायणन के लिए चटनी रुचिकर नहीं लगेगी।''

तब परनानी बोली, ''उसमें मिर्च नहीं मिलाई गई है। यहां किसी को भी मिर्च अच्छी नहीं लगती।''

''मौसी यह कहना ठीक नहीं कि मिर्च नहीं मिलाई गई है।'' चौके से रसोइया बोल उठा। उसने आगे कहा, ''चार हरी मिर्चें मिला दी हैं। प्याज वगैरह मिलाते नहीं।''

''यहां प्याज का कोई स्थान नहीं है, है न ?'' नारायणन ने हंसते हुए पूछा।

''यहां चौके में प्याज का प्रवेश मना है।'' नानी ने कहा।

नाश्ता करने के पश्चात नारायणन ने कुएं के किनारे जाकर हाथ-मुंह धोया। फिर धीरे-धीरे चला आया और अंगीठी के सामने रखे तख्ते पर बैठ गया। उसने अपने साथ लाई हुई झोली से एक लौह-पेटी और पीतल की एक नली बाहर निकाली। लौह-पेटी के भीतर एक छोटा तराजू, नाग के विभिन्न आकार के टुकड़े, घुंघची, रत्ती, कंकड़, गोंद, मोम आदि चीजें मैंने देखी। उस पेटी में लोलक के आकार के दो हरे पत्थर भी मौजूद थे। मैंने उन्हें हाथ में लेकर उत्सुकता से उलट-पुलटकर देखा।

''बच्ची के लिए एक लोलक बना दूं ?'' नारायणन ने पूछा।

मैंने सिर हिलाया।

''बच्ची के लिए लोलक बनाने को दो ग्राम सोना ही काफी है। पिछले महीने मैंने तेक्किनियेटत्तु की बच्ची के लिए लोलक बनाए थे। लाल पत्थर के हैं। बहुत खूबसूरत बने हैं।''

''क्या नाम है उसका ?''

''उसका नाम बाई है। कमला से दो-तीन बरस बड़ी होगी। वह दो भाइयों की इकलौती बहन है। उसके गले में दो लड़वाला हार है। हाथों में छह चूड़ियां हैं। कानों में दोहरे कुंडल भी हैं।''

''दोहरे कुंडल देखने में सुंदर हैं ?''

''क्यों नहीं ! सुंदर होगा ही। कालत्तु में सभी प्रकार के आभूषण मौजूद हैं। वहां की लड़की की शादी कोच्चि के तंपुरान के बेटे के साथ संपन्न हुई थी न ? फिर ढेर-सारे गहने होंगे ही। कालत्तु में हजार पवन के गहने होंगे।''

"क्या नारायणन नेकलेस बनाना जानता है ?"

"क्यों नहीं ? किसी भी फैशन का हो, मैं बना सकता हूं। बच्ची के पिताजी को रुपए भेजने को लिख दो। पिताजी कलकत्ता से वापस आकर बच्ची को देख लें तो पहचान भी नहीं पाएंगे। कानों में कुंडल, गले में नए फैशन के हार और हाथों में चूड़ियां पहनकर फाटक पर खड़ी हो जाए तो पिताजी पूछेंगे—कौन है यह राजकुमारी ?"

नारायणन ठठाकर हंस पड़ा। मैं भी खुशी से हंस पड़ी और बोली, "वे सब पहन लूं तो मैं भी सुंदर लगूंगी न ?"

"क्यों नहीं ? बच्ची बहुत खूबसूरत लगेगी। बच्ची ने ढेर-सारे आभूषण से अलंकृत चोट्टानिक्करा भगवती को देखा नहीं ? कैसी चमक-दमक है ? यदि लड़कियां गहने पहन लें तो उन्हें देखने के लिए चार आंखों की जरूरत पड़ेगी।" नारायणन ने यह भी कहा कि नालाप्पाट की औरतें जब गांधीजी से मिलीं तो उन्होंने अपने सभी आभूषण गांधीजी को भेंट दे दिए।

"यदि गांधीजी को न दे देती तो वे सब बच्ची पहन सकती थीं।" वह बड़बड़ाया।

"इस गांव से और किसी ने गांधीजी को गहने दिए थे ?" मैंने पूछा।

अच्छा ! कौन ऐसा पागल होगा ! अपनी जरूरत के लिए ही गहने बनाए जाते हैं। वे भाषण झाड़ने आए गांधीजी को कैसे दे पाएंगे ? अरी बच्ची, किसी ने नहीं दिया। ऐसी बेवकूफी यहां के लोग ही कर सकते हैं। क्योंकि सब के सब कांग्रेसी है न ? बच्ची की छोटी मां को किसकी कमी है ? रंग है न ? खूबसूरती है न ? घुंघराले बाल हैं न ? फिर भी रत्ती भर सोना उनके बदन पर नहीं है। गांधीजी की चाल कैसी रही ? औरतों के गले और हाथ के गहनों को ले जाने के लिए ही वे गुरुवायूर आए। वे नालाप्पाट का सारा सोना बटोरकर ले गए।" नारायणन की हंसी ने मुझे परेशान कर दिया। फिर उससे कुछ बोले बिना मैं गुमसुम बैठी रही। उसने चिमटे के सहारे आग से सोने का एक काला टुकड़ा बाहर निकाल लिया।

उसी दिन दोपहर के वक्त ऊपर बरामदे में सूत कात रही नानी से मैंने पूछा, "यहां के सभी कमरों में गांधीजी के फोटो क्यों टंगे हुए हैं ?"

"महात्माजी हमारे लिए भगवान हैं न ?"

"तो महात्माजी के मांगने पर सब कुछ दे देंगी ?"

"दे दूंगी। मांगे तो दिए बिना कैसे रह सकूंगी ?"

"क्या मुझे मांगें तो मुझे भी दे देंगी ?"

नानी तकली फर्श पर रखकर ठठाकर हंस पड़ीं।

"अरी कमला, कभी नहीं दूंगी। महात्माजी ही नहीं यदि गुरुवायूरप्पन भी आकर मांगें तो भी मैं कमला को नहीं दूंगी।"

एक जमाना ऐसा था जब हमारे पड़ोसी तथा रिश्तेदार अंबाषत्त परिवार में, एक नामी रसोइया रहता था। उसका नाम कुंजू नायर था। उसका कद छः फुट था। वह इड़प्पाल का था। शायद अंबाषत्त घर के रसोईघर की चौखट कम ऊंची होने से ही पीठ झुका-झुकाकर चलना उसकी आदत हो गया। वह मुंह में हमेशा पान और तंबाकू दबाए रहता था। बीच-बीच में स्वच्छ हवा की खोज में पानी की ऊपरी तह पर आनेवाली मछली की भांति अंधकार भरे चौके से बाहर आकर एक हाथ से ओसारे का खंभा पकड़े, आंगन की ओर झुककर, जोर से थूकना उसकी आदत बन गया था। कुंजू नायर की बातों का विरोध करने के लिए कोई भी उद्यत न होते थे। दुनिया की सभी घटनाओं के प्रति उसकी अपनी साफ अवधारणा थी।

अंबाषत्त परिवार एक संयुक्त परिवार था। वह परिवार सुसंपन्न था। उस जमाने में किसी मे खानदानी घर के बंटवारे की बात सोची नहीं थी। कुंजू नायर के बनाए व्यंजन सभी को पसंद थे उसकी मृत्यु के बाद वहां आए रसोइयों का हाल बुरा था। उनके बनाए व्यंजन सभी को अखरते थे। यही खानदानी घर के बंटवारे की मुख्य वजह थी। मेरे बचपन के दोस्तों ने ही यह रहस्य मुझे बता दिया था। अंबाषत्त हवेली देखने में खूबसूरत थी। पूरब की दिशा में जो बगीचा था वह जंबू फल के पेड़ और तरह-तरह के जवाकुसुम के पौधों से भरा पड़ा था। पूरबी आंगन में एक छायादार विलायती आम का पेड़ खड़ा था। विस्तृत बरामदे में तीन खंभे थे। बैठने के लिए सीमेंट की ऊंची अथाइयां भी मौजूद थीं। बरामदे में खानदान के मुखिया केशवदास मेनोन बांस के एक पलंग पर आराम से लेटते थे। उनके पास ही अथाई पर कारिंदा बैठता था, जिसको लोग मण्णागंडन कहकर पुकारते थे। केशवदास मेनोन साप्ताहिक-पत्रिका की चित्र-पहेली को सुलझाने में सिद्धहस्त थे। सभी शब्दों के न मिलने पर वे कहते, "अरे मण्णागंडन, सभी शब्द नहीं मिल रहा है।"

"गुरुघायूरप्पन पर मन लगाकर सोचें तो आपको सभी शब्द याद आ जाएंगे, इसमें कोई संदेह नहीं।"

एक बार केशवदास मेनोन को डाक द्वारा पचास रुपए प्राप्त हुए।

"हजार रुपयों को गंवाने के बाद ही सही, अब पचास तो मिल गए हैं।" उन्होंने हंसते हुए बताया।

"आपके अच्छे समय के आने का शकुन दिखाई पड़ रहा है।" मण्णागंडन ने कहा।

उन दिनों नालाप्पाट्ट में रसोइए का काम एक चाप्पन नायर करता था। वह कोरा देहाती था। पुन्नयूरकुलम् के मिलिटरीवाले चाप्पन नायर की भांति इस चाप्पन नायर को अंग्रेजी और हिंदुस्तानी बोलना नहीं आता था। उसके पकाए गए कुम्हड़े के सांभर की महक जिसने महसूस की है, वह कभी उसे भूल नहीं सकता।

शायद इसलिए ही अंबाषत्त घर के बच्चे अक्सर नालाप्पाट आकर खाना खाते थे। हर गुरुवार के दिन अंबाषत्त में बकरी का गोश्त भूना जाता था। नालाप्पाटवाले शाकाहारी थे। वहां प्याज और लहसुन का इस्तेमाल कभी नहीं होता था। शायद इसलिए ही पहले पहल मैंने जब अंबाषत्त का खाना खाया तो भोजन की खास कड़वाहट मुझे बिल्कुल पसंद न आई। नालाप्पाट की औरतें अन्य घरों में भोजन नहीं किया करती थीं। औरों के सम्मुख वे कुछ भी नहीं खाती थीं। फिर स्कूल, कॉलेज तथा सभ्यता के आगमन से सभी अपनी जीवन चर्या को बदल डालने पर मजबूर हुए।

एक दफा मैं अंबाषत्त जाकर लौटी तो नानी ने पूछा, "कालन् ओलन्, एलिश्शेरी आदि व्यंजनों में प्याज था क्या ?"

भूने हुए मटर उबालकर बनाई गई सब्जी मिलाकर मैं भोजन किया करती थी। अंबाषत्त में ब्यालू के व्यंजन नानी की प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं थे। मैंने अपनी सहेली के दबाव से मजबूर होकर पांच-छः बार उस घर में रात काटी थी। बचपन के दिनों में मैंने कभी भी यह सोचा नहीं था कि आखिर मुझे ही उस घर में दुलहन बनकर आना पड़ेगा।

नालाप्पाट का चाप्पन नायर बड़ा भक्त था। उसके माथे पर दिन भर चंदन का टीका और सांझ के बाद भस्म का टीका नजर आता था। उसका माहवार वेतन पांच रुपए था। पहले सप्ताह से ही नानी के हाथों से किश्तों में पेशगी के रूप में सारा वेतन प्राप्त कर लेता था। अठन्नी या चवन्नी, जो भी शेष रहता, वह पहली तारीख को ही नानी चाप्पन नायर को दे देती थीं। महीने में एक बार वह एक धारीदार कुर्ता पहनकर अपने गांव की ओर रवाना होता था। वहां एक रात बिताने के बाद वह लौट भी आता था। अपने गांव जाते वक्त वह कागज की एक पुड़िया में पुए और गुड़ ले जाता था। तब नौकरानी कहती, "वह उसकी बीवी के लिए है। महीने में एक बार मिलने जाते वक्त वह खाली हाथ कैसे जा पाएगा ? वह बेचारा सात्विक है।"

उन दिनों ही तेडियत्त में काम करनेवाली लक्ष्मी नामक औरत ने कच्चा गोबर खा लिया। थोड़ा-सा नहीं, एक कटोरा भर। हमें यह खबर आंगन बुहारनेवाली उण्णिमाया ने दी थी। तेंडियत्तु के छोकरों ने लक्ष्मी से कहा कि एक मुट्ठी कच्चा गोबर खा ले तो उसे एक नथनी देंगे। एकाएक लक्ष्मी गोबर ले आई और खाना शुरू किया। पूरा का पूरा खा लिया तो बुजुर्गों ने कहा, "हमें अभी पता चला कि तू इतनी गंदी औरत है। आइंदा तू यहां काम करने के लिए मत आना।"

"उसे उचित दंड ही मिल गया।" नानी ने कहा।

"कुलच्छनी ! कमबख्त !"

परंतु एक सप्ताह बीतते ही लक्ष्मी फिर से पुरानी नौकरी करने लगी। किंतु

उसका 'लक्ष्मी' वाला नाम छूट गया। इसके बदले वह 'कच्चा गोबर खानेवाली' के नाम से गांव में मशहूर हुई। इस घटना के बाद कोई उसे चौके में घुसने न देता था। केवल झाड़ू-बुहार तथा लिपाई-पुताई के लिए ही वह बुलाई जाती थी।

उन दिनों हमारा एक पड़ोसी एकाएक पागल हो गया। वह सिर और दाढ़ी के बाल बनाए बिना, सोना-नहाना छोड़कर सूर्य की ओर टकटकी बांधे बैठ गया। एक दिन मां के मामा और उनके दोस्त मारात्ताट के शंकरन नायर उसी रास्ते से गुजर रहे थे तब वह युवा उठ खड़ा हुआ और उनकी ओर देखकर सलाम किया।

''कांती (गांधी) की जय, कस्तूरीबाई (कस्तूरबा) की जय।'' वह जोर से बोल उठा। मामा काफी देर तक उसे दुहराते हुए हमें हंसाते रहे।

''उसकी सनक अच्छे किस्म की है...वह अच्छी बात ही बता रहा है न ? किन्हें देखकर उसे कस्तूरबा का भ्रम हुआ ? मामा को देखकर या शंकरन नायर को देखकर ?'' मैंने नानी से पूछा। पर, नानी ने कोई जवाब नहीं दिया।

उस जमाने में नालाप्पाट के घरों में पाखाने न थे। करीब एक फर्लांग की दूरी पर पश्चिमी अहाते के उत्तरी छोर पर एक टट्टी मौजूद थी। उसमें औरतों और मर्दों के लिए अलग-अलग कमरे थे। प्रत्येक कमरे में दो व्यक्तियों के बैठने की सुविधा थी। टट्टी के पीछे बड़े पैमाने पर कोलांबी फूल के पौधे उगे खड़े थे। वहां आक के दो पौधे भी मौजूद थे।

घर के नौकर उस टट्टी का इस्तेमाल नहीं करते थे। उसके इस्तेमाल में उन्हें दिलचस्पी नहीं थी। सांझ के वक्त वे एक साथ पश्चिमी अहाते की ओर या उत्तरी दिशा के नाले की ओर रवाना होते थे। उन्होंने ही यह अफवाह फैला दी थी कि आंवले के पेड़ के नीचे कोई 'भूत' रहता है। संध्या में कोई उस ओर न जाए, शायद इस उद्देश्य से उन्होंने ऐसा उपाय सोचा होगा।

अंधेरे में वे आपस में बातचीत करते थे। कभी-कभी उत्तरी दालान में हो रही बातचीत दूर-दूर तक छाए कोहरे से छनकर मुझे साफ सुनाई पड़ती थी। वे कभी-भी मुझे अहाते की ओर नहीं ले जाते थे। सांप की बात कहकर वे मुझे डराने की कोशिश करते थे। नालाप्पाट में कई प्रकार के सांप रहते थे। एक दिन सबेरे दहलीज पर एक काला नाग दिखाई पड़ा। उसका शरीर ऐसा चमकीला था कि मानो तेल मलकर चिकना बनाया हो। उसे एक घड़े के भीतर घुसाने की कोशिश की गई पर, अचानक वह गायब हो गया। फिर सुना कि कुछ लोगों ने उसे सर्पक्काव में देखा। नालाप्पाट के अहाते और आंगन में तरह-तरह के विषैले सांप बिना किसी रोक-टोक के विचरते रहते थे। तब कोई भी सांपों को मारने के लिए उद्यत नहीं हुआ। सभी को डर था कि यदि कोई सांप को मारे तो उसके श्राप का फल उसकी

संतानों को ही भोगना पड़ेगा।

नालाप्पाट और परिसर में अनेक जीव-जंतु हमारे साथ जीवन बिताते थे। पूरबी आंगन में सेम का जो पंडाल था उस पर हमेशा नीले भ्रमर मंडराते रहते थे। बीच-बीच में तालाब के मगरमच्छ धूप खाने हेतु किनारे पर आ लेटते थे। दीवार पर मकड़ी तथा बिच्छू गश्त लगाते नजर आते थे। घेरे पर नेवले भी दिखाई पड़ते थे। इन सबके बीच बिना किसी आपसी वैमनस्य के हमने जीवन बिताया था। सीढ़ियों के पीछे नारंगी रंग की छिपकलियां विश्राम करती थीं और गुसलखाने में कनखजूरे भी। फिर भी हमें कोई डर महसूस नहीं हुआ। हमारा यही विश्वास था कि वे कोई हमारे दुश्मन नहीं। अनार के पेड़ की टहनियों पर हरे रंग के सांप रेंगते दिखाई पड़ते थे। वे अत्यंत जहरीले थे। फिर भी हम अचार बनाने के लिए अनार तोड़कर मौसी के हाथ में सौंपते थे। चटपटी चीजें बनाने का काम परनानी ही करती थीं। कुम्हड़े और कद्दू के छिलके, करैला आदि खारे पानी में डालने के बाद धूपों में रखकर सुखाए जाते थे।

धान उसनाने का काम परनानी की देखरेख में चलता था। वे बीच-बीच में 'वल्ली', 'काली', 'लक्ष्मी' पुकारती हुई अपने दायित्व-बोध का परिचय देती थीं। शाम को चाय बनाने की जिम्मेदारी छोटी मां के ऊपर थी। हम पूर्वी कमरे को 'चाय का कमरा' कहते थे। वहां एक ताक में चीनी डालने का कुंड़ा, चाय डालने की डिबिया और चाय के प्याले रखे गए थे। छोटी मां को चाय बनाने के लिए रसोइया लोहे की केतली में गरम पानी वहां पहुंचा देता था। खिड़की को खोलने पर भी दोपहर के बाद उस कमरे में सूरज की रोशनी न पहुंचती थी। सेम के पंडाल पर मंडराने वाले भौंरों की गुनगुनाहट सुनते हुए हम चाय पीते थे। चाय के साथ खाने के लिए पकवान नानी ही परोस देती थीं। अक्सर हमें तेल में उबाले केले या पुए या बड़ा खाने को मिलते थे। परंतु विशेष अवसरों में 'कुबिलप्पम्' नामक एक पकवान हमें खाने को मिलता था। यह पकवान केले के पत्ते में लपेटकर भाप में उबालकर बनाया जाता था।

'चिकिड़ा' ही मेरे बड़े भाई का प्रिय पकवान था। एक आंवले के आकार में चावल के आटे का गोला बनाकर, तेल में भूनकर चिकिड़ा बनाया जाता है। वह बनाते वक्त बहुधा चौके से खटर-पटर सुनाई पड़ती थी। किरिया के अवसर पर नालाप्पाट के तालाब के दक्षिणी भाग में स्थित श्राद्ध-कमरे में भोजन पकाने के लिए इलयद् आते थे। उस दिन का भोजन अत्यंत मजेदार होता था। कालन्, ओलन्, एरिश्शेरी, अवियल्, सांभर आदि व्यंजनों के अतिरिक्त अदरख और दही का मिश्रण भी बनाया जाता था। तरह-तरह के स्वादों से संपूर्ण वह भोजन विभिन्न राग-रागिनियों से संपूर्ण संगीत की भांति मजेदार था। भोजन के पश्चात् मैं परनानी के पानदान से पान, चूना, सुपारी आदि लेकर खाती थी। नानी पान नहीं खाती

थीं। वे एक विधवा के लिए निर्धारित की गई सभी शर्तों का पालन करती थीं। वे रात को भोजन नहीं करती थीं। फिर भी ऐसे व्रतों के फलस्वरूप उसकी खूबसूरती पर कोई आंच आई हो, यह मुझे याद नहीं। उसके गाल सफेद काब की तरह थे। आंखें बच्चों की आंखों के सदृश चमकदार थीं। उन आंखों में लाल डोरियां नहीं थीं।

"एक लड़की ने कहा था कि मेरी आंखें कांच की काब में जंबू फल डाले हुए-सी लगती हैं। तब मुझे आशंका हुई थी कि उसकी नजर लगने से मेरी आंखें जाती रहेंगी।" नानी बोलीं।

"नजर लगने का क्या मतलब है ?" मैंने पूछा।

"अरी कमला, उसका मतलब तू न समझेगी।" नानी ने हंसते हुए जवाब दिया।

"अंबिलित्तेल्लणियुन्न तंपुरांटे मकनोट्टा
कोपनुण्णितंपुराने कुपिटुन्नेन् ञान्।"[1]

ओणम के दूसरे दिन नालाप्पाट की दक्षिणी कोठरी में जो 'कैकोट्टिक्कली'[2] हुई उसमें अपनी आंखें मूंदकर गले की नसों को खींचती हुई कण्णत्तु की कोच्चुअम्मा ऊंची आवाज में गा उठी।

"कोच्चुअम्मा माटप्पाट की मालकिनों के गीत ही गा रही हैं। यह कोविलकम् के मालिकों पर लिखा गया है।" नौकरानी लक्ष्मी ने मेरे कानों में फुसफुसाया। उसकी सांस की बदबू से मेरे हाथ-पैर ढीले हो गए।

"अरी बच्ची, मेरी बात सुनती है क्या ?" लक्ष्मी ने पूछा।

"सुन रही हूं।" मैंने तल्खी से कहा।

दक्षिणी कोठरी से ऊपर शयन-कक्ष की ओर जानेवाली जीने की निचली सीढ़ी पर मैं बैठी थी। कैकोट्टिक्कली देखने की मेरी इच्छा को जानकर मेरी नानी ने ही उस गांव की औरतों को आमंत्रित किया था। कई औरतें आ गई थीं। दक्षिणी कोठरी में सबको एक साथ खेलने की जगह नहीं थी। शायद इसलिए ही उनके आने के दस मिनट बाद ही वे शिकायतें करने लगीं। एलियंगाट्टु कोविलकम् तथा अंबाषत्त के विस्तृत आंगन में खेलकर बड़ी हुई औरतों के मन में यदि नालाप्पाट की तंग कोठरी के प्रति घृणा जाग उठी तो उसमें हैरानी की कोई बात नहीं है। शायद उनके दुर्मुख को देखकर घबराने से ही खेल शुरू होने के पूर्व नानी ने नौकर को चाय और पकवान लाने की आज्ञा दी। चाय और तरह-तरह के पकवान के मिलने पर अनमने भाव से ही सही उनमें कुमकियां मुस्कुरा उठीं। एकाध औरतों ने मुझे लाड़-प्यार

1. चांद को सिर पर धारण करनेवाले भगवान शिवजी के पुत्र एकदंत गणेशजी की मैं वंदना करती हूं।
2. **कैकोट्टिक्कली**—एक केरलीय नृत्य

से सहलाया भी।

"क्या अभी तक इस बच्ची का कर्ण-बेध नहीं हुआ ? इसकी उम्र तो सात-आठ हुई है न ? फिर इसके कान कब छिदेंगे ?" एक औरत ने ऊंचे स्वर में पूछा।

किसी ने उनके सवाल का जवाब नहीं दिया। केवल मैं ही बेचैन होकर अपने कानों को खींचती रही। मैंने अपने कानों की नग्नता को छिपाना चाहा। खेलने के लिए आई हुई औरतों की बच्चियां दीवार से उठंगकर बैठी थीं। उनमें मुझसे कम उम्रवाली लड़कियां भी थीं। उनका कर्ण-बेध हो चुका था। उन्होंने बालियां और कुंडल पहन रखे थे। खंभे के सहारे बैठकर अपनी बच्ची को दूध देनेवाली एक औरत पर मेरी नजर पड़ी। उनके कानों में लाल पत्थर जड़ी हुई बालियां लटक रही थीं। बच्ची के कानों में भी छोटे बुंदे थे।

"मेरा कनछेदन कब होगा ?" मैंने पूछा। मैंने इस उद्देश्य से पूछा था कि वह नानी सुन लें। पर मेरे पैरों के पास बैठी लक्ष्मी ने ही उसका जवाब दिया।

"बच्ची का स्वयंवर जब तय होगा तब कनछेदन भी हो जाएगा।"

"मेरा स्वयंवर कब होगा ?"

लक्ष्मी ठठाकर हंसती हुई बोली, "स्वयंवर के लिए इतनी जल्दी ? तो जल्दी बड़ी हो जाओ। खूब घी और दूध पी लो। सात-आठ बरस की बच्ची से तो कोई शादी नहीं करेगा। शादी क्यों की जाती है ? बच्ची को गोद में उठाकर चलने के लिए ?"

उस नीरस विषय से उसका ध्यान हटाने के लिए मैंने पूछा, "ये सब औरतें कौन हैं ?"

"क्या, बच्ची इन्हें नहीं जानती ? वह देखो, वह गीत गानेवाली औरत कण्णत्तु की छोटी मालकिन है। वह पद्मिनिअम्मा की बेटी है। फिर मण्णांतर की कर्तायणी और लक्ष्मिकुट्टि। वहां खड़ी रहनेवाली औरत है—चान्नात्तेल परंपु की..."

"क्या कण्णत्तु की चिन्नु नहीं आई ?" परनानी ने पूछा।

"नहीं, चिन्नु को बुखार है।" उण्णिमायम्मा बोलीं। वे खेलते वक्त बीच-बीच में घुटने टेककर झुकती और उठती थीं।

"क्या लक्ष्मी खेलती नहीं ?" परनानी ने नौकरानी से पूछा।

"अरी मौसी, मैं इस प्रकार झुककर खेल नहीं सकती।" वह बोली।

"मेरी कमर फिर हिलेगी नहीं। क्या तेल मलकर नहा-धोकर एक ओर पड़ी रहने की फुरसत मुझे है ? मुझे यहां सैकड़ों काम है न ?"

परनानी समझ गई कि वह इल्जाम लगा रही है। इसलिए वे फिर चुप रहीं।

"क्या लक्ष्मी को कैकोट्टिक्कली खेलना नहीं आता ?" मैंने उससे पूछा।

"मैं कैकोट्टिक्कली अच्छी तरह जानती हूं। मेरी तरह खेल जाननेवाली और कोई लड़की नहीं। क्या, बच्ची को इसका पता है ? एक बार मूक्कोल के मंदिर

के अहाते में खेल चल रहा था। मुझे भी खेलने के लिए मजबूर किया गया। क्या बच्ची ने उण्णिमेनोन के बारे में सुना नहीं ? जरूर सुना होगा। दुनिया भर में वे मशहूर हैं। देखने में राजा जैसे लगते हैं। गोरे रंग का स्थूल शरीर और घुंघराले बाल। उन्होंने मेरा फोटो खींचा। उन्हें मेरा खेल काफी अच्छा लगा। मैंने जाना कि वे फोटो खींच रहे हैं तो मेरी जान चली गई। मेरी ओर देखकर वहां खड़े लोगों से वे पूछ रहे थे...यह लड़की कहां की है ? इस लड़की का नाम क्या है ? ओह ! मेरी बच्ची, मैं घबराहट के मारे कांपने लगी। मेरे मामाजी यह सुन लें तो मुझे और उण्णिमेनोन को मार डालेंगे।''

''लक्ष्मी के मामाजी को कैकोट्टिक्कली पसंद नहीं ?'' मैंने पूछा।

''कैकोट्टिक्कली ? मेरे मामाजी को ? हाय मेरी मूक्कोल काविल भगवती, बच्ची ने क्या सोचा ? बच्ची ने सोचा होगा कि मेरे मामाजी बच्ची के मामाजी की तरह होंगे। है न ? शायद बच्ची की धारणा होगी कि मेरे मामाजी कैकोट्टिक्कली, ओट्टन्-तुल्लल, नाटक आदि देखते होंगे ? मेरे मामाजी बड़े शूर-वीर हैं। उनके बरामदे में बैठते समय किसी को मुंह तक खोलने की हिम्मत नहीं होती। क्या यह जानती हो ? गांव भर के लोग मामाजी से डरते हैं। औरतें घर के बाहर कदम रखें तो मामाजी उन्हें मार डालेंगे। मामाजी की राय में, औरत हो तो संयम बरतना चाहिए। एक दिन एक चूड़ीवाले को बुलाकर मैंने रबड़ की दो चूड़ियां खरीदीं। क्या कहूं बच्ची, इसी वजह से मामाजी ने मेरी खूब मरम्मत की। मेरे हाथों को जला दिया। मेरे हाथों में दाग देखती हो न ? तीलियों को सुलगाकर मामाजी ने ही मेरे हाथ जलाए थे। अरी मेरी बच्ची, मेरी जान चली गई। मेरे भगवान, आइंदा मैं इस जनम में मर्दों से बात नहीं करूंगी।''

''फिर लक्ष्मी शंकरन से क्यों बात करती है ? शंकरन मर्द नहीं है क्या ?'' मैंने पूछा।

''लक्ष्मी जोर से हंस पड़ी। फिर बोली, ''क्या हमारे शंकरन नायर की बात करती हो? वह न मर्द है न औरत। उससे बात करूं तो मामाजी नहीं डांटेंगे।''

''शंकरन कभी-कभी दाढ़ी बनाता है न ? दाढ़ी मर्द ही बनाते हैं ?'' मैंने पूछा।

''अरी बच्ची, केवल दाढ़ी बनाने से मर्द नहीं होता।'' लक्ष्मी बोली।

''श...श...श...श...लक्ष्मी चुप रह। हमें गाना सुनने दे।'' नानी ने कहा।

''वीराविराटा कुमारा विभो...''कण्णत्तु को कोच्चुअम्मा ने गीत गाना शुरू किया। तभी सभी खिलाड़िनें पसीने से तर-ब-तर हो गई थीं।

''मैं थोड़ी देर यहां बैठूं ! मेरी सांस फूल रही है।'' एक युवती ने कहा। उसने मेरे कपड़े का छोर छूते हुए पूछा, ''क्या यह पारच्यूट सिल्क है ?''

''मुझे नहीं मालूम।'' मैंने बताया।

"तुमने क्यों खेल समाप्त किया ?" लक्ष्मी ने पूछा।

"कल मटप्पाटु में खेल था। वहां से लौटते-लौटते सांझ हो चुकी थी। 'कण्णनामुण्णी' वाला गीत शुरू होते ही दीया जलाया गया। रात भर पैरों में दर्द महसूस हुआ। इसलिए पलभर सो नहीं पाई। कल अंबाषत्त में खेल है। मैं वहां खेलना नहीं चाहती।"

"तुम्हें वहां खेलना पसंद क्यों नहीं ?"

"वहां खेलते वक्त पश्चिमी कोठरी से एक मर्द मुझपर नजर टिकाए खून चूसने लगता है। उस कोठरी में तो अंधेरा ही अंधेरा है। सिर्फ उसकी आंखें चमकती रहती हैं। उसकी आंखें अमावस्या की रात में, जंगली बिल्ली की आंखों के समान चमकती रहती हैं।"

"कौन है वह मर्द ?"

"उसका नाम मैं नहीं बताऊंगी। हम गरीब है। जमीन-जायदाद तो है नहीं। मैं उसकी निंदा करती फिरूं तो मेरी मरम्मत हो जाएगी। मैं मार खाना नहीं चाहती।"

"तुमने अभी कहा न कि वह तुम्हें देखकर खून चूसेगा ! उसे कौन खून ला देगा ? उसे खून कहां से मिलेगा ?"

"यह तो मजे की बात हुई ! क्या बच्ची ने मेरी बात पूरी की पूरी सही मान ली ? उसे मेरा खून मिले तो वह जरूर पी लेगा। पर खून नहीं मिलेगा। मेरा मतलब है, वह मुझे घूरकर देख रहा है।"

"वह क्यों तुम्हें घूरकर देखता है ?"

"यह तो मजे की बात हुई ! खूबसूरत औरतों को मर्द लोग क्यों घूरकर देखते हैं ? बच्ची ऐसा पूछे तो मैं क्या जवाब दूं ? छूने की इच्छा से, और किसलिए ?"

लक्ष्मी और वह औरत खिलखिलाकर हंस पड़ी। तब परनानी ने कहा, "श ...श...श...श। हंसी बंद करो न ! मुझे गीत सुनने दो।"

तभी उत्तरी कोठरी से शुभ्र वस्त्र पहनी हुई वेलुत्तेडत्तु लक्ष्मिकुट्टि चली आई। सभी को उनकी मुस्कान अच्छी लगी। लक्ष्मिकुट्टि के पीछे-पीछे उनकी बेटी बाला भी थी।

"मैं भी साथ हूं ?" लक्ष्मिकुट्टि ने पूछा।

"साथ दो न ! हमारा खेल अभी शुरू होने वाला है।" उण्णिमायम्मा ने ऊंचे स्वर में पूछा, "इतनी देरी क्यों हुई ?"

"ढेर-सारे कोरे कपड़ों की धुलाई करनी थी। कल वे गोबर के पानी में डालकर रख दिए थे। सारे के सारे, राख मिले पानी में डालकर उबाल लिए। इससे हाथ की खाल छिल गई। रात होते ही जलन महसूस होने लगी। जलन असह्य है। क्या कहूं, नींद आई ही नहीं।"

"लक्ष्मीकुट्टि धुलाई का काम क्यों नहीं बंद करती ?" एक औरत ने पूछा।

"जनम तो वेलुत्तेडत्तु में हुआ है। पर ऐसी क्या मजबूरी है कि जिंदगी भर कपड़ों की धुनाई ही करती रहो ?"

"धुलाई के बिना कैसे जी पाऊंगी ? चार आने की रकम तो इससे मिलती है न ? इस लड़की को पाल पोसकर बड़ा बनाना है और किसी के साथ शादी करवाना है। तब तक के लिए मुझे कष्ट झेलना ही है न ? इस लड़की को कम से कम दो जून का भोजन देना है न ?"

फिर किसी ने लक्ष्मिकुट्टि की आलोचना नहीं की। वे भी गीत गाती हुई खेल में शामिल हुईं। बाला ने अपने लंहगे की तह से छह गोल कंकड़ बाहर निकालकर मुझे दिखा दिए।

"मेरे साथ ओसारे में बैठकर खेलने आओगी न ?" उसने पूछा।

"मैं नहीं आऊंगी। मुझे कैकोट्टिक्कली देखना है।"

खेलनेवाली औरतों की ओर देखकर बाला ने मुंह बनाया।

"ये गाने हम कितनी बार सुन चुकी हैं।" वह बड़बड़ाई।

"बाला, यहीं बैठो।" मैं जीने के नीचे की ओर इशारा कर बोली।

वह अपना लहंगा जरा ऊपर उठाकर जीने के नीचे रखे पुराने पायदान पर बैठी।

"यह लहंगा नया है। यदि यह गंदा हो जाए तो मां मेरी पिटाई करेंगी।" वह हंसती हुई बोली।

"अरी बाला, तू काफी अच्छी लग रही है। आषाढ़ का महीना होने पर भी, सेहत खूब निखर आई है।" लक्ष्मी बोली।

"मैं रोज एक कच्चा अंडा खाती हूं। फिर उसके छिलके में जरा तेल डालकर वह भी पी लेती हूं। यही मेरे स्वास्थ्य की दवा है। मेरी मां भी पीती हैं। कल उस मारार ने कहा कि मेरी मां जरा मोटी हो गई हैं।"

"कौन मारार ?" बाला के कंधों को कसकर पकड़ती हुई लक्ष्मी ने पूछा, "किस मारार ने कहा ?"

"एक मारार ।"

"मैं पूछ रही हूं कि वह मारार कौन है ?"

"मुझे नहीं पता। इस दुनिया में जितने मारार हैं, उनमें से एक मारार। मुझे सिर्फ इतना ही मालूम है।"

"अरी, थोड़ी बड़ी हो जाने पर लड़की की अकड़ तो देख ! यह लड़की बहुत छंटी हुई है। मैं तेरी अकड़ खतम कर डालूंगी। मैं तेरी मां से कह दूंगी। अरी लड़की, तू इतनी होशियार मत बनना..."

बाला ने हमदर्दी की याचना करने की मुद्रा में मेरी ओर अपनी बड़ी-बड़ी आंखें उठाकर देखा।

"पंकजाक्षन कटलवर्णन
वासुदेवन जगन्नाथन।"

उण्णिमाया ऊंची आवाज में गा उठी। पसीने से तर-ब-तर उस लाल चेहरे पर मुझे रौद्र भाव नजर आया। मेरी नानी, परनानी, मामा की मां और छोटी मां खेल देख रही थीं।

"मेरे साथ 'कंकड़ी' खेलने आएगी न ?" बाला ने पूछा।

मैं और बाला दोनों घर से बाहर निकलीं। आंगन के बालू में लंहगा जरा ऊपर उठाकर बैठते वक्त बाला ने कहा, "मुझे गाना बहुत पसंद है। परंतु सब मिलकर गला फाड़ने लगें तो मुझे लगता है कि मेरे कान फट रहे हैं।

"मेरे भी कान दुख रहे हैं।" मैंने बताया।

"दोनों कानों में एक-एक उंगली डालकर देखो तो सागर का गर्जन सुनाई पड़ता है।" बाला बोली।

कानों में तर्जनी देने पर एक मील की दूरी पर मौजूद अरब सागर का गर्जन मुझे सुनाई पड़ा। जब मैं बच्ची थी तब मेरे गांव में टेलिविजन, सिनेमा, मनोरंजक साहित्य आदि का प्रचार नहीं हुआ था। शायद इसलिए ही मेहमानदारी को एक कला के रूप में परिपुष्ट करने की भरसक कोशिश सभी ने की थी। मेहमानों को लंबे समय तक घर में रोके रखने के लिए उन्हें मेजबान द्वारा स्वादिष्ट भोजन एवं पुरस्कार प्रदान किए जाते थे। नालाप्पाट पहुंचानेवाले मेहमान लोग कम से कम एक सप्ताह तक वहां खुशी से ठहरते थे। वे मामाजी की वाकपटुता का मजा चखते हुए समय प्रवाह से बेपरवाह होकर अधिकांश समय बरामदे में विश्राम करते थे। वे बड़े मशहूर व्यक्ति होते थे। मामाजी के दोस्तों में वकील, साहित्यकार, कूटनीतिज्ञ डॉक्टर, ज्योतिषी आदि शामिल थे। दोस्तों में श्रीकुट्टिकृष्णमारार प्रमुख थे। साल में कम से कम दो बार वे नालाप्पाट आते थे। प्रत्येक भेंट दो हफ्ते तक बनी रहती थी। मामाजी के निधन के बाद प्रकाशित एक आलेख में यह संकेत किया गया था कि मामाजी किसी को कर्ज देने में रुचि नहीं रखते थे। शायद इसलिए ही मामाजी के आखिरी दिनों में मारार नालाप्पाट नहीं आते थे। मामाजी ने राजा के समान जिंदगी गुजारी थी। परंतु उन्हें धन का अभाव था। उनके सामने रुपए कमाने का कोई मार्ग भी नहीं खुला था। किताबों की बिक्री आसान बात नहीं थी। मारार के अनुरोध ने मामाजी के मन को काफी दुखाया होगा। अपनी गरीबी को खुलकर किसी से प्रकट करने की हिम्मत भी मामाजी में नहीं हुई होगी। जो भी हो वे घनिष्ट मित्र एक गलतफहमी के शिकार होकर जुदा हो गए। जुदा होने के पूर्व कई बार मेहमान बनकर मारार नालाप्पाट में ठहर चुके थे। मामाजी और मारार के वार्तालाप को सुनने हेतु दक्षिणी कोठरी में नानी की गोद में कान लगाकर मैं लेटती थी। मारार की आवाज कमजोर थी। इसलिए उनकी बातें मैं पूर्णतः समझ नही

सकी। मामजी की आवाज जोरदार और परिचित थी। जब मैंने मामाजी से मलयालम पढ़ने की इच्छा व्यक्त की तो उन्होंने मारार की लाई गई 'मलयालम शैली' नामक किताब मेरी तरफ बढ़ा दी। उसे पढ़ने से मैं मलयालम भाषा का इस्तेमाल कर सकी।

मारार बड़े संकोचशील व्यक्ति थे। मामाजी के सिवा वे और किसी से बात नहीं करते थे। वे सर्पक्काव की दाईं ओर और पश्चिमी अहाते में टहलते रहते थे। टट्टी जाते समय ही औरतें खिड़कियों के पास खड़े होकर उन्हें देखती थीं। केवल मारार को नहीं, बाकी सभी मेहमानों को भी औरतें खिड़कियों से देखती थीं। मामाजी के साथ दक्षिणी कोठरी में भोजन करने के लिए बैठनेवालों को उत्तरी कोठरी की खिड़की से देख पाना आसान था। परनानियां तथा नानी काफी समय तक किसी को देखती हुई खड़ी नहीं रहती थीं। देखते रहने मात्र क़ी खूबसूरती किसी मेहमान में मौजूद भी नहीं थी।

मुझे याद है कि चेलनाट अच्युतमेनोन ही ज्यादा भोजन करते थे। खेती बारी तथा किसान-जमींदार संबंध को लेकर सदा गुस्से में बात करनेवाले शंकरन नायर भी कभी-कभी नालाप्पाट आते थे। सब उनसे डरते थे। गोविंद मेनोन नामक एक वकील भी तीन दिन के लिए आ ठहरते थे। ज्योतिषी शूलपाणि वारियर मामाजी के अत्यंत प्रिय व्यक्ति थे। अपने तथा परिवार के सदस्यों की जन्म-कुंडलियों को वारियर से बार-बार दिखवाना मामाजी की आदत बन गया था। ज्योतिष-शास्त्र में भरोसा रखने से ऐसा करते थे या मजाक के तौर पर, यह मैं नहीं जानती। मुझे शंका है कि ज्ञान का प्रत्येक क्षेत्र मामाजी के लिए सिर्फ एक तमाशा था। सभी बातों में हिस्सा लेनेवाले मामाजी किसी में मशगूल नहीं होते थे। सिर्फ एक ही बार मैंने मामाजी को दुखी होते देखा था। मामाजी की मां का पार्थिव शरीर लेकर रिश्तेदार दक्षिणी अहाते की ओर जा रहे थे। उस वक्त मामाजी मधुमेह की बीमारी से पीड़ित होकर दक्षिणी कोठरी में लेटे हुए थे। वे पलंग पर उठंग बैठते हुए यकायक रो पड़े। वे फूट-फूटकर रोए। इस रुलाई को देख मैं हैरान हो गई। क्योंकि हमारे रोते वक्त "छि, छि, रोओ मत" कहकर सांत्वना देनेवाले मामाजी खुद रो पड़ेंगे, मुझे यकीन नहीं आ रहा था। वे अपनी मां से बात नहीं करते थे। दक्षिणी कोठरी के दहलीज पर खड़े होकर आम तौर पर स्त्रियों को लक्ष्यकर ऊंची आवाज में कोई बात कहते थे, सिर्फ इतना ही। कोई बात पूछने पर मेरी नानी ही जवाब देती थीं। नानी सभी औरतों की नुमाइंदा थीं। परनानियां नाम जपकर जिंदगी गुजारती थीं। वे लाखों बार नाम जपती रहती।

नारायणा, राम, राम, नमःशिवाय आदि नाम। मामाजी की मां और परनानी ने गले में कंठी पहन रखी थी। उनकी उंगलियों में सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि की अंगूठियां थीं।

एक दफा मामाजी से मिलने तथा नालाप्पाट में ठहरने के उद्देश्य से वाषकुन्नम् नंबूदरी आ गए थे। मामाजी ने हमको बताया कि वे बड़े जादूगर हैं। हमारी प्रेरणा से मजबूर होकर उन्होंने नालाप्पाट के बरामदे में खड़े होकर जादूगरी का प्रदर्शन किया। मुझे याद है कि उन्होंने सभी की अंगूठियां लेकर मिट्टी में गाड़ने आदि करामातें दिखाई थीं। आखिर, मैं उत्तरी कोठरी में पहुंची तो देखा कि देवकी पसीने में लथ-पथ होकर फर्श पर लेटी पड़ी थी।

"देवकी को क्या हुआ ?" मैंने जोर से पूछा।

"मुझे ऐसा लगा कि मेरे गले का हार पकड़कर कोई खींच रहा है। मेरी चोली के भीतर कोई हाथ डाल रहा है। अरी बच्ची, मैं थक गई।"

"देवकी की चोली के भीतर कौन हाथ डालेगा ?"

"वह नंबूदरी है न ? वह जादूगर।"

"नंबूदरी काफी दूर खड़े थे न ? उसने तो देवकी को देखा तक नहीं।"

"देखा, देखा। दूर खड़े होकर प्रत्येक करतब दिखाते वक्त वे मुझे ही देख रहे थे। बच्ची ने देखा नहीं होगा। वे मुझे देख खून पी रहे थे।"

"देवकी को गलतफहमी हुई है।" परनानी ने बताया। "यूं ही इल्जाम लगा ले तो भगवान रुष्ट हो जाएगा।"

"मुझे कोई देखे या तंग करे, पूछनेवाला कोई नहीं।" देवकी ने उलाहना किया।

"अम्राल को उस नंबूदरी से इतना गुस्सा क्यों है ?" उण्णिमाया ने पूछा।

"देवकी सभी मर्दों से नाराज है। है न ?" मैंने देवकी से पूछा।

"बच्ची ही मेरे मन की बात समझती है।" देवकी बड़बड़ाई। वह उठ बैठी और खंभे से उठंगकर खड़े शंकरन की ओर देखा।

"मर्दों का भरोसा करे तो वे धोखा देंगे। शुरू-शुरू में वे चिकनी-चुपड़ी बातें करेंगे। आखिर वे धोखा देंगे।"

"क्या देवकी को किसी मर्द ने ठगा है ?" मैंने पूछा।

"अरी बच्ची। मुझे कोई धोखा नहीं दे सकता। यदि लाट साहब ही आ जाएं तो भी मुझे धोखा नहीं दे पाएंगे। ऐसी कोई इच्छा हो तो वह मन में ही रखें।"

देवकी जोर-जोर से बात कर रही थी। इसे सुनकर शंकरन आंगन की ओर थूककर चौके की ओर चला गया। उण्णिमाया कटहल काट रही थी। वह सिर झुकाती हुई हंस पड़ी। आखिर उसकी नाक के छोर पर जरा कटहल का गोंद चिपक गया।

"हर जगह गोंद ही गोंद।" वह बोल उठी।

तब परनानी भी जोर से हंस पड़ीं।

भोजन करने के बाद जब नानी आराम करने के लिए ऊपर चली गईं तब लक्ष्मी नामक नौकरानी दौड़कर आई और मेरे कानों में फुसफुसाकर बोली, "कोरत्ती आ गई है।"

"कौन ?"

हस्तिरेखा देखकर भविष्य बतानेवाली कोरत्ती। क्या बच्ची ने कभी कोरत्तियों को देखा नहीं ? वह एक तोते को भी ले आई है। बच्ची कुरत्ती को इकन्नी दे दे तो तोता अपनी चोंच से एक पत्ता निकाल देगा। उसमें बच्ची का भविष्य लिखा होगा।

"कोरत्ती कहां है ?"

"ओखलीखाने के भीतर बिठाया गया है। मौसी देख लें तो हाथ दिखाने की इजाजत नहीं देगी।" कुरत्ती ओखलीखाने के भीतर फर्श पर बैठकर अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। उसका रंग दूध मिली कॉफी जैसा था। उसके माथे और चिबुक पर गहरे हरे रंग के दाग मौजूद थे।

मुझे देखा तो कुरत्ती मुस्कुराई। बच्चे के होंठों के एक कोने से दूध बह रहा था। मुझे ऐसा लगा कि बच्चा मुझे देखकर मुस्कुरा रहा है।

"तुम्हारा नाम कोरत्ती है ?" मैंने पूछा। लक्ष्मी को मेरा सवाल अच्छा न लगा।

"अरी बच्ची, ऐसे सवाल क्यों पूछती है ? कोरत्तियों का नाम होता है क्या ?"

"उनका न नाम है, न घर। वे दर-दर भटकती रहती हैं। उनका कोई ठौर-ठिकाना नहीं।"

"रात को वे कहां ठहरेंगी ?"

"रात में ये पेड़ के तले सोती हैं या किसी पहाड़ी गुफा में। है न कोरत्ती ?"

कोरत्ती मेरी ओर देखकर सिर हिलाती हुई और एक बार मुस्कुराई। उसके मुंह में पान की गिलौरी थी। शायद इसलिए ही उसके होंठ खूब लाल हो गए थे।

"माथे और चिबुक पर पड़े ये हरे-हरे दाग क्या हैं ?"

"वह गोदने का बना है। कोरत्तियां और कुरव गोदनी लगाते हैं। गोदनी लगाने पर घाव से खून रिसने लगता है तब वहां एक विशेष प्रकार के पत्ते का लासा लगाया जाता है।" लक्ष्मी बोली।

तब भी कोरत्ती चुप पड़ी रही। लक्ष्मी की बकझक मुझे कड़वी लगी। मेरे सवालों के लिए कोरत्ती के बदले लक्ष्मी का जवाब देना मुझे बिलकुल अच्छा न लगा। मैं उसको जबरन हटाकर कोरत्ती से सटकर बैठ गई।

"अरी बच्ची, हट जाओ न ! लक्ष्मी चिल्लाई।" कुरत्ती को छू न लो। उसके पूरे शरीर में गंदगी है।"

अपमान का पात्र होने पर भी कोरत्ती मुस्कुरा ही रही थी। कोरत्ती की आंखों में मेरा चेहरा प्रतिबिंबित दिखाई पड़ा। उसके मुंह से तंबाकू एवं नई मिट्टी की

महक आ रही थी।

"अरी बच्ची, जरा हटके बैठो। नहीं तो मैं अभी मौसी को बुला लूंगी। यदि कोरत्ती को छूएगी तो फौरन नहाना पड़ेगा। ये इधर-उधर भटकती रहनेवाली है न ?"

"कोरत्ती का घर कहां है ?" मैंने पूछा। तब भी कोरत्ती ने कुछ नहीं कहा। सभी सवालों के लिए जवाब के तौर पर अपनी मुस्कुराहट है न, यही उनकी मुद्रा थी।

"अरी बच्ची, क्या यह नहीं जानती कि कोरत्तियों को घर नहीं होता ? मैंने कहा था कि कोरत्तियों का कोई ठौर-ठिकाना नहीं। क्या मेरी बात पर भरोसा नहीं ?"

"लक्ष्मी जाकर सो जाओ।" मैंने नौकरानी से कहा।

"अच्छा ! मैं जाकर सो रहूं और उसी ताक में बच्ची को लेकर कोरत्ती यहां से फरार हो जाए तो ?"

कोरत्ती ने सिर हिलाया। उसकी आंखें चमक उठीं।

"क्या कोरत्ती मुझे भगा ले जाएगी ?" मैंने पूछा।

"नहीं ले जाऊंगी।" वह बोली।

"बच्ची दो आना दे देगी। क्या मेरी और बच्ची के हाथ देख लोगी ? पिंजरा खोलकर तोते को बाहर निकालो। तोते को पत्ता चुन लेने दो।" लक्ष्मी बोली।

तभी पहली बार मैंने उस तोते को देखा।

उसका पिंजरा लाल कपड़े से ढका रखा था। कपड़े को हटाकर पिंजरे को मेरे चेहरे के करीब लाकर कोरत्ती ने कहा, "तोते की तबीयत खराब है। इसलिए आज पत्ता नहीं उठाएगा।"

"तोता पत्ता नहीं उठाएगा तो पैसा भी नहीं मिलेगा।" लक्ष्मी बोली।

कोरत्ती का चेहरा उतर गया।

"तोते की तबीयत बिलकुल खराब है। आज उसने कुछ नहीं खाया।"

पिंजरे में रखी कटोरी में सांवां सा कोई धान भरा दिखाई पड़ा।

"जरा दूध दिया जाए तो ?" मैंने पूछा।

"कुछ नहीं पिएगा। उसकी तबीयत ठीक नहीं है।"

"क्या हुआ इस तोते को ?"

"दस्त लगा है। रात-दिन दस्त ही दस्त। किसी की नजर लगी है।"

"क्या यह मर जाएगा ?" मैंने पूछा।

"मुझे नहीं पता।" कोरत्ती बोली।

तोते का रंग हल्का हरा था। चोंच पर भूरे रंग के धब्बे थे। मुझे लगा कि उसकी आंखों से कातरता झलक रही है।

"इसकी आयु कितनी है ?" मैंने पूछा।

"यह तीन सौ बरस का है।" कोरत्ती बोली।

"तीन सौ बरस ? कोरत्ती, सरासर झूठ मत बोलो।" लक्ष्मी बोली।

"ठीक है अम्मा, बिलकुल सच। मेरी दादी मां का तोता है। यह उन्हें उनके पिता से मिला था।"

"इसका नाम क्या है ?"

"शिवकामी।"

"क्या यह मादा तोता है ?"

"हां, मादा तोता है।"

शिवकामी को बाहर निकालकर कोरत्ती ने उसके सिर को चूम लिया। गोद में लेटा बच्चा जागकर रोने लगा।

"क्या मैं तोती को छू लूं ?" मैंने पूछा।

"बच्ची के हाथ से वह उड़ जाएगा। बच्ची के हाथ में तोते को नहीं देना।" लक्ष्मी बोली।

"तोती उड़ नहीं सकती। उसकी तबीयत खराब है।" कोरत्ती बोली।

मैंने अपने हाथों से उसे सहलाया। उसके गले में फड़कती एक नस को मैं आश्चर्य के साथ देखती रही। उसने एक बार अपने पंख फैलाए। फिर पराजित मुद्रा में मेरी हथेली पर ही उकडूं बैठी रही। उसके पंख पर चिपकी धूल को मैंने फूंककर उड़ा दिया।

"मैं इस तोती को फर्श पर रख दूं ?"

"तोती उड़ेगी नहीं।" कोरत्ती बोली।

तोती धीरे-धीरे फुदक-फुदककर ओखली के पास गई। वहां फर्श पर बिखरे दानों को वह अपनी चोंच से बीनने लगी। तोती का दाहिना पैर जरा लंगड़ा था।

"उसके पैर को क्या हुआ ?" लक्ष्मी ने पूछा।

"बिल्ली ने पकड़ा था। पिंजरे की जाली के बीच से बिल्ली ने दबोचा। अरी अम्मा, पैसा दें तो मैं हाथ देख लूंगी।"

मैंने उसको एक आना दिया।

"बेइज्जती का खाना नहीं खाएगी।" मेरी बाईं हथेली को परखती हुई कोरत्ती बोली। फिर वह ओखलीखाने से बाहर निकली और मुंह का पान बालू पर थूक दिया।

"मेरा स्वयंवर कब होगा, यह बता पाओगी ?" लक्ष्मी ने कोरत्ती से पूछा। वह अपने खुरदरे-चौकोर हाथ कोरत्ती की ओर बढ़ाती हुई आंखें मूंदकर ध्यान मग्न सी खड़ी रही। इसे देख मुझे हंसी आ गई।

"बच्ची क्यों हंस रही हो ? गरीबों का क्या स्वयंवर नहीं होता ?"

कोरत्ती ने गला साफ किया। वह लक्ष्मी की हथेली पर काफी देर तक घूरकर

देखती रही।

"अम्मा, तुम्हारी हथेली पर स्वयंवर-रेखा नहीं है।" वह बोली।

"क्या, इस जनम में मेरी शादी नहीं होगी ?"

"नहीं होगी। परंतु संतान-रेखा दिखाई पड़ रही है।" दो बेटे और तीन बेटियां होंगे।"

"हे भगवान, मैं यह क्या सुन रही हूं ! मुझे धोखा देगा ? क्या वह हरामजादा मुझे धोखा देगा ?"

लक्ष्मी फूट-फूटकर रोने लगी। कोरत्ती ने अपनी चोली कसकर बांध ली। फिर बच्ची को झोली में लिटाकर कंधे पर लटका दी और तोते का पिंजरा लेकर घेरे की ओर जल्दी चल पड़ी।

"हाय मेरा पैसा भी गया।" लक्ष्मी रो पड़ी।

"पैसा तो मैंने लक्ष्मी का नहीं, अपना दिया न ?"

"हाय, इस बच्ची का पैसा गया। इन नालायक कोरत्तियों को घर में घुसने ही नहीं देना चाहिए। यदि मौसी जान जाएं तो मुझे ही फटकारेंगी।"

"वह कोरत्ती लक्ष्मी के बुलाने पर ही आई थी न ?"

"यह तो मजे की बात हुई ! इन कोरत्तियों को मैं क्यों बुलाऊंगी ? उसे किसने यहां बुलाया ? मैं नहीं जानती। शायद शंकरन नायर ने बुलाया होगा।" लक्ष्मी धीमी आवाज में बोली।

एक दफा मैं और नानी नौकरों के साथ गुरुवायूर जा रही थीं। जब हम वैलत्तूर पहुंचे तब जोर से 'हो-हो' कहते हुए जानेवाले एक गिरोह को मैंने देखा। गिरोह का नेता एक मोटा आदमी था, जिसने कुर्ता नहीं पहना था। उसके चौड़े मुंह से ही यह कठोर शब्द बीच-बीच में निकल रहा था। नानी मां मेरा हाथ कसकर थामती हुई आम्र के एक पेड़ की आड़ में छिप गईं। शायद घबराहट में पैर फिसलने से ही नौकर-चाकर नारियल के गड्ढे में गिर गए। वे हाथ-पैर पटककर वहां से उठने का प्रयास करते रहे। नानी एक हाथ से मुंह छिपाकर हंसने लगीं।

"हो-हो" मोटे आदमी ने फिर से हाक लगाई। वह मेरी नानी को घूरकर देखते हुए धीरे से निकल गया। नानी के गाल शायद शरम के मारे लाल हो गए।

"वह मोटा आदमी कौन है ? वह क्यों हो-हो की आवाज लगाता है ?" मैंने पूछा।

"वह एक नंबूदरी है। तंपुरान तथा नंबूदरी लोगों के चलते वक्त हो-हो हाक लगाई जाती है। निम्न जातिवालों को रास्ते से हटाने के लिए ऐसा किया जाता है।"

"क्या, निम्न जातिवालों को ?"

"हां, निम्न जातिवालों को।"

"क्या हम भी निम्न जाति के हैं ?"

"हम निम्न जाति के नहीं हैं।...फिर भी हम ब्राह्मण जाति के नहीं।"

"उसे देखकर डर गई, है न ?"

"डर तो नहीं है।" उण्णिमाया नारियल के गड्ढे से उठी। तब भी देवकी अपनी मोटी पिंडली ऊपर उठाकर पटक रही थी।

"हाय, मैं चूर-चूर हो गई।" वह सिसकती हुई बोल उठी।

"नंबूदरी को देखते ही अम्राल की जान चली गई।" उण्णिमाया आगे बोली, "हाथ-पैर पानी के समान ठंड पड़ गए हैं।"

"उठ आओ न, हरकतें मत दिखाओ।" नानी ने झुककर एक हाथ देवकी की ओर बढ़ा दिया।

"मैं चढ़ नहीं पाती...हाय मेरी अम्मा। मैं यहां पड़ी-पड़ी मर जाऊंगी...हाय।"

देवकी की आंखें विकृत हो गईं। पुतलियां ऊपर की ओर सरक रही थीं।

"इसे क्या हुआ ? पागल हो गई क्या ?" नानी ने पूछा। तभी हमें पारकर चले गए नंबूदरी और साथी लोग वापस आ गए।

"क्या हुआ ?" उसने पूछा। नानी चुप रहीं।

"देवकी अम्राल नारियल के गड्ढे में गिर गईं। वे उठ नहीं पातीं। उनकी पुतलियां ऊपर चढ़ रही हैं। पागलपन की शुरुआत लगती है।" उण्णिमाया ने बताया।

नंबूदरी ने देवकी के पैरों की ओर देखा।

"अरे रामा, उसे गड्ढे से उठा ले। उसने अपने गिरोह के एक आदमी से कहा।

एक काले मोटे युवक ने देवकी को बांहों में उठाकर आम के एक पेड़ के नीचे लिटा दिया। तभी उसकी आंखें पूर्णतः बंद हो गई थीं। मुझे ऐसा लगा कि वह सोने का बहाना कर रही है।

"उसे कोई परेशानी नहीं। वह अकड़ दिखा रही है।...अब मैं जाऊं ?" नंबूदरी ने नानी से पूछा।

हो-हो हाक लगाते हुए वे ओझल हो गए तो नानी ने कहा, "आइंदा देवकी को साथ लेकर मैं कहीं नहीं जाऊंगी। बेइज्जती हो गई।"

"क्या देवकी अकड़ दिखा रही है ?" मैंने ऊंचे स्वर में पूछा।

देवकी फिर से सिसकियां भरने लगी।

"उसने मुझे उठा लिया तब उसके नाखून से मेरी जांघ छिल गई। जलन बर्दाश्त नहीं होती।" वह बड़बड़ाई।

"तब देवकी अम्राल होश में थीं, है न ?" उण्णिमाया ने पूछा।

"नंबूदरी के कारिंदे ने जब देवकी अम्मा को उठा लिया था तब वे होश में थीं।" उण्णिमाया ने नानी को बताया।

"आइंदा इसे साथ लेकर मैं इस जन्म में कहीं नहीं जाऊंगी।" नानी ने बताया।

कटलाई मना[1] वालों के तालाब में उतरकर मुंह धोते ही देवकी पूरे होश में आ गई।

"अरी बच्ची, मुझे क्या हो गया, मुझे नहीं मालूम।" वह बोली, "उस नंबूदरी के कारिंदे की आंखों को देखते ही मैं परेशान हो गई। चूजे को नोच खाने को उद्यत चील की तरह उसने मुझे घूर लिया! ऐसा भी कोई देखता है? बच्ची अपना हाथ मेरे कलेजे पर रखकर देखो...कलेजे के भीतर धड़धड़ाहट महसूस हो रही है। मेरे शरीर भर में एक कंपकंपी महसूस हो रही है।...अरी बच्ची, मेरी जांघ पर उसका नाखून धंस गया। मुझे जो भी करे, यहां पूछनेवाला कोई नहीं। मैं गरीब हूं न? मैं पढ़ी-लिखी भी नहीं। चाहे कोई भी मुझे खरोंच ले, यहां पूछनेवाला कौन होता है?"

देवकी गद्गद् होकर बोलती रही। नानी और उण्णिमाया हमसे दस कदम आगे चल रही थीं। वे खीर बनाने के अरवा के बारे में जोर से बात कर रही थीं।

"कोई मुझे पसंद नहीं करता।" देवकी बोली, "मुझे कोई प्यार नहीं करता। मैं मर जाऊं तो भी किसी को क्या हर्ज है? बच्ची के परिवारवाले भी मुझे देखना नहीं चाहते। कल शाम मैं आंगन में फूल तोड़ने गई तो मौसी बोलीं, "देवकी, घर के आंगन में मत टहलना, भीतर चली जा।" शाम को उत्तरी आंगन में चांदनी देखने गई तो बच्ची की नानी बोली, "देवकी, भीतर चली जा। सांझ के वक्त पिछवाड़े में मत ठहरना।" बच्ची ही बताए कि मैं कहां ठहरूं? फूल तोड़ नहीं सकती और चांदनी देख नहीं सकती। यह देवकी अब क्या करे?

एकाएक मेरी आंखें भर आईं। मुझे लगा कि देवकी 'पावंगल्'[2] के कोसत की भांति एक दुखी पात्र है। मैंने उसकी खुरदुरी हथेली थाम ली। मैं रुलाई रोक न सकी। मेरी सिसकियां सुनकर उण्णिमाया ने मुड़कर देखा।

"यह तो मजे की बात हुई! अम्राल ने बच्ची को रुला दिया।" वह बोली।

"मैंने कुछ नहीं किया।" देवकी बोली।

नानी वापस आईं और मुझे गले से लगा लिया।

"अरी कमला, देवकी को कुछ नहीं हुआ। उसने यूं ही घमंड दिखाया है न?

---

1. **मना**—नंबूदरियों के घर को 'मना' कहते हैं।
2. **पावंगल्**—विक्टर ह्यूगो के Les Miserables का मलयालम अनुवाद

किसी का दुख देखना इतना मुश्किल है तो आगे कमला कैसे जी पाएगी ? अरी उण्णिमाया, उसे उठा लो। धूप चढ़ने के पहले ही हमें गुरुवायूर पहुंचना है न ?''

''अरी अम्राल, अपना घमंड और किसी के पास दिखाओ न ? बच्ची के सामने दिखाने की क्या जरूरत पड़ी ?'' उण्णिमाया ने पूछा।

देवकी ने अपनी बड़ी नाक फुला दी। उसकी आंखें लाल-लाल दिखाई पड़ीं। वह फिर किसी नारियल के गड्ढे में उतरकर एकाएक आंखों से ओझल हो गई।

''क्या वह फिर से नारियल के गड्ढे में गिर गई ?'' नानी ने पूछा।

''अम्राल पेशाब करने गई है। मुझे आवाज सुनाई पड़ती है।'' उण्णिमाया बोली।

उन दिनों अंबाषत्त खानदान में बंटवारा नहीं हुआ था। हमारी मामी के तीन भाई और तीन बहिनें उस घर में ठहर रहे थे। शारदोप्पु नाम से जानी जानेवाली शारदाम्मा सबसे छोटी बहिन थी। वे अपने पति तथा बच्चों के साथ एक हफ्ते की छुट्टी में गांव आई हुई थीं। तब एकाएक एक दिन निम्नलिखित शब्द वायुमंडल में गूंज उठे।

''मुनसिफ आ रहे हैं।'' मुनसिफ और उनकी पत्नी, शारदोप्पु तथा उनके पति इंजीनीयर कुमारन मेनोन के मित्र थे। वे कुलीन, सभ्य एवं शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता थे। इन सबके अलावा वे अमीर भी थे।

''मुनसिफ आ रहे हैं।'' मालतिकुट्टि ने मुझसे कहा, ''सुना है कि वे चार दिन अंबाषत्त में ठहरेंगे। उनके बच्चे भी आ रहे हैं। हमारी उम्र की एक बच्ची भी है। बहुत मजा आएगा। हम एक साथ मिलजुलकर खेल सकती हैं न ?''

''मुनसिफ आ रहे हैं।'' पश्चिमी बरामदे से मामी की बड़ी बहिन 'चेरियोप्पु' नाम से पुकारी जानेवाली पारुक्कुट्टि अम्मा ऐसी मुद्रा में जोर से बोल उठीं कि उसके भाई, बहिनें, नौकर-चाकर, भिखारी, गाएं आदि सभी सुन लें।

मीनाक्षी दीदी की निगरानी में घर के सभी कमरों को पानी से धोकर साफ करने का काम शुरू हुआ। बाईं हथेली से नितंब को थामती हुई, दूसरे हाथ में झाड़ू उठाकर मरिया हल्की मुस्कुराहट के साथ इधर-उधर टहलती रहीं। उन दिनों वे बीस बरस की होंगी। उनका शरीर स्थूल था और बाल कमानी की तरह घुंघराले थे। हिंदुओं की चोली और ईसाइयों की धोती उनका वेश था। इट्टियच्चन की पत्नी मरिया—दूसरी मरिया—दुबली-पतली देहवाली थीं। वे हमेशा काम के बोझ को लेकर शिकायत करती रहती थीं। उनके हाथ में लिपाई-पुताई की सामग्रियां दिखाई पड़ीं। उनके दल में बड़ी रोतु, छोटी रोतु नामक दो औरतें भी शामिल थीं। कमरे साफ करते वक्त छोटे-छोटे झगड़ों की आवाज हमें सुनाई पड़ी थी। फर्श साफ करने के

बाद ही आंगन के घास-फूस साफ करने का काम शुरू हुआ था। वह भी ईसाई औरतों की जिम्मेदारी थी। फिर अंबाषत्त घर के नौकरों का दल पड़ोसियों के यहां पहुंचा। नालाप्पाट के पूर्वी बरामदे के सम्मुख खड़े सेम के पंडाल से हजारों सेम उन्होंने तोड़ डाले और अनार के पेड़ को झकझोरकर दस-बारह अनार भी गिरा दिए। फिर उन्होंने उत्तरी अहाते में खड़े भिंडी के पौधों से कच्ची भिंडियां तोड़ डालीं। करैले के पंडाल से करैले और नारियल के पेड़ के नीचे के पंडाल से कद्दू भी तोड़े।

"उस आम के पेड़ से आम मत तोड़ना। वे आम बच्चों को काफी पसंद है।" नानी ने ऊंची आवाज में कहा। इट्टियच्चन, चाप्पन नायर और अच्युतन आम के उस पेड़ पर ध्यान दिए बिना जा रहे थे। नानी की बात सुनकर उन्होंने मुड़कर देखा। आम के पेड़ पर हाथ की ऊंचाई पर स्थित पके आम उनकी दृष्टि में पड़ गए।

"मुनसीफ के भी बच्चे हैं। अरी मौसी, उन्हें भी आम खाने की इच्छा होगी न ?" चाप्पन नायर बोला। अच्युतन आम के पेड़ पर चढ़े। एक टहनी टूटकर गिरी। टोकरी भर-भरके वापस लौटते वक्त खेत से ककड़ी और मांपुल्लि कृष्णन के आंगन से लाल बथुआ भी तोड़ना वे नहीं भूले।

"कुल मिलाकर कितने लोग होंगे ?" नानी ने अलक्ष्य भाव से पूछा।

कोई उसका उत्तर न दे सका। उण्णिमाया ने आकर इत्तला दी कि अंबाषत्त के ओखलीखाने में चूड़ा कूटने का काम चल रहा है।

"लाल चूड़ा है।"

दोपहर के भोजन के बाद सब आराम कर रहे थे तब अंबाषत्त से दुबारा संवादवाहक आ पहुंचे। गोयिश्शार ने दक्षिणी बरामदे में आकर शरमिंदगी से सिर थोड़ा झुकाते हुए खंखार लिया।

"क्या बात है गोयिश्शार ?"

"मुनसीफ को भोजन करने के लिए मेज पर ही केले का पत्ता बिछाना है। इसके लिए एक मेजपोश की जरूरत है। कलकत्ते से लाए कोई मेजपोश हो तो दे देने को कहा है।"

उसी क्षण दूसरा संदेशवाहक हांफते हुए आया और कहा, "चाय के प्याले चाहिए। उनके नीचे रखने के सोसर भी। मुनसीफ को चाय पीने के लिए है।"

नानी हड़बड़ाकर पूर्वी कमरे की ओर भागीं। नानी के गाल लाल हो गए थे।

"प्यालों में धूल भरी पड़ी है। सिर्फ वी. एम. नायर के आने पर ही यहां इनका इस्तेमाल होता है। साबुन लगाकर साफ करने को कह देना, समझा ?" नानी बोलीं।

छह प्याले और तश्तरियां नानी ने रप्पाई के हाथ सौंप दिए। सुनहले किनारेदार

प्याले इग्लैंड में बनाए गए थे।

"सावधानी से ले जाना।" नानी ने रप्पाई को याद दिला दी।

अगर ये टूट गए तो फिर यहां मिलने वाले नहीं हैं। यह याद रहे।" हमारी नौकरानी बोल उठी।

"ओहो, ये प्याले क्या सोने के हैं ?" रप्पाई बड़बड़ाया। बेपरवाही के साथ वे सब एक बोरे में बांधकर उन्होंने कंधे पर लटकाया और चल पड़ा।

धुलाकर रखे गए खद्दर का एक मेजपोश नानी ऊपर से ले आईं। भूरे रंग के उस कपड़े पर फूल और पत्ते कढ़े हुए थे। उसके चारो किनारों पर झालरें थीं।

"अरे गोयिश्शार, इससे काम चलेगा ?"

"चलेगा, जरूर चलेगा। अगले सप्ताह धुलाई करके ला दूंगा।"

"मुनसीफ कितने दिन वहां ठहरेंगे ?" नानी ने पूछा।

"कोई नहीं जानता। गुरुवायूर से छोटे बच्चे का अन्नप्राशन करना है। लगता है कि वे एक सप्ताह ठहरेंगे। सुना है कि वे कुमारन मेनोन के दोस्त हैं।"

"भोजन पकाने का काम किसके जिम्मे है ?" नानी ने पूछा।

"बाहर से कोई नहीं। हम सब हैं न ?"

"सुना है, वे मांस-मछली नहीं खाते। तब तो आसान हुआ। केशव मेनोन ने कहा है कि कालन् बना दें। मुल्लात्त से आठ सेर दूध लाया गया है।"

"क्या, अंबाषत्त में गाय की दुहाई नहीं होती ?"

"दुहाई होती है। पर मुनसीफ आ रहे हैं न ? सभी के लिए काफी नहीं होगा। इसलिए मुल्लात्त के रामन नायर आठ सेर दूध ले गए। अच्छा दूध है। रंच भर पानी मिलाया नहीं है।"

"रामन नायर नेक इंसान हैं।" आस्मान की ओर ताकती हुई नौकरानी बोली।

"खैर, मैं चलूं ?" गोयिश्शार ने एक अंगोछा पहन रखा था। उसके भीतर से उसके कौपीन का छोर दिखाई पड़ रहा था। उसे एक विजय पताका की भांति फहराते हुए वह लड़खड़ाते चला गया। उसके दोनों तलुओं में गोखरू निकल आए थे। इसलिए वह एक दर्द भरी जिंदगी जी रहा था।

अरक का दूध रोज मल लेने पर गोखरू का दाग तक मिट जाएगा।" गोयिश्शार को जाते देखती हुई नौकरानी बोली।

संध्या होने के पहले तेक्केरवीट्टिल कल्याणि अम्मा नालाप्पाट की दक्षिणी कोठरी में पहुंच गई। उनकी चोली पसीने में भीग गई थी।

कहला भेजा है कि अंबाषत्त के लिए एक 'कारोल'[1] चाहिए।

"क्या, आज वहां पुए बनाए जाएंगे ?" नानी ने पूछा।

---

1. **कारोल**—पुए बनाने का बर्त्तन

"कल के लिए है। मुनसीफ आ रहे हैं। बच्चों को खाने के लिए कोई न कोई पकवान बनाना ही है न ?"

"वे कब आ रहे हैं ?" नानी ने पूछा।

वे कब आएंगे ? कोई नहीं जानता। शायद आज रात को आ जाएंगे। वे कार से आ रहे हैं। उनके साथ तीन बच्चे भी हैं। बच्चों की मां भी साथ रहेंगी, जो पट्टांबीवाली हैं।

सोमवार का दिन था। शाम को डाक आया तो चिट्ठियों के साथ एक 'मातृभूमि' साप्ताहिक पत्रिका भी थी। छोटी मां उसे खोलकर जोर से पढ़ने लगी। तब एक मोटर गाड़ी की चटपटाहट हमें सुनाई पड़ी।

"मुनसीफ आ गए।" मैं खुशी के साथ बोल उठी। मैं इस उद्देश्य से ड्योढ़ी की ओर लपकी कि वहां खड़े हो जाएं तो कार के भीतर बैठे लोगों को साफ-साफ देख पाऊंगी।

"कमला वापस आ जा।" नानी झल्लाती हुई बोलीं। मैं लौट आई। तब तक कार अंबाषत्त घर पहुंच चुकी थी।

"एक बच्चे को मैंने देख लिया।" मैंने कहा।

"इस अंधेरे में कार में बैठे लोगों को कैसे देख पाएगी ?" नानी ने पूछा।

"कार के भीतर कौन है ?" मामा ने मां से पूछा।

"मुनसीफ हैं। कुमारन मेनोन के परिचित व्यक्ति हैं। उनके साथ बीवी-बच्चे भी हैं। एक सप्ताह तक वे अंबाषत्त ठहरेंगे।"

मालतिकुट्टि के प्रति मेरे मन में ईर्ष्या जागी। रात होने तक वह मुनसीफ की बेटी के साथ खेल सकती है। मेरे प्रति उसका जो प्यार है, इस नई दोस्ती की वजह से शायद वह समाप्त हो जाएगा।

"मैं कब मुनसीफ को देखने जाऊं ?" मैंने नानी से पूछा।

"मुनसीफ को देखने के लिए कमला को नहीं जाना है। वे जब तक इस गांव से निकल न जाएं तब तक अंबाषत्त में खेलने न जाना।"

"मुझे भी उन बच्चों से मिलना है न ?"

"नहीं।"

"मैं जाऊंगी।"

"यह आमी मुनसीफ को देखने जाने की हठ कर रही है।" बड़े भाई ने शिकायत की।

"वह किसी भी मुनसीफ को देखने नहीं जाएगी। यहां बैठकर खेलेगी। वे बच्चे यहां आ जाएं तो खेल ले। वहां जाना ठीक नहीं।" नानी ने कहा।

"मुनसीफ कमला से मिलने के लिए नहीं, अंबाषत्तवालों से मिलने के लिए आए हुए हैं न ?" परनानी ने बताया। सभी मेरी ओर देखकर खिल-खिलाकर

हंस पड़े।

मंगलवार को, पौ फटते ही कार की आवाज सुनकर मैं जागी। परनानी ने कहा कि मुनसीफ सपरिवार गुरुवायूर जा रहे होंगे। नौकरानी ने फेरे के पास खड़ी होकर कार में बैठे लोगों को आंखें फाड़कर देखा।

कार के जाते ही उसने कहा, "उन बच्चों की मां बड़ी खूबसूरत है। वे मोटी और गोरी हैं। गले में एक मोटी माला है। वह दस पवन की हो सकती है। माथे पर लाल बिंदी है। उन्होंने मेरी ओर गौर से देख भी लिया।"

"क्या मुनसीफ ने भी देखा ?" मैंने पूछा।

"एक छरहरा इंसान सामने की सीट पर बैठे थे। शायद वे ही मुनसीफ होंगे। वे तो अर्धप्राण हैं।"

आधे घंटे के बाद कारोल वापस लाया गया।

"वे सब चले गए।" मीनाक्षी दीदी ने कहा।

"क्या दुबारा नहीं आएंगे ?" नौकरानी ने पूछा।

"नहीं आएंगे। कह रहे थे कि उन्हें छुट्टी नहीं है।"

"हाय, मैं उन्हें नहीं देख पाऊंगी।" मैं गद्गद् होकर बोली।

"कमला बावली हो गई है।" नानी हंसती हुई बोलीं।

उस जमाने में एषिकोट्टयिल कार्तायनी टीचर ही पुन्नयूरकुलम् के सांस्कृतिक क्षेत्र की सम्राज्ञी थीं। बाद में एम. टी. वासुदेवन नायर नाम से विख्यात वासू उन दिनों केवल दुधमुंहां बच्चा था।

टीचर तीसरे दर्जे में पढ़ाती थीं। परंतु, सभी दर्जों की लड़कियां कैकोट्टिक्कली तथा कोलाट्टम में उनकी शिष्याएं थीं। 'रामवर्म राजा प्राथमिक स्कूल' के उत्तरी आंगन में बच्चों को अपने चारों ओर खड़ाकर टीचर ऊंचे स्वर में गा उठी :

"बालकृष्णन चेयूता लीलये पारटी सखी
पारटी सखी अंत कूरेटी सखी।"

लड़कियों ने सुरीली आवाज में गीत को दोहराया। दूसरी पंक्ति का मतलब दुरूह था।

गाना सुनकर स्कूल और परिसर हक्का-बक्का रह गए। गणित पढ़ानेवाले हेडमास्टर चामी अय्यर, अंग्रेजी पढ़ोनवाली एलच्च्वार टीचर, भूगोल पढ़ानेवाले ताच्चु मास्टर, इतिहास के अध्यापक नंपिडि मास्टर, बुनाई के अध्यापक पीटर मास्टर आदि ने चुप्पी साध ली। 'पारटी सखी अंत कूरेटी सखी' वाली पंक्ति ने उन्हें भी असमंजस में डाल दिया। कार्तायनी टीचर के इर्द-गिर्द हमेशा चापलूस लड़कियां मौजूद रहती थीं। ये दूसरों के गंदे चाल-चलन के बारे में बात करना पसंद करती थीं। वह

जमाना धार्मिक रोष की ऋतुवेला का था। टीचर सभी नीति-सभाओं की स्थाई अध्यापिका भी थीं। टीचर हमेशा चित्तीदार साड़ियां ही पहनती थीं। वे तेल लगाए घुंघराले बाल एक डोरी से लापरवाही से बांधे, आंखों में काजल लगाए, गुलाबी रंग की टिकुली लगाकर, पान चबाने से लाल हुए दांतों को अनमने भाव से बाहर प्रकट करती हुई चलती थीं, उसमें गजराज की चाल का सौंदर्य विद्यमान था। उससे असामान्य रोब फटकता था। वे वार्षिक समारोह का प्रारूप अपनी इच्छा के अनुसार तैयार करती थीं। गानों को नृत्य-रूप प्रदान करने में टीचर विशेष रुचि प्रकट करती थीं। ऐसे कार्य कलापों में वे प्रशंसा की पात्र भी बनती थीं। एक वार्षिक समारोह में टीचर का पढ़ाया गीत गाती हुई, एक लाल लहंगेवाली लड़की चेहरे पर पाउडर पोतकर मंच पर हाजिर हुई।

वह लड़की अध्यक्ष एवं सभावासियों की वंदना कर नाचने लगी। बीच-बीच में, बेचैनी से पर्दे के पीछे से सिर बाहर निकालती हुई टीचर उस नृत्य की निगरानी करती रही।

किसी न किसी दिन चेहरे पर पाउडर मलकर सभा की वंदना करने की लालसा मेरे मन में भी पैदा हुई। मुझे यकीन था कि यदि टीचर की कृपा हो तो मैं भी कलाकार बन जाऊंगी। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में मामाजी से बातें करने पर वे बोले, "वह गीत एक बार और सुना दे। मैं भी सुनूं !"

"बालकृष्णन चेय्ता लीलयें पारटी सखी
पारटी सखी अंत कूरेटी सखी।"

"छि ! छि ! बहुत बुरा हुआ। मैं चामी अय्यर से कहूंगा कि ऐसे फूहड़ गाने बच्चों को न पढ़ाएं।"

"हाय, टीचर मुझे मार डालेंगी।"

"कौन ? वह एषिक्कोट्टयिल कार्तायनी ? क्या वे आमी को मार डालेंगी ? तो मैं देख लूंगा।"

उसके बाद जब भी कार्तायनी टीचर अपने परिजनों के साथ फाटक के बाहर की गली से जाती थीं, मैं मारे डर के दक्षिणी कमरे में छिप जाती थी। मुझे डर था कि यदि मामाजी उन्हें भीतर बुलाकर गाने के बारे में बात करें तो वे मेरी दुश्मन हो जाएंगी। परंतु मामाजी ने कभी भी उन्हें भीतर नहीं बुलाया। मामाजी ने हेडमास्टर से कहा कि वार्षिक समारोह में तमिल मिश्रित मलयालम कविताओं का गाना उचित नहीं।

"तमिल हो तो ठेठ तमिल। मलयालम हो तो ठेठ मलयालम। दोनों को आपस में न मिला लें।"

उस दिन से पुन्नयूरकुलम के बच्चे वल्लत्तोल, आशान, चंगंपुषा आदि की कविताएं गाने लगे। उस दिन से उस गांव के एक सांस्कृतिक आंदोलन की शुरुआत

हुई। इसी बीच 'ओम् परब्रह्मोदय नाट्यसमिति' के 'भिक्षुणी' नामक नाटक का सर्वप्रथम मंचन पुन्नयूरकुलम् में हुआ। स्कूल की उत्तरी दिशा में अंबाषत्तवालों की जो जमीन खाली पड़ी थी, उसमें ही अस्थाई मंच खड़ा कर दिया गया। नाटक शुरू होने के पिछले दिन ही उस अहाते में व्यापारियों की बेंचें दिखाई पड़ीं। मूंगफली, मैसूर बोंड़ा, हलवा, केला, रंगीन शरबत आदि चीजें प्रदर्शित की गईं। उन दिनों सबसे ऊंचे दर्जे के टिकट के लिए एक रुपया देना पड़ता था। ऐसी एक सीट पर मैं, बड़े भाई और मां के बीच पर्दा उठने की प्रतीक्षा करती हुई, धड़कते दिल से बैठ गई।

पहले पहल एक गाना। 'ओम् परब्रह्मोदय नाट्य समिति।' आहा, कितना खूबसूरत नाम हैं ! वह नाम ही एक गाना था। मंगलाचरण के बाद पर्दा उठा।

चेहरे पर सफेद रंग और गालों पर लाल रंग लगाए, कमर में चिथड़े बांधे हुए एक भिखमंगा प्रकट हुआ। उसके साथ एक लड़की भी थी। वह हमें देख कातर स्वर में गा उठा :

याचकों में याचक हैं हम...''

मैं सिसकियां भरने लगी।

''यह नाटक है न ? अभी से रोना शुरू हुआ तो ! अरी कमला, यह क्या कर रही है ?'' नानी बड़बड़ाई।

''इस आमी को नाटक देखने के लिए नहीं लाना चाहिए था।'' बड़े भाई बोले। मैंने अपनी बंड़ी के छोर से आंसू पोंछ लिया। भिखमंगे ने ऐसी मुद्रा से अपनी जीवन गाथा का वर्णन शुरू किया जैसे कहीं से उसे प्रेरणा मिल रही हो। उसने कहा कि उसकी बेटी के लिए उसके सिवा और कोई सहारा नहीं है। वह लड़की एकटक हमें ही देखती रही। लड़की के लंहगे का छोर फटा दिखाई पड़ा। परंतु उसके होठों पर लाल लिपिस्टिक था और चेहरे पर पाउडर।

एक छोकरा रेवड़ी बेचने हमारे पास आया। मेरे मन में वह खाने की इच्छा हुई।

''छिः ! कमला, क्यों ऐसी चीजें खाने की इच्छा करती है ? आश्चर्य होता है !'' नानी ने तल्खी से कहा, ''कल हम रेवड़ी बना लेंगी, ठीक है ?''

मैंने सिर हिलाया। नानी नाटक देखने की अपेक्षा अपने इर्द-गिर्द बैठे परिचित लोगों से हंसने में रुचि दिखा रही थीं। एलियंगाट की मालकिनों, पालिश्शेरी की अम्मुअम्मा तथा कोलियत्त की लक्ष्मिकुट्टि को देखने पर नानी को जो खुशी हुई, वह अपनी मुस्कुराहट के द्वारा उन्होंने प्रकट की।

''एक शादी में भाग लेने जैसा अनुभव। है न कमला ? सभी से मुलाकात कर सकी।''

असल में, मेरे बड़े भाई ही नाटक देख रहे थे। दर्शकों में ज्यादातर लोग आपस में बातचीत कर रहे थे। बीच-बीच में 'अप्पुणी', 'सुशीला', 'मणी' आदि

पुकारती हुई कुछ औरतें इधर-उधर भटक रही थीं। एक रुपया टिकटवाली पंक्ति में कार्तायनीअम्मा टीचर भी बैठी थीं। निचली श्रेणी के टिकट लिए हुए लोग बालू पर बैठे थे। उनमें कुछ लोग वहां लेटकर सो रहे थे। जो रंगमंच पर गाना शुरू होते वक्त सो जाते थे, वे कभी-कभी हड़बड़ाकर उठ बैठते थे। सिर घुमाते ही उनकी आंखों में पेट्रोमैक्स की रोशनी प्रतिफलित होती थी। पेट्रोमैक्स से नाग की भांति फुफकार सुनाई पड़ती थी। बीच-बीच में एक सफेद कुर्ता पहने व्यक्ति एक चौकी पर चढ़कर उस दीए में हवा भर रहा था। "कभी बम फटने की भांति यह पेट्रोमैक्स फट जाएगा।" आम जनता को एक भोली हंसी प्रदान करते हुए तोमस मास्टर नामक मूंछदार आदमी ने कहा। "अंगमाली में ऐसी एक घटना घटी थी। इकतालीस लोग मारे गए थे।" तोमस मास्टर ने स्पष्टीकरण के तौर पर कहा। उनकी मुस्कान चमक उठी। मेरे पीछे बैठी एक औरत उठ खड़ी हुई और बोली, "मैं जा रही हूं। मुझे नाटक नहीं देखना है। यह पेट्रोमैक्स फट जाए तो सब लोग मर जाएंगे न ?"

"अम्मिणी दीदी, बैठो न ? जनम लिया तो मरना ही पड़ेगा न ? इतना डर क्यों है ? नाटक देखने के लिए एक रुपया दे दिया है न ?"

सबके पीछे नाटक मंड़ली के प्रतिनिधि खड़े थे। वे बीच-बीच में 'श...श ...श...श...'बोलते रहे। टिकट के बिना अहाते तथा पेड़ के ऊपर खड़े होनेवाले दर्शकों को खदेड़ने का काम उनकी जिम्मेदारी थी। इसलिए बीच-बीच में वे अंधेरे में टटोलते हुए आगे बढ़ते रहे। एक बार पिटाई की आवाज भी सुनाई पड़ी। 'पकड़कर कुएं में फेंक दूंगा।' किसी की खुरदुरी आवाज सुनाई पड़ी।

उसी क्षण दर्शकों के बीच से एक आवाज उठी, "सी. आर. आ रहे हैं। सी. आर. आ रहे हैं।" मैंने मुड़कर देखा। कल्लूरकाट के कोच्चुण्णि नायर सपरिवार फानूस लिए परिजनों के साथ आ गए हैं। लकीरदार कुर्ता, दोतल्ली धोती, लंबा दुशाला, स्थूल शरीर, कनखियों में मुस्कान, यही उनका हुलिया था।

"नाटक अभी शुरू हुआ है। आपके लिए दुबारा शुरू करने को कहूं ?"

"नहीं।"

नई कुर्सियां डाल दी गईं। उनकी बहिनें तथा बड़ी बहिन की एक बेटी भानू भी आ गई थीं। भानु मेरी सहेली थी। 'सबके सब हैं।' नानी बोलीं। उन्होंने आगे कहा, "मैं सोच रही थी कि क्यों कल्लूरकाट से कोई नहीं आया ? अब कल्लूरकाटवाले भी पहुंच गए। कुट्टप्प मेनोन, लक्ष्मिकुट्टिअम्मा और उनकी संतानें हैं; पालश्शेरिवाले है; मणियन मेनोन हैं, कालत्तवाले हैं, सबके सब हैं, डाक्टर कुमारन भी मौजूद हैं।

नानी काफी खुश दिखाई पड़ीं। वे नाटक नहीं देख रही थीं। इसलिए उन्हें नट-नटियों के दुख में भाग नहीं लेना पड़ा।

नालाप्पाट वापस आते ही रसोइया शंकरान ने कहा कि उसने भी नाटक देख लिया है।

"*याचकों में याचक* वाला गीत शंकरन को पंसद आया क्या ?"

"अरी बच्ची, मुझे कोई गीत याद नहीं। वह लड़की देखने में बड़ी खूबसूरत है।"

नालाप्पाट के अहाते की पश्चिमी सीमा पर एक छतिवन वृक्ष खड़ा था। उसके तले खड़े हो जाने पर वेलुलेडत्त की लक्ष्मिकुट्टि का कच्चा मकान, सोडा मिले पानी में कपड़े उबालने पर उमड़नेवाला धुआं आदि दिखाई पड़ता था। ज्यादा गौर से देखें तो दालान में बैठकर 'कंकड़ी' खेलनेवाली बाला भी नजर आती थी। बाला लक्ष्मिकुट्टि की बेटी थी। कपड़े की धुलाई में वह अपनी मां की मदद करने में दिलचस्पी नहीं दिखाती थी। उसे गाना सीखने में ही रुचि थी। अंधा कुट्टप्पन भागवतर नालाप्पाट आकर गाना गाते वक्त बाला दौड़ आती थी। गुरुवायूर मंदिर के सम्मुख की गली से एक बार उसने गानों की एक किताब खरीदी थी। लक्ष्मिकुट्टि उसके लिए खजूर, कांच की चूड़ियां तथा कपड़े खरीदने को तैयार थीं। पर बाला सिर्फ गानों की एक किताब खरीदकर खुशी के साथ घर लौटी।

लक्ष्मिकुट्टि हर महीने की प्रथम तारीख को गुरुवायूर जाती थीं। विशेष दिनों में भी वे मंदिर जाकर दर्शन करती थीं। वे भी मेरी नानी की भांति कृष्णभक्त थीं। विशेष दिनों में नानी कभी भी गुरुवायूर मंदिर नहीं जाती थीं। वे कहती थीं कि वहां की भीड़-भाड़ बर्दाश्त नहीं होती। वे पूछती, "अरी लक्ष्मिकुट्टि, क्या एकादशी के दिन वहां बड़ी भीड़ थी ?"

"भीड़ के बारे में क्या बताऊं ? ऐसी भी कोई भीड़ होती है ? सुई चुभाने की जगह भी नहीं। बच्ची को कंधे पर डाल न देती तो वह रौंदी जाती।" लक्ष्मिकुट्टि बोली। नीला और कलफ लगाकर धुले कपड़ों की शोभा उसकी मुस्कुराहट में भी झलक पड़ती थी।

गुरुवायूर जाते समय लक्ष्मिकुट्टि अपनी मदद के लिए नालाप्पाट की किसी नौकरानी को भी ले जाती थीं। अक्सर नौकरानी देवकी उनका साथ देती थी। वापस आने पर उस दिन का सारा कार्यक्रम वह मुझे बता देती थी। गुरुवायूर नालाप्पाट से छः मील की दूरी पर स्थित है। आधी दूरी का रास्ता तय करने पर कल्लाय मना का तालाब नजर आता है। उसमें उतरकर हाथ-मुंह धोने के बाद यात्रा फिर से शुरू होती है। नसीब हो तो कभी-कभी नारियल का पानी या छाछ, कोई पीने को देता था। मंदिर के दर्शन के बाद सीधे मंदिर के सामने की गली में उतर जाती हैं। 'होटल डी कृष्णा' नामक दुकान में जाकर चाय, बड़ा, डोशा, सुखियन आदि खा लेती हैं। चूड़ियां, कपड़े, मुरूक, खील आदि खरीद लिए जाते हैं। ये सब गांधीजी छाया थैली में डालकर उसे उठाती हुई वापस आ जाती है।

"वैलत्तूर को पार करते ही मेरी मां और देवकी दीदी ने नारियल के पेड़ के

नीचे पेशाब कर दिया।'' बाला ने कहा।

नानी नाव पर ही गुरुवायूर जाती थीं। मुंह अंधेरे ही एक जुलूस की तरह हम घाट की ओर रवाना होते। सबके आगे, मशाल लेकर मापुंल्लि कृष्णन रहता था। उसके पीछे कृष्णन की पत्नी वल्ली रहती थी। उनके पीछे किसी के कंधे पर मैं सवार होती थी। मेरे पीछे नानी रहती थीं। नानी के पीछे फानूस लेकर नौकरानी रहती। घाट के किनारे केतकी के पौधे और झाड़-झंखाड़ उगे खड़े थे। उनके बीच से लगातार झींगुरों की आवाज सुनाई पड़ती थी। इसी बीच अपने पीले पैरों को फैलाते हुए एक मेंढक सामने की ओर लपक पड़ा। नाव खेनेवाले केलु के होंठ दोनों ओर फटे दिखाई पड़े।

''उनके होंठ क्यों ऐसे दिखाई देते हैं ?'' मैंने देवकी से पूछा।

''केलु को मुंह-फोड़िया है।'' वह बोली।

''क्या मुझे भी मुंह-फोड़िया लग जाएगी ?'' मैंने पूछा।

देवकी ने जवाब नहीं दिया। नाव खेते वक्त केलु मेरी ओर देखकर हंसता रहा। मैं बीच के तख्ते पर देवकी के पास बैठ गई। नाव के भीतर चटाई में धोती बिछाकर नानी लेटी रहीं। एक बार नानी ने पानी में झुककर उल्टी की। फिर एक बार नानी ने पानी से एक कुमुदिनी तोड़कर मुझे दी। देवकी ने कहा कि वह कुमुदिनी की नाल से हार बनाना जानती है गुरुवायूर पहुंचकर वहां के एक देवी मंदिर के तालाब में नहा लेने की बात मुझे याद है। हमको नहाते देखते हुए एक मोटा कीर्त्तनिया खंभे से उठंगकर खड़ा था। वह बीच-बीच में बांसुरी बजाने का अभिनय कर रहा था।

''वह हमारा सांप-गोविंदन है।'' देवकी बोली। वह बेचारा पागल है। पर उससे किसी को कोई मुसीबत नहीं। उसका विचार है कि 'वह श्रीकृष्ण है।' भगवान के दर्शन के तुरंत बाद हम पिता के घर रवाना होते थे। 'होटल डी कृष्णा' में जाने के लिए मैं नानी को मजबूर करती थी। परंतु तल्खी के साथ वे मेरे हाथ थामकर घसीटती हुई मम्मियूर मंदिर की ओर जानेवाली सड़क पर उतर जाती थीं।

पिता के खानदानी घर वाटेक्करा में चमेली, शंखपुष्प आदि के पौधे उगे थे। फाटक पार करते ही बादाम का पेड़ नजर आता था। हमारे पहुंचते ही फूफी चाय और इड्डली देकर हमारी खातिरदारी करती थीं। भोजन के बाद औरतों को घर के भीतर छोड़कर मैं दालान में पहुंचती थी। तब 'चेंपन' नाम से जाने जानेवाले एक बूढ़े आदमी मुझे चित्रकला सिखा देते थे। वे कहते थे, ''हाथी और हाथ की तस्वीरें खींचना सीख लिया तो सब कुछ सीख लिया।'' एक बार उन्होंने मुझे हाथी और हाथ की तस्वीरों से भरी एक किताब दे दी। केले के डंठल को काटकर चौसर की गोटें बनाने की कला भी उन्होंने मुझे सिखाई। मैं और मेरे बड़े भाई चौसर खेलने लगे तो नानी ने कहा, ''छत पर जाकर खेलो...किसी की नजर न लग जाए।''

नानी का विश्वास था कि हमारी बुद्धि काफी तेज है। जब हम आपस में अंग्रेजी में बात करते थे तब वे हंसती हुई उसे सुनती रहती थीं। किंतु हमारी अंग्रेजी सुनकर दूसरे बच्चे हंसी उड़ाने लगे तो हमने उसका इस्तेमाल करना छोड़ दिया।

"अरे देख...ये अंग्रेजी में ही टट्टी कर रहे हैं..." उन बच्चों के डर से फिर हमने अंग्रेजी छोड़ दी। दूसरा विश्वयुद्ध कब समाप्त होगा, और कब हमें दुबारा कलकत्ता जाने का मौका मिलेगा, कोई यह बता नहीं पाता था।

उन दिनों पेरुमाल चेट्टि पुन्नयूरकुलम् में सभी के लिए सुपरिचित व्यापारी था। महीने में एक बार वह कपड़ों की गड्डी ढोते हुए नालाप्पाट आता था। वह कम दाम की धोतियां बड़े दाम में बेचता था। प्रत्येक धोती की प्रशंसा में मोहित होकर लोग अपने हाथ की सारी रकम चेट्टि को दे देते थे। पैसा न देने पर भी पेरुमाल चेट्टि को कोई परेशानी महसूस न होती थी। क्योंकि उसको पूरा यकीन था कि किसी न किसी दिन कर्ज अदा किया जाएगा।

"लाल किनारेदार धोती अम्मा के लिए ठीक रहेगी।" उसने कहा। उसकी लंबी मूंछ थी। दांत बट्टे की तरह बड़े-बड़े थे। "क्या पेरुमाल चेट्टि कोई असुर है ?" मैं बहुधा नानी से पूछती थी।

"वह तो बेचारा है।" नानी ने कहा।

चेट्टि अमीरों के घर अंबाषत्त में, साल में दो ही बार जाते थे। ओणम और विषु के दिन वहां के नौकरों को देने के लिए चेट्टि से ही धोतियां खरीदी जाती थीं। मालिक और मालकिनें चेट्टि से खरीदी धोतियां कभी नहीं पहनते थे। 'चेन्नमंगलम् धोती' बेचनेवाले वेलायुधन मेनोन को बुलाकर वे धोती चुन लेते थे। वेलायुधन मेनोन कभी भी धोती का गट्ठर सिर पर लादे नहीं चलते थे। उनके साथ गट्ठर ढोनेवाले नौकर भी रहते थे। अक्सर उन्हें घर के भीतर ही पत्तल बिछाकर भोजन दिया जाता था। भोजन के वक्त यदि पेरुमाल चेट्टि आ जाए तो उसके लिए कुएं के सामने के दालान में भोजन दिया जाता था। परंतु भोजन की तारीफ करने में चेट्टि को हराना किसी के वश की बात नहीं है। प्रत्येक परिवार के संबंध में आम जनता में ऊंची अवधारणा पैदा करने में ऐसे मेहमानों ने काफी मदद की है। शायद इसलिए ही सभी मेहमानों को भोजन दिए बिना विदा करना घरवालों को मंजूर न था।

एक सप्ताह में करीब तीस आदमी नालाप्पाट में भोजन करने आते थे। उनमें पागल तामी, पेटू रामन नायर, अंधा भागवतर, गूंगी लड़की, कठमलिया धर्मानंद आदि प्रमुख थे। तामी काली धोती पहनकर प्रकट होता था। वह अपने लंबे बालों में कभी-कभी कंघी चलाता था। यदि उससे कोई कहे कि 'तामी अंग्रेजी बोलो' तो

एकाएक वह अंग्रेजी से मिलती-जुलती एक भाषा में भाषण देने लगता था। भाषण के अंत में वह बंदूक चलाने का अभिनय भी करता था। मैंने यह भी सुना कि तामी दूसरों की आंखें बचाकर नौकरानियों को अपने शरीर के सभी अंग दिखा देता था। 'धोती उठाकर चूतड़ दिखाता है, साला' मेरी सहेलियों में से एक ने कहा।

"तामी चूतड़ क्यों दिखाता है ?" मैंने एक बार उससे पूछा। वह मेरी ओर देखकर मुस्कुराया।

"क्या बच्ची को भी देखना है ?" उसने पूछा।

"क्या ?"

"मेरा चूतड़।"

मना करते हुए मैंने सिर हिलाया।

"मुझे नहीं देखना है।"

मैंने नानी से तामी का सवाल दोहराया तो वे कड़ककर बोलीं, "पाजी कहीं का। आइंदा वह यहां आ जाए तो उसे खदेड़ना है। वह पागल नहीं, बदमाश है।"

पेटू रामन नायर को सभी पसंद करते थे। वह गोरा छरहरा अधेड़ उम्र का इंसान था। नील मिलाकर धुलाई गई धोती ही वह पहनता था। बारह बजते ही उत्तरी दिशा में खड़े आम के पेड़ के नीचे वह आसन जमाता था। बालू में पत्तल बिछाए भोजन की प्रतीक्षा में काफी देर तक मुस्कुराते हुए पेड़ की छाया में वह आराम करता था। दो कलछी भात झट से सिर्फ सांभर मिलाकर खाने में रामन नायर को कोई परेशानी नहीं होती थी। सब कहते थे कि वह सुशिक्षित एवं कुलीन है। कुछ लोगों द्वारा यह कहते सुना था कि मिरगी लगी एक रिश्तेदार की शादी रामन नायर के साथ करवा सकते हैं।

"उससे कोई झंझट नहीं होगी। पेट भर भोजन दे दे तो वह खुशी से पड़ा रहेगा।" एक स्त्री ने कहा।

छि ! छि ! एक भिखारी के साथ एक लड़की की शादी करवा रहे हो ! ऐसा कभी नहीं हो सकता।" दूसरे ने कहा।

ये सब सुन लेने के बाद एक दिन मैंने रामन नायर से पूछा, "शादी कब होगी ?"

"किसकी शादी ?"

"रामन नायर की शादी। सुना है हाल ही में होने वाली है।"

रामन नायर भोजन पूरा किए बिना ही उठकर चला गया। मुड़कर देखे बिना वह खेत के किनारे से जल्दी-जल्दी चलकर ओझल हो गया।

गूंगी लड़की हमारे साथ खेलने आती थी। हम यह नहीं जानते कि उसे और कोई नाम है या नहीं ? वह हमेशा 'बा...बा...बा...' बोलती हुई अपनी अंगिया

और धोती खींचती हुई आंखें दिखाती थी। उसकी मां कहती कि वह नए कपड़े की इच्छा प्रकट कर रही है। उसे जब भी नए कपड़े दिए जाते, मां उन्हें बाजार ले जाकर बेच देती थी। एक कपड़ा भी गूंगी को नहीं मिलता था। फिर भी वह हमेशा हंसती रहती थी। वह दौड़ा-दौड़ी के खेल में चतुर थी। मेरा उसे छू लेना नानी को पसंद न था।

"कमला के बदन भर उस गूंगी की बदबू है।" नानी ने एक बार कहा।

"वह कैसी बदबू है ?"

"मछली की बदबू सी। वह वही खाती है न ?"

"नानी मेरे शरीर पर लिंडा साबुन या टरकिष बाथ साबुन ही लगाती थीं। वे दोनों साबुन सस्ते थे। कभी-कभी मैं कलकत्ता से मां के लाए गए विनोलिया वैट रोस साबुन का इस्तेमाल भी करती थी। नानी एक साबुन को दो टुकड़ों में बांटकर साबुनदानी में रखती थीं। वह एक प्रकार की कंजूसी थी। मेरे शरीर और सिर पोंछकर गीला अंगोछा पानी में धो लेने के बाद ही नानी इस्तेमाल करती थीं।"

साधु धर्मानंद श्लोक गाते हुए फेरा तोड़कर आंगन में घुस आता था। फाटक से आने की हिम्मत उसमें नहीं थी। मामाजी साधुओं से घृणा करते थे। धर्मानंद पलभर में कविता करता था। एक दफा उसने पुन्नयूरकुलम् के पास बस रहे एक अंग्रेज साहब की बीवी को तंग किया तो नाराज होकर उन्होंने एक थप्पड़ लगा दिया। तब धर्मानंद ऊंची आवाज में गा उठा :

"साधु धर्मानंद के गालों पर
निभा दिया तू अपना काम-धर्म।"

मैंने उन पंक्तियों को कंठस्थ कर गाया तो नानी ने फटकारा, "मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह इतना उजड्ड है। आइंदा उसे यहां आने न देना।" नानी ने नौकरों को बताया।

"ऐसे कठमलिए घर में घुसाने लायक नहीं होते।" रसोइया सांभर में करछुल चलाते हुए बोला।

एक दफा एक जवान लड़की एक सुनार के साथ प्रेम संबंध जोड़कर उसके साथ चुपके से भाग गई। उस लड़की को हमारे खानदान वालों के साथ दूर का रिश्ता था। यह पलायन मामूली सा नहीं था। वह लड़की अपनी मां को भी साथ ले गई थी। फिर तंगी के बढ़ जाने पर उसने मां को घर से निकाल भी दिया। तब तक मां अंधी हो गई थीं। बस अड्डे पहुंचकर उन्होंने भीख मांगना सीखा। वहीं से मेरी मां और छोटी मां के साथ उनकी मुलाकात हुई और उन्हें बचा लिया।

"अब से उण्णिमायम्मा कहीं नहीं जाओ। नालाप्पाट में ही ठहर जाओ। ठीक

है ?" पश्चिमी कोठरी में उण्णिमायम्मा को बसाकर मां फिर से कलकत्ता चली गईं। उण्णिमायम्मा का शरीर बुढ़ापे और गरीबी के मारे सूखकर कांटा हो गया था। उनकी आंखों की पुतलियां सफेद गोलियों की तरह थीं। दीवार के साहस टटोलती हुई उत्तरी कोठरी में आकर वे भोजन करने बैठती थीं। तीनों वक्त उनके लिए भोजन परोसनेवाले नौकरों ने भी उनसे बात करने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। शायद इसलिए ही उण्णिमायम्मा ने अपने आप से ही बात करना शुरू कर दिया। प्रारंभ में उनका स्वगत कथन सिर्फ एक बड़बड़ाहट था। लेकिन बाद में वह ऊंची-ऊंची गालियों की वर्षा बनकर रह गया।

"देख, बुड्ढी का गला फाड़ना शुरू हुआ। हे भगवान, औरों का सोना भी हराम कर दिया।" बीच-बीच में नौकरानी उत्तरी कोठरी से शिकायत करती रही।

"भीख मांग रही थी। बालामणिअम्मा और अम्मिणिअम्मा सहारा देकर यहां ले आईं।" रसोइया दालान में खड़े होकर ऐसे अंदाज में बोल उठा कि सभी सुन लें।

"सुना है कि यहां के किसी मामा ने सालों पहले इस बूढ़ी के घर से शादी की थी। तब तो रिश्तेदार हुई न ?"

"रिश्तेदार ! इस बुड्ढी की बात से गुस्सा आ जाता है...मेरी शिकायत करेगी तो मैं एक चांटा लगा दूंगी। मैं किसी से नहीं डरती।"

मेरी आहट सुनने पर कभी-कभी उण्णिमायम्मा पूछने लगती, "बच्ची, इधर आओ न ? मेरी गोद में बैठोगी न ? बच्ची को पेशमटंदा की कहानी सुननी है ?" उनके पास बैठते ही वे लंबी नाखूनवाली उंगलियों से मेरे बदन पर टटोलती रहती। नाखूनों से कहीं-कहीं खरोंच लगने पर मैं उनकी गोद से उठ जाती थी।

"क्या बच्ची को पेशमटंदा की कहानी नहीं सुननी है ?" उण्णिमायम्मा पूछती।

"मैं उत्तरी कोठरी में खड़े-खड़े सुन लूंगी।" मैं बोलती।

मैंने कई बार उण्णिमायम्मा के मुंह से पेशमटंदा से बात करनेवाले राजकुमार के बारे में बिना किसी उकताहट के सुनकर मजा चख लिया था।

"गोरा बदन, बाईं ओर को बांधी गई चोटी, बिंबा फल जैसे होठ। देखने में कामदेव-सा लगता है। बच्ची के बड़े मामा की भांति रहता है।"

मैंने मामी से कहा कि पेशमटंदा के पति की शक्ल मामाजी से मिलती-जुलती है।

"यह किसने बता दिया ?" हंसती हुई उन्होंने पूछा।

"उण्णिमायम्मा।"

अगले दिन मामी ने एक पुलिंदा पान और थोड़ा तंबाकू उस बुढ़िया को इनाम में दे दिए। उस दिन से उण्णिमायम्मा मामी की खूबसूरती की भी तारीफ करने लगी।

"उण्णिमायम्मा अंधी है न ? फिर कैसे उनका बखान करती हैं ?" मैंने संदेह प्रकट किया।

"अरी बच्ची मैं जन्म से अंधी नहीं थी। मैंने यहां के सभी को देख लिया है। इस मामी के पहले जो मामी यहां रहती थीं, उन्हें भी मैंने देखा है। उनका नाम अंबाषत्त की चिन्नम्मा है। उनकी खूबसूरती को देखने के लिए चार आंखों की जरूरत पड़ेगी। अरी बच्ची, वे बाल खुला छोड़ दें तो घुटना छू लेगा। वे साक्षात् लक्ष्मी थीं। दस महीने तक साथ न रह सकीं। रक्त-स्राव था। नौ-नौ धोतियों के लपेटने पर भी खून बंद नहीं होता था...कोठरी-भर खून ही खून था...।"

"क्या बात हुई थी ?"

"अब बच्ची से कैसे बताऊं ? आठ महीने का गर्भ था। एक बार उन्हें देख ले तो भूल नहीं सकता।"

पहली मामी की दुर्दशा के बारे में मैंने नानी से पूछा तो वे चिढ़ गईं, "यह बात किसने बता दी ?"

"उण्णिमायम्मा।"

"बच्ची को डरा रही है क्या ? यह क्या बदमाशी है ?" देर तक मेरा बैठना उन्हें पसंद नहीं। कहानी सुननी है तो परनानी के पास जाकर बैठ ले। परनानी विक्रमादित्य और बेताल की कहानियां जानती थीं।

नालाप्पाट की सभी औरतें एकादशी मना लेती थीं। वहां रहते वक्त मैं भी उनके साथ गेहूं का भात, सांवा और मूंग की सब्जी खा लेती थी। उण्णिमायम्मा भी एकादशी मनाती थीं

"अरी बच्ची, क्या यह मालूम है कि एकादशी मनाने के बाद द्वादशी के दिन नहा-धोकर तीर्थ सेवन करे तो सारा पाप मिट जाएगा।" उण्णिमायम्मा ने कहा।

"मुझे नहीं पता।" मैं बोली।

"मन लगाकर दुआ करें तो श्रीपरमेश्वर, पार्वती समेत दर्शन देंगे।" उण्णिमायम्मा ने कहा।

"क्या उण्णिमायम्मा को कभी श्रीपरमेश्वर और श्रीपार्वती का दर्शन मिला है ?"

"अरी मेरी बच्ची, मुझे कितनी बार मिला है...बच्ची, मैं एक भक्तिन हूं। कभी भी एकादशी व्रत मैंने छोड़ा नहीं। सूतक के दिन भी मैंने व्रत को तोड़ा नहीं। द्वादशी के दिन थोड़ा-सा तुलसी-तीर्थ पी लेती हूं। अरी बच्ची, एकादशी के दिन यहां के लोगों की भांति मैं गेहूं और सांवां नहीं खाती। मैं पूरा उपवास कर लेती हूं। जल तक नहीं पीती। मेरा शरीर ऐसा सूखने का कारण यही है न ?"

"उण्णिमायम्मा ने कल एकादशी के दिन गेहूं का भात क्यों खाया ?"

"खाना, नहीं चाहिए था। पर इसलिए खाया कि यहां के लोग मुझसे रुष्ट न हो जाएं। कोरा उपवास ही मुझे पसंद है। उपवास के कुछ कायदे होते हैं। एकादशी मनाना आसान नहीं है।"

उण्णिमायम्मा ने बताया कि सोमवार के दिन शाम को उपवास कर ले और मंदिर जाकर शिवजी का दर्शन कर ले तो मुझे एक उत्तम पति मिल जाएंगे।

"उत्तम पति का मतलब क्या है ?" मैंने नानी से पूछा।

"अरी कमला, तू ऐसा क्यों पूछ रही है ?"

"उण्णिमायम्मा ने बताया कि मैं सोमवार को उपवास कर लूं तो मुझे एक उत्तम पति मिल जाएंगे।"

"कमला, अब तू उसके बारे में मत सोचना। बचपन के दिनों में पति के बारे में मत सोच। उपवास करे या न करे, समय आने पर कमला को एक अच्छा पति मिल ही जाएगा।"

एक दिन रात को नानी ने मुझे नींद से जगा दिया। कमरे के भीतर धुआं भरा था। उत्तरी खिड़की से देखा तो रसोई की छत जल रही थी। "आग...आग" चिल्लती हुई हम चौकी की ओर भागी। सब के सब फौरन आंगन में उतरकर खड़े हुए। पड़ोसी तथा नौकर-चाकर सब मिलकर मिट्टी, पानी तथा केले के कटे तने से आग बुझाने की कोशिश करते रहे। हजार पंखुड़ियोंवाले एक अजीब फूल की भांति आग की लपटें प्रज्ज्वलित हो उठीं। आग के बुझ जाने पर हम फिर से घर के भीतर घुस गए तो पश्चिमी कोठरी से उण्णिमायम्मा हमें फटकार रही थीं, "मेरी बात किसी को याद नहीं ? मुझे मरने छोड़कर सब भाग गए। मैं तो अनाथ हो गई न ? तुम लोग तो मेरे परिवारवाले भी नहीं हो। अब मैं यहां नहीं रहूंगी। मुझे कुन्नमकुलम् भेज दो। जिनको मैं पसंद नहीं, उनके यहां मैं नहीं रहूंगी।"

तब नानी ने कहा कि सबेरे होते ही उन्हें कुन्नमकुलम् में रिश्तेदारों के यहां भेज देंगी।

सबेरे जब उन्होंने चाय और इडली खा लीं तो नानी ने कहा, "तैयार हो जाओ। कुन्नमकुलम् में बेरों के पास ले जाया जाएगा।" यकायक उण्णिमायम्मा कमरे के एक कोने उकडू बैठकर सिसकियां भरने लगीं, "मेरे गुरुवायूरप्पा, मेरा कोई नहीं है। मुझे निकाल देने पर भी पूछनेवाला कोई नहीं है !"

"तुम्हें जाने को किसने कहा ?" नानी ने हंसते हुए पूछा।

उस दिन सब्जी के लिए कद्दू और कुम्हड़ा काटने वाले नौकरों से उण्णिमायम्मा ने खुशी के साथ कहा, "मेरी मृत्यु इस नालाप्पाट घर में ही होगी। मैं और कहां जाऊंगी ? यहां के लोगों को छोड़कर मेरा अपना कोई नहीं है। मेरी इच्छा है कि यहां के लोगों को देखते ही हमेशा के लिए आंखें मूंद लूं।"

उन दिनों ही एलियंगाट स्कूल में पढ़ाने के लिए काट्टांबाल नामक गांव से नाव पर एक नई टीचर आ गई थीं। वे दुबली-सांवली औरत थीं। वे कुरती और धोती पहनती थीं। किनारेहीन दुपट्टे से छाती ढके, जूड़ा कसकर बांधे, बगल में छाता और हाथ में भोजन का बक्स लिए एलच्चार टीचर पहले पहल स्कूल आई तब उन काली आंखों में प्रतिबिंबित आज्ञा-शक्ति के समक्ष सभी के सिर झुक गए। हेडमास्टर ने भी धीमी आवाज में तकल्लुफी की बातें कीं। जब टीचर ने बात करना शुरू किया तो हमें लगा कि उनके कलफ लगे स्वर की गूंज चाकू में कटहल के गोंद की तरह, वायुमंडल में अटकी रही। टीचर सिर्फ ऊंचे दर्जे के छात्रों को ही अंग्रेजी पढ़ाती थीं। सातवां दर्जा मेरे दर्जे के करीब ही था। सातवां दर्जा उस स्कूल का सबसे ऊंचा दर्जा था। उसमें पढ़नेवाले में उचक्का गोविंद कुरूप, सुंदरी हेमलता आदि प्रमुख थे। बिना किसी बुरी हरकत के, कुरूप ध्यान लगाकर टीचर का भाषण सुनता रहा। टीचर ने सातवीं कक्षा के छात्रों को पढ़ाया कि अंग्रेजी और मलयालम को मियां-बीवी की भांति एकता के साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि गांधीजी के मन में अंग्रेजों के यहां से निकल जाने की जो लालसा है, वह लालसा ही बनकर रह जाएगी। वह कभी सार्थक नहीं होगी। नंपिडि मास्टर हमें सुनाने के लिए 'ओमनतिंगलकिटावो' वाली लोरी कुञ्ञुण्णि नंपीशन की बेटी उर्मिला से गवा रहे थे। मलयालम के पिरियड में साधारणतः वह लोरी दुहराई जाती थी। लोरी सुनते-सुनते मैं और बाकी सब बच्चे सोते या ऊंघते रहते थे। एलच्चार टीचर के शब्द मुझे जगाते ही नहीं, परेशान भी करते थे। मेरे मन में यह डर पैदा हुआ कि यदि गांधीजी की सारी कोशिशें बेकार हो जाएंगी तो मेरी मां, नानी तथा छोटी मां को अपने त्याग के बारे में सोचकर पछताना पड़ेगा।

एलच्चार टीचर सफेद कपड़े ही पहनती थी। परंतु वे मलमल के थे। थोड़ी अवज्ञा के साथ ही वे खद्दर के बारे में बातें करती थीं।

टीचर बोलती, "घर में नौकर-चाकर हो तो कोई खद्दर पहन सकता है। खद्दर कपड़ों को रोज धुलाने-सुखाने के लिए मेरे पास फुरसत कहां है ? यदि फुरसत मिले तो भी वह मेरे बस की बात नहीं। खद्दर तो अमीरों के लायक है।"

यह बात सुनकर कार्तायनी टीचर हंस पड़ी। उन्हें खद्दर के प्रति तनिक भी लगाव नहीं था। सिर्फ हेडमास्टर ही खद्दरधारी बनकर मौजूद रहे। पड़ोसियों का कहना है समय मिलने पर वे चरखे से सूत कातते थे।

टीचर की पढ़ाई की भी कुछ खासियतें थीं।

"हम कोई भी अंग्रेज नहीं। इसलिए सारे शब्दों को हम अंग्रेजी में बदलकर नहीं कह सकते। कभी-कभी बीच-बीच में हमें मलयालम शब्द भी बोलने पड़ेंगे। इसमें कोई हर्ज नहीं। 'ओट्टनूतुल्लल टुक प्लेस इन दि टेंपिल' कहने में कोई गलती नहीं। इसके बदले 'ओट्टनूतुल्लल' के स्थान पर 'रनिंग जंपिंग' कहना उचित नहीं।"

"आइ वाज वाकिंग इन दि कुंडनेटवषि, वेन द एलिफेंट रस्ड एट मी" एक विद्यार्थी जोर से बोल उठा। तब विद्यार्थियों के साथ टीचर भी हंस पड़ीं। दांतों को दिखाने की विमुखता से युक्त मुस्कान। मुझे लगा कि मुस्कुराते वक्त टीचर का छोटा मुखड़ा और छोटा हो रहा है।

अंग्रेजी पढ़ाने के साथ-साथ टीचर थोड़ी मात्रा में सिलाई भी पढ़ाती थीं। रुमाल के किनारों को सीना, उनके किनारों पर रंगीन धागों से गुलाब और तोतों की गुलकारी करना आदि भी वे जानती थीं। उसी साल पुन्नयूरकुलम की सारी महिलाओं ने अपनी कुरती के भीतर तथा कमर में रेशम के रुमालों को संभालकर रखना सीखा। कुछ महिलाएं उसमें इत्र छिड़ककर उसे तहकर हथेली में समेटकर चलती थीं। मैंने नानी को उपहार के रूप में एक रुमाल दे दिया जिसके एक कोने में एक तोते का चित्र कढ़ा था।

तोता चोंचहीन था। नानी ने कहा कि चोंच बनाने के लाल धागा वे खरीद देंगी। परंतु जब भी शंकरन पुषिक्कला बाजार में सामान खरीदने जाता था तब धागे की बात उससे कहना नानी भूल जाती थीं। आखिर मैंने यह निर्णय लिया कि उस तोते को चोंच की जरूरत नहीं है।

नानी ने तांबे के अनेक सिक्के उस रुमाल में रखकर बांध दिए। फिर उन्होंने उसे हंटली एंड पामर कंपनी के एक बिस्किट-डिब्बे में संभालकर रख लिया। अपने प्रिय भिखारियों के आ जाने पर वे एक-एक सिक्का प्रत्येक को दे देती थीं। साधारणतः भिखारियों को एक बटुए में चावल दे देती थीं। परंतु अनेक संतानोंवाली चेट्टिच्चियों के आने पर नानी उनके लिए चावल के अलावा सिर पर मलने के लिए तेल और एकाध सिक्के भी दे देती थीं। जूड़े के भीतर नारियली रखनेवाली युवती के प्रति नानी विशेष सहानुभूति रखती थीं। उसका पति उसे छोड़कर कहीं चला गया था। एक बच्चा उसकी गोद में था और एक बच्चा उसके हाथ पकड़कर चलता भी था।

"क्या कृष्णम्मा के पति की कोई खबर मिली ?" नानी ने पूछा।

"नहीं अम्मा। वह पाजी मर गया होगा।" चेट्टिच्ची बड़बड़ाई।

शंकरन ने कहा कि चेट्टिच्ची ने अपने पति को विष देकर मार दिया होगा। वह आगे बोला, "मौसी उसको नहीं जानती। वह तो चंडी है। कुएं के किनारे से तेल का बर्त्तन किसने चुरा लिया, पता है बच्चों को ?"

"कौआ ले गया था।"

"कौआ ! कौए को कांसे के बर्त्तन की क्या जरूरत पड़ी ? यह चेट्टिच्ची ही उसे चुराकर ले गई थी। मैंने देख लिया था। चौके से मैंने देख लिया था। मेरे बाहर आते ही वह भाग निकली। कुलच्छनी ! मौसी से सुविधा मिलने से ही ये ऐसी हरकतें करती हैं।"

"शंकरन ने उसे क्यों नहीं पकड़ा ? मेरा बर्त्तन उसके हाथ से क्यों नहीं छीना ?" मैंने शंकरन से पूछा।

"बच्ची का तेल-पात्र वह ले गई तो मुझे क्या हर्ज है ?" शंकरन ने अपने कान के पीछे खोंसकर रखी बीड़ी ले ली और उसे सुलगाई। उसने अपना दाहिना पैर चूल्हे पर फैलाकर रखा था। सुलगती बीड़ी होंठ से लेकर मेरी ओर बढ़ाते हुए वह बोला, "बच्ची, यह देखती हो न ? शंकरन की जान इस पर निर्भर है। इसके बदले चाय, भात और कंजी पर नहीं। जानती हो ? शंकरन को एक दिन के लिए दो बंडल बीड़ी चाहिए। नहीं तो जान निकल जाएगी। क्या इसका पता है ? मैंने कुछ नहीं कहा।

"बच्ची, शंकरन के लिए एक रुमाल बना दोगी न ? किनारों पर तोते और फूल काढ़ दोगी न ? मुझे बीड़ी लपेटकर रखने के लिए है। उसमें बीड़ी लपेटकर जेब में डाल लूं तो मौसी देख नहीं लेंगी। बच्ची, बना दोगी न ?"

"नहीं।"

"क्या बच्ची को शंकरन से घृणा है ? शंकरन के मन में बच्ची के बाद ही इस घर के किसी का स्थान है। बच्ची को इसका पता है ?"

मैं हंस पड़ी।

"इस घर में ही नहीं, इस गांव में भी शंकरन के लिए बच्ची से प्यारा और कोई नहीं।"

"मैं टीचर से बता दूंगी कि शंकरन के लिए एक रुमाल बना दें।"

"हाय, टीचर से मत कहना। मौसी जान जाएं तो मुझे फटकारेंगी। खुद ही मुझे रुमाल बना दो।"

"रुमाल सीने के लिए मेरे पास वक्त नहीं है।" मैंने शंकरन से कहा।

"एलियंगाट स्कूल में दाखिला होते ही बच्ची ज्यादा गर्वीली हो गई है। क्या बच्ची के पास वक्त नहीं है ? बच्ची कोई लाट साहब है क्या ?"

मैंने नानी से कहा कि शंकरन ने मुझे लाट साहब कहा। तब नानी उसे दंड देने के बजाय ठठाकर हंस पड़ीं।

"शंकरन तो झूठा है। उसकी बात पर ध्यान मत देना।" नानी ने कहा।

मैं रोज नानी को, एलच्चार टीचर की हरकतों के बारे में बता देती थी। क्लास में बैठकर बातें कर रही दो लड़कियों को टीचर ने बेंच पर खड़ा कर दिया। जो लड़के विमान देखने के लिए दर्जे के बाहर भागे थे, टीचर ने गरजती हुई आवाज में उन्हें 'गेट आउट' कहकर क्लास से निकाल दिया। जब कुरुप क्लास के भीतर पके अंडे ले आया तो टीचर ने फर्श पर बिखरे पड़े छिलकों को कुरुप से ही उठवाया। एलच्चार टीचर ने नेता बनकर ही जन्म लिया था। सबेरे प्रार्थना के लिए जाते वक्त वे ही सबके सामने चलती थीं। बाकी सब उनका पीछा करते थे। नंपिडि

मास्टर हमेशा उनसे एक गज दूरी पर ही खड़े रहते थे ताकि कलफ लगाकर धुलाए गए टीचर के कपड़े हवा के झोंकों में पड़कर उनके शरीर पर न छू लें। वे 'शुद्धता' पर विशेष बल देते थे। सबेरे ही एलियंगाट के तालाब में नहा लेने के बाद मंदिर जाकर भगवान का दर्शन कर लेते थे और वे माथे पर चंदन एवं कुंकुम का टीका लगाकर ही स्कूल आते थे। उनकी आवाज में भी एक प्रकार की सादगी विद्यमान थी। उनकी चाल में प्रकट नम्रता ने उसकी आवाज को भी धीमा कर दिया।

बातचीत करते वक्त मेरे उच्चारण की अस्पष्टता ने नंपिडि मास्टर को परेशान कर दिया था।

"क्या बच्ची जीभ साफ नहीं करती ?" उन्होंने पूछा। मैं कुछ नहीं बोली। मुझे ऐसा लगा कि क्लास के सारे बच्चे मुझे देखकर हंस रहे हैं।

"कलकत्ते में रहनेवालों ने जीभ साफ न करने का कोई कसम खाया है क्या ?"

नंपिडि मास्टर धीमी आवाज में खिलखिलाकर हंस पड़े। परंतु उनकी हंसी हमने नहीं सुनी क्योंकि वह फूल झरने की भांति शब्दहीन थी। पर मुंह का फैलाव और कंधों की चंचलता से मुझे पता चला कि मास्टर हंस रहे हैं।

"नारियल के पत्ते की एक तीली को छील ले, फिर जीभ को बाहर निकालकर पांच-छह बार तीली से साफ कर लें। तो बच्ची के उच्चारण में स्पष्टता आ जाएगी। अरी बच्ची, संस्कृत और मलयालम म्लेच्छों की भाषाएं नहीं हैं। छुआछूत और शुद्धता पर विश्वास रखनेवालों की जीभ ही वह भाषा बोल सकती है।" मास्टर ने कहा।

दिन बीतते-बीतते मुझे पता चला कि पुन्नयूरकुलम में, केवल अंग्रेजी जानने से कोई फायदा नहीं।

"नंपिडि मास्टर का कहना है कि मैं मलयालम बोलना नहीं जानती।" मैंने नानी से कहा।

नानी ने दही-मंथन का काम एकाएक स्थगित कर दिया और कहा, "कमला मलयालम बोलना जानती है। कमला अच्छी तरह बोल भी रही है।"

"मास्टर का कहना है कि मेरे उच्चारण में स्पष्टता नहीं है।"

"सात साल की लड़की के उच्चारण में इससे ज्यादा स्पष्टता कहां से आ जाएगी ? मास्टर से कह देना कि कमला का तुतलाना मुझे काफी पसंद है।"

"तीली से जीभ साफ करने को कहा है।"

"तब क्यों नहीं कहा कि जीभी से रोज साफ कर लेती है ? उस मास्टर का क्या हुआ ? नाहक बच्चों का दिल क्यों दुखाता है ? कमला की बात मास्टर नहीं, मैं ही देखती हूं। उसकी जीभ साफ करानी है या उसे नहाना है, ये सब मैं देख लूंगी। नंपिडि मास्टर का काम सिर्फ मलयालम पढ़ाना है। वह पढ़ा ले।" नानी का चेहरा लाल हो गया। जब वे नाराज हो जाती थीं तब उनके कान, नथुने और गाल लाल-लाल हो जाते थे।

"वह तो बुड्ढा हो गया है। फिर भी क्यों बच्चों को सताता है ? अचिनी का नंपिडि यहां की बच्ची को जीभ साफ करना न सिखाए।" शंकरन फाटक की ओर देखते हुए बोल उठा। उसे संदेह था कि नंपिडि मास्टर फाटक के बाहर से जाता तो नहीं ? पर उस रास्ते से कोई नहीं जा रहा था।

"मास्टर के बारे में शंकरन किससे बात कर रहा है ?" मैंने पूछा।

"किससे कहूं ? भगवान से कह रहा हूं। यहां की बच्ची को कोई सताए तो वह मास्टर ही नहीं, हेडमास्टर भी क्यों न हो, उसके चेहरे पर एक थप्पड़ जमा दूंगा। अरी बच्ची, मैं किसी से नहीं डरता।" शंकरन तिलमिलाकर बोल उठा।

"अरे शंकरन, नंपिडि मास्टर को मत मारना।"

"बच्ची ने कह दिया तो मैं नहीं मारूंगा। बच्ची की पसंद मेरी भी पसंद है।" उसने बताया।

नानी ने हंसते हुए दही-मंथन फिर से शुरू किया।

मेरे बचपन के दिनों की बात है। जब बच्चों के दांत हिलने लगते हैं तो उन्हें उखाड़ना उनके मां-बाप का काम था। नालाप्पाट में नानी और मामा ही दांत उखाड़ने के काम में सिद्धहस्त थे। ये दोनों मेरे भैया के दांत धीरे-धीरे हिला-हिलाकर खींचते थे। मेरे बड़े भैया कभी रोते या मना नहीं करते थे। मेरे सामनेवाले दांत जब हिलने लगे तब उन्होंने हार मान ली। मैंने कभी भी उन्हें अपने मुंह में हाथ डालने की इजाजत नहीं दी। नानी को डर था कि हिले हुए दांत नींद में गले से उतर जाएंगे। एक दिन नानी ने मुझे दालान में बुलाया। वहां यूरोपीय ढंग के पोशाक पहने अधेड़ उम्र का एक मोटा व्यक्ति खड़ा था।

"कमला, तुमने कभी डॉक्टर इट्टूप को देखा है ?" मामा ने पूछा। मेरा खयाल था कि उसके हाथ में चमड़े की जो काली थैली है, उसमें पिताजी के द्वारा भेजे गए तोहफे होंगे। इसीलिए मैं हंसती हुई उसके पास गई। उसने एक हाथ मेरे गले में लपेट लिया और दूसरे हाथ से मेरा मुंह खोल लिया। एक क्षण में ही एक चिमटी से अत्यधिक पीड़ा पहुंचाते हुए उसने मेरा दांत उखाड़ लिया। मेरी आंखें छलछला आईं। मैं रोना भूलकर अवाक खड़ी रह गई। मामा ने कुल्ला करने के लिए मुझे पानी दिया। नानी मुझे भीतर ले गईं। शायद अपराध-भावना से, वे रोती रहीं। मुझे ऐसा लगा कि मेरी इजाजत के बगैर किया गया यह दंत-उखाड़ मेरे घरवालों द्वारा मुझसे किया गया विश्वासघात है।

मैंने खारे पानी से कुल्ला किया। खून का बहना बंद हो गया तो नानी ने कहा, "अब कमला के मुंह में नया खूबसूरत दांत उग आएगा।"

"उखाड़े हुए दांत को गोबर में लपेटकर छत के ऊपर फेंकने से ही नया दांत उग आएगा।" देवकी बोली।

"कहां गया वह दांत ? डॉक्टर बाबू ले गए क्या ?" शंकरन ने पूछा।

"उन्होंने दांत कहीं फेंक दिया होगा। अब क्या करें ?" देवकी ने नानी से पूछा।

"कुछ नहीं करना है। सुंदर दांत उग आएगा।" नानी ने बताया।

"गोबर में लपेटकर छत पर न फेंक दें तो कुकुरदंत उग आएगा।" देवकी ने कहा।

"बकवास बंद कर।" नानी बोलीं।

"मुझे कुकुरदंत नहीं चाहिए।" मैं गद्‌गद होकर बोली।

"मैं वह दांत आंगन में ढूंढ़ लूं ?" देवकी ने पूछा।

"वह कौआ उठाकर ले गया होगा।" शंकरन बोला। मुझे ऐसा लगा कि मेरा दुख वह एक मजाक की दृष्टि से देख रहा है।

"मुझे कुकुरदंत आ जाए तो मैं क्या करूं ?" मैंने नानी से पूछा।

"अरी कमला घबराने की कोई जरूरत नहीं। तुझे छोटा सुंदर दांत उग आएगा। देवकी की बात पर विश्वास मत करना।" नानी मुझे सहलाती हुई बोलीं।

"मैंने अपने गांववालों को कहते सुना है। मेरे यहां के बच्चों के दांत गोबर में लपेटकर छत पर फेंके जाते हैं। शायद इसलिए ही मेरे यहां के बच्चों के दांत इतने सुंदर हुए।"

"हमारे यहां कोई भी, दांत गोबर में नहीं लपेटते।" शंकरन ने बताया।

मैं जोर से रोने लगी।

"कुकुरदंत लेकर मैं स्कूल नहीं जाऊंगी।" मैंने कहा।

"कमला को इतनी भी अक्ल नहीं ? यदि देवकी की बात मानेगी तो कमला को इस दुनिया में जीना मुश्किल हो जाएगा।" नानी ने बताया।

"मैंने तो सिर्फ यही सोचा था कि बच्ची का दांत सुंदर लगे। नहीं तो नहीं। मुझे क्या हर्ज है ?" देवकी बड़बड़ाई।

इस कहा सुनी को सुनकर वहां खड़ी वल्ली ने एक सफेद चीज लेकर नानी की ओर बढ़ा दी।

"ले लीजिए, छोटी मालकिन का दांत। उस अनार के पेड़ के तले पड़ा मिला।"

"वह सफेद कंकड़ है।" शंकरन बोला।

"नहीं, वह दांत ही है। उसके निचले हिस्से पर खून नजर नहीं आता ?"

"वह तो खून नहीं। लाल मिट्टी है।"

"दे दो न, मैं देख लूं ?" वल्ली के हाथ से देवकी ने वह चीज ले ली और काफी देर तक उसे गौर से देखती रही।

"यह तो सफेद कंकड़ नहीं, दांत ही है। परंतु मुझे नहीं लगता कि यह बच्ची का दांत है। लगता है कि यह किसी कुतिए का दांत है।"

"छि ! छि ! वह दूर फेंक दे।" नानी बोलीं।

"वह मेरा दांत है।" मैंने कहा।

देवकी ने उसे गोबर में लपेट लिया और कुछ फुसफुसते हुए छत के ऊपर फेंक दिया। वह लुढ़कते-लुढ़कते देवकी के पैरों पर आ गिरा।

"वापस आते देखा न ? वापस आ जाना शुभ-संकेत तो नहीं है। मुझे संदेह है कि बच्ची को सुंदर दांत उगेगा।"

"बेवकूफी की बातकर बच्ची को डरा मत।" नानी ने कहा।

"कुकुरदंत उग आए तो मैं कलकत्ता नहीं जाऊंगी।" मैंने कहा।

"कुकुरदंत हो या न हो, कमला को कलकत्ता नहीं जाना पड़ेगा।" नानी बोली।

"कुछ लोगों का ख्याल यही है न, कि मैं सुंदर नहीं ! सुंदर मर्दों को देख रखा होगा।" शंकरन देवकी की ओर देखकर बोला।

"मुझसे गंदी बात कह दे तो मैं यूं ही सुनती नहीं रहूंगी।" देवकी बोली।

"देवकी, ज्यादा अकड़ मत दिखाना।" रसोइए ने अवज्ञा के साथ कहा। फिर आम के पेड़ के नीचे धंसाई गई खूंटी पर दबाकर उसने नारियल का छिलका निकालना शुरू किया। नौकरानी रोने भी लगी।

"ये हमेशा लड़ते-झगड़ते रहते हैं।" नानी बोलीं।

"शंकरन देवकी का दुश्मन है क्या ?" मैंने पूछा।

किसी ने उस सवाल का जवाब नहीं दिया।

"क्या देवकी शंकरन से नाराज है ?" मैंने पूछा।

देवकी आंचल से अपनी नाक पोंछती हुई, रोने से लाल हुई आंखों से शंकरन को देखती हुई दालान के खंभे से उठंग कर खड़ी रही।

एक बार मेरे पिताजी कलकत्ते से आ गए तो मेरे बालों के सहज बढ़ाव को देखकर खीझ उठे। उन्होंने यह राय प्रकट की कि मैं देखने में एक कोरी गंवारिन के रूप में बदल गई हूं।

"कल ही उस चात्तू को बुलाकर इसका बाल कटवाना है।" पिताजी की बात सुनते ही नानी का पीला चेहरा और पीला हो गया। पिताजी की किसी भी बात का विरोध प्रकट करने की हिम्मत उनमें नहीं थी।

"इसको इस शक्ल में कलकत्ता के स्कूल में भर्ती नहीं करा सकते। बाल बॉब करके इसे स्कूल में भर्ती कराना है।" पिताजी बोले।

"करीब दो साल से मैं नानी की देखरेख में पल-बढ़ रही थी। उन दिनों मेरे बालों में नारियल का तेल मलकर, मूंग के चूर्ण से तेल की चिपचिपाहट को दूर कर, मेरे बालों को पोंछ-संवारने से नानी कृतार्थता का अनुभव करती थीं।

अगले दिन सबेरे चात्तू हाजिर हुआ। पिताजी का बाल बनाना उसे पसंद था। क्योंकि पिताजी चात्तू से पूछते थे कि उनके कलकत्ता जाने के बाद पुन्नयूरकुलम् में क्या-क्या घटनाएं घटीं। इतना ही नहीं बाल बनाने की मजदूरी के रूप में पिताजी दूसरों से दस गुना ज्यादा पैसे भी भेंट दे देते थे।

"अब आप कलकत्ता क्यों जा रहे हैं ? यहां के लोगों का कहना है कि वहां बम की वर्षा हो रही है।" चात्तू बोला।

"बम अभी तक नहीं गिरा है। गिरे तो गिरे। लड़ाई के डर से क्या घर में छिपा रह सकता हूं ?" पिताजी ने ठठाकर हंसते हुए पूछा।

"आप बड़े दिलेर इंसान हैं।" चात्तू सिर हिलाते हुए बोला।

पिताजी खुश हुए। पिताजी ने उससे पूछा कि बाल बनाने की दुकान खोलने के लिए उसे करीब कितने रुपयों की जरूरत पड़ेगी।

चात्तू उस्तरा को कान के पीछे खोंसकर सिर खुजलाने लगा।

"हुजूर, मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं। इसका हिसाब लगाना चात्तू के बस की बात नहीं है।"

"चात्तू सोच-समझकर बता दे। मैं अगले महीने की चार तारीख तक यहां रहूंगा। खूब सोच-समझकर बता देना। रुपए मैं दे दूंगा।"

चात्तू की हंसी चमक उठी। मुंह का लाल घोल उसने नारियल के पेड़ के तले थूक दिया। इस दृश्य के गवाह बनकर इमली सुखाने के लिए बिछी चटाई पर फुदकते कौओं को, शायद अत्यंत खुशी के मारे, उसने अपना हाथ झटकाकर उड़ा दिया, "जा...उड़ जा कौए।"

बगल और कमर फटी गुड़ियों की तरह चात्तू की चाल बहुत शिथिल थी। मुझे ऐसा लगा कि बड़ी मुश्किल के साथ वह अपने लंबे हाथ-पैरों को संभाल रहा है।

मेरे बाल बॉब कराने की बात पिताजी ने चात्तू से कही।

"अब कलकत्ते की लड़कियों का यही फैशन है।" पिताजी आगे बोले, "क्या चात्तू बॉब करना जानता है ? बाल कंधों को छूना नहीं चाहिए। करीब दो-तीन इंच लंबाई का छोड़कर शेष सब काट देने चाहिए।"

पिताजी ने मुझे कुर्सी पर बिठा दिया और मेरे गले के नीचे एक चादर ओढ़ा दी। चालू ने अपना काला पुराना उस्तरा पांच-छह बार बालू में रगड़ लिया।

"धार को तेज बनाने के लिए है।" उसने कहा।

नानी का पीला चेहरा खिड़की से एकाएक गायब हो गया।

"अंडत्तोड़ के एक अंग्रेजी साहब हैं न ? उनकी बीवी हमारे गांव की है। साहब के साथ शादी की तो वह बाल कटवाकर मेम साहब बन गई। इस चात्तू

ने ही उसके बाल काटे हैं। अरे हुजूर, यह चात्तू औरतों के बाल बॉब करना भी जानता है।''

मेरे इर्द-गिर्द घने घुंघराले बाल झरने लगे।

''हमारे यहां की स्त्रियों के पैरों में थोड़े से बाल दिखाई पड़ते हैं न ? पर, मेम साहबों के पैरों में नहीं होते। वे पैरों को रोज उस्तरे से साफ करती हैं। अरे हुजूर, हमारा अप्पुण्णि है न ? वह पेंरडिरिवाल। उसने ही यह बात बताई। उसने माली के रूप में कोषिक्कोड के एक अंग्रेजी साहब के घर काम किया था। मेम साहब उसे कभी भी 'अप्पुण्णि' नहीं पुकारती थीं। वे उसे 'गारड्नायर' कहकर पुकारती थीं। मेम ने सोचा होगा कि वह नायर है। उसका रंग देखकर ही यह सवाल आया होगा। बिन बाप के बेटे के रूप में वह पैदा हुआ था न ? इसलिए ही वह इतना गोरा हुआ। मेम साहब को यह क्या मालूम ? कोई भी ऐसा ऐलान तो करता नहीं कि मैं तवायफ का बेटा हूं। इसलिए अप्पुण्णि कुछ नहीं बोलता था। अप्पुण्णि को पास बुलाने के लिए मेम साहब 'कारट्नायर' ! कम, कम' कहती हैं। दूर चले जाने के लिए उससे 'कारट्नायर गो गो' कहती हैं। उसने भी मेम साहब की भाषा सीख ली। हमारा अप्पुण्णि है न ? उसकी बुद्धि काफी तेज है। वह पेरंडिरी के किसी रईस का बेटा होगा। नहीं तो किसी मास्टर का...कौन जाने ? जो भी हो उसके कहने पर चात्तू ने जाना कि मेम साहब रोज पैर के बाल साफ करती थीं। इसीलिए उनके पैर ऐसे चमकते रहते हैं। आपने कलकत्ते में ऐसे अनेकों को देखा होगा...''

बांस की कुर्सी पर बैठे-बैठे पिताजी जोर से हंस पड़े।

पुनः नानी का चेहरा दक्षिणी कोठरी की खिड़की पर प्रकट हुआ।

पिताजी ने कहा कि मेरी यह नई सूरत उन्हें पसंद आई। घर के अंदर काम कर रही मां को पिताजी ने बाहर बुलाया।

''देखो, अब आमी देखने में कैसी लग रही है ?''

मां ने कोई जवाब नहीं दिया, सिर्फ मुस्कुराती रहीं। नानी की आंखें डबडबा आईं। वे मुझे तालाब में नहलाने ले गईं। उन्होंने चुपचाप मुझे नहला दिया।

''क्या मेरी खूबसूरती चली गई ?'' मैंने पूछा।

नानी ने कोई जवाब नहीं दिया।

मेरी सातवीं वर्षगांठ के दिन भोजन करने के बाद सब लोग सोने के लिए ऊपर चले गए तब चेरप्पन नामक चूड़ीवाला पहले पहल नालाप्पाट के पूर्वी आंगन में प्रकट हुआ।

गुरुवायूर एकादशी के बाद अपने-अपने घरों की ओर लौटनेवाले चूड़ी बेचनेवाले

चेट्टि अपने कठड़े लेकर उसी रास्ते से आते थे। व्यापार अच्छा चलने पर भी, उनके कठड़े में लाल पतले कागज में लपेटी चूड़ियां, कंघियां, कांच की चूड़ियां, गुलाबी रेशम के फीते आदि शेष रहते थे। परंतु इस नए चूड़ीवाले के संदूक में कांच की टूटी-फूटी चूड़ियां, कुछ प्लास्टिक चूड़ियां और एक तेलदार पोटली ही मुझे दिखाई पड़ीं।

"घेरा तोड़कर भीतर आनेवाला तू कौन है ?" कोठर पर उठ बैठते हुए रसोइए ने पूछा।

"घेरा टूटा दिखाई पड़ा। इसलिए घुस आया।"

"इस साल यहां घेरे की मरम्मत नहीं हुई तो क्या ? गली से जानेवाला आंगन में क्यों घुस आए ?"

अरे नायर, मैं जा रहा हूं। इस बच्ची को देखकर मैं यहां घुस आया। मेरा नाम चेरप्पन है। मैं चालिश्शेरी से आ रहा हूं। बच्ची को रबड़ की चूड़ियां चाहिए तो मेरे संदूक में है।"

"तू पागल है क्या ? यहां की बच्ची को तेरी रबड़ की चूड़ियों की क्या जरूरत है ? तुझे क्या मालूम कि यह बच्ची किसकी है ? लगता है, तूने वी. एम. नायर के बारे में नहीं सुना है ! तू किस जहन्नुम से आ रहा है ? इस दुनिया में कोई ऐसा है, जो वी. एम. नायर के बारे में नहीं सुना हो !"

"अरे नायर, तुम्हें क्या पता कि मैं वी. एम. नायर के बारे में सुना है या नहीं ?"

दालान में बैठकर चेरप्पन ने एक बीड़ी सुलगा दी।

"अरे नायर, बीड़ी चाहिए ?" उसने पूछा।

"मैं बीड़ी नहीं पीता। थोड़ा तंबाकू खाता हूं। दो साल से मुझे पान खाने की आदत पड़ गई है।"

"तुम्हारा मुंह देखते ही वह मालूम पड़ा।" चूड़ीवाला बोला। वह कथन रसोइए को अच्छा नहीं लगा। एकाएक उठते हुए वह गरज उठा, "अबे उठ जा। इतनी मजाल कि दालान में बैठ जाए ! यह दालान किसी पट्टिक्काट से आए ऐरे-गैरे ईसाइयों को बैठने के लिए नहीं बनाया है। निकल जा यहां से।"

"क्यों ? मैं यहां बैठ जाऊं तो अशौच लग जाएगा ? अरे नायर, ईसाइयों के छूने से अशौच नहीं लग जाएगा। ईसाई छुए तो जल छिड़काकर पवित्र करने की कोई जरूरत नहीं। कोरंकोडम मंदिर का वह पुजारी है न काले रंग का, वडूर का वह नंबूदरी ? उस नंबूदरी ने ही मुझसे कहा कि ईसाइयों के छूने पर अशुद्धि नहीं लग जाती।"

"अशौच लगे या न लगे, बदबू जरूर आ रही है। बच्ची के पास मत बैठना। मैसी जाग जाएं तो गालियां देकर आंखें फोड़ देंगी।"

चेरप्पन ने संदूक के भीतर रखी हुई पोटली खोल ली और उससे एक कौर भात लेकर जल्दी मुंह में डाल दिया।

"तेल मिलाया भात है। एक मछली भी है, जो मिर्च लगाकर भूनी हुई है। मेरी बहन का दिया भोजन है।"

"क्या कहा तूने ? मछली ! मेरी पुन्नोक्काविल भगवती, यहां के किसी को इसका पता चला तो मुझे भी घर से निकाल देगा। अब यहां जल छिड़ककर शुद्ध करना ही पड़ेगा।"

रसोइए ने अपने दोनों हाथ सिर पर रख लिए और आंखें तरेरकर उस चूड़ीवाले की परिक्रमा करता रहा। उसकी आवाज ऊंची हो गई, "यहां से निकलता है या नहीं ?"

"अरे नायर, मैं अभी निकल जाऊंगा। पर चार चूड़ियां बेच लूं। आज कोई व्यापार नहीं चला है। दो पैसे कमाए बिना मैं घर नहीं जाऊंगा।"

"यहां तेरी चूड़ियां कौन खरीदेगा ? यहां केवल तीन बूढ़ी औरतें मौजूद हैं। फिर यह बच्ची। तूने क्या सोचा कि इस बच्ची के हाथ में तेरी ये मनहूस चूड़ियां पहना दें तो पूछनेवाला कोई नहीं ?"

"क्या बच्ची को रबड़ की चूड़ियां चाहिए ?" चेरप्पन ने हंसते हुए पूछा।

मैंने सिर हिलाया।

बगलों में लकीरवाली मछलियों की याद दिलानेवाली चूड़ियां उसने मेरी ओर बढ़ा दीं।

"बच्ची को कितनी चूड़ियां चाहिए ?"

"मुझे प्रत्येक हाथ के लिए दस-दस चूड़ियां चाहिए।"

"अरी बेटी, दस-दस चूड़ियां तो मेरे पास नहीं है। छः-छः चूड़ियां दूंगा। ठीक है ? सिर्फ तीन आने ही दे दे।"

"मुझे भी रबड़ की चार चूड़ियां चाहिए।" नौकरानी बोली।

"तुम्हारे हाथों के लायक चूड़ियां अब मेरे पास नहीं हैं। अगले महीने ले आऊंगा।"

"विलायती सूअर की तरह मोटी हो जाने पर सोचना चाहिए था कि उस आकार की चूड़ियां नहीं मिलेंगी। भात खाना छोड़ दे।"

"मेरे गुरुवायूरप्पा, मुझे फिर से श्राप दिया न ? कल मैं उठकर चल नहीं पाऊंगी।"

"इस नायर की कुदृष्टि है क्या ?" चेरप्पन ने पूछा।

रसोइया जोर से हंस पड़ा।

"कुदृष्टि तेरी बहन की होगी।"

"क्यों मेरी बहन को कोसते हो ? मेरी बहन से तुम्हारी क्या दुश्मनी है ?"

रसोइया फिर से हंस पड़ा। फिर उसने रसोईघर की चौखट के टांड़ पर टटोलकर कुछ सिक्के निकाल लिए और उन्हें चेरप्पन को दे दिया।

"ले लो ये तीन आने। मौसी के जागने के पहले निकल जाना। नहीं तो गालियां देकर आंखें फोड़ देंगी। पूरे दालान में बदबू फैल गई है। तेरी एक बहन और उसकी भूनी मछली ! निकल जा यहां से।"

"बदबू तो नहीं आ रही है। केवल भ्रम है। अरी बच्ची, मैं जाऊं ?"

इसके बाद हर साल ग्रीष्मावकाश के अवसर पर मैं चेरप्पन से चूड़ियां खरीद लेती थी। 1975 में जब मैं अधेड़ उम्र की गृहणी बनकर अपने गांव आई तो चेरप्पन उस रास्ते से आया। उसके घुंघराले बाल पक गए थे। वेश-भूषा तो पुरानी ही थी।

"चेरप्पन है न ?" मैंने पूछा।

"जी हां।"

"तुम्हारे पास रबड़ की चूड़ियां हैं ?"

"क्या अम्मा के हाथों के लायक ?"

"हां।"

"नहीं हैं। मेरे संदूक में केवल बच्चों के लायक छोटी-छोटी चूड़ियां ही हैं।"

"दिखा दो न !"

"रेशम की चूड़ियां, टूटी हुई कांच की चूड़ियां, तेल लगी एक पोटली..."

"उस पोटली में क्या है ?"

"उसमें कुछ भात है। तेल मिला भात। एक मछली भी है। मिर्च लगाकर भूनी हुई मछली है।"

"क्या तुम्हारी बहन की बनाई है ?"

"बहन ? मुझे बहन नहीं है। एक बहन तो थी, वह पंद्रह साल पहले चल बसी। यह मेरी छोटी बेटी मेरी ने भूनकर दी है।"

"तुम्हें याद है कि कई सालों पहले तुम यहां आए थे ! यहां कमला नामक एक लड़की रहती थी। उसने तुमसे रबड़ की चूड़ियां खरीदी थीं।"

"उस...उस बच्ची की मुझे याद है। वह कलकत्ता चली गई। फिर उससे नहीं मिला। सुना था कि वह मर गई। वह बड़ी अच्छी लड़की थी न ?

"किसने कहा कि वह मर गई।"

"मैंने कोट्टप्पटि से सुना था। मैंने सुना कि उस बच्ची की मृत्यु अस्पताल में हुई थी। यह सुनकर मेरा दिल फट गया। उसके लिए मैं जान था। 'चेरप्पा

...चेरप्पा' पुकारती हुई पीछे दौड़ आती थी। हमेशा हंसती रहनेवाली बच्ची। बेचारी, वह मर गई।''

मेरी मामी की छोटी बहन की बड़ी बेटी लीला को हम बच्चे, उन दिनों लीलोप्पु (लीला दीदी) पुकारते थे।

ऊंचा कद; छरहरा बदन; तिल के तेल जैसा रंग; मोटे, पर आकर्षक होंठ; किसी की परवाह किए बिना कंधे हिलाते हुए चलना यही उनका हुलिया था। हम लीलोप्पु की चेष्टाओं और मुद्राओं की नकल करने की कोशिश करती थीं। वे हमारे साथ खेलने के लिए तैयार न थी।। वे हमेशा 'हट जा बच्चे' कहती हुई हमें रास्ते से धक्का देकर हटा देती थीं। सोलह साल की लड़की की रोब-दाब उन्होंने प्रकट की।

एक दिन लीलोप्पु की किताबों के बस्ते से एक प्रेम पत्र नीचे गिरा। उसमें किसी ने लिखा था कि जान से प्यारी लीला से जुदा होकर एक दिन के लिए भी जीना उसके लिए दुशवार है। मामाओं और नानियों के आपसी सलाह-मशविरों के बाद कथा-नायिका को बुलाया गया और पत्र उसकी ओर बढ़ा दिया गया। पत्र हाथ में उठाकर लीलोप्पु खिलखिलाकर हंस पड़ीं। फिर वे जाने को मुड़ीं तो मामा ने पूछा, ''यह पत्र किसने लिखा है ?''

''अम्मालू का पत्र है...अम्मालू मेरे क्लास में पढ़ती है।''

घरवालों ने अविलंब भोली-भाली लीलोप्पु की शादी आंधप्रदेश में नौकरी करनेवाले एक युवा के साथ करवाई। लीलोप्पु की शादी के अवसर पर मालतिकुट्टि तथा मुझे पहनने के लिए मामी की एक दूसरी छोटी बहन शारदोप्पु कोयंबत्तूर से रेशम की कुर्तियां ले आई। हल्के नीले रंग के रेशमी कपड़े में रंगीन धागों से फूल और लताएं कढ़े हुए थे। उसकी तड़क-भड़क से हम अवाक रह गईं। मेरे जीवन काल में उसके पूर्व या बाद में इतना सुंदर तोहफा नहीं मिला था। मेरी तमन्ना की पूर्ति का और कोई उपाय न सूझने पर नानी ने शारदोप्पु को मेरे लिए एक रेशमी कुर्ती ले आने को पत्र लिखा था। पिताजी ऐसे अनुरोधों से घृणा करते थे। उनका खयाल था कि अपने बच्चे सिर्फ सस्ते और कम तड़क-भड़क की चीजों का इस्तेमाल ही करें। उनके द्वारा प्रदान की गई जीवन चर्या ही उनकी संतान की सजा थी।

उस नीली कुर्ती ने अपनी कोमलता से मेरा आलिंगन किया। मेरे पास पीपल के पत्ते पर लेटनेवाले कृष्ण का रूप अंकित एक तमगेदार सोने की जंजीर मौजूद थी। मालतिकुट्टि ने मामी का गुलूबंद भी पहन लिया। लीलोप्पु ने पीली रेशमी साड़ी पहन ली और जुल्फों में गजरा पहनकर नई दुलहिन बन गईं। उस शादी के बाद

मैं जूड़ा बांधने की चेष्टा करने लगी। मैंने कुएं के किनारे उगी चमेली की कलियों से गजरा बनाना सीख लिया।

हम सब शारदोप्पु की कदर करते थे। वे अपने पति इंजनीयर कात्तोल्लिल कुमारन मेनोन और बच्चों के साथ कोयंबत्तूर में रहती थीं। साल में तीन-चार बार वे अपनी काली फोर्ड कार पर अपने गांव आती थीं। मंदिरों का दर्शन उनके लिए काफी प्रिय कार्य था। इसलिए जब भी वे आती थीं, सबको बांटने के लिए तरह-तरह के प्रसाद भी साथ ले आती थीं। बच्चों की देखभाल करनेवाली बूढ़ी कल्याणिअम्मा भी उनके साथ मौजूद रहती थीं। उस बूढ़ी की आवाज कठोर थी। इसलिए भ्रम से उनकी बातचीत को गाली समझकर कई बार मैं नालाप्पाट भाग जाती थी। उन दिनों शारदोप्पु के साथ तीन बच्चे भी मौजूद थे, कृष्ण कुमारी, रोजी उर्फ राजराजेश्वरी और विजयन। उन दिनों रोजी के सामने का दांत उखड़ गया था। उसकी मुस्कान की मोहकता आज भी मैं भूली नहीं हूं। एक दफा शरदोप्पु घर आ गईं तो उसके साथ रोजी नहीं थी। तब नानी ने धीमी आवाज में मुझसे कहा कि वह बच्ची चल बसी।

"क्या रोजी स्वर्ग चली गई ?" मैंने नानी से पूछा।

नानी ने सिर हिलाया।

मैंने पूछा कि रोजी को स्वर्ग का रास्ता किसने दिखा दिया ? मैंने यह भी पूछा कि क्या रोजी पैदल ही स्वर्ग चली गई ?

नानी ने आंचल से नाक और आंखें पोंछ लीं।

"जाकर पढ़" उन्होंने कहा। उन दिनों ही हमारे साथ खेलने के लिए आनेवाली राधा की छोटी बहन रुक्मिणी भी मर गई। तब मैंने मृत्यु के बारे में ज्यादा जानने की जिज्ञासा प्रकट की। पर नालाप्पाट की औरतों ने उस विषय पर बात करने में विमुखता प्रकट की। आखिर कण्णत्त की उण्णिमायम्मा ने ही मृत्यु का एक सामान्य परिचय मुझे दे दिया। उन्होंने कहा कि मृत्यु के समय जीभ मुंह से बाहर निकल आती है और आंखों की पुतलियां बाहर उभर आती हैं। फिर अंतिम सांस लेना शुरू हो जाता है। अंतिम सांस की आवाज इतनी जोरदार है कि उसे सुनने पर कान तक फट जाता है।

"उण्णिमायम्मा ने किसी को मरते देखा है ?" मैंने पूछा।

"क्यों नहीं ! मैंने देखा है। किसी के मरने की खबर सुनते ही मैं वहां जाती हूं। मृतक की आंखें बंद कराना, पैरों को आपस में बांधना, मुंह बंद कराना आदि सब कुछ मेरे वश की बात है। बाकी सब लोग आंखें फाड़कर देखते रह जाते हैं।" उन्होंने कहा।

"क्या नालाप्पाट का कोई मरेगा ?" मैंने पूछा।

"मरने का वक्त आएगा तो मरेगा ही। यमराज के यहां एक किताब है। उसमें हम सबके नाम लिखे होते हैं। हमारे मरने का वक्त भी लिखा होता है।"

"उण्णिमायम्मे, क्या मेरा नाम भी लिखा होगा ?"

"क्यों नहीं ? यकीनन बच्ची का नाम भी लिखा होगा।"

"नानी का नाम होगा क्या ?"

"नानी का नाम भी होगा।"

"नानी का नाम नहीं होगा।" मैं जोर से चिल्ला उठी।

उण्णिमायम्मा जोर से हंस पड़ी। "क्या कोच्चुअम्मा मानवी नहीं ? देवी है क्या ? यहां जन्म लिया तो मरे बिना कैसे रह सकता है ? इसके लिए मुझसे गुस्सा क्यों कर रही है ? मैं तो यमराज नहीं हूं ! प्राण हरण करनेवाला तो मैं हूं नहीं।"

उसी साल नालाप्पाट घर में एक मृत्यु हुई। अम्मालू नामक बूढ़ी औरत तीन सालों से लकवे की शिकार होकर बेजान पड़ी हुई थी। थोड़े समय के लिए उसका शरीर कपड़े में लपेटकर उत्तरी कोठरी में लिटा दिया गया। फिर दाह-संस्कार के लिए दक्षिणी अहाते की ओर ले जाया गया। उसके लिए रोनेवाला कोई नहीं था।

मेरी धारणा थी कि अम्मालू नामक वह बूढ़ी औरत चिता से उठकर आकाश की ओर उड़ जाएगी। पर मैंने वहां कुछ नहीं देखा।

दोपहर का भोजन करने के तुरंत बाद नए 'ओट्टनतुल्लल'[1] कलाकार ने अंबाषत्त के दालान के उत्तरी-पश्चिमी दिशा में मौजूद छोटे कमरे के भीतर पहुंचकर अपने चेहरे पर रंग डालना शुरू कर दिया। उसकी तैयारियों को देखने हेतु मालतिकुट्टि मुझे वहां ले गई।

वेष-भूषाओं को मेज पर करीने से रखते हुए मृदंगवादक ने पूछा, "अप्पुण्णिदा के पीने के लिए मट्ठा ले आऊं ?"

"अरे, नहीं। अभी-अभी पेट भर खा लिया है न ? एक गडुवा ठंडा पानी यहां रख ले तो काफी है।" यह नवागत साधारणतः पुन्नयूरकुलम में 'तुल्लल' के लिए आनेवाले की तरह नहीं था। गोरा छरहरा बदन, कंधों पर लोट रहे बाल, थोड़ा क्रमरहित होने पर भी आकर्षक दांत। यही उसकी शक्ल थी।

"आज की कथा क्या है, जानती हो ?" उसने आइने से आंखें हटाए बिना पूछा।

हम कुछ नहीं बोलीं।

"अरे बच्चो, तुमसे ही पूछ रहा हूं।"

"हम नहीं जानती।" मालतिकुट्टि बोली।

"कल्याण सौगंधिकम्।"

1. **ओट्टनतुल्लल**–केरल की एक जनकीय नृत्यकला

उसने अपने बाल एक धोती में समेटकर सिर पर बांध दिए। फिर सिर पर मुकुट रखकर आइने में देखा।

"कल्याण सौगंधिकम् की कथा मालूम नहीं है ?"

"नहीं।" मैंने कहा।

"छि ! छि ! बड़े खानदान की बच्चियां हो न ? कल्याण सौगंधिकम् की कहानी नहीं जानती ! यह बात किसी से मत कहना। शरम की बात है।"

"वह एक बंदर की कहानी है न ?" मालतिकुट्टि ने पूछा।

"मामूली बंदर नहीं, साक्षात् हनुमान की। पांचाली के लिए पारिजात फूल तोड़ लाने हेतु अपनी गदा लेकर भीमसेन के जाने की कथा है। पांचाली कौन है, जानती हो ?"

"हां।"

"सात लोकों की सबसे बड़ी सुंदरी। पांच पांडवों की पत्नी। पटरानी। विश्वसुंदरी। विश्वसुंदरी का मतलब तुम जानती हो ?"

"नहीं।" मैंने कहा। मालतिकुट्टि नाक-भौं सिकोड़ती हुई कमरे के बाहर कदम रख चुकी थी।

"विश्व सुंदरी के मिसाल के तौर पर मैं किसको दिखा दूं ? यहां कोई विश्वसुंदरी नहीं जनमी होगी। यह पुन्नयूरकुलम एक पिछड़ा इलाका है। यहां किसी सुंदरी को देख पाना कठिन है। सुंदरियों को देखने के लिए त्रिश्शूर जाना पड़ेगा। मुझसे कृष्णन नंबूदरी ने कहा है कि पौ फटते ही वटक्कुन्नाथ मंदिर जाकर खड़े हो जाए तो सुंदरियों को देख पाएगा। दर्शन के लिए आनेवाली लड़कियों को देखने पर लगेगा कि वे अप्सराएं हों। नंबूदरी बता रहा था, अरे अप्पुण्णि, तू किसी सुंदरी से शादी करना चाहता है तो त्रिश्शूर जाना चाहिए। यातो वटक्कुन्नाथ मंदिर में या पारमेक्काव मंदिर में। वहां सबेरे लड़कियों की पलटन आ रही है न ? उन्हें देखने पर लगेगा कि अप्सराएं हों। मुझे त्रिश्शूर जाना ही पड़ेगा।"

"क्या तुम्हारी शादी हो गई ?" मैंने पूछा।

"क्यों ! बच्ची मुझसे शादी करना चाहती है ?"

एकाएक मुझे ऐसा लगा कि मेरे कान और गला जल रहे हों। मैंने मालतिकुट्टि का हाथ कसकर थाम लिया।

"हम जाएं।" मालतिकुट्टि ने कहा।

तुल्ललवाला जोर से हंस पड़ा वह मुकुट पहन चुका था। उसकी आंखें लाल-लाल हो गई थीं।

"मुझसे डर है ? मैं बच्चों को पकड़कर खाता नहीं हूं। बच्ची का नाम क्या है ?"

"कमला।"

"नालाप्पाट की बालामणिअम्मा की बेटी है न ?"

"हां।"

"क्या बच्ची की चूड़ियां मुझे दे देगी ? बच्ची के हाथ में हमेशा पहनने के लिए है। देगी न ?"

"नहीं। कुछ नहीं देना।" मालतिकुट्टि बोल उठी।

"वह नालाप्पाट की बच्ची है। पूछ ले तो जरूर दे देगी। अरी बच्ची, मुझे चूड़ी देगी न ?"

मैंने चूड़ी उतारकर उसे दे दी। वह प्लास्टिक की बनी एक काली चूड़ी थी। तुल्ललवाले ने उसे अपने बाएं हाथ में पहनने की खूब चेष्टा की। आखिर वह विजयी हुआ।

"मेरे हाथ में यह खूब फबती है। मैं बच्ची से भी अधिक गोरा हूं न ?" उसने कहा।

"हम जाएं।" मेरे हाथ थामती हुई मालतिकुट्टि जोर से बोली।

"चूड़ी मेरे हाथ से मेल खाती है। है न बच्ची ? मेरा हाथ भी सुंदर है। है न ?" उसने पूछा।

हम जल्दी वहां से घर के भीतर चली गईं।

"मैं उसे देखना नहीं चाहती। उसकी निगाहें देखी है न ? मुझे लगता है कि वह एक फूहड़ इंसान है।" मालतिकुट्टि बोली।

"फूहड़ से क्या मतलब है ?"

"फूहड़ याने फूहड़।"

कल्याण सौगंधिकम् के प्रदर्शन के वक्त वह आदमी मुझे और मालतिकुट्टि को नीचा दिखाने की चेष्टा करता रहा।

'देख रे कौन है लेटता राह पर
बंदर तू जरा हट लेट जा उधर'

इन पंक्तियों को गाते वक्त वह हमारी ओर ही देख रहा था। उसे देखकर लड़के मजा चखते हुए हंस पड़े।

"क्या मैं देखने में बंदर लगती हूं ?" रात में नानी के साथ बिस्तर पर लेटते हुए मैंने पूछा।

"कमला क्यों ऐसे मनहूस सवाल पूछती है ?"

"मैं देखने में कैसी लगती हूं ?"

"अच्छी लड़की लगती है।"

"मैं या पांचाली, कौन सुंदरी है ? वह पांचाली है न ! कल्याण सौगंधिकम् के लिए हठ करनेवाली ! मैं या वह, सुंदरी कौन है ?"

"शिव ! शिव ! यह कौन-सा सवाल पूछ रही है ? कमला को क्या चाहिए ? किसी ने कहा कि तू देखने में बदसूरत है? क्या बात हुई ?"

मैं नानी की कुर्ती में मुंह छिपाकर सिसकती रही। उस दिन मुझे भी, रुलाई का कारण मालूम न था।

अगले दिन मालतिकुट्टि ने मेरी चूड़ी की बात नानी से कह दी। नानी का चेहरा लाल-लाल हो गया।

"बच्चियों के हाथ से चूड़ी उतार ली ! यह कैसा मजाक है !"

"उसने मांग ली तो दे दी।"

"उसने कैसे मांगी ? लालची, लुच्चा। पहले का तुल्ललवाला तो कुलीन था। आइंदा इस नए तुल्ललवाले को यहां नाचने न दे।"

अंबाषत्त में नाचते वक्त उसने हमारे साथ जो बुरी हरकतें कीं, वैसी हरकतें नालाप्पाट में नाचते वक्त नहीं कीं। मामा की कड़ी आलोचना के डर से उसने बड़ी एकाग्रता के साथ नृत्य का प्रदर्शन किया। नालाप्पाट में संध्या समय 'शीतंगन तुल्लल'[1] का भी प्रदर्शन हुआ था। मामाजी के मजबूर करने पर यह प्रदर्शन संपन्न हुआ था।

"मुझे यह अच्छी तरह तो आता नहीं पर, नारायण मेनोन के कहने पर करना ही पड़ता है।" वेष-भूषा पहनते वक्त उसने कहा। 'शीतंगन तुल्लल' में, कमर की चारों ओर पट्टी लपेटकर मोटा नहीं बनाया जाता है। कमर में सिर्फ एक चित्तीदार धोती लपेट ली जाती है। दीयों की रोशनी में वह नई वेष-भूषा अत्यंत मोहक लगी। नौकरानी बीच-बीच में चुटकी काटती हुई मुझसे बोली, "साक्षात देवेंद्र की तरह है। है न बच्ची ?"

उपहार के तौर पर मामा ने चांदी के सात सिक्के और मामी ने एक धोती उसको दे दिए। मामाजी ने उससे कहा कि ओणम् के दिनों में वह दुबारा आ जाए। मामाजी ने उससे, 'परयन तुल्लल'[2] का नाच दिखाने को भी कहा।"

"उसकी वेष-भूषा नारियल के मुलायम पत्तों से बनाई जाती है। मैंने कभी इसका प्रदर्शन नहीं किया। नारायण मेनोन के मजबूर करने पर मुझे करना पड़ेगा।" नानी ने उसके बूढ़े बाप को थोड़ा पान और तंबाकू एक कागज में लपेटकर दे दिए। उसने हाथ जोड़कर नानी की वंदना की।

मेरी यह इच्छा थी कि फाटक पार करते वक्त ही सही वह मेरी ओर देखे और चूड़ी देने के प्रतिदान के रूप में एक बार मुझसे मुस्कुराते हुए विदा ले।

उसके बाप और मृदंगवाले ने जल्दी ही उत्तर दिशा की ओर कदम बढ़ाया पर तुल्ललवाले ने अपनी चाल को धीमी कर घेरे के पास खड़ी नौकरानी से कुछ फुसफुसाया। नौकरानी ने उससे भी कोई बात कही। आखिर वह खेत के किनारे से आगे बढ़कर आंखों से ओझल हो गया तो नौकरानी मेरे निकट आ गई। उसके

---

1. **शीतंगन तुल्लल**—ओट्टन तुल्लल से मिलती-जुलती नृत्यकला।
2. **परयन तुल्लल**—ओट्टन तुल्लल से मिलती-जुलती नृत्यकला।

ऊपरी होठ पर पसीने की बूंदें लटक पड़ी थीं। उसके शरीर से भी पसीने की बू आ रही थी।

"वह देवेंद्र नहीं, एक मामूली इंसान है।" मैंने कहा।

नौकरानी जोर से हंस पड़ी।

"वह बड़ा चालाक है। वह बता रहा था कि 'मैं एक विश्वसुंदरी हूं !' वह मेरा मजाक उड़ा रहा है।"

"उसे सुनने पर क्या जवाब दिया ?"

"मैंने कहा कि गरीबों का मजाक मत उड़ाए। इसके सिवा मैं और क्या बताऊं ?"

"मालतिकुट्टि ने कहा कि वह एक फूहड़ इंसान है।"

"मालतिकुट्टि बड़ी समझदार है। सब पर भरोसा रखने के लिए वह बच्ची की तरह मूर्ख नहीं। मालतिकुट्टि का कहना सच है। वह एक फूहड़ इंसान है। उसकी तिरछी निगाहों से ही मुझे पता चला कि वह तो फूहड़ है।"

मुझे याद है कि मैंने कुछ साल एलियंगाट स्कूल नाम से जाने जानेवाले एक हायर एलिमेंटरी स्कूल में पढ़ा था। उस समय पिताजी लगातार मुझे कलकत्ता छोड़कर त्रिश्शूर के कॉनवेंट में दाखिल होने के लिए मजबूर करते रहते थे। यह ऐसा जमाना था कि मेरी नानी दक्षिणी कोठरी के गोल खंभों तथा दालान में मटक-मटककर आ पहुंचने वाले कबूतरों से पूछती थी कि एक छोटी लड़की को त्रिश्शूर में अजनबियों के बीच छोड़ जाने की हिम्मत वी. एम. नायर को कहां से मिलेगी ? बीच-बीच में परिवर्तित मेरी शिक्षा-संबंधी इन योजनाओं को परनानी, बड़ी मां तथा छोटी मां ने पसंद नहीं किया।" वह बच्ची है न ? रात में किसी को देखकर डर जाएगी तो ?' बेचारी परनानी ने नानी से पूछा। उनके मन में ऐसी एक धारणा थी कि संसार की सभी बीमारियों की पूर्व पीठिका के रूप में कोई न कोई भयानक स्वप्न भविष्य में बीमार होनेवाला व्यक्ति देखता है।

"कोच्चू के विषम ज्वर की बात याद है न ? उस समय कोच्चू ढाई साल की थी। शुक्रवार रात को लेटी हुई थी। सुबह होते ही कोच्चू ने चिल्लाना शुरू किया। पूछने पर भी किसी से कुछ नहीं कहती थी। मैं घबरा गई। मेरी शंका थी कि नाली के किसी कीड़े ने बच्ची को काटा होगा। उसकी बंडी उतार दी और फर्श पर लिटाकर उसकी छानबीन की। एक खरोंच तक कहीं नहीं थी। शरीर को कमान की तरह टेढ़ाकर वह चिल्ला रही थी। अंबाषत्त के माधव मेनोन तक उठकर चले आए। माधव मेनोन थोड़ी-सी डॉक्टरी जानते थे। जब बड़ी मां का पेट खराब हो गया था तब माधव मेनोन ने ही कहा कि हींग पीसकर पेट पर मल दे। दो

घंटे के भीतर वे स्वस्थ हो गई।''

परनानी की लंबी बातचीत को सुनते रहने में केवल हम बच्चे ही रुचि दिखाते थे। घर-गृहस्थी, लिखाई-पढ़ाई आदि के वास्ते किसी के पास परनानी की बात सुनने की फुरसत नहीं थी। परनानी की सादगी को सभी ने उनकी समझदारी का अभाव मान लिया। वे अपने लिए कुछ नहीं मांगती थीं। पुन्नत्तूरकोट्टा के बड़े मालिक दौलतमंद एवं आंडबर प्रिय थे। उनकी बेटी के रूप में जन्म लेने पर भी, मंगनी के अवसर पर सभी आभूषणों से सजधज कर हाथी के ऊपर मंदिर दर्शन के लिए रवाना होकर भी परनानी तड़क-भड़क पूर्ण जिंदगी में अपने लिए निर्धारित स्थान ढूंढ नहीं पाई। वे धन-दौलत की भाषा नहीं जानती थीं। धन लिप्सा की चीख-पुकार पर उन्होंने बिलकुल ध्यान नहीं दिया। जब उन्नीस की उम्र में अम्मुक्कुट्टि अपनी इकलौती बेटी कोच्चू को लेकर अनुचरों के साथ पालकी पर नालाप्पाट आ पहुंची तो उनसे किसी ने कड़ुवे सवाल नहीं पूछे।

''मैं आइंदा कोविलकम् नहीं जाऊंगी। कोच्चू यहां से पले-पढ़े।'' वह एक मानिनी नारी की वापसी थी। एक खूबसूरत लड़की ने अपने पति तथा उनके शयन-कक्ष द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा को ठुकराकर कड़े स्वर में बताया कि उसके लिए नालाप्पाट के साग-भात ही काफी हैं। फिर वहां से चली आई। वह पुरुष सत्ता से छुटकारा चाहती थी। इसे देखकर नालाप्पाट घर में किसी की त्योरियां नहीं चढ़ीं। किसी का मुंह भी नहीं फूला। फिर कई सालों के बाद मैंने अपनी किशोरावस्था में प्रेम-संबंधी बातों को जानने में उत्सुक होकर परनानी से उनकी वापसी के बारे में पूछा तो वे ठठाकर हंस पड़ीं।

''मैं माफ नहीं कर सकी।'' उन्होंने कहा। बुढ़ापे में भी उनके बदन में खूबसूरती मौजूद थी। झुर्रियोंदार सोने के पत्तर की बनाई गई नन्ही-सी गुड़िया। आखिरी सालों में उनके दाएं गाल पर सिक्के के आकार का एक तिल प्रकट हुआ था। उनकी आंखें फुदकियों की भांति चंचल थीं। बालों में तेल की गंध मौजूद थी। पैरों की उंगलियां हमेशा साफ रहती थीं।

''खूबसूरत थी ?'' मैंने पूछा।

''गले में आमाड़ा और कुषल पहनती थी। बाएं हाथ पर कड़ा और दाएं हाथ पर मूंगे जड़े मंगलापुरम् चूड़ियां थीं। मेरे तोड़े के मध्य में हरा पत्थर जड़ा हुआ था। एकादशी के अवसर पर जब गोविंदपुरम् मंदिर में दर्शन के लिए गई तो वह तोड़ा ही कहीं गिर गया। उस दिन मारात्त की लड़कियों की 'तालप्पोली' थी। इसलिए मैं देखने गई। हमारे संग मटप्पिलाई शंकुण्णि नायर भी था। हमारे पीछे कल्पंचेरी का एक लड़का भी मौजूद था। वह केशवन था या नारायणन्, मुझे ठीक से याद नहीं। अंबाषत्त से कल्याणि अम्मा दर्शन के लिए आई हुई थी। माथे पर हरे रंग का छापा, नाक पर लाल पत्थर जड़ी नथनी, गले में सफेद पत्थर जड़े कंठाभरण

और हाथों में चौबीस मंगलापुरम् चूड़ियां, क्या कहूं ! सब देखते ही रह गए। सब लोग यह जानते थे कि माधव मेनोन ने चिट्टूर से एक अतिसुंदर पत्नी को लाकर पुन्नयूरकुलम में बसाया है।" परंतु सुना जाता है कि औरतों को बाहर ले जाना अपमान की बात समझनेवाले माधव मेनोन ने जवानी ढल जाने के बाद ही अपनी पत्नी को मंदिर जाने की इजाजत दी थी। उस जमाने के जागीरदारों का यही खयाल था कि मर्द हो तो दौलतमंद होना चाहिए और नारी हो तो खूबसूरत। इन दोनों के अभाव में उत्तम दांपत्य जीवन नामुमकिन है।

परनानी के पति तंपुरान खुद यह जानते हुए भी अपनी पत्नी से मांफी मांगने नालाप्पाट नहीं आए कि वे कसूरवार हैं। उन्होंने एक पत्र तक नहीं भेजा।

उस जमाने में सलाह-मशविरा देने का काम एक मुख्य पेशा नहीं बना था। सलाह सुनने में कोई रुचि नहीं दिखाते थे। केवल ईसाई लोगों ने पैसा देकर सलाहकारों का मान-सम्मान कर अपनी नम्रता का प्रर्दशन किया। उस जमाने में अपनी फेमिनिस्ट मां की छाती से चिपककर पालकी में नालाप्पाट आई हुई बच्ची मेरी नानी ही थीं। उन्हें चिरलयम् राजघराने की मुखछवि को ढोना पड़ा था। वे चांद का सा पीला मुखड़ा, गोलाकर बदन, बड़ी-बड़ी आंखें, खूशबूदार पसीना आदि को वहन करने के लिए बाध्य थीं। पिता से उपहार के रूप में उन्हें केवल सोने की एक जंजीर और उनका एक ढांचेदार फोटो ही मिले थे। नानी फेमिनिस्ट नहीं थीं, परंतु एक स्त्री अवश्य थीं। इसलिए ही पति के लाड़-प्यार और सेवा-शुश्रूषा में असीम खुशी महसूस करती थीं। उनकी अधीरता, असहायता और कमजोरी ने ही चिट्टंजूर के बड़े कुज्जुण्णि तंपुरान को उनकी ओर आकर्षित किया था। वे पूर्णतः एक मर्द थे। उन्हें एक दयाशील एवं मृदुभाषी पत्नी की ही जरूरत थी। नानी के विधवा होने के पश्चात् ही मेरा जन्म हुआ था। वे हमेशा कहती थीं, "अपने-अपने पति से कभी अप्रिय बातें मत कहना।"

"अप्रिय का मतलब क्या है ?" मैं पूछती थी।

"जो अप्रिय लगता है, वह मत कहना।"

"अप्रिय क्या है, यह जाने बिना अप्रिय कह दें तो ?"

"वैसा नहीं होगा। अपने पति को ईश्वर मानकर तुझे जीना चाहिए।"

"क्या नानी नाना की पूजा करती थीं ? नाना को ईश्वर कहकर पुकारती थी ?"

"हां। अरी कमला, तू जाकर नहा ले। बच्चों को घर के भीतर उकडूं नहीं बैठना चाहिए। नहीं तो किताब उठाकर पढ़ने ही बैठ जा।"

"मैं पाठ्य-पुस्तक से ऊब चुकी हूं। मैंने सबकुछ पढ़ लिया। मुझे एक सुंदर तंपुरान से शादी करनी है। माथे पर चंदन का टीका लगाए हुए तंपुरान के साथ। नानी, मैं स्कूल से उकता चुकी हूं।"

मैं असंतुष्ट होकर उनकी गोद में सिर रखकर लेट गई।

''कमला को पागलपन है। मामा के सम्मुख ऐसी बातें मत कहना। लड़कियां ऐसी बातें कर लें तो बड़ी शरम की बात होगी।''

''मेरा खयाल है कि मैं शादी की उम्र की हो गई हूं।''

''क्यों ऐसा लगता है ?''

''माराताट के अनियन, अंबाषतु के उण्णिदा और स्कूल के गोविंद कुरुप को देखते वक्त मुझे शादी का खयाल आता है।''

''छि ! छि ! कमला, तू क्या बकवास कर रही है ? तू सिर्फ सात बरस की होनेवाली है न ? सातवीं बरस में कोई शादी करेगा क्या ? शादी करने के लिए पंद्रह बरस का होना चाहिए न ? तुमने अब जिन लड़कों की बात कही, उनसे शादी करा दें तो उन्हें तुझे पालने में लिटाकर झुलाना पड़ेगा, तुझे भोजन करवाना पड़ेगा और कुर्ती उतारकर नहाना भी पड़ेगा। आखिर वे कहेंगे कि हमें इतनी छोटी बीवी की जरूरत नहीं। इसके बदले हमें भात और सब्जी बनानेवाली बीवी चाहिए; हमें कुंडा हटाकर दरवाजा खोल सकनेवाली बीवी चाहिए।''

''बस, बस नानी मां। मुझे आगे कुछ नहीं सुनना है। मेरा कोई नहीं होगा। मुझसे शादी करने के लिए कोई नहीं आएगा , है न ?'' नानी मुझे बाहों में भरकर फिर से लेट गईं। वे गाने लगीं...'तप्पो तप्पो तप्पाणी...'

''कमला, गाना सुनते ही तुझे नींद आएगी, है न ?''

परनानी ने पूछा। ''भागवतर के साथ इसकी शादी करवानी चाहिए।'' वे बोलीं।

''क्या अंधे भागवतर के साथ ? हमारे यहां भीख मांगने के लिए आनेवाले उस अंधे भागवतर के साथ ? नानी, वह बूढ़ा है न ? बूढ़े के साथ मुझे शादी नहीं करनी है। बूढ़ों के साथ मेरी शादी करा दें तो मैं मर जाऊंगी।''

''कमला, बूढ़े ही बेहतर है।'' मुलेठी चबाती हुई परनानी बोली, ''वे एक कोने में पड़े सो जाएंगे। बुड्ढों से कोई परेशानी नहीं होगी। जवान लड़कों के साथ शादी करे तो रोज रोना ही पड़ेगा।''

''अब वी. एम. नायर को बुड्ढों की खोज में चलना पड़ेगा न ? हमारे मोटप्पिलाई शंकुण्णि नायर हो तो कैसा रहेगा ? नहीं तो सालों पहले नाटक में कली की भूमिका करनेवाले चान्नात्तोल का नारायणन नायर हो तो ?'' नानी हंस-हंसकर मेरे बिस्तर पर लोट-पोट होने लगीं। हंसते वक्त उनके गाल और कान लाल हो जाते थे।

''मैं एक तरकीब बता दूंगी। हम इसकी शादी अंबाषत्त के दास के साथ करा दें। दास बुड्ढों का वेष पहनकर नकली दाढ़ी धारणकर हमें डराने के लिए यहां आता था न ? कमला के यहां होते छुट्टी लेकर उसे यहां आने को लिख दे।''

''नहीं। उसके मुंह से प्याज की बदबू आती है न ? दास भैया को नहीं बुलाना चाहिए। प्याज का सांभर मिलाकर इडली खाने के बाद यहां आ जाते हैं

और मुझसे मुंह सटाकर बातें करने लगते हैं तब मुझे उबकाई आती है। मुझे प्याज खानेवाला नहीं चाहिए।"

"तब बच्ची को नंबूदरी या तंपुरान ही चाहिए, है न ?"

"चुहिया फिर से चुहिया ही बन जाए।" नानी ने बताया।

"नंबूदरी के लिए काफी दूर जाने की जरूरत नहीं है। हमारा काट्टमाडम् है न ? वहां ढूंढ लेना काफी है। कोई पुराने रिश्तेदार भी..."

नानी और परनानी जोर से हंसती रहीं।

आखिर नानी ने कहा, "यह कब बड़ी हो जाएगी ? इसकी बकबक सुनने पर कभी-कभी लगता है कि इसकी बुद्धि कमजोर है। यह कैसी-कैसी बेवकूफी भरी बातें मुझसे पूछती है !"

"कन्या स्त्रियों का मठ ही इसके लायक है। इससे माधवन नायर की अभिलाषा की पूर्ति भी हो जाएगी। सुना है न कि यहां रहने पर सभ्यता नहीं सीख पाएगी !"

"मुझे सभ्यता की बात सिखाई जाएगी तो उसी क्षण मैं मर जाऊंगी। मैं बरामदे से कूदकर खुदकुशी कर लूंगी।"

"ऐसे शब्द तुझे किसने पढ़ाए ?"

"नंपिडि मास्टर ने।"

"अयिनी के नंपिडि ? वह पागल है क्या ? बच्चों को खुदकुशी सिखाता है ! अजीब मास्टर है ! बच्चों को घर में पढ़ाना ही इससे बेहतर है।"

मामाजी के पुस्तकालय से मैंने पढ़ने के लिए पहले पहल 'पावंगल' नामक किताब ली थी। उन दिनों वह कहानी तीन खंडों में ही प्रकाशित हुई थी। जो भाग मेरे लिए मजेदार लगे, वे ही मैंने पढ़े थे। कथा नायक द्वारा बिशप की चांदी की सामग्रियों की चोरी हो जाने पर भी वह दंडित नहीं हुआ तो मुझे खुशी हुई। जब कोसत को गुड़िया मिल गई और बाद में उसको मरियूस नामक युवक पति के रूप में मिल गया तब भी मैं अत्यंत प्रसन्न हुई। जब मेरी उम्र सात वर्ष की थी तब 'पावंगल' के एक दृश्य का नाट्य रुपांतरण किया और मैंने उसमें एप्पोणैन की भूमिका अदा की। एप्पोणैन तेनादियर दंपतियों की नालायक बेटी थी। जब मैंने उसकी भूमिका निभाने का निर्णय लिया तो नानी ने मना किया। "वह भूमिका कमला के लायक ही नहीं।" वे बड़बड़ाईं।

अंबाषत्त घर और नालाप्पाट घर के बीच में मौजूद मठ में ही नाटक का पहले पहल मंचन हुआ। मठ के मालिक दास भैया ही उसके निर्देशक थे। दर्शकों में बड़े मामा भी काफी प्रसन्न दिखाई पड़े। उन्होंने ही मलयालम में पावंगल का अनुवाद किया था। उस दिन रात में मेरी और मेरे बड़े भाई की अभिनय-पटुता के बारे

में मामाजी काफी देर तक सराहनापूर्ण बातें करते रहे। नाटक के अन्य अभिनेता बच्चों की प्रशंसा मामाजी ने नहीं की। नालाप्पाट के बच्चों के प्रति ही मामाजी का विशेष लगाव था। वे अन्य घरों में जनमे बच्चों के द्वारा प्रदर्शित करतबों की परवाह नहीं करते थे। शायद इसलिए मामाजी हमारे लिए जज, समीक्षक एवं जूरी बन गए थे। जब भी 'हस्तलिखित मासिक' लिखकर पूर्ण होती थी तब जल्दी वह मामाजी को दिखाई जाती थी। मन में मामाजी का ध्यान करते हुए ही नाटक का मंचन हुआ था। उन्होंने कभी भी ऐसा नहीं कहा कि 'यह बदतर हो गया।' शायद इसलिए ही हमें लगा कि हम चुनिंदे बच्चे हैं। हमारा यह विश्वास था कि किसी न किसी दिन हम भी दूसरों के पथ प्रदर्शक बनने में सक्षम हो जाएंगे।

मुझे सलाह देने या पथ प्रदर्शन करने के लिए कोई उद्यत नहीं हुए। इसलिए अपने मन के प्रति ही जिम्मेदारी दिखाते हुए मैंने जिंदगी गुजारी। मेरा मन सही ढंग से भले-बुरे का विवेचन करने में असमर्थ रहा। मेरा मन हमेशा हंसी बिखेरता रहा। सब कुछ सह लेने के लिए मेरा मन सदा उतावला था।

उन दिनों हमारी रिश्तेदारी के एक युवक और युवती के बीच जो प्रेम अंकुरित हुआ था, उसके बारे में उन दोनों की ही आपसी बातचीत सुनने का मौका मुझे मिल गया। मैं और मेरी संगिनी सोने का बहाना कर लेटी रहीं। तभी खिड़की पर बैठते हुए जवान लड़के ने लड़की से पूछा, "क्या तुम मुझे प्यार करती हो ?"

"हां।"

"कितना प्यार है !"

"इतना अधिक कि कहना मुश्किल है।"

"मैं हाथ पकड़ लूं !"

"पकड़ लो न।"

मैंने कई बार खुद से पूछा था कि भैया को छोड़कर और किसी जवान लड़के के प्रति मेरे मन में अथाह प्यार महसूस होने का वक्त कभी आ सकता है ? क्या मुझसे प्यार करने के लिए कोई रमणन आ जाएगा या मेरी पूजा करने के लिए कोई मजनू ?

उन दिनों हमारे गांव में कोई सिनेमा घर मौजूद नहीं था। नाटक भी नहीं खेला जाता था। मर्दों का एक मात्र मनोरंजन लड़कियों का शिकार करना होता था। गर्भ ठहर जाने के कारण आत्महत्या कर लेने वाली कुछ लड़कियों के किस्से हर साल सुनने को मिलते ही रहते थे। गर्भ के कारण फूले पेट वाली लाशें कुओं और तालाबों में पीली कुमुदनी की तरह तैरती दिखाई पड़ती थीं मर्दों का आखेट चलता रहा। उन्हें रोकने के लिए कोई कायदे-कानून नहीं बने। औरतें संयम और अनुशासन का पालन करती थीं। पर निरीह लड़कियों को बरबाद करनेवालों के विरुद्ध आवाज उठाने को वे उद्यत नहीं हुईं। कुछ लोगों ने यही सोचा कि दूसरों

के मामलों में दखल देने की क्या जरूरत है ? कुछ का कहना था कि जो लड़की मरी वह बदचलन थी। उसकी मृत्यु से हमारा क्या वास्ता ?

कुछ औरतें चुप्पी साधकर अपने दुराचारी पति, भाइयों और बेटों का बचाव करती रहीं। आखिर उनकी बेटियां मर्दों के आक्रमण की शिकार हुईं तो वे फूट-फूटकर रो पड़ीं।

पुरुष की कामातुरता ने विषैली हवा की तरह उस गांव के वायुमंडल को प्रदूषित कर दिया था। उसके बारे में किसी को कोई शिकायत नहीं थी। परंतु छोटी बच्चियां तक उसके प्रति सचेत हुई थीं। हाथ में थाली लेकर मंदिर की परिक्रमा करनेवाली दस वर्ष की लड़कियों के कदम भी उसके प्रभाव से लड़खड़ाते रहे। पालने में लेटनेवाली बच्चियां अपने ऊपर पड़नेवाली तीखी निगाहों को बर्दाश्त करने में असमर्थ होकर जोर-जोर से चिल्ला उठीं।

वह जमाना बहुत बुरा था। भलाई का मुखौटा पहनकर बुराई अपनी भूमिका निभा रही थी। कामांध लोग रात के अंधेरे में लड़कियों को टटोलने में व्यस्त रहते थे। पाप-निवारण के लिए पापियों द्वारा भागवत् पारायण, पूजा-अर्चनादि कार्य किए जाते थे। उस जमाने में दकियानूसी विचारधारा का दबदबा जोरों पर था।

पाप धो डालने के उद्देश्य से अमीरों द्वारा बहुधा बड़ी-बड़ी पूजा-अर्चा की जाती थीं। कहीं एक कत्ल हो जाता तो उसी साल वहां एक मेले का आयोजन होता था। यही दस्तूर था। ऐसी पूजा-अर्चनाओं से धन कमानेवाले लुच्चे लोग उस गांव में काफी मात्रा में मौजूद थे। पाप का दाम वे जानते थे। वे अच्छी तरह जानते थे कि पाप निवारण के लिए पूजा करनेवाले पापी ही होते हैं। यह जानते हुए ही वे पाप करने की प्रेरणा देते रहे। वे ही दलाल बने और शोहदे बने। उन्होंने अपने मालिकों को लड़कियों की इज्जत लूटने तथा मारने के लिए उत्तेजना प्रदान की। आखिर वे ही पाप धोने के लिए की जानेवाली पूजा-अर्चनाओं में, माथे पर चंदन का टीका लगाकर बड़े भक्त के रूप में शामिल होने में काफी उत्साह प्रकट करते थे।

आज के नैतिक वातावरण के साथ उस जमाने की तुलना करें तो मैं निस्संदेह बता सकती हूं कि वह जमाना बहुत बुरा था। आज बादल रहित नीलाकाश ही मुझे नजर आता है। आज की लड़कियां काफी खुशनसीब हैं। आज कोई भी अमीर उनकी इज्जत लूटने की हिम्मत नहीं करता। क्योंकि इस प्रांत के सभी युवक उनके संरक्षक हैं, उनके भाई हैं। वे चाहे गरीब हों या बेरोजगार, परंतु जानवरों सा व्यवहार करनेवाले व्यक्ति का गला घोंटने की शक्ति अवश्य ही उनकी भुजाओं में मौजूद है।

पिताजी की छोटी मां वटेक्करा नारायणिअम्मा एक आदमी से एक टोकरी तथा एक

थैला जिस पर गांधीजी का चित्र अंकित था, उठवाती हुई नालाप्पाट आ पहुंची और ऊंची आवाज में पूछने लगीं, "हमारी इलिच्चि कोता कहां है ?"

छोटी मां ने मुझे ही इलिच्चिकोता नाम प्रदान किया था। इसलिए मैं जल्दी ही झूला झूलना छोड़कर दक्षिणी बरामदे की ओर दौड़ पड़ी।

छोटी मां थकान मिटाने के लिए दालान में, दीवार से उठंग कर बैठी थी। केवल सोते वक्त ओझल हो जानेवाली चौड़ी मुस्कान उनके चेहरे पर छाई हुई थी। उनके मुंह में छोटे-छोटे दांत मौजूद थे, जो बड़े-बड़े दांतों को उखाड़कर डेंटिस्ट डा. कुरुविला ने बनाकर दिए थे। छोटी मां गोरे रंग की मोटी-तगड़ी बुढ़िया थीं। पतले बालों के बीच से कहीं-कहीं उनकी सफेद खोपड़ी नजर आती थी। अपने जूड़े को घने बनाने के लिए छोटी मां जूले का इस्तेमाल करती थीं। उनका कहना था कि वह हिरण के अयाल से बनाया हुआ है। नहा लेने के बाद हल्की धूप में दालान में बैठते वक्त उस जूले को भी फर्श पर बिछाकर गरम करना छोटी मां का दस्तूर बन गया था। मैंने एक दिन इस विचार से उस जूले को सूंघा कि उसमें हिरण की गंध होगी। पर उसकी गंध काली मिर्च मिलाकर उबाले हुए तेल की थी। छोटी मां को देखते ही मुझे ये बातें याद आईं।

छोटी मां के साथ जो युवा आया था उसका नाम बालन था। अपने दांतों की असाधारण मोटाई के कारण लोगों के मन में हरदम वह हंसी का भ्रम पैदा करता था। दुखी रहने पर भी लोग उसे हंसता हुआ समझ लेते थे। वह बड़ा सुशील युवक था। उसने मेरा हाथ पकड़ा और असली खुशी में हंस पड़ा।

"परीक्षा का समय निकट आ गया है न ! फिर भी सारा वक्त झूला झूलना और खेल ही खेल...है न ?" उसने पूछा।

"टोकरी में क्या है ?" मैंने पूछा।

"उण्णि को बुलाओ न ? उनके आने के बाद मैं यह खोल दूंगी। इलिच्चिकोता, तब तक सब्र करो।" छोटी मां बोलीं।

"छोटी मां आ गई हैं।" मैं ऊंची आवाज में बोल उठी।

दालान से मामाजी, दक्षिणी कोठरी से नानी और परनानियां, अटारी से मेरी छोटी मां, चौके से रसोइया और पश्चिमी अहाते से नौकरानियां दौड़कर आ गईं।

मेरी पुकार में उतनी शक्ति थी। सिर्फ ड्योढ़ी के अध्ययन कक्ष में बैठकर भूगोल पढ़नेवाले मेरे बड़े भाई छोटी मां की अगवानी करने नहीं आए। चामी अय्यर मास्टर ही इसका कारण था। रोज आधे घंटे के लिए मास्टर हमें ट्यूशन देते थे। मुझसे मलयालम में एक गुना दो दो, दो गुना दो चार...आदि का रट लगाने के बाद वे कहते, "आमी जाकर खेलो। मुझे मोहन को पढ़ाना है।"

"नारायणिअम्मा कब रवाना हुई ?" मामा ने पूछा। सभी जानते थे कि वे गुरुवायूर से पैदल आ रही हैं। सबको मालूम है कि नौ बजते-बजते नालाप्पाट पहुंचने के लिए सात बजते ही वटेक्करा से निकलना पड़ेगा। फिर भी शिष्टाचार के तौर पर मामाजी ही नहीं, सभी ने छोटी मां से पूछ लिया, "कितने बजे निकल पड़ी ?"

पौ फटते ही मंदिर में दर्शनकर सीधे यहां चले आने को सोचा। पह वह नहीं हो सका। नहाकर आते ही एचूमु (लक्ष्मी) कॉफी और इडली ले आई। वह हठ करती रही...छोटी मां, खाली पेट इतनी दूर न चलना...इस बालन ने कॉफी पीना शुरू किया। यह जल्दी उठनेवाला तो नहीं ! बैठे-बैठे इसने आठ इडलियां खा लीं। क्या बताऊं ? वारियत के फाटक तक पहुंचते ही सात बज गए। वह डॉक्टर डेविड टहलने निकला था। मैंने उससे पूछा, "अरे डेविड कितने बज गए ?" घड़ी देखकर उसने कहा, "नारायणिअम्मे, सात बज गए। इस वक्त आप कहां जा रही हैं ?" मैंने कहा, "तुम लोग टहलने जाते हो तो मैं क्यों न जाऊं ?" 'न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति' पर मैं विश्वास नहीं करती। उसने कहा, "नारायणिअम्मे, आपको देखते ही ऐसा मालूम पड़ता है।"

"हा...हा...हा।"

सब जोर से हंस पड़े।

"उण्णिमाये, अंबाषत्त जाकर कह दे कि वटेक्करा से नारायणिअम्मा आ गई हैं।" नानी ने कहा। अंबाषत्त के छोटे बच्चे, सयाने, सब बेसब्री से छोटी मां के आगमन का इंतजार कर रहे थे। जब एक सप्ताह तक वे पुन्नयूरकुलम में रहती थीं तब हमें, हमारे रिश्तेदारों तथा नौकरों को ऐसा एहसास होता कि कोई पर्व आ पहुंचा है। छोटी मां अंबाषत्त के उण्णिदा को 'अनार मोयूदू' पुकारती थीं।

"नारायणिअम्मा के आ जाने पर लगता कि नाटक और चाक्यार कूत्तु[1] दोनों एक साथ देख लिया हो।" एक बार अंबाषत्त के मुखिया केशुदा ने कहा। छोटी मां दूसरों की नकलकर चलना और बोलना जानती थीं। छोटी मां उस पगली औरत की नकल हमें दिखाती थीं, जिसका विश्वास था कि उसके दाहिने कंधे से शरीर के भीतर भूत घुस गया है। छोटी मां ने हमारे लिए सांप गोविंदन तथा कोलत्ताप्पुल्लि नंबूदरी की नकल भी कर दिखाई।

फिर कई सालों बाद जब मैंने 'हंसते बुद्ध' के नाम से प्रसिद्ध पुतला देखा तो मुझे लगा कि उस पुतले और छोटी मां की सूरत में समानता है। उस पुतले के चेहरे पर नाव के आकार की जो हंसी विद्यमान थी, वही छोटी मां के चेहरे को भी सदा अलंकृत करती रही थी।

---

1. **चाक्यार कूत्तु**—केरल के मंदिरों में प्रचलित एक दृश्य-कला

जब छोटी मां मेहमान बनकर हमारे यहां आती थीं तब मैं और नानी बीच के कमरे को छोड़कर उत्तरी कमरे में लेटकर सो जाती थीं। उसका एक कारण यही था कि बीच के कमरे में स्थित पनाले की अथाई में छोटी मां का बोझ ढोने की ताकत और विस्तार विद्यमान थे। छोटी मां रात में कम से कम दस बार पेशाब करती थीं। रात में जब जब मेरी नींद टूटती तब-तब छोटी मां के कमरे में कड़ाही में गडुआ डुबोकर पानी लेने की आवाज सुनाई पड़ती। छोटी मां छुट्टीहीन कारखाने की तरह थी। दिनभर दूसरों को हंसाती रहती थीं और रातभर पेशाब करती तथा नाला साफ करती रहती थीं। फिर भी छोटी मां देखने में तंदुरुस्त थीं। वे हमेशा सफेद कपड़े ही पहनती थीं। वे कलफ और नील लगाकर धुलाई हुई धोती, ओढ़नी तथा कुर्ती पहनती थीं। हरे किनारेदार ओढ़नी के प्रति छोटी मां का विशेष लगाव था। उनकी धोतियों से लोबान के धुएं की गंध निकलती थी। मैं उस गंध का आस्वादन करने के उद्देश्य से उसकी गोद में बैठकर अपना मुंह उनकी छाती में छिपा लेती थी। तब छोटी मां मेरा मुंह अपने मोटे-मोटे उरोजों के बीच दबा लेती थीं और प्यार के साथ मेरे माथे पर चूम लेती थीं।

"जब तू बड़ी हो जाएगी तब मेरे अप्पुण्णि से शादी कर लेना।" उसने एक बार कहा, "पिताजी से जिद कर लेना कि पति के रूप में तुझे सिर्फ अप्पुण्णिदा ही चाहिए।"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। अप्पुण्णिदा पिता की इकलौती बहन का इकलौता बेटा था। छोटी मां उन्हें अपना बेटा समझती थीं और उनसे अथाह प्यार भी करती थीं।

"तू कुछ बोलती क्यों नहीं ? क्या तुझे अप्पुण्णिदा से शादी करना पसंद नहीं ?" छोटी मां ने पूछा।

"मैं दस बरस की हो जाऊं तभी शादी हो सकती है। तब तक अप्पुण्णिदा और किसी के साथ शादी कर लेंगे।" मैंने कहा।

"अरे बालनू, यह तो मामूली लड़की नहीं है। यह खूब छंटी हुई है।" छोटी मां बालन से बोली।

बालन हंस पड़ा। छोटी मां की बात सुनकर हंसना और उनका पीछा करते रहना ही बालन का काम था। इस मेहरबानी के बदले छोटी मां ने वादा किया था कि कुट्टन से कहकर कलकत्ते में एक नौकरी पक्की कर देंगी।

"कलकत्ते की नौकरी की बात कहां तक पहुंच गई ?" एक दिन नानी ने बालन से पूछा। तब छोटी मां नहाने गई हुई थी। इसलिए बालन को दिल खोलकर बात करने का मौका मिल गया।

"मुझे कोई उम्मीद नहीं कि वह नौकरी मिलेगी। मुझे इसका बिल्कुल भरोसा नहीं कि छोटी मां के कहने पर कुट्टेट्टन मान लेंगे। फिर भी छोटी मां को मैं

छोड़ नहीं पाता। मेरी सगी मां को भी मेरे प्रति इतना प्यार नहीं है। छोटी मां के गुजर जाने तक मैं वटेक्करा को छोड़ नहीं सकता। मैं और क्या बताऊं ?''

दुख प्रकट करते वक्त भी बालन के चेहरे पर हंसी ही प्रकट हुई। उस दृश्य ने मुझे काफी आकर्षित किया। सिर्फ उसी दिन ही मुझे मालूम हुआ कि जितनी आकर्षण-शक्ति सौंदर्य में विद्यमान है उतनी मोहकता बदसूरती में भी मौजूद है।

उस दिन भी छोटी मां पकवान भरी टोकरी लेकर ही हाजिर हुई थीं। मास्टर मेरे बड़े भाई को पढ़ाने के बाद लौट जाने की तैयारी में थे। तब छोटी मां ने कहा, ''अरे मास्टर, वहां रुक जाओ न ! तुम्हें देने के लिए मैं एक चीज लाई हूं।''

मास्टर ने अपनी नाक छिनकाकर हाथ ड्योढ़ी की दीवार पर पोछ लिया और छोटी मां की ओर देख मुस्कुराए।

छोटी मां ने एक छोटी डिबिया मास्टर की ओर बढ़ा दी। मास्टर ने छोटी मां के हाथ छुए बगैर उसे ग्रहण किया। उसे उलट-पलटकर देखने के बाद मास्टर ने बड़ी खुशी से सिर हिलाया।

''यह भेंट मेरे लायक ही है।'' उन्होंने कहा।

''परखकर देख लो ! मास्टरजी खड़े-खड़े एक सौ एक बार छींक मारेंगे।''

मास्टर ने डिबिया खोलकर एक चुटकी चूर्ण लेकर सूंघ लिया। तुरंत वे जोर से छींकने लगे। छींक के साथ उनका चेहरा लाल-लाल हो गया। उन्हें यह आशंका तक हुई कि छींक-छींककर वे मर जाएंगे। छोटी मां दीवार से उठंगकर बैठी, मास्टर को सिर झुकाते-उठाते देख सिर हिलाकर हंसती रही।

''अरे मास्टर, कुछ और चाहिए ?'' नानी ने पूछा।

''बस, नारायणिअम्मे, बस। यह कौन-सा चूर्ण है। यह...(छींक)...जरा तीखा लगता है। यह काली मिर्च के चूर्ण की तरह है।'' मास्टर ने पसीने से तर-ब-तर होते हुए कहा।

''चेट्टि लोग ही इसका इस्तेमाल करते हैं। वे ही इसका तीखापन सह सकते हैं। थक गए न ? थोड़ा मट्ठा पी लें ?''

''नहीं। मैं घर जाकर ही कुछ खा लूंगा।'' मास्टर बोले।

मास्टर के चले जाने के बाद मैं और मेरे बड़े भाई दोनों ने मिलकर टोकरी की चीजें एक चटाई पर फैलाकर रख दी। उनमें मुरुक, लड्डू, खजूर, खोई, पुए, कलभ के गोल आदि मौजूद थे। छोटी मां ने ही कलभ के गोलों को एक-एक कर बांट दिया। मेरी छोटी मां, मामी और मामाजी की मां को एक-एक गोल मिला। आखिर उन्होंने अपनी नीवी को खोलकर एक छोटी काली चीज मेरी ओर बढ़ा दी। ''यह बढ़िया अंजन है। कसौटी पर घिसकर आंखों में डाल दे। आंखें खूबसूरत हो जाएंगी।'' वे बोलीं।

उसे उलट-पलटकर देखने पर मुझे ऐसा लगा कि उसमें सफेद लकीरें पड़ी

हैं। उस दिन शाम को मैं अंबाषत्त के आंगन में खेल रही थी तब प्रसन्ना के पिताजी कुञ्ञुण्णिदा ने मुझसे कहा, "प्रसन्ना बता रही थी कि नारायणिअम्मा ने कमला को अंजन दिया है। पर वह आंखों में मत लगाना। वह जहर है। खून में मिल जाए तो बच्ची बीमार हो जाएगी।"

उसके बाद मैंने उस अंजन का इस्तेमाल नहीं किया। मेरे बड़े भैया ने जिस डब्बे में डाक-टिकट, सिक्के, कांच की गोलियां आदि जमाकर रखे थे उसमें वह अंजन भी बेकार पड़ा रहा।

जब मैं आठ बरस की हो गई थी तब छोटी मां बीमार होकर वटेक्करा के दक्षिणी कमरे में लेटी पड़ी हुई थीं। एक बार त्रिश्शूर की बोर्डिंग जाते वक्त मैं वटेक्करा पहुंची। तभी दक्षिणी कोठरी से एक भयानक चिल्लाहट सुनाई पड़ी। मैं घबराहट से कांप गई। बालन ने कमरे से झांकते हुए कहा, "आमी, डरना नहीं। छोटी मां हैं। तीन दिन से मलत्याग न होने से तड़प रही हैं। दर्द के मारे रात दिन इन्हें नींद नहीं आती।"

मैं फूफी के पीछे दुबक गई।

"क्या छोटी मां से मिलना नहीं चाहती ?" बालन ने पूछा।

मुझे लगा कि मेरे पैर शिथिल हो रहे हैं। मेरी हथेली पसीज उठी।

"अरे बालन, उसे यहां ले आओ न ?" छोटी मां ने मरदानी आवाज में आदेश दिया।

"मैं छोटी मां से मिलना नहीं चाहती।" मैं बोल उठी।

बुखार चढ़ने के पांचवें दिन मेरे चेहरे और बदन पर लाल-लाल दाग प्रकट होने लगे। तब मदर सुपीरियर ने पोन्नम्मा से मुझे जल्दी घर ले जाने को कहा। बोर्डिंग के मेरे कमरे में और तीन लड़कियां ठहरती थीं। उन्हें भी बीमारी लग जाने की गुंजाइश होने से मुझे घर भेजना अत्यंत जरूरी हो गया। शारदा ने साटन के एक फीते से मेरे बालों को संभालकर बांध लिया। मीनाक्षी ने मेरे चेहरे पर घने रूप से पाउडर पोत दिया।

"अरी बच्ची, चेचक की बीमारी है। डरने की कोई बात नहीं।" एली ने कहा।

पोन्नम्मा ने कलफ और नील लगाकर धुली हुई धोती पहन ली। उन्होंने अपने लाल गालों को चुटकी देकर और लाल कर दिया। उन्होंने मदर के दिए रुपए नीवी में खोंस लिए।

"आ जा बच्ची। हम बस पकड़ लें।" उन्होंने कहा।

जब हम बस अड्डे पर पहुंचीं तो सब लोग बड़ी उत्सुकता से पोन्नम्मा को

देखने लगे।

"मठ से आ रही हो ?" एक व्यक्ति ने पूछा।

"यह जानने से तुम्हें क्या फायदा ?" पोन्नम्मा ने पूछा। ड्राइवर लोग हंस पड़े। एक व्यक्ति ने सड़क की ओर मुड़कर पान रस थूक दिया।

"अरी बहन, सामने के दरवाजे से घुस जाओ। पीछे लफंगे छोकरे भरे पड़े हैं। वे चैन से रहने न देंगे।" ड्राइवर बोला।

पोन्नमा मुझे घसीटती हुई बस के भीतर घुस गई और ड्राइवर के बाईं ओर बैठ गई।

"अरी बच्ची, मेरी गोद में सिर रखकर लेट जा।" वे बोलीं। कलफ की बू मुझे अच्छी लगी।

"खूबसूरत औरतों को देखने पर ये लुच्चे खून चूस लेंगे। मेरे करीब आकर बैठो न !" ड्राइवर ने पोन्नमा से कहा।

"नहीं, मैं यहां बैठूंगी।" पोन्नम्मा दरवाजे की ओर जरा उठंगकर बैठ गई। मैं ड्राइवर और पोन्नमा के बीच बैठ गई।

"क्या हुआ ? इसके चेहरे पर क्या है ? चेचक है ? चेचक लगे बीमार को बस में ले जाना कानूनन मना है। सच बता दो। इस बच्ची को चेचक की बीमारी है क्या ?"

"मेरे ईसा मसीह, तुम क्या बोलते हो ? उसे कोई चेचक-वेचक नहीं है। उस बच्ची का रंग ही वैसा है। वह लाल-लाल रहता है। अब धूप लगने से और लाल हो गया।"

"उसके चेहरे पर दाग सा कुछ दिखाई पड़ रहा है। तुमने 'कुछ नहीं' कहा तो ठीक है। मुझे कोई एतराज नहीं। कोई डर नहीं। जन्म लिया है तो एक न एक दिन मरना ही पड़ेगा न ?"

"बच्ची को सिर दर्द है। अरी बच्ची, लेट जा। मेरी गोद में सिर रख ले। कुन्नमकुलम पहुंचने पर मैं बुला लूंगी।"

हम कुन्नमूकुलम् पहुंच गईं तो पोन्नम्मा ने एक टैक्सी बुला ली और मुझे उसमें बिठा दिया। करूवान की कार ही कुन्नमूकुलम् की एक मात्र टैक्सी थी। मुझे देखते ही उसने कहा, "यह हमारे नालाप्पाट की बच्ची है न ! कल मैं बच्ची के बड़े भाई को भी घर ले गया था। उसकी देह पर भी चेचक के फफोले उभर आए थे।"

उन दिनों बड़े भाई कुन्नमूकुलम में पढ़ाई कर रहे थे। हम दोनों को कोई भी बीमारी एक साथ ही लगती थी। इसमें कोई अचरज महसूस नहीं हुआ।

करूवान ने अपना चश्मा रुमाल से पोंछकर साफ किया। फिर उसी रुमाल से कार की कांच भी साफ की।

"अरी बच्ची, हम चलें। सांझ होते ही घर पहुंचा दूंगा।" उसने कहा।

पोन्नम्मा की बांहों में मैंने विश्राम कर लिया। कार की बोनट खोलकर करूवान ने जांच-पड़ताल की। फिर अपनी सीट पर लौट आया।

"स्टार्ट हुई ! कार स्टार्ट हुई !" पीछे की ओर देखकर हंसते हुए वह बोला। उसके दांत पान के धब्बे लगने से काले पड़ गए थे।

उन दिनों कुन्नमूकुलम् से पुन्नयूरकुलम् की ओर जाने के लिए सड़क मौजूद नहीं थी। नारियल-कुंजों से कार धीमी गति से आगे बढ़ी। नालाप्पाट पहुंचते ही एक घरघराहट के साथ कार एकाएक रुक गई। घरघराहट बनी रही।

"इसे चालू करना मुश्किल है। गाड़ी खड़ी कर दी तो फिर चालू करने में कठिनाई होती है।" करूवान ने कहा।

पंख फैलाते सफेद कबूतर की भांति पोन्नम्मा अपने कपड़े झटकाती हुई कार से उतर गई और आगे बढ़ीं। अपनी आंखों से पोन्नम्मा की खूबसूरती का आस्वादन करनेवाले टैक्सी ड्राइवर के प्रति मेरे मन में आदर का भाव पैदा हुआ। मैं पोन्नम्मा की ऊंगलियों में लटक गई।

बड़े मामा दालान से उठ आए।

"कौन ! आमी ? क्या हुआ ?" नानी भी कार के निकट दौड़ आई। नानी का चेहरा पीला हो गया।

"डरने की कोई बात नहीं। बच्ची को चेचक की बीमारी लग गई है।" पोन्नम्मा बोलीं।

"मुन्ना भी आ गया है।" नानी बोलीं। उन्होंने मुझे अपने शरीर से सटाकर पकड़ ली और मेरी बंडी ऊपर उठाकर मेरी देह की जांच-पड़ताल की।

"ज्यादा तो नहीं। है न ?" उन्होंने पूछा।

"घबराने की कोई बात नहीं।"

"तुम कौन हो ?.. समझ में नहीं आया।" नानी बोलीं।

"मेरा नाम पोन्नम्मा है। मैं मठ में रहती हूं। बच्चों को सिलाई का काम सिखाती हूं। मुझसे मदर ने कहा कि इस बच्ची को घर पहुंचा दे। मैं इसी गाड़ी में कुन्नमूकुलम् वापस जाऊंगी।"

"नहीं, रात में यहीं ठहर जाओ। सबेरे जाना उचित है होगा । घर आ जाओ।"

परनानियां और छोटी मां दक्षिणी कमरे में चटाई पर बैठी हुई थीं। नानी ने पोन्नम्मा से छोटी मां के कमरे में लेट जाने का अनुरोध किया।

"मुझे 'एक' के लिए जाना है।" पोन्नम्मा बोलीं।

उन्हें कहां जाना है ? यह छोटी मां की समझ में नहीं आया। उनकी भाषा नालाप्पाट वालों के लिए अजीब लगी। पोन्नम्मा ने अपना जूड़ा खोल दिया तो

उनकी खूबसूरती देखकर सब अवाक रह गईं। बाद में नानी ने राय प्रकट की कि एलियंगाट कोविलकम् की मालकिनों के भी पोन्नम्मा की तरह सुंदर बाल नहीं थे। तब परनानी ने कहा कि बाल के मामले में जाति-धर्म की बात लागू नहीं है।

"बड़े अचरज की बात ही है।" नानी बोलीं।

"उसकी माला पर लटकनेवाली उस सूली को देखने पर ही मालूम पड़ा कि वह ईसाई लड़की है। मुखड़ा देखकर मैंने सोचा कि वह नायर जाति की है।" परनानी बोलीं।

"दुलहिन आ गई है, दुलहिन आ गई है।" इन शब्दों ने दोपहर की नींद से मुझे जगा दिया। ये शब्द किसके थे ? नौकरानी तो नहीं ! उत्तरी कोठरी की खिड़की से मैंने आंगन की ओर देखा। वहां आम के बड़े पेड़ के नीचे चूल्हे पर रखे कड़ाह से धुआं उमड़ रहा था। वह धान उसनाने का बर्तन था। उसकी दाईं ओर टेढ़े खड़े पलाश के पास आठ-दस औरतें कतार में खड़ी थीं। उनके बीच रेशम की पीली साड़ी पहनी हुई एक जवान लड़की खड़ी थीं। उसकी जुल्फों में सूखी चमेली का गजरा और गालों में काजल के धब्बे पड़े हुए थे।

"क्या छोटी मालकिन के लिए यह दुलहिन पसंद आई ?" वल्ली ने पूछा। मैं जल्दी ही सीढ़ियां उतरकर उत्तरी दालान में पहुंच गई।

"छोटी मालकिन को यह दुलहिन पसंद आई क्या ?" वल्ली ने दुबारा पूछा। दुलहिन ने अपनी चकित निगाहों से मेरे चेहरे की ओर देखा। वह अपनी ऊंगलियों से किनारे पर फूल कढ़े रुमाल को कसमसा रही थी।

"दुलहिन का नाम क्या है ?" मैंने पूछा।

वल्ली ने अहाते के छुइमई के झंखाड़ में पीक फेंका।

"उसका नाम लक्ष्मी है।" वल्ली ने कहा।

"सुंदर नाम है।" परनानी ने कहा।

वल्ली का बड़ा लड़का कुज्जुकुट्टन उन दिनों कोलंबो के एक एस्टेट में नौकरी कर रहा था। उसका उपनाम अंजक्कालन था। मांपुल्लि कृष्णन के पिता का नाम भी अंजक्कालन ही था। छोटी मां की राय थी कि बेटे को कोलंबो में नौकरी होने के कारण ही वल्ली को एक शिक्षित और सुशील लड़की को बहू के रूप में प्राप्त हुआ है।

"वल्ली उसे परेशान मत करना।" परनानी बोलीं।

"बड़ी मालकिन क्यों मुझसे ऐसी बातें करती हैं ?"

"वल्ली की आदत मैं खूब जानती हूं। इसलिए बता रही हूं।"

उसके साथ खड़ी औरतें हाथ से मुंह छिपाकर हंस पड़ीं। उसे केवल मजाक की बात मानकर वल्ली भी उनके साथ हंस पड़ी। वल्ली प्रायः अपनी विशाल छाती पर ओढ़नी नहीं डालती थी। पर उस दिन उसके कंधों पर एक अंगोछा लटक रहा था। अंगोछे की पतली धारियों के बीच से वल्ली के गले का तावीज ऐसे झलमला रहा था जैसे मेघमालाओं के बीच से पूनम का चांद। वल्ली की नथनी पर कार्तिक नक्षत्र की तरह चमकनेवाला एक पत्थर जड़ा हुआ था। धूप में वह चमक उठा।

भाभी के ध्यान को आकर्षित करने के लिए अंजक्कालन के छोटे भाई आम के पेड़ के इर्द-गिर्द लंगड़ी मारकर परिक्रमा कर रहे थे और कभी-कभी नारियल के पेड़ पर चढ़ने की चेष्टा भी कर रहे थे।

''राहवा (राघवा)...प्रवाहरा (प्रभाकर)...अरे कुत्ते के पिल्ले, एक ओर पड़े रह—नारियल पर चढ़कर पैर मत तोड़ना।'' वल्ली अपने माथे पर हाथ से पीटती हुई बोल उठी।

लक्ष्मी ने अपने देवरों की हरकतें कनखियों से देख लीं।

''भोजन कर लिया क्या ?'' नानी ने पूछा।

''नहीं, नहीं। मैं सीधे यहां आ गई हूं। मुझे मालूम था कि छोटी मालकिन दुलहिन को देखने के लिए आंखें बिछाकर बैठी है।'' वल्ली बोली।

नानी ने दुलहिन को दो किनारेदार धोतियां उपहार में दीं। उन धोतियों में केतकी के फूल और कलभ की सुगंध मौजूद थी। लक्ष्मी ने उन धोतियों को सूंघकर देखा।

''उसको कुछ खाने को दे दो।'' नानी ने वल्ली से कहा।

''फिर वे सब एक जुलूस बनकर दक्षिणी दिशा की ओर चल पड़ीं। पश्चिमी आंगन को पारकर श्राद्ध-कमरे के पिछवाड़े से वे आगे बढ़ीं। राघवन और प्रभाकरन जुलूस की अगुवाई करते हुए लंगड़ाते लंगड़ाते आगे-आगे चल रहे थे।

दो दिनों के बाद रेशमी साड़ी, चमेली का गजरा तथा काजल के बिना लक्ष्मी नालाप्पाट के ओखली खाने में प्रकट हुई। 'मैं आप सबको पसंद करती हूं' की मुद्रा में उसके मुखड़े पर एक मुस्कान चमक रही थी।

''काम सीख जाए।'' वल्ली ने कहा। ''मेरे यहां की कुञ्जिकाली को भी ब्याह कराकर मुतुबट्टूर भेज दिया। अब घर का सारा काम इसे ही निबाहना है। मैं बूढ़ी होती जा रही हूं। हमेशा कमर में दर्द लग रहा है। हाय मेरी अम्मा...'' ओखली के सम्मुख फर्श पर, दीवार से उठंग बैठी वल्ली ने आंखें मूंद लीं।

''वल्ली की उम्र कितनी है ?'' मैंने पूछा।

''अरी छोटी मालकिन, वल्ली की उम्र तो कुछ ज्यादा हो गई। मैं तैंतीस साल की हो गई हूं। अगले सावन को मैं चौंतीस की हो जाऊंगी।''

''अंजक्कालन की उम्र कितनी है ?'' मैंने पूछा।

"वह चौबीस साल का है।"

"वल्ली की बड़ी बेटी काली की उम्र ?"

"वह बत्तीस साल की है।"

"तब तो पहली उम्र में वल्ली ने बच्चे को जन्म दिया ?"

"अब छोटी मालकिन ने मुझे जाल में फंसा दिया !"

धान कूटने के बाद लक्ष्मी ने चोरी-छिपे एक मुट्ठी भूसा मुझे खाने को दे दिया। कभी-कभी अंबाषत्त की श्यामला भी भूसा खाने के लिए दौड़ आती थी।

"खली का स्वाद इससे भी बेहतर है।" श्यामला बोली।

गाय की मांड़ी में डालने के लिए रखे खली के टुकड़े सभी की आंखें बचाते हुए मैंने और श्यामला ने खा लिए। उससे मुंह में एक प्रकार का खट्टापन और बालू का खुरदरापन महसूस हुआ।

"बालूकण के होने पर भी कोई बात नहीं। वह निगल ले।" श्यामला बोली। कभी-कभी श्यामला कच्चे आम के टुकड़ों में नमक, मिर्च और तेल मिलाकर तश्तरी में डालकर हम सबको खाने के लिए ला देती थी। बुजुर्गों की आंखें बचाए ड्योढी या श्राद्ध-कमरे में बैठकर हम उसे खा लेती थीं और आंसू भी बहाती थीं।

उन दिनों हमारे साथियों की मंडली में छह प्रमुख व्यक्ति शामिल थे। वे हैं—टी.के.आर् कुट्टि लिखकर हस्ताक्षर करने का अभ्यास करनेवाले मारात्ताट के अनियन, अनियन की छोटी बहन तंकम्, आंबाषत्त के केशव मेनोन की बेटी मालिनिकुट्टि, कुंजण्णि मेनोन की बेटियां प्रसन्ना और श्यामला, हेडमास्टर चामी अय्यर का बेटा राजू उर्फ राशामणि आदि। दर्द होते ही रोनेवालों को हम अपनी मंडली में भर्ती न करते थे। आपस में नारियल की कच्ची तीलियों से मारना, धक्का देकर गिराना आदि हमारे मनोरंजन थे। उन दिनों हमारी पिंडलियों में तीलियों के मारने से पड़े निशान भरे रहते थे। घुटनों में कभी न भरने वाले घाव भी रहते थे। सांझ होने के पहले तालाब में उतरकर नहाते समय घाव का जलन असह होने पर हम 'उफ...हाय' आदि शब्द निकालते थे। अपने ही द्वारा आयोजित क्रीड़ाओं में हम आपस में एक दूसरे को घायल करते थे। ये बातें बुजुर्गों को नहीं बताते थे।

'अंधियारा चपत' नामक एक कार्यक्रम ही हमारा प्रिय खेल था। ऊपर के किसी कमरे में खिड़की-दरवाजे बंदकर एक दल छिपा बैठा रहता है। दूसरा दल उसे ढूंढ लेता और चुटकी, थप्पड़ आदि के द्वारा पहले दल को सताता। यही खेल था। किसी को रोने की इजाजत नहीं थी। खेल के अंत में खिड़की खोलते वक्त कुछ के गालों पर ऊंगलियों के निशान दिखाई पड़ते। कुछ की आंखें गंदली नजर आती थीं।

"मालतिकुट्टि रोई हुई सी लगती है।" अनियन बोलते।

यह सुनते ही मालतिकुट्टि ऊंची आवाज में 'कुट्योप्पू...कुट्योप्पू' चिल्लाती हुई अपनी धाय की तलाश में अंबाषत्त की ओर भाग जाती। "रोनेवाले बच्चे लड़ाई में शामिल नहीं हो सकते।" बीच-बीच में बड़े भाई सभी को चेतावनी देते थे। हम सबको यह मालूम था कि जब पुन्नयूरकुलम् में विश्व महायुद्ध आ पहुंचेगा तो मालतिकुट्टि और प्रसन्ना को हिटलर अपनी फौज में भर्ती नहीं कराएगा।

"ऐसे लोगों को सेना में भर्ती कराया जाए तो हम लड़ाई में हार जाएंगे।" अनियन बोले।

"फौज में मेरी भर्ती हो जाएगी न ?" मैंने पूछा। मेरी छाती जोर से धड़धड़ कर रही थी।

मारात्ताट के अनियन अपना सिर पीछे की ओर मोड़कर दाईं हथेली को अपने माथे पर रखकर जोर-जोर से हंस पड़े और बोले, "अरी आमी, तुझमें एक बंदूक उठाने की शक्ति भी नहीं फिर सेना को तुझसे क्या फायदा ? तू सिर्फ घोड़े की मालिश करने में काम आ सकती है।

उन दिनों मैं लान्सडाउन रोड के मकान में रह रही थी। बरामदे में बैठकर खासकर छुट्टियों के दिनों में सड़क से पैदल जानेवालों को देख मजा लूटने में मुझे काफी समय मिलता था। कभी-कभी मेरी पैनी निगाहों की वजह से कुछ लोग ऊपर की ओर देखते और मुझे भी देख लेते थे। मनोबल की सहायता से मैं अपनी निगाहों को काफी तेज बना सकती थी। यह विद्या आईना में पड़नेवाली रोशनी को किसी के चेहरे पर गिरा देने की तरह थी। मैं अपनी निगाहों की तीक्ष्णता बढ़ाकर अजनबियों को आकर्षित करने की चेष्टा करती थी। अधिकतर लोग आठ-दस बरस की चोगेवाली को देख मुस्कुराते चले जाते थे। सिर्फ एक व्यक्ति ही वहां खड़े होकर मुझे परेशान करने के ढंग से मेरे शरीर और चेहरे पर अपनी नजरें सरकाता रहा। वह बड़ा विरूप था। उसने गेरुए रंग की धोती और कुर्ता पहन रखे थे। सिर और दाढ़ी के बाल अनियंत्रित रूप से बढ़े हुए थे। गले में तरह-तरह की मणिमालाएं पहनी थीं। ऊपर की ओर देखते वक्त उसने मुझे देखा तो वह रुक गया। पहले मुझे गलतफहमी हुई कि बाहर की ओर उभरे लाल दांतों को दिखाकर वह हंसने की चेष्टा कर रहा है। बाद में उनके हाथ की हरकतों से पता चला कि वह मुस्कुराहट नहीं, वीभत्स गुर्राहट है। उसकी मुद्रा एक क्रुद्ध भेड़िए की तरह थी। उसने अपने दाहिने पैर को नृत्य की शुरुआत करने की भांति हिला दिया। वह दाहिने हाथ से दीप स्तंभ को पकड़कर मुझे देखते खड़ा रहा। शायद उसका खयाल होगा कि उसकी निगाह हटते ही मैं भाग जाऊंगी। पसीने से सना उसका भोंडा चेहरा धूप में चमक रहा

था। भय और विस्मय के साथ मैं उसे देखती रही।

बाद में यह दस्तूर बन गया। वह साधु मेरे आगमन की प्रतीक्षा में सड़क के किनारे की डाक-पेटी के पीछे उकड़ूं बैठा रहता। मुझे बरामदे में देखते ही वह अपनी गंदी हरकतें शुरू कर लेता है। इस दुनिया की सबसे बड़ी कुरूपताओं के प्रतीक के रूप में मैंने उसे देखा और समझा। मुझे डर था कि वह खुले दरवाजे से भीतर घुसकर जीने की सीढ़ियां चढ़ ऊपर आ जाएगा और मुझे पकड़कर ले जाएगा। फिर भी बरामदे से हट जाना मेरे लिए मुश्किल जान पड़ा। मेरा मन हमेशा खतरों के करीब आ जाने के लिए उतावला रहता था। एक बार दोपहर के वक्त सभी सो रहे थे। सिर्फ मैं ही सोए बिना गमले के पौधे की भांति बरामदे में यूं ही खड़ी रही। तब सड़क पर साधु नजर आया। दो आंखें उसके रोमावृत चेहरे पर अंगूर की तरह चमक उठीं। उसके दांतों ने मुझे एक भयानक मुस्कुराहट प्रदान की। तब मेरी नौकरानी ने शरीर सहलाते खड़े साधु को देख लिया।

''हाय मेरी अम्मा, यह तो लफंगा साधु है ! बच्चे के देखते ही वह अपना कपड़ा उठा देगा। आ जा बच्ची, दालान में मत ठहरना।'' वह बोली। फिर वह मुझे घसीटकर एक सोफे पर बिठा दिया।

''बच्ची ने कुछ देखा तो नहीं ?'' उसने पीले होठों से पूछा। ''जो देखने लायक नहीं, वह देखा तो नहीं ?'' नौकरानी ने दुबारा पूछा।

मैंने सिर हिलाया।

''क्या बच्ची ने उस साधु के चेहरे के सिवा और कुछ देखा तो नहीं ?'' नौकरानी ने पूछा।

''मैंने उसको पूरा का पूरा देख लिया।'' मैंने कहा।

''मेरे पुन्नोक्काविल भगवती, अब मैं क्या करूं ? यह बात बच्ची अपनी मां से कहेगी तो वे मुझे ही गालियां देंगी। बच्ची ने पहले ही मुझे क्यों नहीं बुलाया ? मैं इस साधु को पत्थर मारकर खदेड़ देती।'' वह बोली। ऐसा कहने के बाद उसने और एक बार दालान के सिरे पर जाकर सड़क की ओर नजर डाली।

''बच्ची वहां से मत उठना। वह लफंगा अभी तक गया नहीं।''

नौकरानी की शिकायत सुनकर रसोइया अपनी टूटी चप्पल पहने गली में उतर पड़ा। वह साधु से बात करने लगा। मैं भी उसे देखती रही। रसोइया साधु को डांटने के लिए चला गया था पर मुझे लगा कि वह साधु से मित्रता प्रकट कर रहा है। दोनों हंस रहे थे। जब रसोइया वापस आया तब साधु जल्दी ही उत्तर की ओर चल पड़ा। एलगिन रोड पर पहुंचते ही एक बार उसने मुड़कर देखा।

''वह कह रहा है कि वह हमारी बच्ची से शादी करना चाहता है।'' रसोइया बोला।

''क्या ! और यह सुनकर तुम यों ही लौट आए ? उसके गाल पर एक थप्पड़

क्यों नहीं लगाया ? तुम मर्द हो क्या ?" नौकरानी बड़ी नाराज दिखाई पड़ी। वह आगे बोली, "तुम नमकहराम हो क्या ? यह अभी तक सयानी भी नहीं हुई। इससे शादी करना है ! इसे सुनकर तुमने उसके चेहरे पर दो थप्पड़ क्यों नहीं लगा दिए ! मैं यह बात मां को बता दूंगी। मालिक से भी कह दूंगी।"

"यह बच्ची साधु की हरकतें देखकर क्यों खड़ी रही ? इसे कलकत्ते में देखने लायक और कुछ नहीं मिला ?" रसोइया गरज उठा।

फिर वह किस्सा कुञ्ञात्तु के कान में पहुंच गया। कुञ्ञात्तु से पिताजी की कंपनी में काम करने वाले ड्राइवर जान गए। एक शुक्रवार के दिन शाम को तीन बजे अलाउद्दीन नामक ड्राइवर ने गुस्से में आकर संन्यासी को लात मारी। उस दिन आत्मरक्षा के लिए वह भोंड़ा एलगिन रोड़ की ओर भागा था। उसके बाद वह कहीं दिखाई नहीं पड़ा। एक दिन रसोइए ने कहा, "वह कुंभ-मेला के बाद आया हुआ था।"

"कौन ?" मैंने पूछा।

"वह गोसाईं है न ? धोती उठाकर दिखानेवाला वह गोसाईं ! वह कुंभ मेला देखकर आ रहा था।"

"कुंभ मेला माने क्या है ?"

"कुंभ मेला देखने के लिए दुनिया भर के लोग आ जाते हैं। वहां तो संन्यासियों का होहल्ला मच जाता है। कुछ लोग सांपों को सिर पर लपेटकर आ जाते हैं।"

"नंबियार कभी कुंभ मेला देखने गया था ?"

मैं नहीं गया...मैं तो साधु नहीं हूं ! मुझे सांप भी नहीं चाहिए, विभूति भी नहीं। मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे आराम से जिंदगी गुजारनी है। कल्लू ही कुंभमेला देखने के लिए चली जाए। साधुओं के प्रति कल्लू को ही लगाव है न !"

कल्लू रोने लगी। परिहास का पात्र होते ही सिसककर रोने तथा दूसरों से क्षमा प्रार्थना करवाने में वह अत्यंत चतुर थी। जिस नंबियार को उससे दस-पंद्रह बार मांफी मांगनी पड़ी थी, उसी नंबियार ने आखिर उससे शादी की। फिर उसे पीड़ा पहुंचाने पर हर बार नंबियार को उससे माफी नहीं मांगनी पड़ी !

जब मेरी उम्र आठ साल और आठ महीने की हो गई तब मेरी मां ने एक और बच्ची को जन्म दिया। प्रसूति का समय निकट आ जाने पर 'मिड वाइफ' (दाई) को घर में ही ठहराने का दस्तूर कायम था। उन दिनों मां जहां-जहां जाती थीं, वहां-वहां सहेली के रूप में 'मिड वाइफ' भी दिखाई पड़तीं। वे शिरियन ईसाई औरत थीं। नालाप्पाट घरवाले उन्हें 'नर्स' या 'नैस' कहकर बुलाया करते थे। प्रसव के समय

पर, सुविधा को ध्यान में रखते हुए साधारण तौर पर मनाए जाने वाले जाति-धर्म संबंधी किसी भी भेद-भाव की परवाह नहीं की जाती थी।

नर्स को नालाप्पाट घर में रहना पसंद था। वहां उनकी बात सुनने के लिए अनेक श्रोता मिल जाते थे। वहां की नींद भी काफी सुखदायक थी।

"थोड़ा मछली का व्यंजन भी मिल जाए तो काफी मजा आ जाएगा।" वे नौकरों से कहती थीं। केवल निरामिष भोजन करनेवाले नालाप्पाट के सामिषी नौकर इसे सुनकर सहानुभूति से हंस पड़ते।

आखिर वल्ली को एक तरकीब सूझी। नालाप्पाट में दोपहर के भोजन का कार्यक्रम एक बजने तक समाप्त होता था। उसके बाद पान खाने का बहाना कर नैस को मांप्पुल्लि घर जाना होगा। नालाप्पाट में भी पिसा हुआ तंबाकू और सुपारी अवश्य मिलता। पर देसी तंबाकू खाने की जिद कर नैस को अपनी चाल की रफ्तार बढ़ाने को कहा जाता। वहां दालान में चौकी पर बैठकर भात और इमली मिलाकर बनाया गया मछली का व्यंजन खूब खाती। मुंह से निकलनेवाली मछली की बू को छिपाने के लिए देसी तंबाकू चबाती। ये तरकीबें मुझे मजेदार लगीं। कमर के ऊपर स्थूल और कमर के नीचे दुबली दिखाई पड़नेवाली वह औरत जब छाता तानकर दक्षिण-पश्चिम की दिशा की ओर चलने लगती तब मैं भी तालाब तक उसका अनुगमन करती। पेट भर भोजन करने तथा पान चबा जाने के बाद उसका पीक झाड़ी में थूकते वक्त उनको देखते रहना मैं पसंद करती थी। उनका खिलखिलाकर हंसना भी मुझे पसंद था।

प्रसव का समय निकट आने पर गर्भवती को रेंड़ी का तेल पिलाने का एक दस्तूर उन दिनों कायम था। एक शुभ नक्षत्रवाला दिन-चुन लिया जाता। उसके पिछले दिन एनिमा दी जाती। उसके अगले दिन ही बहुधा गर्भवती का प्रसव भी होता। वृच्छिक महीने के उत्तराषाढ़ के दिन पौ फटते ही मां को रेंड़ी का तेल पीना पड़ा। परनानी ने यह राय भी प्रकट की कि तिरुवोणम् या अविट्टम नक्षत्र के दिन प्रसव हो जाएगा। पर पूरोरट्टादि नक्षत्र के दिन ही प्रसव हुआ। रात के समय मेरी नींद टूटी तो बरामदे में तेज रोशनी फैली पड़ी थी। बीच के कमरे से फुसफुसाहट सुनाई पड़ती थी। बिस्तर से उठकर वहां तक जाने में संकोच महसूस हुआ। मैं जानती थी कि केवल बालिग ही रात के समय का इस्तेमाल कर सकते हैं।

मुझे नर्स की अवाज साफ-साफ सुनाई पड़ी। वे बोल रही थी, "दम लगाओ, एक और बार दम लगाओ..."

मुझे हंसी आ गई। मैंने हंसी रोकने के हेतु तकिए को मुंह में दबाया। फिर मैं यूं ही सो गई।

"अरी कमला, कमला...उठ जा।" नानी मां के पुकारने पर मैं जाग उठी।

खिड़की के बाहर उजाला फैला नहीं था। इसलिए नानी के जगाने पर मुझे आश्चर्य हुआ।

"कमला छोटी बहन को देखना नहीं चाहती ?" नानी ने पूछा।

"क्या ! छोटी बहन आ गई !"

"आ गई।"

जिस प्रकार 'विषुक्कणि' देखने के लिए ले जाया जाता है उसी प्रकार बंद आंखों के साथ मैं नीचे के कमरे की ओर चली। वहां एक पलंग पर मैं करवट बदलकर सो रही थीं। नीचे फर्श पर बिछे बिछौने पर एक लाल शिशु लेटी थी। उसके कटे नाल के छोर पर खून के धब्बे पड़े थे। कमरे में डेटोल की गंध छाई पड़ी थी।

"क्या छोटी बहन को छूकर नहीं देखना है ?" नानी ने पूछा।

"अभी नहीं।"

"क्या कमला को पसंद नहीं आई ?"

मैंने सिर हिलाया।

"यह बच्ची कब बड़ी हो जाएगी ? कब मेरे साथ खेलने लगेगी ?"

नानी हंस पड़ीं और बोलीं, "यह कमला के साथ खेलने नहीं आएगी। जब यह बच्ची बड़ी हो जाएगी तब तक कमला खेलना छोड़ देगी।"

"फिर मां ने इसे क्यों जन्म दिया ?"

"अरी कमला, बकवास मत कर। जाकर दांत साफ कर ले और पढ़ाई शुरू कर।"

उस दिन नाश्ता करते समय बड़े भाई ने कहा, "वह मुन्नी इतनी छोटी है कि उसे मैं जेब में डाल सकता हूं। मैं जेब में डालकर देख लूं ?"

"जेब में नहीं डाल सकते। बस्ते में डाल सकते हैं। तुमने कहा था न कि एक गिलहरी को पकड़कर पाल लेना है ? उसका क्या हुआ ? कितने दिनों से बता रहे हो ? अभी तक नहीं पकड़ा।"

मेरे भाई ने एक गिलहरी को पकड़कर वश में करना चाहा। इस सिलसिले में कार्डबोर्ड की पेटियों में छोटे-छोटे छेद डालना, चूहेदानी की तलाश करना आदि उन दिनों भैया की रोजमर्रा जिंदगी की जिम्मेदारियां थीं। भाई ने मुझसे कहा भी था कि वे गिलहरी की भाषा जानते हैं। इसे सुनकर मारात्ताट के अनियन बोले थे, "गप।" उस गांव में कोई ऐसा नहीं था कि अनियन को विश्वास दिला सके। एक बार मैंने खबर दी कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का निधन हुआ। तो वे मेरी बात मान लेने के लिए तैयार न हुए। मैंने ठाकुर की शव-यात्रा अपनी आंखों से घर की खिड़की से देखी भी थी। फिर भी अनियन बोले, "अरी आमी, क्यों गप्पें मार रही है ?"

उस जमाने में उस गांव में दो तरह के लोग मौजूद थे। एक तो सच को झूठ मानते थे, दूसरे झूठ को सच मानते थे। दोनों वर्ग लालच के जाल में फंसे हुए थे। प्रसव के बाद दो सप्ताह तक नर्स नालाप्पाट में ही ठहरीं। मां और नानी ने साड़ी, जूते, चमड़े की थैली आदि उन्हें उपहार में दे दिए। मां को नहा लेने में मदद करने के लिए नर्स तथा उण्णिमायम्मा ने विशेष दिलचस्पी दिखाई परंतु मां ने उन्हें गुसलखाने में घुसने ही नहीं दिया।

"थोड़ी देर तेल लगाकर मालिश कर दूंगी" उण्णिमायम्मा बोलीं।

"मैं खुद ही नहा लूंगी।" मां ने कहा।

मां के नहाते वक्त नर्स और उण्णिमायम्मा गुसलखाने के बाहर पूर्वी बरामदे में दीवार से उठंगकर यूं ही बैठी रहती थी। उनकी बातचीत सुनने के लिए मैं भी बैठी रहती।

"यह तो अंग्रेजी ढंग का प्रसव है।" उण्णिमायम्मा बोलीं।" ठीक तरह से प्रसव-शुश्रूसा करें तो खूबसूरती निखर आएगी। उसे देखने के लिए चार आंखों की जरूरत पड़ेगी। पहले पहल थोड़ा धन्वंतरी तेल मलना है। फिर हरी हल्दी को कूट कर शरीर पर लगाना चाहिए। आधे घंटे तक मालिश करनी है। फिर मूंग के चूर्ण से शरीर की चिपचिपाहट को दूर कर लेना है। उसके बाद गुलदाऊदी के पत्ते डालकर उबाले पानी को शरीर पर उड़ेल दे तो शरीर लाल-लाल दिखाई पड़ेगा। फिर लहसुन का लेह और हुलबे का चूर्ण भी इस्तेमाल करे। मैं ये सब बनाना जानती हूं। अभी शरीर की देखभाल न करें तो फिर मुसीबत आ जाएगी ? परंतु ये मानती ही नहीं। क्या करें ?

"वे अंग्रेजी दवा पी लेंगी। अब लेह और हुलबे का चूर्ण कौन इस्तेमाल करता है ? जरूरी दवाएं कलकत्ते से वी.एम. नायर भेज देंगे।"

"कलकत्ते में कौन-सी दवा है ? ऐसी कोई दवा है जो यहां नहीं मिलती। पिछले वर्ष में एक घर में प्रसव कराने गई थी। वहां तीन तरह की दवाएं इस्तेमाल की जाती थीं। भूख होने के लिए एक लेह। हाजमे के लिए एक लेह और तंदुरुस्ती के लिए एक लेह। जानती हो, इससे क्या हुआ ? प्रसव के बाद बिस्तर से उठी तो कैसा रंग था ! नए सोने की चमक थी उसमें। मोटाई भी कितनी ! कहते नहीं बनता। मुझे डर था कि मंदिर जाते वक्त किसी की नजर लग जाएगी। उतना सौन्दर्य था। देवांगनाओं की भांति..."

नर्स अपने अनाकर्षक हाथों को परखती रही। फिर बोली, "शरीर रूखा पड़ा है...यहां अच्छा तेल मिल जाएगा ? मुझे अच्छी तरह तेल लगाकर नहाना है।"

"नैस, मेरे साथ स्नान-गृह आ जाओ। मैं पीठ मल दूंगी।"

"उण्णिमायम्मा ने अनेक प्रसव देखे होंगे, है न ?"

"इस गांव में कोई ऐसा प्रसव नहीं हुआ जो मैंने नहीं देखा है।"

"वही सच है। निम्न जातिवालों के घर नहीं जाऊंगी। नायर जातिवालों के घर जा सकती हूं।"

"नंबूदरियों के यहां भी। मैं न दिखूं तो डॉक्टर पूछने लगेगा—'उण्णिमायम्मा कहां गई ? मदद के लिए तुम हो यह सौभाग्य की बात है,' वह बताता है। वह तो एक हंसोड़ा आदमी है। परंतु कभी-कभी बोलेगा, 'जच्चा चाहिए या बच्चा, निर्णय कर ले। मैं एक को ही बचा सकता हूं।' तब छाती पीटना, चिल्लाना शुरू हो जाते हैं। डॉक्टर का पैर पकड़ने लगेंगे। 'दोनों को बचा ले' कहते हुए लोट-पोट। कभी-कभी दोनों को बचा लेता है तो कभी बच्चे को चीर कर ले लेता है। वह देखा नहीं जाता। चाकू से काट-छांट करने से खून की नदियां बहती हैं। कभी-कभी मुझे चक्कर आ जाता है। पर बैठने की फुरसत ही कहां ? सब गुरुवायूरप्पन का करिश्मा है। है न नैस ?" उण्णिमायम्मा की बात सुनकर नर्स ने सिर हिलाया।

"खून ? खून कहां से आ जाता है ?" घबराहट के साथ मैंने उण्णिमायम्मा से पूछा। डर के मारे मेरे घुटने कांप रहे थे।

"अच्छा ! यहां बैठकर इस बच्ची ने सब कुछ सुन लिया ? मेरे गुरुवायूरप्पा, कोच्चुअम्मा मुझे डांट लेंगी। अरी बच्ची, जाकर खेलो न ? बड़ों की बातचीत होने की जगह दुबककर नहीं बैठना चाहिए। दालान में जाकर खेलो। बच्ची ! अपने बड़े भाई को देखकर सीखो। वह कितना अच्छा लड़का है। जब भी देखो, किताब पढ़ता रहता है। नहीं तो लिखता रहता है।"

"क्यों इस बच्ची की आदत ऐसी हुई ? प्रसव के बारे में बातें होती हैं तो वहां दुबककर बैठी रहती है। अरी बच्ची, जाकर खेलो न ? बच्ची से बात करने के लिए मेरे पास वक्त नहीं। मुझे और भी काम है।"

हमें कलकत्ते से लौटकर एक सप्ताह बीता होगा, तब नौकरानी के नाम डाक से एक पार्सल आई। यह बहुत साल पुरानी घटना है। मेरी याद में उन दिनों हमारे गांव में कोई डाकिया नहीं था। सांझ होते ही पोस्ट मास्टर का नौकर रप्पाई नामक छोकरा ही नालाप्पाट के लिए चिट्ठी और पत्र-पत्रिकाएं ले आता था। सोमवार के दिन शाम के वक्त दक्षिणी कमरे के पूर्वी खंभे के नीचे चिर प्रतिष्ठित दीए की रोशनी में मेरी कुंवारी छोटी मां 'मातृभूमि' साप्ताहिक पत्रिका ऊंची आवाज में पढ़ा करती थी। मैं, मेरे बड़े भाई, नानी और बड़ी नानियां वह सुनते थे। जब पोट्टेक्काट या उरूब की कहानियां प्रकाशित हो जाती थी तब हम सब नालाप्पाट की दक्षिणी कोठरी में, कहानी के अंत को जानने की उत्सुकता में सांस रोके स्तब्ध बैठे रहते थे। एक बार किसी ने बिच्छुओं की एक प्रेम कहानी लिखी थी। श्री माधवन के चित्र ने उसके लिए चार चांद लगा दिए। मुझे और मेरे बड़े भाई को वह कहानी

काफी पसंद आई। 'प्रेम कहानियां हमें पसंद नहीं' वाली मुद्रा उनकी जन्मजात थी। "विशुद्ध प्रेम ! यह सुनकर मुझे मिचली आती है।" नानी अक्सर तल्खी से कहती थीं। नालाप्पाट की औरतों की यह धारणा थी कि कुलीन परिवार की औरतों के मन में प्रेम के प्रति अवज्ञा ही होनी चाहिए।

एक दिन सांझ के वक्त रप्पाई आया तो उसके हाथ में एक पार्सल था। वह कोरे कपड़े में लपेटा हुआ था। उसके तीनों भागों में लाह से मोहर भी लगाई गई थी। उसके ऊपर हमारी नौकरानी का पता लिखा था। वह नाम पढ़ते ही मामाजी ने कहा, "ऐसे नाम का व्यक्ति यहां नहीं है।"

तब दक्षिणी कोठरी से बाहर झांकती हुई नानी बोलीं, "यहां है। वह यहां ठहरनेवाली नौकरानी है।"

"कलकत्ते से एक बंडल आई है। हस्ताक्षर कर छुड़ा लेना। नहीं तो अंगूठे का निशाना लगाना भी काफी है।" रप्पाई बोल उठा।

नौकरानी उत्तरी कोठरी में बैठकर टूटी हुई चूड़ियों को आंच लगाकर टेढ़ा कर रही थी। यह शोरगुल सुनते ही वह सिसक-सिसककर रोनी लगी।

"वह बरामदे में नहीं आएगी। कुट्टन ही हस्ताक्षर कर उसे छुड़ा ले।" मामा की मां ने कहा।

मैंने नानी के चेहरे को लाल होते देखा। उन्होंने पार्सल की डोरियों को चाकू से काट दिया। तब उससे कसब की दो धोतियां नीचे गिर पड़ीं। उनके साथ कलकत्ता के रसोइए का एक पत्र भी था।

"वह तुझे क्यों धोती भेज रहा है ?" मां ने पूछा। नौकरानी उत्तरी कोठरी के दरवाजे को पार करते ही दिखाई पड़नेवाले अंधेरे कोने में, पकने के लिए रखे गए कटहलों के बीच छिप गई।

"वह तुझे क्यों धोती भेज रहा है ?" नानी ने एक बार और पूछा।

"मुझे नहीं मालूम।" नौकरानी बोली।

"कल ही ये वापस भेज दी जाएंगी।" नानी बोलीं। रसोइए का पत्र पूरा का पूरा पढ़े बिना ही नानी ने चूल्हे में डाल दिया।

"मैंने कोई गलती नहीं की। पुन्नोक्काविल भगवती की कसम, मैंने कोई गलती नहीं की।" नौकरानी बोली।

परनानियों ने कहा कि नौकरानी को अपने घर वापस भेजना ही उचित है। छाती पीटना, रोना-कलपना आदि हरकतों के कारण वह फैसला सफल नहीं हुआ।

उस दिन से नौकरानी पछतानेवाली मग्दलना मरियम की तरह बर्ताव करने लगी। उसने अन्य लड़कियों के साथ मंदिर के तालाब में नहाने जाना छोड़ दिया। हमेशा दुख के साथ मेरी छोटी बहन को अपनी गोद में लिए वह आकाश की ओर अलक्ष्य भाव से देखती बैठी रही।

"अरी बच्ची, अब मैं कलकत्ता नहीं जाऊंगी।" उसने मुझसे कहा।

"क्या कारण है ?"

"उसका एक कारण है। पर वह बच्चों से बता नहीं सकती।"

एक दिन उसे परेशान करनेवाले एक जमींदार की कहानी उसने मां को सुना दी। उस जमींदार ने धमकी दी थी कि उसकी बात न मानने पर वह उसका घर फूंक डालेगा।

"उस जमींदार को क्या चाहिए ?" मैंने पूछा।

"मैं नहीं बता सकती। मैं बच्चों से यह नहीं कह सकती।"

उसके बारे में मैंने नानी से बात की तो वे झुंझला उठीं।

"ससुरी। इसे बहुत पहले ही यहां से निकाल देना चाहिए था। इसे इसका खयाल तक नहीं कि यहां बच्चे पल रहे हैं !"

एक दिन दोपहर बाद नौकरानी को ढूंढते हुए उसकी मां नालाप्पाट आ गईं। उन्होंने कहा कि पोन्नानी से कुछ रिश्तेदार आए हुए हैं। इसलिए बेटी को घर ले जाना है। उन्होंने आगे कहा, "कल ही वापस पहुंचा दूंगी।"

उस दिन सांझ के वक्त मेरी नानी ने रसोइए को नौकरानी के घर भेज दिया। नानी ने रसोइए से कहा, "उससे कह देना कि बच्ची रो रही है। जल्दी आ जाए।"

रसोइया लौट आया तो हम रात का भोजन कर चुके थे। पूर्वी दालान में फानूस रखकर वह जल्दी वहां बैठ गया।

"मौसी, आइंदा मैं यह काम कर नहीं सकता। ऐसी औरतों के घर मुझे न भेजें। मेरी बेइज्जती हो गई।"

"क्या बात हुई ?"

"जब मैं वहां पहुंचा तो कमरे के भीतर कोई खांस रहा था। मैंने जरा झांककर देखा...मौसी के खयाल में वह कौन होगा ?"

"बस, बस। ज्यादा कहने की जरूरत नहीं।"

"मैंने झरोखे से झांककर देखा तो उसने मुझे भी देख लिया। मैं सकुचा गया। आइंदा इस लड़की को यहां न आने दें। अरी मौसी, यहां बच्चे हैं न ! वह ससुरी बच्चों को बरबाद कर देंगी।"

उस दिन रात को रसोइए ने भोजन नहीं किया।

मेरे भाई सुंदरन को पढ़ाने के हेतु मंगलापुरम का एक बूढ़ा आदमी कलकत्ते के हमारे घर में आता था। रसोइया आदि उसे 'साहब' कहकर पुकारते थे। हम उसे 'पेटू मास्टर' कहते थे। हमारे लिए उसका पेट भूगोल-सा लगा। उसके सम्मुख बैठते वक्त उसके पेट से बादल की गड़गड़ाहट, सागर की खरबराहट और चिड़ियों की

चहचहाहट सुनकर हम हंस पड़े। परंतु सुंदरन ने कभी भी हंसने की हिम्मत नहीं दिखाई। वह अपने पीले चेहरे के साथ पेटू मास्टर की बातें ध्यान से सुनता रहा। मास्टर ने कहा कि अंग्रेजों को भारत से निकाल दें तो यहां के हिन्दू लोग अकाल से पीड़ित होकर मर जाएंगे। असल में कांग्रेस हिंदुओं के षड्यंत्र के फलस्वरूप जन्मी हुई संस्था है। उन्होंने आगे कहा, ''यदि मैं ब्रिटिश सम्राट होता तो इन सबको गोली से उड़ा देता। इन बागियों को मारने के सिवा और क्या कर सकता है ?''

सुंदरन चकित नयनों से उसकी हरकतों को देखता रहा। तब गरमागरम चाय और पकवान लेकर रसोइया वहां हाजिर हुआ।

''ये मास्टर के लिए पसंदीदा पकवान नहीं है। यहां बडा, सुखियन आदि देशी पकवान ही मिलते हैं। मास्टर को केक देना चाहिए था पर यहां केक बनाया नहीं जाता। केक बनाते समय उसमें अंडा मिलाया जाता है न ?'' रसोइया बोला।

''मुझे देसी पकवान ही चाहिए। कभी-कभी देसी पकवान भी खा लेना चाहिए न ? केक से ऊब चका हूं ! मेरे घर में हमेशा केक ही रहता है। वहां तरह-तरह के केक रहते हैं'' मास्टर एक-एक कर पकवान उठाकर खाने लगा तो रसोइया भी तश्तरी से पकवान उठाकर खाने लगा। उसे देखते हुए हम हंस पड़े। सुंदरन का चेहरा और पीला हो गया।

''ये क्यों हमेशा हंस रहे हैं ? लगता है कि ये शिष्टाचार नहीं जानते !'' मास्टर ने फुसफुसाया।

रसोइए का चेहरा कमल की तरह लाल हो गया।

''ठीक है साहब। ये देहात में पले हुए हैं। इनका व्यवहार भीलों की तरह है। साहब ने पुन्नयूरकुलम् के बारे में सुना है ? वह एक पिछड़ा हुआ इलाका है। वहां ये पले-बढ़े। अब साहब इन्हें सभ्यता की शिक्षा दें तो ये सीख जाएंगे। साहब इनकी बात पर विशेष ध्यान रखें।''

मैं इन्हें पढ़ाने के लिए नहीं आ रहा हूं। मैं सुंदरन को पढ़ाने आ रहा हूं। चालीस रुपए में सभी विषयों को पढ़ाने का वचन दिया है। श्याम सुंदर शरीफ लड़का है।''

रसोइए के द्वारा हम पर किए गए कटाक्ष की बात मैंने मां से कही। परंतु मां को भी उसका भला-बुरा कहने की हिम्मत नहीं थी। क्रिसमस के एक सप्ताह पूर्व ही कइयों के द्वारा पिताजी को उपहार में खाद्य पदार्थ से भरी टोकरियां मिल जाती थीं। उन उपहारों में शराब की बोतलें भी मौजूद थीं। पिताजी वे बोतलें सुंदरन के मास्टर को देते थे। रसोइया भी शराब में रुचि रखता था। इसलिए एक बार उसने एक बोतल से व्हिस्की निकाली और उसके बदले उसमें काली मिर्च का रस भरकर टोकरी में ही रख दी। घर पहुंचने के बाद पेटू मास्टर को इस धोखे का पता चला। अगले दिन मास्टर ने कहा, ''बेचारा मिस्टर नायर। वे यह नहीं जानते

कि उन्हें कुछ लोग धोखा दे रहे हैं। व्हिस्की के नाम पर काली मिर्च का रस बोतल में भरकर दे देते हैं। टूटे हुए सील देखते ही मुझे संदेह हो गया।''

रसोइए ने चाय और बड़ा लाकर मेज पर रख दिया मास्टर ने उसके चेहरे पर नजर दौड़ाई। गंदली आंखें। उसके होंठों पर एक टेढ़ी हंसी मौजूद थी। मास्टर समझ गया कि इस रसोइए ने ही उसे धोखा दिया था।

'तू मुंह खोल दे।'' मास्टर ने कहा।

रसोइया फिर से हंस पड़ा।

''बू आ रही है।'' मास्टर ने कहा।

उस दिन मास्टर ने पिताजी से मिलकर दो पल के लिए कुछ रहस्य-संवाद किया। सांझ के वक्त रसोइया बीड़ी पीते हुए चौके की सीढ़ी पर विश्राम कर रहा था। तब उसने मुझसे कहा, ''लगता है, यह लुच्चा मेरी शिकायत कर मुझे नौकरी से निकलवा देगा ! बच्ची के पिताजी को कहां से मिल गया यह काले साहब ? इसकी पढ़ाई तो वह बच्चा सुधारने से रहा। वह मास्टर बाहर और भीतर से काला है। पाजी कहीं का ! चालीस रुपए वेतन ! चालीस रुपए दे दें तो बच्चों को पढ़ाने के लिए गोरे साहब ही मिल जाएंगे।''

ऐसी हालत में वक्त गुजर रहा था। इसी बीच मुझे मणिपुरी नृत्य सिखाने के लिए ब्रजभाषी नामक एक गुरु और हिन्दी सिखाने मिश्राजी भी घर आने लगे। बैठकखाने की दरी को हटाकर वहां मैं नाच सीखती थी। भोजन-कक्ष की ओर जानेवाला दरवाजा बंद रहता था। फिर भी क्रोधी पेटू मास्टर अपनी छड़ी से बीच-बीच में दरवाजे पर दस-बारह बार ठोंकते हुए बोल उठता, ''यह शोरगुल बंद करो। अगले महीने श्यामसुंदर की परीक्षा होनेवाली है। इस बच्चे को हराना चाहते हो ?''

डान्स मास्टर हंस पड़े।

''छोटे भाई को पढ़ानेवाला वह बुड्ढा, पागल है क्या ?'' उन्होंने मुझसे पूछा।

''मैं नहीं जानती।''

''नृत्य और संगीत में रुचि न रखनेवाला अरसिक। निरा जानवर।''

डान्स मास्टर ने रसोइए के दिए हुए पकवानों की सराहना की। वे अपने साथ लाए हुए पान, तंबाकू आदि खुशी से रसोइए के साथ बांट लिए।

इन फिरंगियों को घर में घुसने देना ही खतरा है। ये बच्चों का चरित्र बिगाड़ देंगे। वह बेचारा लड़का, श्यामसुंदर, एक साल तक उस फिरंगी से शिक्षा ग्रहण करेगा तो वह भी फिरंगी हो जाएगा। फिर शौचालय जाते वक्त भी पानी का इस्तेमाल नहीं करेगा।'' डान्स मास्टर ने कहा।

''हम हिन्दू हैं। पानी के अभाव में हम एक दिन तक जी नहीं सकते।'' रसोइया बोला।

"तुम ब्राह्मण हो न ?" ब्रजभाषी ने पूछा।

"नहीं। हम नायर हैं।" रसोइया बोला।

"तब तो कायस्थ होंगे। उससे नीचे तो जा नहीं सकते। पहली भेंट में ही उच्च जातिवाले पहचाने जाते हैं।" दोनों मास्टरों के चले जाने के बाद संध्या का पहला नक्षत्र जब आकाश में टिमटिमाने लगता तब हिन्दी मास्टर तशरीफ लाते। शरमाते-सकुचाते, अपने कदम पर ही नजर गड़ाए वे भोजन कक्ष की ओर चले जाते। चलते वक्त उनके पैरों की ऊंगलियां टिक-टिक की आवाज करने लगती।

रसोइए ने उन्हें भी पकवान दे दिए। मिश्राजी ने रसोइए से बात करने में रुचि नहीं दिखाई

मास्टर ने मुझसे कहा कि रसोइए की हिंदुस्तानी बहुत खराब है। उसका व्याकरण ही नहीं, उच्चारण भी गलत है।

"कमला को उससे हिन्दी नहीं बोलनी चाहिए।"

"जी नहीं।"

"हिन्दी में ही नहीं, किसी भी भाषा में उसके साथ ज्यादा देर तक बातचीत करने की जरूरत नहीं। नौकरों को नौकरों के रूप में ही देखना चाहिए।"

"जी हां।"

हिन्दी मास्टर के घृणा-भाव ने रसोइए को भौंचक्का कर दिया।

"मुझे देखने पर इसका मुंह क्यों काला हो जाता है ? क्यों वह नाक सिकोड़ता है ? कहां से मिला यह हिन्दी मास्टर ? बसरा मिश्रा ! नाम सुनते ही मिचली आ जाती है।"

"तुम्हें उनके प्रति ईर्ष्या है ?" रसोइए का चेहरा लाल-पीला हो गया।

"वे मुझे देख रहे हैं, यह तुम्हें पसंद नहीं।"

"यह तो अच्छी बात हुई ! किसी उजड़े गांव से आई हुई औरत को कोई देख ले तो मुझे क्या हर्ज है ? वह देख ले या शादी करे। मेरा क्या लेना-देना !"

उस दिन नौकरानी कुछ समय रोती रही। परंतु रसोइए ने उसे तसल्ली देने की चेष्टा नहीं की। भोजन के समय होने तक उसने एक बंडल बीड़ियां पी लीं।

उन दिनों ठीक नौ बजे ही पिताजी और मां रात का भोजन करने के लिए जीने की सीढ़ियां उतरकर आते थे।

दूसरे विश्वयुद्ध का आखिरी समय था। उन दिनों हम 18, लान्सडाउन रोड पर

स्थित हवेली में रहे रहे थे।

उन दिनों पिताजी को डाक से 'डेली मिरर' नामक एक ब्रिटिश पीली अखबार और 'सटरडे इवनिंग पोस्ट' नामक एक साप्ताहिक-पत्रिका मिल जाती थीं। उनमें 'मिरर' सुधी जनों के लिए उपयुक्त न होने से केवल मैं ही पढ़ती थी। फौजी जवानों को उत्तेजित करने हेतु उसमें रोज जेन (Jane) शीर्षक से एक सचित्र कहानी प्रकाशित होती थी। खूबसूरत जेन शायद भुलक्कड़ होने से बिना लिबास पहने ही कहीं-कहीं प्रत्यक्ष हो जाती थी। उस कहानी का कोई विशेष प्लॉट नहीं था। उसका सुंदर मांसल शरीर ही उस कहानी का प्लॉट था। लड़ाई करते वक्त भी फौजी जवान जेन नामक तरुणी की याद करते थे। बाद में कुछ लोगों का यह वक्तव्य मैंने पढ़ा कि लड़ाई जीतने का एकमात्र कारण जेन था। 'पोस्ट' नामक पत्रिका में कहानियां और Tugboat Annie आदि धारावाहिक उपन्यास भी सुलभ थे। नालाप्पाट में रहते वक्त मेरे जीवन में 'मातृभूमि' साप्ताहिक-पत्रिका का जो महत्व था, वही महत्व कलकत्ता में रहते वक्त एक अमेरिकी पत्रिका ने प्राप्त कर ली। वह पत्रिका मेरे लिए एक अमूल्य निधि बन गई थी। उसके लिए मैं डाकिए का इंतजार कर बैठी रहती थी। उसमें Normal Rockwell नाम के चित्रकार द्वारा खिंचे गए मुखचित्र मुझे पसंद आए। उन्होंने परिवार-संबंधी परिकल्पनाओं की सुंदरता को अपने चित्रों में प्रदर्शित कर दिया। पिता, माता, दादा, दादी, लड़का, लड़की, शिशु, बिल्ली, कुत्ता, घोड़ा, तोता ...इन सभी को कभी-कभी एक ही चित्र में उन्होंने अंकित कर दिया। वे लगातार अमेरिकी परिवार की शक्ति और सुरक्षा को अभिव्यक्त करने की कोशिश करते रहे। उन दिनों किसी ने नहीं कहा था कि अमेरिकी परिवार यौन अराजकता से चकनाचूर हो रहे हैं। बदसूरत स्त्री-पुरुष यौन अराजकता के विषय पर बात नहीं करते थे। मेरा यही खयाल था कि अमेरिकी, अंग्रेज, जापानी, जर्मन तथा भारतीय, सब के सब एक ही परिवार के सदस्य हैं। उन दिनों राजनीति और उसकी विनाशकारी वृत्ति मेरे लिए बिलकुल अपरिचित थीं।

हमारे पड़ोसियों के मेहमान बनकर आए अमेरिकी बच्चे हमारे साथ खेलते थे। सिर्फ खान-पान में ही वे हमसे भिन्न नजर आए। वे जिस कमरे में लेटते थे, वह कमरा मैं अपने घर की खिड़की से देख सकती थी। रात के वक्त अपनी मां के अगल बगल लेटकर कहानी सुनना उनकी आदत बन गई थी। कई बार मैं और मेरे बड़े भाई मां की कहानियां सुनकर सोए थे। वह जमाना मुझे दुबारा याद आ गया। मेरी याद के मुताबिक इन्हीं दिनों हमारे यहां भी मेहमान आ गए थे। प्रोफेसर शंकरन की बेटी सरला उर्फ सरला दीदी, उनके पति कोच्चि तंपुरान और उनका बेटा मोहन हमारे घर आ पहुंचे। पिताजी ने उनसे अनुरोध किया कि जब तक तंपुरान को रहने के लिए घर न मिले तब तक वे हमारे घर ठहर जाएं। मैं पहले पहल सरलादीदी के रूप में एक सभ्य मलयाली महिला को देख रही थी।

पुन्नयूरकुलम् की औरतें—वे धनी हों या गरीब-अपने हाथ की ऊंगलियों को साफ करने के लिए तैयार न थीं। उनके नाखूनों के बीच कीचड़ तथा सिर पर जूओं का रहना साधारण बात थी। सरला दीदी सुंदरी एवं सभ्य महिला थीं। गप्पें मारकर हंसने तथा दूसरों को हंसाने में वे विशेष रुचि दिखाती थीं। उन्होंने सोने के आभूषणों के अतिरिक्त मोतियों की माला भी पहन रखी थी।

वे सदा गुनगुनाती रहती थी। ऊपर के कमरों में भी वे अपना संगीत ले आईं।

मेरे पिताजी और मां काफी देर तक अपने बच्चों से बात करने में रुचि नहीं रखते थे। शायद इसलिए ही, जब सरला दीदी ने मुझसे स्कूली अनुभवों की बात पूछी तो मैं अत्यंत खुश हुई थी। अनुकरण करने लायक एक आदर्श को मैं ढूंढ रही थी। मैंने सरला दीदी में उस आदर्श को पा लिया।

"क्या मैं भी कभी सरला दीदी के समान खूबसूरत हो जाऊंगी ?" मैंने कल्लू से पूछा।

"नहीं।" उसने कहा।

"बच्ची को इस जन्म में वैसा रंग नहीं मिलेगा।"

"रंग न भी हो, खूबसूरत तो हो जाऊंगी ?"

"नहीं बच्ची। बच्ची को श्रीत्व मिल सकता है, पर सरला अम्मा की तरह सुंदरी नहीं बन जाओगी। वह इच्छा सफल नहीं होगी।"

"मुझे ऐसी इच्छा तो नहीं।"

"इच्छा नहीं तो पूछा क्यों ?"

"यूं ही पूछ लिया।"

कल्लू जोर से हंस पड़ी। वह अपने पति रसोइए से मेरे बारे में ऐसी-वैसी बातें करके हंसती थी। वह केवल मेरी छोटी बहन की नौकरानी थी। मेरे लिए कोई विशेष नौकरानी नहीं थी। फर्श साफ करनेवाली त्रिपुरा रात के वक्त मेरे लिए सहारा बनकर मेरे पलंग के नीचे चटाई बिछाकर सोती थीं। वे मुझे अनेक कहानियां सुनाती थीं। मोटे तौर पर उनमें एक बंदर की कहानी मुझे अब भी याद है।

बंदर की मालकिन एक जमींदारिन थीं। वे अमीर थीं। उनको गहने बहुत पसंद थे। रत्नजड़ित आभूषणों को एक-एक कर वे पहनती थीं। इसे देखकर बंदर के मन में ईर्ष्या जागी। उसने चोरी-छिपे प्रत्येक आभूषण को चुरा लिया और उन्हें बाड़े के पीछे डाल दिया। उन्हें छिपा देने के लिए उसके ऊपर मलविसर्जन भी किया। अमीर मालकिन गहने ढूंढ नहीं पाईं। आखिर बारिश का मौसम आ गया। बारिश के कारण मल बह गया तो आभूषण बाहर निकल आए। बंदर की बुरी हरकतों को जान लेने पर मालकिन ने उसे एक मदारी के हाथ दो रुपए में बेच डाला। केवल इस कहानी की नहीं, त्रिपुरा की प्रत्येक कहानी की एक शिक्षा होती

थी। बंदर की इस कहानी को सुनने के बाद मैंने एक फैसला किया—मैं कभी भी अपने घर में बंदर नहीं पालूंगी।

अपनी चौदहवीं वर्षगांठ के बाद मैं गरमी की छुट्टियों में फिर नालाप्पाट आ पहुंची। नानी ने सिर से पैर तक मेरी निगरानीकर एक मुस्कुराहट के साथ कहा, "अगले सोमवार को मैं कमला को काछनी पहनना सिखा दूंगी।" यह फैसला सुनकर मैं खुश हुई। लड़कपन से मुक्ति पाकर जल्दी ही मैं युवती बन जाना चाहती थी।

अगले दिन ही नानी मां ने कम चौड़ाई के मलमल का कपड़ा खरीद लिया और उससे पांच-पांच गज की लंबाई की चार काछनियां बना लीं। दर्जी कुमारन ने उनके किनारों की सिलाई की। लक्ष्मिकुट्टि ने कोरे कपड़ों की धुलाई की। मेरी संगिनी अंबाषत्त की मालतिकुट्टि भी सोमवार के दिन सबेरे ही नहा-धोकर काछनी पहनने का ढंग सीखने के उद्देश्य से नालाप्पाट की दक्षिणी कोठरी में पहुंच गई। नानी ने मेरे लिए एक गुलाबी रंग की चोली और एक किनारेदार धोती संदूक से उठा ली। नौकरों की आंखें बचाने के उद्देश्य से नानी हमें दक्षिणी कोठरी की ओर ले गईं। धोती पहनने का ढंग सीखने के बाद मैं और मालतिकुट्टि ने आपसी सहायता से काछनी भी पहन ली।

"क्या सब औरतें काछनी पहनती हैं ?" मैंने पूछा।

"नायर जाति में पैदा हुई तो काछनी पहनती हैं। कमर में कसावट आने के लिए यह पहनती हैं। काछनी नहीं पहनें तो सुडौलता नहीं आएगी।"

तब मैंने काछनी के बगैर खूबसूरत नजर आनेवाली कलकत्तावालियों के बारे में सोचा। परंतु इस मामले में नानी से उलझने के लिए मैं उद्यत न हुई।

"स्कूल जाते वक्त यह पहन नहीं सकती। बंडी के नीचे से यह बाहर दिखाई पड़े तो ? सारे लड़के-लड़कियां मेरी हंसी उड़ाएंगे।" मैंने कहा।

"काछनी न पहनने पर ही हंसी उड़ाएंगे। बड़ी-बड़ी लड़कियां बिना काछनी पहने चलें, तो लोग मजाक उड़ाते हैं।" नानी बोलीं।

छुट्टियों के बीतने तक मैं काछनी और धोती पहनकर नालाप्पाट और परिसर में घूमती-फिरती रही। मेरे मन में, स्कूली शिक्षा को समाप्तकर नानी की तरह किशोरावस्था में ही वैवाहिक जीवन शुरू करने की अभिलाषा पैदा हुई। मैं नालाप्पाट घर में ही रहना पसंद करती थी। मैं तेल लगाकर नहाना, तालाब में तैरना और दोपहर के वक्त ऊपर की उत्तरी कोठरी में सोना चाहती थी। नालाप्पाट में रहते समय कलकत्ता की स्मृतियां एक पुराने स्वप्न की तरह धुंधली होती गईं। उन दिनों मुझे लगता था कि कलकत्ता नहीं, नालाप्पाट ही सचाई है।

'परा' के समय का मुनादीवादन, ओझाओं की हुंकार, परयनकाली का गाना आदि मेरे जीवन की सचाइयां बन गए। कलकत्ता में पली-बढ़ी कमला–सिर्फ अंग्रेजी और बंगला बोलनेवाली लड़की–अब स्वप्नजीवी बन गई, सुनी हुई कथाओं की नायिका, पेशमटंदा की तरह एक बालिका बन गई।

फिर कलकत्ता वापस आते वक्त गाड़ी में बैठकर मैंने आंसू रोक लिया। उन दिनों प्रथम श्रेणी के डिब्बे में चार जनों के लिए ही सीट की सुविधा थी। जब मां, बाप, मैं, बड़े भाई, छोटे भाई और छोटी बहन सब एक साथ सफर करते थे तब पिताजी मुझे फर्श पर बिछौना बिछाकर लेटने का आदेश देते थे। गाड़ी के हिलते-डुलते समय सिर टकराने से कठिन दर्द महसूस होता था। एक बार मैं उठकर खिड़की से बाहर झांका। बड़े सबेरे किसी स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो एक पगली औरत मेरी ओर हाथ बढ़ाती हुई दौड़ आई। उसके दांतों का किनारा टूटा हुआ था। उसकी वीभत्स हंसी को फिर कई बार मैंने स्वप्न में देखा था और घबराकर चिल्ला उठी थी।

"मेरी बेटी।" उस पगली ने मुझे पुकारा था। उस पुकार ने भी मुझे भयभीत और परेशान कर दिया।

मैं सोचे-समझे बिना कोई बात कहती तो तुरंत नानी कहती थी, "कमला पागल हो गई है।" कभी-कभी मेरे मन में यह शंका पैदा होती थी कि असल में मैं उस पगली औरत की बेटी तो नहीं !

पिताजी की कंपनी का एक चपरासी कुञ्ञात्तु हमारे मकान में ही रहते थे। लान्सडाउन रोड के अठारह नंबर के मकान में छह शयन कक्ष, एक बैठकखाना और एक भोजन कक्ष मौजूद थे। फिर भी रसोई घर के पिछवाड़े के कमरे में ही कुञ्ञात्तु रहते थे। उन्होंने कई बार अपनी खूबसूरत बेटी के बारे में मुझसे बात की थी। वे कहते, "चेरुच्ची बच्ची से भी दो बरस बड़ी है। उसका रंग बच्ची के रंग से भी निखरा है। वह टमाटर की भांति लाल-लाल रहती है।"

"क्या चेरुच्चि स्कूल नहीं जाती ?"

"वह निरा आलसी है। पिटाई मिले तो बस्ता लेकर कोट्टप्पटि स्कूल चली जाती है।"

त्रिपुरा के रहने पर हमें पता चला कि नौकरों के पाखाने में एक बार एक औरत ने खुदकुशी की थी। रात के वक्त डर के मारे कुञ्ञात्तु वहां पेशाब करने नहीं जाते थे। इसलिए कोयले के कमरे में पेशाब कर उन्होंने वहां बदबू फैला दी।

नौकरानी और रसोइया मूत्र की बदबू को लेकर बड़बड़ाए तो कुञ्ञात्तु बोले, "यहां एक बिल्ली आती है। एक सफेद जंगली बिल्ली। म्याऊं...म्याऊं सुनकर मैं जागता हूं। वहां पेशाब करना उसकी हरकत है। बिल्ली पेशाब करे तो मैं क्या करूं ?"

रसोइए और नौकरानी के बीच की शादी होने तक कुञ्ञात्तु डालने की कोठरी के ऊपरी कमरे में रहते थे। एक दिन रसोइए ने एक कागज पर "मैं कल्लू से प्यार करता हूं।" लिखकर मेरी मां की ओर बढ़ा दिया। मां ने कल्लू को बुलाकर उसकी राय जान ली। उसको भी यह पसंद था। अविलंब ही मां उन दोनों को पूजा-गृह ले गईं और उनकी शादी भी करा दी। उन्हें सोने के लिए मां ने कुञ्ञात्तु से उनका शयन-कक्ष खाली करा देने को कहा।

"एक गंदी औरत की शादी। बालामणि अम्मा के बदले और कोई होता तो दोनों को घर से ही निकाल देता।"

बूढ़ा अपने संदूक, अलगनी और भूरे रंग के मोजे ढोते जीने की सीढ़ियां उतरते हुए बड़बड़ाए, "बालामणिअम्मा से मैंने कितनी बार कहा था कि अपने गांव से किसी औरत को न लाएं। मैं इन सबको जानता हूं। सब के सब गंदी हैं। ये घर में बसाने लायक नहीं हैं।"

मेरी छोटी बहन की देखभाल करनेवाली कल्लू नामक युवती अपने पति के साथ संलाप कर रही थी। मैंने उससे पूछा, "क्या कल्लू गंदी है ?"

"यह बात तुमको किसने बताया ? वह बुड्ढा होगा। और कोई मुझे बुरा नहीं कहेगा। सच बताओ, यह बात बच्ची से किसने कही ?"

मैं कुञ्ञात्तु का नाम बताने को तैयार न थी। क्योंकि कुञ्ञात्तु मुझे पुरानी कहानियां सुनाते थे। उन्होंने मुझसे कहा था कि वे कोषिक्कोड की ए.आर.पी. नामक सैनिक टुकड़ी में काम कर चुके थे। फिर ओब्री मेनोन के मां-बाप के यहां बटलर बन गए थे। एक बार मेम साहब ने 'कैतच्चक्का' (अनन्नास) का नाम पूछा तो उन्होंने कहा, "मैडम्, दैट इज आस फ्रूट।" एक बार चाचा अप्पुवेट्टन हम बच्चों और कुञ्ञात्तु को लेकर 'बंधन' नामक फिल्म देखने गए। लौटते समय कुञ्ञात्तु ने जान लिया कि उनके टिकट के लिए छः आने का खर्च हुआ है। तो वे छाती पीटने लगे। फिर कुञ्ञात्तु ने कहा कि उस रकम से बहत्तर बीड़ी खरीद सकते थे। वे आगे बोले, "छः प्याले चाय की रकम खर्च हुई। चाय ही नहीं, एक प्याला चाय और एक डबल रोटी...अरे बालन नायर, आइंदा आप मुझे हिन्दी फिल्म देखने के लिए साथनले जाएं। उसके बदले उस टिकट की रकम ही मुझे दे दें।"

अप्पुवेट्टन ने हमसे कहा, "कुञ्ञात्तु की तरह एक अरसिक को अभी तक नहीं देखा था। मैंने सोचा कि वह एक रसिक होगा।"

'कुट्यो‍प्पु' के लाडले नाम से पुकारी जानेवाली हमारी मामी लखनऊ से साल में एक बार 'आटो दिलबहार' की शीशी डाक द्वारा प्राप्त कर लेती थीं। शायद उसकी एक खाली शीशी हाथ लगने से ही मेरे बड़े भैया ने इत्र के निर्माण का फैसला

किया था। उन्होंने यह घोषणा भी की कि यदि उनकी जांच सफल हो जाए तो बड़े पैमाने पर इत्र का निर्माण शुरू कर देंगे। मैंने भैया से पूछा कि उन्होंने किस चीज से इत्र बनाने का इरादा किया है ? तब उन्होंने कहा कि वह भेद वे किसी से बताना नहीं चाहते। यह सुनकर मुझे रोना आया। आखिर नानी की सिफारिश के बाद ही बड़े भैया ने वह भेद मेरे सामने खोल दिया।

नालाप्पाट से, खेत के किनारे से आशारीपरंपु की ओर जाते समय चेरुवत्तूरवालों के घेरे पर स्थित पुन्नाग वृक्ष के फल-फूल बालू में बिखरे पड़े दिखाई देते थे। मेरे बड़े भैया गोटी खेलने के लिए पुन्नाग के फल इकट्ठा करते थे। हरे रंग के छिलकों को रगड़ निकालने के बाद वे फल धूप में सुखाए जाते हैं। तब वे गोटी का रूप धारण कर लेते। बड़े भैया काठ से बनाए लाल-काले रंग के बड़े पिटारे में कांच तथा पुन्नाग फल की गोटियां जमाकर रखते। भैया का कहना था कि किसी न किसी दिन ये काम में आ जाएंगे।

"पुन्नाग फल से इत्र बना सकते हैं।" भैया बोले।

"क्या उससे बदबू नहीं आएगी ?" मैंने पूछा। शायद मेरी मूर्खता के बारे में सोचकर बड़े भैया ठठाकर हंस पड़े।

"बदबू नहीं, खुशबू आएगी। शीशे में भरकर एक रुपए में बेच सकते हैं।"

"कौन खरीदेगा ?"

"कुट्यिोप्पु खरीदेंगी। यदि कुट्यिोप्पु उसका इस्तेमाल कर लें तो और लोग भी उसका इस्तेमाल करेंगे।"

रविवार का दिन था। भैया ने निश्चय कर लिया कि समय बरबाद किए बिना इत्र का निर्माण शुरू कर ले। उन्होंने मुझसे कहा कि मारात्ताट के अनियन के पहुंचने के पहले ही पुन्नाग के फल बीन लाए।

"कोई देख न ले !"

मैं झुककर पुन्नाग फल बीन रही थी। तब चेरुवत्तूर केशवन नायर ने इसे देख लिया।

"बच्ची क्यों पुन्नाग फल बीन रही है ? क्या लड़कियां भी गोटी खेलती हैं ?" उन्होंने हंसते हुए पूछा।

"मुझे भी गोटी खेलना आता है।" मैंने कहा।

मिट्टी में गोटी खेल ले तो हाथ पर खुजली लग जाएगी। यह ध्यान रख लेना। अंबाषत्त के उण्णि की हालत देखती नहीं ? पूरे शरीर पर खुजली है। मण्णान ही उसकी चिकित्सा कर रहा है। गंधक मली धोती गले में डालकर चलते देखती नहीं ? क्या तुम भी उसी प्रकार गंधक मली धोती गले में बांधकर चलना चाहती है ?"

"नहीं।" मैंने कहा।

"लड़कियों के लिए गोटी खेलना ठीक नहीं। लड़कियों का मिट्टी कुरेदकर

खेलना अच्छा नहीं। हाथ भर में गर्द चिपक जाएगा। फिर खुजली लग जाएगी। फिर देखने में बदसूरत लगेगा। जहां खुजली लग जाती है वहां काले-काले धब्बे पड़ जाते हैं। तुम्हें नहीं मालूम ?"

मैं कुछ नहीं बोली। मैंने अपनी बंडी में बारह पुन्नाग फलों को डालकर बांध लिया और नालाप्पाट की ओर भाग गई। बड़े भाई ने उत्तरी कोठरी के नाले खाने से आवाज दी—"मैं यहां हूं।"

रात के वक्त उत्तरी कोठरी में नौकरानियां ही सोती थीं। वे कभी नालेखाने में पेशाब नहीं करती थी। नालेखाने की खिड़की के चौखट पर एक आइने का टुकड़ा, एक काजल की मंजूषा और लाल और भूरे रंग के सिंदूर की दो पुड़िया मौजूद थी। दीवार पर काजल के काले और सिंदूर के लाल धब्बे छाए पड़े थे। उस खिड़की पर पानी भरकर रखी गई मुरब्बों की दो शीशियां भी मुझे नजर आईं। मेरे भाई के हाथ में भैंसे के सींग की मूठवाली एक छुरी मौजूद थी।

"इत्र का निर्माण शुरू करें !" भैया ने पूछा।

"अभी ?"

"यह दरवाजा बंद कर कुंडी डालनी है। कोई देख न लें।" भैया ने पुन्नाग फल के छिलके तोड़कर उसके बीज बाहर निकाल लिए। बीज फोड़कर पानी में डाल दिए। फिर थोड़ा नमक भी उस शीशी में डाल दिया और जोर से हिलाया।

"यह बड़ा कारोबार बन जाएगा। लखनऊ के आटो दिलबहार वालों की तरह हम भी बड़े उद्योगपति बन जाएंगे।"

"क्या यह इत्र भी आटो दिलबहार हो जाएगा ?"

"इस का नाम आटो दिलबहार नहीं, बल्कि 'मोहनदास सेन्ट' होगा।" बड़े भाई ने कहा।

"लेकिन इसमें मेरा नाम तो नहीं ?" हताश होकर मैंने पूछा।

"मैं अब आमी का नाम नहीं रखता हूं। दूसरे इत्र के लिए आमी का नाम रख लूंगा।"

इत्र भरी शीशियां नालेखाने में रखकर एक टोकरी से ढक ली गईं। फिर हम खेलने के लिए आंगन में चले गए। तब सर्पक्काव के चबूतरे पर मारात्ताट के अनियन और तंकम् बैठे हुए थे।

"इत्र का निर्माण कहां तक हो गया।" अनियन ने पूछा। मैं और बड़े भैया स्तब्ध रह गए।

"पुन्नाग के फल पानी में डाल दें तो बदबू आ जाएगी न ? बदबूदार इत्र कौन खरीदेगा ?" अनियन ने हंसते हुए पूछा।

"तुम्हें कैसे पता चला कि मैं इत्र बना रहा हूं ?" बड़े भाई ने पूछा।

"खिड़की के बाहर कूड़ादान के पास छिपकर हमने तुम्हारी बातें सुनीं। यह

कारोबार नहीं चलेगा। बदबूदार इत्र कौन खरीदेगा ?''

''बदबू को रोकने के लिए मैंने शीशे में एक चीज डाल दी है।'' बड़े भाई ने कहा।

''सच है। बदबू को रोकने के लिए एक चीज शीशे में डाल दी है।'' मैंने उछलते हुए कहा।

''अरी आमी। पुन्नाग फल से इत्र बना लेने पर इतनी अकड़ की जरूरत नहीं।'' उदास मुद्रा में तंकम् बोली।

''अरे मोहन असली इत्र तो मैं बना दूंगा।'' अनियन बोले।

''अपना इत्र तू खुद ही बना ले।'' बड़े भाई बोले।

''हम दोनों मिलकर कारोबार शुरू कर लें। मैं फूलों का इत्र बनाना जानता हूं। थोड़ा-सा पारिजात, थोड़ी चमेली और थोड़ा चंपा लेकर तेल में डाल देने चाहिए। फिर उसे धूप में रखना चाहिए। तीन चार दिनों के बाद उसे लेकर छान लें तो खुशबूदार इत्र मिल जाएगा।''

''क्या तूने जांचकर देखा है ?''

''नहीं। उस त्यागानंदन ने ही मुझे बता दिया था।''

''कौन त्यागानंदन ?''

''वह त्यागानंदन है न, जिसने कोट्टयम से शादी की थी। कहता था कि उसने एक बार बनाया भी है।''

''वह इत्र तू ही बना ले। अपना इत्र मैं खुद ही बना लूंगा।''

उस दिन अनियन और तंकम् खेलने को नहीं ठहरे। नाराज हुए की तरह कुछ देर चुप बैठे रहे। फिर चुप्पी तोड़े बिना मारात्ताट की ओर वापस चले गए।

''फूलों का इत्र सभी बना सकते हैं। सभी दुकानों में वह उपलब्ध भी है। पर हमारा इत्र कहीं दिखाई नहीं पड़ेगा। हमारे इत्र के लिए हमारे पास ही आना होगा। है न ?'' भैया ने मुझसे पूछा।

मैंने सिर हिलाया।

दो-तीन दिनों के बाद उत्तरी कोठरी के अंधकार से देवकी जोर से बोल उठी, ''हाय मेरी अम्मा, बदबू से रहा नहीं जाता।''

उण्णिमाया, शंकरन आदि ने उत्तरी कोठरी की ओर झांककर देखा।

''लगता है, कोई चूहा मरा पड़ा है।'' उण्णिमाया बोली।

''वह टोकरी-वोकरी वहां से हटाकर अच्छी तरह झाड़ू से बुहार ले। क्या मरा है, यह जानना है न ?'' शंकरन बोला।

''यह मरे हुए चूहे की बदबू नहीं है। और किसी की बदबू है। शायद कुत्ते ने टट्टी की होगी।'' उत्तरी कोठरी में प्रवेश कर परनानी ने कहा।

''यहां कोई कुत्ता नहीं घुस आया।'' देवकी बोली।

"उस मण्णांतरा के कुत्ते घुस आए होंगे। हमेशा उत्तरी दालान का दरवाजा खुला रहता है। मेरी बात कोई मानता ही नहीं।" परनानी ने कहा।

"आइंदा वे कुत्ते यहां आ जाएं तो पत्थर मारकर उनके पैर तोड़ दूंगा।" शंकरन बोला।

"अरे शंकरा, उनके पैर मत तोड़ना। मूक-प्राणियों को सताए तो उसका फल इस जन्म में ही भोगना पड़ेगा।"

"यहां न कुत्ते ने टट्टी की है और न बिल्ली ने।" देवकी झाड़ू हिलाती हुई बोली, "इन कड़ाहियों के बीच कोई बड़ा चूहा मरा पड़ा हो तो देख लूंगी।"

"अरी अम्राल। कोई चूहा उत्तरी कमरे में कैसे घुसेगा ! और कोई जीव मरा पड़ा होगा।" उण्णिमाया बोली।

"उत्तरी नाले से बदबू आ रही है।" परनानी बोलीं।

बड़े भाई ने घबराहट के साथ मेरी ओर देखा। नाले में जाकर मैंने शीशियों को जांच लिया। उनके ढक्कन हट गए थे। मैंने देखा कि शीशी के पानी के ऊपर सफेद फफूंद सरक रही थी। अंडे को तोड़ते वक्त कभी-कभी दिखाई पड़नेवाली झिल्ली भी मैंने पानी में देखा। शीशी उठाकर सूंघ लिया तो चकरा गई।

"बड़ी असह्य बदबू है।" मैंने भैया से कहा।

"कुछ लोगों को ऐसा इत्र ही पसंद आएगा।" बड़े भैया ने कहा।

"बच्चों ने यहां शीशियों में कुछ बनाकर रखा है। उससे बदबू निकल रही है।" उण्णिमाया बोली। उसने एक शीशी उठाकर उजाले में जांच लिया।

"इसके भीतर सफेद कीड़ों के समान कुछ दिखाई पड़ रहा है।" उसने कहा।

सभी नाले पर पहुंचे तो बड़े भाई ने गुस्से के साथ शीशियों को उठाकर बाहर कूड़ेदान में फेंक दिया।

"इत्र भी चला गया। आप सबों ने मिलकर हमारे कारोबार को खतम कर डाला" मैं बोली।

फिर बड़े भैया ने कहा, "इत्र बनाने की कोशिश की। इत्र तो नहीं बना। पर शीशी में जान पैदा हो गई न ? सफेद रंग का कुछ उसमें हिलता-डुलता दिखाई पड़ा है न ?"

मैंने सिर हिलाया।

"इसी प्रकार जान पैदा की जाती है। थोड़ा और कोशिश करें तो कीड़ों के बदले इंसान को भी पैदा कर सकते हैं। उसके लिए बड़ी शीशी की जरूरत है। जब मैं बड़ा हो जाऊं तब जांच के लिए एक प्रयोगशाला ही खोल दूंगा।"

"मदद के लिए मैं भी आ जाऊंगी।" मैंने कहा।

"तुम ऐसा कर नहीं सकती। प्रयोगशाला में कभी-कभी विस्फोट भी हो सकता है। उसे देखने पर तू घबरा जाएगी।"

"पुन्नाग के फल बीनने के लिए भी मेरी जरूरत नहीं ?" आंसू पोंछते हुए मैंने पूछा।

"वैज्ञानिकों के लिए पुन्नाग फल की क्या जरूरत है ?" जोर से हंसते हुए बड़े भैया ने मुझसे पूछा।

क्रम से हटकर उभरे दांत ने ही कय्यावी की मुस्कुराहट को आकर्षक बना दिया था। उसके हंसते वक्त उस मुस्कान की सुंदरता का मजा चखने के लिए लड़के-लड़कियां ही नहीं, अध्यापिकाएं भी उसके निकट आकर खड़ी हो जाती थीं। कय्यावी को हंसने के लिए कोई विशेष कारण की जरूरत नहीं पड़ती थी। स्कूल की पश्चिमी ओर अय्यप्पु के अहाते में मौजूद केले के पौधे पर आराम करने के लिए आए कौए की हरकतों ने भी कय्यावी को हंसा दिया। कौए को उसने काकश्शार पुकारा। गोयिश्शार की तरह काकश्शार।

रोजा के महीने के आते ही कय्यावी ने दो संदूक भर कांच की चूड़ियां खरीद लीं। हरे, नीले, पीले तथा लाल रंग की चूड़ियों को मिला-जुला कर हाथों में पहनी हुई वह स्कूल आ गई।

"बाएं हाथ में चौबीस चूड़ियां और दाएं हाथ में तेईस चूड़ियां हैं। नाले में गिरने से एक टूट गई।" वह अपनी गोल-गोल भुजाओं को दिखाती हुई बोली। मुंह में थूक को रखते हुए बात करना कय्यावी की आदत थी। बीच-बीच में वह बालू पर थूक देती थी। उस अवसर पर उसकी मुद्रा धार्मिक गाथाओं के शहीदों की तरह थी।

"थूक को निगलना मना है।" वह बोली।

"किसी को कहते सुना है कि तुम्हारे जातिवाले लोग घर के बाहर खड़े होकर भीतर की ओर थूकते हैं। क्या यह ठीक है ?" मठिकंठेश्वर मंदिर के परिसर से आनेवाले एक लड़के के कय्यावी से पूछा। कय्यावी का चेहरा लाल-लाल हो गया। कय्यावी ने प्रश्नकर्ता के माथे पर लगाए चंदन के टीके तथा नील देकर धुली हुई धोती को अवज्ञा के साथ देखा।

"सुना है तुम्हारे जातिवाले मल खाते हैं, क्या यह सच है ?"

"यह झूठ किसने कहा ? नायरों का अपमान करने के लिए कोई यह झूठ बोला। ऐसा कहनेवाले का नाम बता सकती हो ?

"जिस नायर औरत को उसका अनुभव है उसने यह कहा। उसने कहा कि वह रोज मल खाती है।"

"बकवास। कोरा बकवास। ऐसा कहनेवाले का नाम बता सकती हो ?"

"किसी भी नायर औरत का नाम मुझे याद नहीं रहता।"

"नायरों का अपमान करने के लिए कय्यावी झूठ बोलती होगी।"

कय्यावी जोर से हंस पड़ी।

"अरे छोकरे, मैं झूठ नहीं बोलती।" वह बोली।

कय्यावी कुछ विशेष दिनों में ही स्कूल आती थी। बाकी दिनों में वह गृहस्थी में मां और बहन की मदद करती थी। वह मौलसिरी के फूल बीनकर कानों के लिए आभूषण बनाती थी और केतकी का फूल तोड़कर कपड़ों के संदूक में रख लेती थी। मेंहदी, हल्दी और पान को एक साथ पीसकर अपनी हथेलियों को लाल कर देती थी... फिर भी अध्यापिकाएं उसकी सुशीलता एवं रहमदिली की सराहना करती रही। किसी भी हालत में मदद करने के लिए सिर्फ कय्यावी ही आ जाती थी। कय्यावी के पास बच्चों की रुलाई को रोकने के विशेष सामर्थ्य मौजूद थे। बच्चे उसका लाल लहंगा, फूल कढ़ी किनारेदार सफेद कुर्ती और कसब दुपट्टा देखकर मुस्कुरा उठते थे। कभी-कभी कय्यावी इत्र से सुगंधित पोशाक पहनकर स्कूल आती थीं। पढ़ाई में चतुर न होने पर भी सिलाई में वह असाधारण पटुता दिखाती थी। शायद इसलिए ही एलच्चार टीचर ने बोर्ड साफ करने की झाड़न, सिलाई का बाक्स एवं कैंची लेकर उनके पीछे चलने के लिए कय्यावी को चुन लिया। कय्यावी अध्यापिकाओं से भी अपने घर की बातें लगातार कहती रहती थी।

एक दिन एलच्चार टीचर से वह कह रही थी, "शादी के लिए बड़ी बहन को देखने के लिए लड़केवाले आए थे। मुझे देखते ही लड़के ने कहा कि उसे छोटी बहन ही पसंद है।" टीचर ने उससे कहा कि कम से कम सातवां दर्जा पास हुए बिना कभी भी शादी के लिए तैयार नहीं होना चाहिए। "लड़के की इच्छा तो देख।" कय्यावी हंसती हुई बोली। फिर मुंह के थूक को आंगन में थूक दिया।

कय्यावी का मकान अंबाषत्तवालों के पुराने तालाब के पास स्थित था। उसकी पश्चिमी और दक्षिणी दिशा में केवल खेत ही खेत फैले पड़े थे। घर के अहाते में सफेद बालू और पूर्वी घेरे पर अनन्नास का झंखाड़ मौजूद था। एक बार मैं घेरे की दरार से कय्यावी के घर पहुंची। दालान में एक चिक टंगी पड़ी थी। वहां एक आराम कुरसी ही मौजूद थी। कय्यावी की बड़ी बहन पान के धब्बे पड़े दांतों से हंस पड़ी। उन्होंने मुझे खाने के लिए एक कदली दे दी।

नालाप्पाट पहुंचने पर अंधेरा छाने लगा था। नानी मुझे न देखने से घबराने लगी थी।

"यह कैसा खेल है ! सांझ होने की खबर तक नहीं !" नानी ने पूछा। वे शरीर धो डालने के लिए तालाब जाने की तैयारी में खड़ी थीं। उनके हाथ में लाल साबुनदानी और तौलिया मौजूद थीं।

"खेल समाप्त हुए काफी समय बीत चुका। मैंने मालतिकुट्टि को अपने अध्ययन-कक्ष में बैठकर पढ़ते देखा। बच्ची को अंबाषत्त की पश्चिमी ओर के खेत

के किनारे स्थित मुस्लिम झोंपड़ी में जाते हुए भी मैंने देखा। वह कय्यावी नामक मुस्लिम लड़की है न ? उसके साथ चली गई।'' देवकी बोली।

''किसके कहने पर उसके साथ चली गई ?'' नानी ने मुझसे पूछा। उन्होंने आगे कहा, ''सिर्फ अंबाषत्त जाने की इजाजत मैंने दी थी न ? इजाज़त के बिना यहां-वहां घूम सकती है ? कोई पकड़कर ले जाएगा तो ?''

''कहीं जाना ही था तो वेलियत्त क्यों नहीं गई ?'' देवकी ने आंखें तरेरते हुए पूछा, ''नहीं तो मण्णांतरा क्यों नहीं गई ? यहां नायरों के जितने ही मकान मौजूद है ? फिर भी बच्ची मुसलमान के घर क्यों चली गई ?''

''देवकी, बकवास मत बघार।'' नानी ने तल्खी के साथ कहा।

''बच्ची के शायद जाति, धर्म नहीं होंगे। क्योंकि वह कलकत्ते में पली हुई है। परंतु इस गांव में रहते समय उसके बारे में हमको थोड़ा सा सिखा देना पड़ेगा न ? गांववाले क्या सोचेंगे ?'' देवकी ने नानी से पूछा।

''वह तो देवकी सिखाए न !'' नानी बोलीं।

मेरे शरीर पर साबुन लगाते वक्त नानी ने पूछा, ''वह मुस्लिम लड़की तुम्हारी सहेली है क्या ?''

''हां। मुझे कय्यावी काफी पसंद है।''

''तो खेलने के लिए यहां बुला ले। उनके घर के पास अनन्नास के पौधों का झंखाड़ है। उसमें सांप होंगे। इसलिए मैं कह रही हूं कि तू वहां मत जा। मैंने जाति-धर्म को देखकर ऐसा नहीं कहा। समझ गई ?''

मैंने सिर हिलाया। नानी का करुणार्द्र चेहरा मुझे काफी सुंदर लगा।

''क्या तू मुझे पसंद करती है ?'' अगले दिन मैंने अपनी सहेली कय्यावी से पूछा।

''मैं थोड़ा-सा अंग्रेजी पढ़ना चाहती हूं। इसलिए मैं तुम्हारे साथ चल रही हूं।'' वह बोली।

जब-जब मैं कय्यावी को अंग्रेजी शब्द पढ़ाने के लिए उद्यत होती थी तब-तब वह मेरा ध्यान विषय से हटाती रहती थी। निकाह उसके लिए प्रिय विषय था। वह जानती थी। उसकी एक दूल्हे को किस प्रकार की वेश-भूषा पहननी चाहिए, राय में दूल्हे को रेशम का कुर्ता एवं लकीरदार धोती पहनने चाहिए और सिर पर टोपी या रेशम का रुमाल होना चाहिए।

''तुम्हें किस प्रकार का दूल्हा चाहिए ?''

''मुझे नहीं मालूम।''

''तो सुनो। उसे जरूरत के अनुसार लंबाई और मोटाई होनी चाहिए। वह बीड़ी न पिए। उसमें गीत गाने की सामर्थ्य होनी चाहिए। उसके पैरों में पट्टेदार चप्पल होनी चाहिए। कलाई पर सोने की घड़ी होनी चाहिए। ठीक है ?'' कय्यावी ने पूछा।

"बस।" मैंने कहा।

"नायर से शादी मत करना। नायर देखने लायक नहीं होते।"

"क्या मेरे भाई देखने लायक नहीं ? क्या वे सुंदर नहीं ?"

"भाई ? भाई से कौन शादी करेगी ? ऐसी बेवकूफी की बात आइंदा और किसी से मत कहना। मैं पूछ रही हूं कि तुम किससे शादी करना चाहती हो ?"

"विक्रमादित्य से।"

"क्या तुम पगली हो ? उसकी मृत्यु हुए कितने साल बीत चुके ! शादी तो जीवित के साथ की जाती है। एक नाम तो बताओ।"

"कोई नाम नहीं सूझता है।" मैंने कहा।

"ठीक है। नायरों के बीच देखने लायक कोई नहीं है। हमारी जाति में देखने लायक लड़के बहुत अधिक हैं। केवल तुम्हें पोन्नानी जाकर कुर्ती पहनकर आना होगा। तब तो तुम किसी से भी शादी कर सकती हो। तुम किस पर भरोसा रखती हो ? गोविंदपुरम् के देव पर या सर्वशक्तिमान अल्लाह पर ! सोचकर बता दो न ? सच बताओ। मैं किसी से नहीं बताऊंगी।"

"मुझे सब पर भरोसा है।"

"वह नहीं हो सकता। किसी एक को चुन लेना जरूरी है। तुम एक ही समय नायर, मुसलमान एवं ईसाई औरत नहीं बन सकती। ऐसा संभव नहीं है।"

"मैं कुछ नहीं बनना चाहती।"

"ऐसे खिसक नहीं सकती। सर्वशक्तिमान अल्लाह चाहिए तो वह साफ-साफ बता दो।"

मुझे याद है कि वह वाद-विवाद आखिर मेरी रुलाई में समाप्त हुआ। मेरे मन में अपनी जाति या धर्म के प्रति विशेष घमंड नहीं था। शंकरन अक्सर बोला करता था, "अरी बच्ची, हम सब जानवर हैं। यह मत भूलना। अन्य जातिवालों के साथ लुढ़क-पुढ़क करने के बाद घर आकर चौके में घुसना हो तो तालाब जाकर डुबकियां मारनी पड़ेगी। छुआछूत, शुद्धता आदि के बिना जिएं तो हमारे परिवार पर ही उसका बुरा असर पड़ेगा।"

"मैं लुढ़कती-पुढ़कती नहीं हूं।"

"मैंने अपनी आंखों से देखा था कि बच्ची उस मुसलमान लड़की के हाथ पकड़कर चल रही थी।"

"कय्यावी तो तुमसे भी स्वच्छ है।"

"स्वच्छ ! गायों को खानेवाले स्वच्छ होते हैं ! इनकी स्वच्छता की बात मुझे नहीं सुननी है। हाथ पकड़कर चलने के लिए तुम्हें और कोई नहीं मिला ?"

"क्या तुम कय्यावी से नाराज हो ?" मैंने पूछा।

शंकरन एकाएक चौके से बाहर निकल गया।

"मैं किसी से नाराज नहीं हूं। उस मुसलमान लड़की ने मेरा कुछ बिगाड़ा तो नहीं। फिर मैं क्यों उससे नाराज होऊं ? खूबसूरती की बात कर लूं तो भी इस गांव में वह बड़ी खूबसूरत लड़की है। उसकी हंसी, उसकी चाल...वह नायर लड़की होती तो कितना अच्छा होता ! क्या करें ? जाति तो कुछ और हो गई न ?"

"वह नायर लड़की होती तो तुम उसका स्वयंवर कर लेते !" देवकी बोली।

"उसकी उम्र तो मेरी बेटी बनने लायक है। तो भी मैं उससे शादी कर लेता।"

"जाकर अपना काम संभाल लो। अपनी तनख्वाह से क्या तुम एक लड़की को पाल सकते हो ?" देवकी ने पूछा।

शंकरन ने फिर से चौके के अंधकार में शरण ले ली।

क्षयग्रस्त होने पर भी लक्ष्मी ने एक बड़े अमीर लड़के से शादी कर अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए नालाप्पाट से विदा ली। उस रिक्तता की पूर्ति के लिए आई औरत से मेरी नानी ने उदास होकर पूछा, "क्या नाम है ?"

"उज्जूट्टी।"

"उज्जूट्टी वाला नाम मैंने कभी सुना नहीं। कुञ्जुकुट्टि हो सकता है, है न ?"

"आप जो भी पुकार लें, मैं सुन लूंगी।" तभी नानी ने उसका चेहरा साफ-साफ देखा लिया। मैं भी उस औरत को एकटक देखती रही।

उसका पीला चेहरा पसीने से तर था। होठों के ऊपर एक पतली मूंछ नजर आती थी। वह नाटे कद की, मोटी कमरवाली औरत थी। पिंडली के आधे भाग तक ही उसने धोती पहन रखी थी। उसने नारंगी रंग की जो चोली पहन रखी थी उसकी बगल का हिस्सा थोड़ा फीका पड़ चुका था।

वह किस गांव की है ? कौन उसे नालाप्पाट ले आया ? आदि बातों की जांच नानी ने नहीं की। उस वक्त पूर्वी आंगन और दालान में कई लोग खड़े थे। बढ़ई कुंजू, वटेकरा से मुरूक और संदेसा ले आनेवाला बालन, कुंबलंगाच्चेरु नाम से पुकारे जानेवाला बूढ़ा, मांपुल्लि कृष्णन, उसकी पत्नी वल्ली, डाकिया रप्पाई, चूनेवाला कोच्चाक्कु की बहन मात्तिरी, कोल्हूवाला लासर आदि अनेक लोग वहां मौजूद थे। नानी ने सोचा होगा कि उनमें कोई से उस नौकरानी को वहां ले आया होगा।

"हाथ में क्या है ?" नानी ने उससे पूछा।

"मेरी धोती और काछनी। दो चोलियां भी हैं।"

"देवकी, उसे उत्तरी कोठरी में ले जाओ।" नानी ने फिर नौकरानी से कहा, "देवकी तुझे तालाब दिखा देगी। नहा लेने के बाद ही भीतर आ जाना।"

कुञ्जुकुट्टि देवकी के साथ तालाब की ओर चली गई। मैं भी उनके पीछे-पीछे गई।

"सिर पर लगाने के लिए तेल चाहिए ?" देवकी ने पूछा।

"नहीं। ज्यादा धूप खाने से माथा गरम पड़ा है। अभी तेल मल ले तो सिरदर्द शुरू हो जाएगा।"

"तुम्हारा मकान कहां है ?"

"काफी दूर है। कल्लूरमा का नाम नहीं सुना है ? उसके पूरब में है।"

"पूछने से बुरा मत मानना। तुम नायर हो ?"

मैं देखने में तीय्य जाति की लगती हूं, मेरा रंग तुमसे भी निखरा नहीं है क्या ? देख लो न ! चोली उतारने पर मेरी देह का गोरा-चिट्टा रंग देखा नहीं ? धूप खाने से हाथ झुलसकर काले हो गए। मैं असली नायर हूं, किरियात्त का नायर। मेरे परिवारवाले मछली-मांस का इस्तेमाल नहीं करते। जब मैंने जाना कि यहां के लोग भी किरियात के नायर हैं तभी मैं यहां आने को तैयार हुई। मैं जाति-धर्म पर भरोसा रखती हूं।"

"क्या, मुझसे नाराज हो गई ? मैंने यूं ही पूछा था। अब मेरे साथ ठहरना है न ? मैंने सोचा कि यूं ही जाति पूछ लूं।"

"मैं नाराज नहीं हूं। कोई मुझे नाराज नहीं कर सकता। अब थोड़ी देर के लिए तुम स्नान-गृह के बाहर खड़ी रहो। मुझे काछनी उतारकर साफ करना है।"

"तुम इतनी शरमाती क्यों हो ? तुम भी औरत और मैं भी औरत। मेरे पास जो कुछ है, वही तुम्हारे पास भी है।"

कुञ्जुकुट्टि मुस्कराई।

"तुम्हारी बात सच है। पर तुम्हारा और मेरा शरीर बराबर नहीं हो सकता। थोड़ा अंतर जरूर है।"

"अंतर नहीं होगा। तुम्हारी शादी तो नहीं हुई, है न ?"

"मेरी शादी की बात क्यों पूछ रही हो ? मुझे देखने पर शादी हुई-सी लगता है !"

"लगता है। तुम्हारा पेट, चूतड़ आदि देखने पर लगता है कि दो बार तुम्हारा प्रसव हुआ है।" देवकी जोर से हंस पड़ी।

"मेरी शादी नहीं हुई है और न मेरा प्रसव।"

कुञ्जुकुट्टि गंभीर मुद्रा में पानी में उतर गई और साबुन लगाकर हाथ-पैर धोने लगी।

"अरी बच्ची, इधर आओ।" स्नान गृह से बाहर लपकती हुई देवकी ने मुझे आवाज दी।

"हम जाएं। वे किसी के देखे बिना नहा लें।" देवकी बोली।

"देवकी ने कुञ्ञुकुट्टि को क्यों नाराज किया ?" मैंने पूछा।

"यह तो मजे की बात हुई। अरी बच्ची, मैं क्यों किसी को नाराज करूं ? मुझे और कोई काम-धंधा नहीं है क्या ? उसने शादी की है तो उसका भला। उससे मुझे क्या लेना-देना ? यदि शादी नहीं हुई तो मुझे क्या हर्ज है ? मैं सच कहूं ? मुझे उसका चेहरा पसंद नहीं आया। उसके रंग को देखने पर ही मालूम पड़ा कि वह बदजात है। गरीब परिवारवालों का रंग ऐसा नहीं होता। मेरा रंग तो देखो। न तो काला है और न गोरा। बल्कि दुहरा रंग है। है न ? हमारी लक्ष्मी का रंग भी मेरे जैसा है। सब हमें 'एण्णमैली' पुकारते हैं।"

"देवकी को किसने 'एण्णमैली' पुकारा ?"

देवकी मुस्कुराती हुई आम के पेड़ से उठंगकर खड़ी रही और बोली, "मर्द लोग। समझदार मर्द लोग। वे बता रहे हैं कि सबसे अच्छा रंग मेरा है। उन्होंने यह भी कहा कि देवकी एक 'एण्णमैली' है।"

"किसने कहा ? उसका कोई नाम नहीं ?"

"मैं नहीं बताऊंगी। तुमने मौसी से कह दिया तो, मुझे फटकारेंगी। मर्दों से बात करते देख लें तो मौसी तुरंत मुझे घर से बाहर निकाल देंगी। जिंदगी में अभी तक मैं बदनाम नहीं हुई। जानती हो ? किसी से भी पूछो, वह कहेगा कि देवकी का स्वभाव बेहतर है। मेरा स्वभाव लक्ष्मी के स्वभाव से भी बेहतर है। सबों का कहना है कि मेरा स्वभाव अच्छा है।"

"लक्ष्मी का स्वभाव देवकी के स्वभाव से भी बेहतर है।"

"तुमने फिर से मुझे सताना शुरू किया ! मुझे लगता है कि उस लक्ष्मी ने यहां के लोगों को वश में करने की कोई दवा पिलाई है। लक्ष्मी के बारे में बोलना शुरू होते ही तुम मुझसे नाराज होती हो। यदि मैं कहूं कि लक्ष्मी का स्वभाव उतना अच्छा नहीं तो तुम लोग मुझे निगलने आते हो। मुझसे हमारी आमिना उम्मा ने बता दिया है कि लक्ष्मी ने यहां के लोगों को वशीभूत करने की दवा पिला दी है। उस समय मुझे विश्वास नहीं हुआ था पर अब लगता है कि उम्मा की बात सही है।"

"यह आमिना कौन है ?"

यह तो मजे की बात हुई ! तुम हमारी आमिना उम्मा को नहीं जानतीं ? कभी-कभी यहां आकर 'कटहल चाहिए' 'अरवी चाहिए' कहने वाली वह उम्मा है न ? घिसे हुए दांत वाली ? वह दुबली-पतली देहवाली ? तुम्हें याद नहीं ? आमिना उम्मा बड़ी समझदार है। तुम पर किसी की नजर लग जाए तो आमिना उम्मा को बुलाकर फुंकाना काफी है। कुदृष्टिवालों के पैरों के नीचे से थोड़ी मिट्टी लेकर उसमें थोड़ा सरसों, मिर्च, नमक आदि मिलाकर तुम्हारे सिर पर फूंक मारेगी। उसके बाद सारी चीजें चूल्हे में डाल देगी। हमारे चौके में उम्मा प्रवेश नहीं कर सकती। इसलिए

उम्मा वे सब अपने घर के चूल्हे में डाल देती है।

"आमिना उम्मा यहां के चौके में क्यों नहीं घुसती ?"

यह तो मजे की बात हुई ! यहां के चौके में उम्मा कैसे घुस पाएगी ? अरी बच्ची, तुम्हें इतनी भी अक्ल नहीं ? यहां के चौके में घुसने के लिए किरियत का नायर होना जरूरी है। हम जैसे मामूली नायर यहां के चौके में प्रवेश नहीं कर सकते। क्या बच्ची यह नहीं जानती कि अंबाषत्तवाले यहां के चौके में नहीं घुस सकते। हमारे चौके के लिए छुआछूत, सूतक-पातक आदि लागू है।"

"क्या हमारे चौके में देवकी नहीं घुसती ?"

"नहीं। बच्ची, हम पल्लिच्चान नायर हैं। सुना नहीं ? शायद सुना होगा ! बच्ची की जाति हमारी जाति से भी ऊंची है।"

कुञ्ञुकुट्टि नहाने के बाद गीले कपड़ों में ही बाहर निकली। उसका शरीर आम्र-वृक्ष की कोपलों की याद दिलाता था। देवकी ने एक ही बार उसकी ओर देखा और बालू पर थूक दी।

"तुम्हें नहाने के लिए तालाब में उतरे कितनी देर हो गई ! मौसी मुझे ही गालियां देंगी। तेल लगाए बिना भी तुम्हें नहाने में दो घंटे लगे। थोड़ा तेल सिर पर मल लोगी तो ! मेरी पुन्नोक्काविल भगवती, स्नान के बारे में सुना है, देखा है, पर ऐसा भी कोई स्नान होता है !"

"पूरी धोती में मिट्टी लगी थी। लाल-लाल मिट्टी। वह साफ किया। उसी में समय निकल गया।"

"धोती साफ करने के लिए तुमने साबुन तो मांगा नहीं !"

"अरी, धोती साफ करने के लिए मैं साबुन का इस्तेमाल नहीं करती। पत्थर पर मारकर साफ करती हूं। गरीबों के लिए साबुन नसीब कहां ?"

"तुम्हारे घर शायद साबुन नहीं होगा पर यहां साबुन है, तेल है, सब कुछ है। जो लें, मौसी दे देंगी। वे बड़ी ऐश्वर्यवती मां हैं। शंकरन नायर का कहना है कि नालाप्पाट के अन्न का बर्त्तन पांचाली के अक्षय पात्र-सा है। उसमें कभी भी भोजन खत्म नहीं होता। कोई भी आ जाए उसे भोजन दिया जाता है। मौसी की जिद है कि यहां से किसी को खाली पेट लौटना न पड़े।"

"मेरा सौभाग्य।"

हां, हां। तुम्हारा सौभाग्य ही समझो। यहां ठहरना और जगहों में ठहरने की तरह नहीं है। और कहीं भी हो, मेरे मामा मुझे जाने नहीं देंगे। यहां की हालत वैसी नहीं है। यहां रहें तो लड़कियां बदनाम नहीं होगी। उनका स्वभाव भी अच्छा हो जाएगा। समझा ? सांझ के वक्त यहां की अम्मिणिअम्मा दीए के पास बैठकर कुछ श्लोक और गीत पढ़ती रहती हैं। उनका पूरा अर्थ मेरी समझ में नहीं आता है। पर मेरी आंखों से आंसू टपकने लगते हैं। क्या रमणन की कहानी तुमने नहीं

सुनी ? चंद्रिका ने रमणन को धोखा दिया था। उसने जाकर खुदकुशी कर ली। देखने में बहुत सुंदर इंसान था।''

''क्या तुमने देखा है ?''

''मैंने नहीं देखा। अम्मिणिअम्मा को पढ़ते सुना है।''

''कभी-कभी मर्द ही औरत को धोखा देते हैं।''

''हो सकता है। पर मुझे किसी ने धोखा नहीं दिया है।''

''तुम्हारा सौभाग्य।''

''क्या तुम्हें किसी ने धोखा दिया ?''

''मैं तो बदनसीब औरत हूं।'' लंबी सांस लेती हुई कुञ्जुकुट्टि जल्दी-जल्दी चलने लगी।

''क्या कुञ्जुकुट्टि को एक रुपया चाहिए ?'' मैंने पूछा।

''यह तो मजे की बात हुई !'' देवकी झुंझलाती हुई बोली।'' यहां आए चौबीस घंटे भी पूरे नहीं हुए। और तुमने बच्ची को अपने वश में कर लिया। मैं यहां कितने सालों से रह रही हूं। पर इस बच्ची ने मुझे एक पैसा तक नहीं दिया। मुझे कोई पसंद नहीं करता। मेरा रंग अच्छा नहीं है न ? मैं मोटी भी नहीं। मुझे देखकर कोई नहीं कहेगा कि देख, एक सुंदरी जा रही है।''

''देवकी को किसने 'एण्णमैली' पुकारा ?'' मैंने पूछा।

''अरी बच्ची, मुझे मार दे तो भी नहीं बताऊंगी। मुझे वह बतलाने की कोशिश मत करो।''

''तुम्हारा पति है क्या ?'' कुञ्जुकुट्टि ने पूछा।

''देवकी मुड़कर खड़ी हो गई।

''मेरा पति हो तो मुझे भला। उससे तुम्हें क्या फायदा ?''

''मैंने यूं ही पूछा था। जवाब देना नहीं चाहती तो नहीं दो।''

''मैं ईंट का जवाब पत्थर से देना जानती हूं। तुम अभी-अभी आई हो न ? अब ही तुमसे उलझना नहीं चाहती। इसलिए चुप रहती हूं। तुम्हारा एक-एक सवाल सुनने पर पारा चढ़ आता है। अरी कुञ्जुकुट्टि अम्मे, तुम्हारी यह अकड़-फक्कड़ यहां नहीं चलेगी, कल्लूरमा जाकर कर लो। अकड़ना शुरू करोगी तो यहां रहना मुश्किल हो जाएगा।''

''मैंने क्या गलती की ?'' कुञ्जुकुट्टि गद्गद होकर बोली। उसकी आंखें एकाएक भर आईं।

''अब रोना-कलपना बंद करो। मौसी मुझे ही फटकारेंगी। मुझे यहां से निकलवाने की हरकतें मत दिखाओ।''

''मैं क्यों तुम्हें निकलवाऊं? झूठ बोलोगी तो भगवान सुनेगा।''

''देवकी ने कुञ्जुकुट्टि को रुला दिया।'' मैंने परनानी से कहा।

"यह कुञ्ञुकुट्टि कौन है ?" परनानी ने पूछा।

"आज जो नौकरानी आई है न, वही। कल्लूरमा से आई कुञ्ञुकुट्टि।"

"मैंने नहीं देखा।" परनानी बोलीं।

"देवकी कुञ्ञुकुट्टि को रुला रही है।"

"रोनेवाली को रोने दे।" परनानी पुनः उंगलियों की जोड़ लगाती हुई नाम जपने लगीं।

देवकी रोज कुञ्ञुकुट्टि के बारे में शिकायत करती रही। कुञ्ञुकुट्टि कपड़े बदलने के लिए उत्तरी कोठरी में घुसते ही दरवाजा बंद कर लेती है, स्नान-गृह का दरवाजा बंद करने के बाद ही नहाने के लिए पानी में उतरती है आदि-आदि शिकायतें देवकी ने कीं।

"यह तो एक अड़ियल औरत है।" देवकी बड़बड़ाई।

एक दिन सांझ के वक्त आंवले के पेड़ के नीचे खड़े होकर कुञ्ञुकुट्टि सिसक-सिसककर रो रही थी। मैंने उसे देखा और सुना। देवकी शौच के लिए नालाप्पाट तथा वेलुत्तेडत्तु अहाते के बीच में स्थित 'करूवान परंपु' नाम से जाने जानेवाले निर्जन प्रदेश की ओर गई हुई थी। नालाप्पाट की औरतें उस वक्त दक्षिणी कमरे में बैठकर नाम जपने तथा पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने में व्यस्त थीं। मामाजी डाक की प्रतीक्षा करते हुए बरामदे में टहल रहे थे। कुञ्ञुकुट्टि की सिसकियां सुनकर मैं उत्तरी दालान की ओर भाग गई। आँवले के पेड़ के नीचे, संध्या की धुंधली रोशनी में उसका चेहरा काफी फीका नजर आया।

कुञ्ञुकुट्टि ! मैंने जोर से आवाज दी। उसने मुंह मोड़ दिया।

मैं सीढ़ियां उतरकर उसके पास पहुंच गई। उसके कपड़ों से पसीने की बदबू आ रही थी, मितली की भी।

"क्या कुञ्ञुकुट्टि ने ओकाई की ?" मैंने पूछा।

"हां बच्ची। बाड़े के पिछवाड़े में ओकाई की।"

कुञ्ञुकुट्टि की तबीयत खराब है ? उसे पेट-दर्द है ?"

"पेट-दर्द नहीं है। उसने हरी इमली खा ली, इसलिए ही ओकाई की।"

"हरी इमली क्यों खा ली ?"

"हरी इमली देखते ही उसे खाने की इच्छा होती है। खाना नहीं चाहिए था। बाड़े के पिछवाड़े में पूरा का पूरा उगल दिया।

"मैं पीठ दबा दूं ?"

"हाय बेटी । मेरी पीठ बच्ची दबाएगी ! मौसी देख लें तो मुझे यहां से मार भगाएंगी। बच्ची भीतर चली जाओ। उञ्ञूट्टि अभी आ जाएगी। नहा धोकर आ जाएगी। हम टूटी चूड़ियों से माला बनाएंगे। बच्ची को टूटी चूड़ियां आंच में दिखाकर टेढ़ी करना आता है ? उञ्ञूट्टि सिखा देगी।"

"मैं दक्षिणी कोठरी में जाऊं ?"

"जाओ। मेरी मितली की बात मौसी से मत कहना। क्या तुम बताओगी ?"

"नहीं।"

नानी का ख्याल था कि वेतन पाने के दिन कुञ्जुकुट्टी का कोई रिश्तेदार नालाप्पाट जरूर आ जाएगा। देवकी की नानी अपने छोटे भाई के साथ सुबह ही आ पहुंची थीं। शंकरन के पिता पिछले दिन शाम को जाकर पूरबी दालान के कोठार पर लेटकर सो चुके थे। पर कुञ्जुकुट्टि को ढूंढकर कोई नहीं आया।

"तुम्हारा वेतन किसको भेजूं ? उसे लेने कोई आया तो नहीं !" नानी ने से पूछा।

"मेरी तनख्वाह मेरे हाथ में ही दे दें।" कुञ्जुकुट्टि ने हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"तुम्हारे के घर मनिआर्डर नहीं भेजना है ?"

"नहीं मौसी। मेरी तनख्वाह मुझे ही दे दें।"

"उसे सुनकर देवकी ने खंखार लिया।"

"मां-बाप से कोई संबंध नहीं होगा !" देवकी बड़बड़ाई।

कहां से इसको यहां घसीट लाया, कौन जाने !" शंकरन चौके के अंधकार में खड़े होकर स्वगत बोला।

नानी ने पांच रुपए का एक नोट कुञ्जुकुट्टि की हथेली पर रख दिया। कुञ्जुकुट्टि ने उसे अपनी चोली के भीतर डाल दिया और झाड़ू उठाकर फर्श बुहारने लगी।

रात के वक्त सोने के पूर्व कुञ्जुकुट्टि के दुख के बारे में मैं नानी से बात किया करती थी।

"देवकी हमेशा कुञ्जुकुट्टि को सताती रहती है।" मैंने एक बार कहा।

"उसमें अचरज की क्या बात है ? कुञ्जुकुट्टि खूबसूरत है। उसे देखकर देवकी को ईर्ष्या होती होगी। उसमें क्या आश्चर्य है ?" नानी ने पूछा।

"नानी कुञ्जुकुट्टि को यहां से निकाल देंगी ?"

"मैं नहीं निकालूंगी।"

"देवकी के बहकावे में आकर कुञ्जुकुट्टि को यहां से न निकालें।"

"ठीक है। नहीं निकालूंगी।"

अगला दिन रविवार था। चामी अय्यर मास्टर मुझे पढ़ाने नहीं आए थे। शायद इसलिए ही नानी ने मुझे नींद से नहीं जगाया। मैं उठकर नीचे पहुंची तो किसी ने मेरे लिए दंत चूर्ण या कॉफी नहीं दी। उत्तरी कोठरी से शोरगुल की आवाज सुनाई पड़ी।

"बच्ची को हटा लो। यह बच्चों को देखने लायक दृश्य नहीं है।" कारिंदा मटप्पिलाई शंकुण्णि नायर बोल उठे। दुर्घटनाओं के अवसर पर ही नानी उस बूढ़े को बुला लाती थीं। मैंने उनके हाथों को हटाकर उत्तरी कोठरी की ओर देखा।

दीवार पर खून के धब्बे दिखाई पड़े। फर्श पर भी खून फैला हुआ था। कुञ्जुकुट्टि का बिस्तर भी खून से लथपथ था। कुञ्जुकुट्टि कमरे के एक कोने में सहम कर खड़ी थी। उसकी आंखों की पुतलियां कांच की गोलियों की तरह चमक रही थीं।

"हूं। जल्दी तैयार हो जाओ। अभी तुझे घर छोड़ आता हूं।" एक मर्द बोल उठा। वह आवाज शंकुण्णि नायर की थी या शंकरन की, मुझे ठीक से याद नहीं।

"आइंदा भगवान की प्रार्थना करती हुई अपने घर में ही रहना। यहां न आना।" नानी बोलीं।

"मुझे यहां से न निकालें।" कुञ्जुकुट्टि का गला भर आया।

"यह दवा तुझे किसने दी ?"

"अरे शंकुण्णि नायर, उसे गाली मत दो। उसे रुलाने से क्या फायदा ? जो होना था वह हो चुका।" परनानी बोलीं।

"चौथे महीने जब यहां आई थी, तभी मैंने कहा था कि पेट देखने पर कुछ गड़बड़ लगता है। तब मेरी बात किसी ने नहीं मानी।" देवकी बोली।

"मांझी कौन है ?" नानी ने कृष्णन से पूछा।

"शायद कोंतु होगा। वह किसी के जाने बिना वहां पहुंचा देगा।"

"कोंतु के मुंह से कोई यह बात नहीं जान पाएगा।"

"मेरी बच्ची, इनसे कह दे कि मुझे न निकालें।" कुञ्जकुट्टि ने मेरा हाथ पकड़कर बोली।

"बच्ची को छूकर अशुद्ध न करना।" देवकी बोली।

"देवकी, कमला को यहां से ले जाओ।" नानी ने गुस्से के साथ कहा।

"खेत के किनारों के नाव घाट तक जाने के लिए कुञ्जुकुट्टि कृष्णन तथा उसके साथियों के साथ सिर झुकाती हुई चल पड़ी तो मैं सिसक-सिसककर रो पड़ी।

"कुञ्जुकुट्टि को क्या बीमारी है ?" मैंने देवकी से पूछा।

"बीमारी ?"

"उस कुञ्जकुट्टि की क्या बीमारी है ? कोठरी भर खून ही खून है।"

"कोई बीमारी नहीं। उसे घमंड था, घमंड। पहली नजर में ही मुझे मालूम पड़ा था कि वह यहां ठहराने लायक नहीं है। वह रंडी है, रंडी। बच्ची यह बात किसी से मत कहना। वह एक रंडी है।"

"रंडी का क्या मतलब है ?"

"यह तो मजे की बात हुई। रंडी का मतलब पूछे तो क्या बताऊं ? रंडियों के साथ मेरा कोई ताल्लुक नहीं है। मैं पहली बार ऐसी एक चीज को देख रही

हूं। उसने एक जान को बरबाद किया न ? वह भी हमारे घर में रहकर। अरी बच्ची, ईश्वर उसे माफ नहीं करेगा। वह आखिर शीतला लगकर मर जाएगी।''

''शीतला माने क्या है ?''

''इस बच्ची के सवाल सुनने पर मुझे गुस्सा आता है। अरी बच्ची, मुझसे हमेशा ऐसे सवाल मत पूछो। बच्ची अपने मास्टर से पूछ लो। तुम्हारे सवाल का जवाब देने के लिए कोई मुझे तनख्वाह नहीं देता है। झाड़ू बुहारने और कपड़े धोने के लिए मुझे यहां रखा गया है। समझी ?''

मैंने सिर हिलाया।

''बेचारी कुञ्ञुकुट्टि !'' मैंने कहा।

देवकी ने जोर से खंखारकर आंगन में थूक दी।

''उञ्जूट्टि ! फू ! अरी बच्ची, अब तुम उसे भूल जाओ। अब वह यहां नहीं आएगी।''

''इस बच्ची का नाम क्या है ?''

एक दुबली सांवली शिशु को दूध पिलाती हुई मंदिर के परिसर में बैठी स्त्री से मैंने पूछा।

''इसका नाम एमलता है।''

बच्ची ने दूध पीना एकाएक बंदकर मेरी ओर देखा। उसके मुंह के बाएं कोने से दूध बह रहा था। बच्ची हंसी। एक दंतहीन मुस्कान।

एमलता का सिर मुंड़ा गया था। उसकी खोपड़ी पर काली पपड़ियां दिखाई पड़ीं। पैरों पर काले-काले धब्बे पड़े थे। धब्बेदार उन शुष्क पैरों में चांदी की पाजेबें भी मौजूद थीं।

''इस बच्ची के सिर पर क्या है ?'' मैंने पूछा।

''खुजली है। शंकुण्णि पणिक्कर के उपचार में थी। अब थोड़ी स्वस्थ हुई है। डर था कि इसकी जान चली जाएगी। गुरुवायूर मंदिर में एक प्रतिमा चढ़ाने की दुआ की है।''

''प्रतिमा चढ़ाने का मतलब क्या है ?'' मैंने पूछा।

''एमलता की शक्ल की भांति सोने की एक प्रतिमा बनाई जाती है और उसे गुरुवायूर मंदिर के भगवान चरणों पर अर्पित किया जाता है। तब यह बच्ची जल्दी ठीक हो जाएगी। क्या बच्ची अभी तक गुरुवायूर मंदिर नहीं गई है ? क्या बालामणिअम्मा बच्चों को गुरुवायूर मंदिर नहीं ले जाती ?''

''बालामणिअम्मा अपने बच्चों को गुरुवायूर नहीं ले जाती तो तुम्हें क्या हर्ज हुआ ?'' देवकी जल्दी हमारे निकट आ गई और जोर से पूछा।

"मुझे कोई हर्ज नहीं। मुझे अपनी बच्ची की भलाई ही देखनी है। दूसरे बच्चो की बात उनकी मां ही देख लें।" एमलता की मां अपनी चोली ठीक करती हुई बोली।

"बच्ची क्यों सभी से बातें करती हो ? मेरे साथ मंदिर के भीतर आ जाओ न ? तुम्हें दीपस्तंभ देखना था। मैंने सिर्फ यही कहा था कि दीपस्तंभ देख लो। औरों से बात करने को किसने कहा ?"

देवकी अपना गुस्सा दबाने के लिए जल्दी-जल्दी मंदिर की परिक्रमा करने लगी। मैंने उसका अनुगमन करने की चेष्टा की। देवकी के पांव का पिछला भाग फटा और काला दिखाई पड़ा। हमने मंदिर के आंगन के काले पत्थरों को पैरों से छूए बिना प्रदक्षिणा करने में विशेष ध्यान दिया।

"हमें कितनी बार प्रदक्षिणा करनी है ?" मैंने पूछा।

देवकी मुड़कर खड़ी हुई और अपने नथुने फुलाए।

"जब तक पाप समाप्त न हो जाएं तब तक। जितनी बार प्रदक्षिणा करोगी उतनी बार पुण्य मिलेंगे। क्यों, हांफने लगीं ?"

"नहीं।"

सांस फूलेगी। सांस फूले बिना कैसे रह सकती हो। बच्ची स्वस्थ नहीं। उसके लिए कुछ खाना-पीना चाहिए न ? अरी बच्ची, सबेरे सिर्फ एक डोशा खाने से प्रदक्षिणा करने की ताकत नहीं मिलेगी। मैं भात क्यों खाती हूं ? तुम नहीं जानती ? ताकत के लिए है। पीतल की उस तश्तरी में भरकर मैं भात खा लेती हूं। उसे खाने के लिए मुझे सब्जी की जरूरत तक नहीं। दो मिर्च और थोड़ा नमक मिलाकर मैं पूरा का पूरा भात खा लेती हूं। जानती हो कब ? सबेरे झाड़ू से कमरे साफ करने के बाद। फिर मुझे भूख नहीं लगती। दोपहर के वक्त जूठी पत्तल लेने के बाद ही मैं भोजन करने बैठती हूं। बच्ची की तरह थोड़ा-सा नहीं, दो कलछी भात मैं खा लेती हूं। मुझे कुछ विशेष सब्जी की जरूरत नहीं है। जो भी मिले, मैं प्रसन्न रहती हूं। खासकर अरवी का व्यंजन मिले तो मैं अत्यंत खुश होती हूं।"

हम फिर से एमलता के पास पहुंच गई। मैंने बच्ची की ओर देखकर पुकारा, "एमलते।"

बच्ची अपने खाली मसूड़ों को दिखाती हुई मुस्कुराई।

"इस बच्ची को गांधीजी की छाया है।" मैंने कहा।

"यह तो मजे की बात हुई !" देवकी झल्लाती हुई बोली, "कहीं पड़े रहने वाले कांदी (गांधी) की छाया इस बच्ची को कहां से मिलेगी ? बकवास मत करो।"

हेमलता की मां की ओर देखकर देवकी आगे बोली, "यह बच्ची कलकत्ते में पली-बढ़ी। उसे क्या बोलना है, क्या नहीं बोलना है, इसका पता नहीं। यह

ऐसी-वैसी बात कहेगी तो बुरा मत मानना। बच्ची है न ? वह कुछ नहीं जानती। नालाप्पाट से मौसी आ गई हैं। मंदिर के भीतर दर्शन कर रही हैं। कुसुमांजलि के बाद ही हम लौट जाएंगी। बच्ची की बात का बुरा मत मानना।"

एमलता की मां बालू से उठ खड़ी हुईं। फिर झुककर अपनी बेटी को उठाकर गोद में रख लिया। उनकी धोती जरा नीचे की ओर उतर गई थी। इसलिए उनकी नाभी और उसके इर्द-गिर्द पड़े हुए सफेद धब्बों को मैंने उत्सुकता के साथ देख लिया। परस्पर अछूत रहनेवाली, उनके पैरों की उंगलियों ने ताड़ पत्र के पंखों की याद दिलाई।

"तुम कहां से आ रही हो ?" देवकी ने पूछा।

"मैं कटिक्काट से आई हूं। मेरे भानजे की वर्षगांठ है। दावत भी है। उसके लिए आई हूं। मजबूर करने पर आई हूं। नहीं तो नहीं आती। दावत में जाने के लिए मुझे फुरसत ही कहां है ? यह मेरी पाचवीं संतान है। सबसे बड़े की उम्र केवल सात बरस ही है।"

"हर एक साल प्रसव होता है क्या ?"

"हां, ईश्वर बख्शे तो हम कैसे अस्वीकार करें ? यह तो मेरी पहली बेटी है, एमलता। बाकी सबों का नाम मेरे मामा ने दिया था—राघवन, प्रभाकरन, गोविंदन ...केवल इस बच्ची का नाम मामा ने नहीं चुना। इसके पिता ने ही कहा कि इसका नाम एमलता रखना चाहिए। पहली बेटी है न ? खानदान की औलाद ! जब यह बड़ी होकर स्वयंवर करेगी तभी हमारे खानदान में बच्चे पैदा होंगे। इसे बालारिष्ट है। पणिक्कर से इसका जन्म-पत्र लिखवाया। उसमें लिखा है कि इस बरस तक बालारिष्ट होगा। वह ठीक भी है। पैदाइश से अभी तक बीमारी छूटी ही नहीं। इसे खांसी, बुखार, दस्त, मितली, खुजली, अतिसार आदि सब कुछ है। दुनिया में जितनी बीमारियां मौजूद हैं, वे सब एमलता को हैं। कितने रुपए खर्च किए ! काढ़ा, उबटन आदि के लिए खर्च हुए !"

"तो भी, तुम्हें बच्ची मिली न ?" देवकी बोली। उसने अपने सिर से एक जूं को निकाला और अपने नाखूनों से उसे पीस लिया। फिर खून के धब्बे पड़े हाथ को धोती में पोंछ लिया।

"ठीक है। बच्ची मिल गई। रुपए खो गए तो भी एमलता मिल गई।"

"हमारे तेंडियत्त में भी एक एमलता है। वह दस बरस की होगी। देखने में सुंदर है।" देवकी बोली।

"कालत्त की कोच्चुअम्मा की दूसरी बेटी को मैंने देखा है। उसका नाम मालिनी है। देखने में बहुत सुंदर है ! लाल रेशम की कुर्ती, कानों में बाली और माथे पर कमल के आकार की टिकुली..."

"मैं उनको नहीं जानती। मैं कहीं नहीं जाती हूं। इस बच्ची की देखभाल

करना ही मेरा काम है। मैं इस गांव के किसी को नहीं जानती। मुझे घर-घर भटकने की आदत नहीं है। मेरे यहां की औरतें घर के बाहर नहीं जाती। कोई काम हो तो वह करना और उसके बाद कहीं बैठे रहना। कोई काम नहीं हो तो नाम जपना। जितनी बार नाम जप लें उतना ही पुण्य मिलेगा। समझी ?

"तुम्हारा नाम क्या है ?" एमलता की मां ने देवकी से पूछा।

मेरा नाम देवकी है। नन्नंमुक्कु मेरा गांव है। तुमसे मिलकर मुझे अच्छा लगा। इसीलिए मैंने अपना नाम बता दिया। कोई मेरा नाम पूछ ले तो मैं नहीं बताती हूं। यह मेरी आदत है। कोई मेरा नाम पूछे तो मैं कहती हूं मेरा नाम नारंग है।"

देवकी ठठाकर इस तरह हंसी जैसे कोई लतीफा सुनी हो। मंदिर के द्वार पर, दीप-स्तंभ के सम्मुख हाथ जोड़कर खड़े मर्दों ने उसकी ओर देखा।

"वे तुम्हें ही देख रहे हैं।" एमलता की मां बोलीं।

"कौन ?" देवकी ने पूछा।

"दर्शन के लिए खड़े मर्द लोग। तुम्हारी हंसी सुनकर वे तुम्हें देख रहे हैं।"

"देखनेवालों को देखने दें। मुझे क्या हर्ज है ? यह सोचकर मुंह छिपाए खड़ी रहूं क्या कि शरीर भर काले रोमवाले कोई दर्शन के लिए खड़े हैं ! लड़कियों की हंसी देखने के लिए ही ये मंदिर पधारते हैं क्या ?

"देवकिअम्मे, चुप रहो न !" एमलता की मां बोली।

"मेरी बात तुम्हें पसंद नहीं आती तो अपनी बच्ची को लेकर कुटिक्काट चले जाओ। इस दुनिया में कोई भी मेरा मुंह बंद नहीं कर सकता। मैं किसी से नहीं डरती। मौसी का दर्शन पूरा होते ही मैं चली जाऊंगी। कुर्ता और बनियन उतारकर रोम दिखाते हुए दर्शन के लिए खड़े नायरों को देखते रहना मेरा काम नहीं है। मेरा काम इस बच्ची की देखभाल करना है। घर पहुंचकर मुझे ड्योढ़ी, छत और बीच की कोठरी का फर्श साफ करना है और उसके बाद वहां बिस्तर बिछाना है। नाले में पानी रख देना है। पीने के लिए सोंठ का पानी रख देना है। मेरे पास बातचीत करते रहने की फुरसत नहीं है। मौसी को क्या हुआ ? काफी देर हो चुकी है। मैं जाकर देख लूं ! बच्ची यहां से कहीं न जाना। नहीं तो कोई पकड़कर ले जाएगा। मैं जाकर देख लूं कि मौसी क्या कर रही हैं ?"

देवकी मंदिर के भीतर चली गई तो एमलता की मां ने मुझसे पूछा, "तुम्हारे मां-बाप मंदिर क्यों नहीं आते ?"

"वे यहां नहीं हैं। कलकत्ते में हैं।"

"वह कहां है ?"

"मुझे नहीं मालूम।"

नानी का हाथ पकड़ते हुए एक नाले से नालाप्पाट की ओर लौटते वक्त

मैंने कहा, "उस बच्ची का नाम एमलता है।"

"एमलता ? हेमलता होगा। एमलता कोई नाम नहीं होता।"

"मौसी, मैंने भी सुना। उसकी मां उसे एमलता पुकारती थी। बच्ची का कहना ठीक है।"

"एमलता नाम मैं पहले पहल सुन रही हूं।" नानी ने हंसते हुए कहा।

"बच्ची देखने में बदसूरत है पर नाम तो सुंदर है।" देवकी ने अपनी राय प्रकट की।

"इस बार हालत बहुत खराब है।" मटप्पिलाई शंकुण्णि नायर दक्षिणी कोठरी की ओर झांकते हुए जोर से बोल उठा।

पूजा-गृह के सामने बैठकर दही-मंथन करने वाली नानी का चेहरा एकाएक फीका हो गया। वे उठ खड़ी हुईं तो मैं भी जल्दी उठ गई।

"कितने नारियल थे ?" नानी ने पूछा।

शंकुण्णि नायर पान का पीक आंगन में थूकते हुए बोला, "पिछली बार जितने मिले थे उसका आधा।" वह आगे बोला, "अधिकतर अधपके हैं। नारियल मिलेंगे कैसे ? पेड़ की जड़ खोदे कितने साल हो गए ? खाद भी नहीं डाला गया।" शायद नानी के प्रति अवज्ञा प्रकट करने के उद्देश्य से उसने अपने हाथ जोर से झटका दिए। मुझे भ्रम हुआ था कि वह बुड्ढा अपने हाथ का पाना झटका रहा है। उसके पास जाकर मैंने उसके हाथ को छू लिया तो लगा कि उसके हाथ की खाल खुरदरी और रूखी-सूखी है।

"वाक्येल के अहाते की क्या हालत है ?" नानी ने पूछा।

"खराब है।" उसने दुबारा हाथ झटका दिए।

"चान्नात्त के अहाते की ?"

"वहां भी कुछ नहीं है।"

"मटप्पिलाई के अहाते में ?"

"वहां कुछ डाभ गिरे पड़े हैं। वे सब इकट्ठाकर यहां के लकड़ी-खाने में डालने को कहा है।"

"खैर। क्या करूं ? जो मिला सो मिला। रुपए तो दे दे।" नानी ने हाथ बढ़ाया।

कारिंदे ने अपनी कमर से कुछ मैले नोट निकालकर नानी के हाथ में सौंप दिए।

"अरे शंकुण्णि नायर, कुल मिलाकर कितने होंगे ?" नानी ने पूछा।

"मैंने कहा न ? पिछली बार का आधा।"

नानी ने दो बार रुपए गिन लिए। फिर उसे लेकर छत पर चली गईं।

नानी अपने संदूक में रुपए संभालकर रखती थीं और उसकी चाबी टांड़ पर छिपाकर रखती थीं। मैंने कई बार यह देखा था।

"धूप में ज्यादा गरमी है। कुछ देर यहां बैठ लूं।" शंकुण्णि नायर ने मुझसे कहा।

मटप्पिलाई शंकुण्णि नायर का शरीर स्त्रियों की तरह, छातीवाला, उभरे हुए चुचुक वाला और रोमहीन था। सफेद बालोंवाली शिखा सिर के बाईं ओर बांध रखी थी। कमर में अंगोछा बांधकर जल्दी-जल्दी चलते वक्त वह बूढ़ा हांफता रहता था। वह माथे, छाती और भुजाओं पर भस्म का टीका लगाता था। जब भी वह आता था, मेरी नानी अपना काम अधूरा छोड़कर दक्षिणी कोठरी के दक्षिणी दरवाजे पर दौड़ आती थीं। नारियल, नारियल के पत्ते आदि बेचने पर जो रकम मिलती थी, शंकुण्णि नायर वह रकम नानी के हाथ सौंप देता था। उस रकम के साथ कलकत्ते से पिताजी से प्राप्त रकम को मिलाकर नानी मां गृहस्थी चलाती थीं।

"कर्कट का महीना आ रहा है। थोड़ा-सा खर्च करें तो अगली बार ही सही नारियल के पेड़ से ज्यादा मुनाफा मिलेगा। मैं कितनी बार कहूं ? उस वी. एम. नायर को एक पत्र लिख डालिए न ? यहां रुपए नहीं तो वे कलकत्ते से भेज देंगे न ? यहां के नारियल फलें तो उसका फायदा यहां के बच्चों को ही है न ?"

शंकुण्णि नायर खंभे से उठंगकर बैठा और अंगोछे से पंखा करने लगा।

"यह बच्ची क्यों इतनी कमजोर दिखाई पड़ती है ? क्या इसे अतिसार है ?" उसने देवकी से पूछा। देवकी अलगनी पर भीगे कपड़ों को सुखाने डाल रही थी। उसने नीरसता से शंकुण्णि नायर को घूरकर देखा।

"शायद केंचुए का उपद्रव होगा। नहीं तो इतनी कमजोर नहीं हो सकती।" मेरी बंडी को ऊपर उठाकर मेरा पेट सहलाते हुए शंकुण्णि नायर ने कहा।

"उसे न केंचुए का उपद्रव है, न अतिसार।" देवकी बोली।

"कोई ऐसा बच्चा है जिसके पेट में केंचुए न हों ! पर वह तो हानिकारक भी नहीं। मोथा पीसकर बकरी के दूध में मिलाकर दे दें तो ठीक हो जाएगा।"

वह गाय का दूध तक पीने को तैयार नहीं। फिर बकरी का दूध कैसे पिएगी ? वह कुछ नहीं पी लेती। थोड़ा-सा मक्खन मिलाकर भोजन कराने में यहां की मौसी को कितनी कोशिश करनी पड़ती ! बच्ची को कोई बीमारी नहीं। उसका रंग अच्छा था और वह तंदुरुस्त भी थी। पर कलकत्ता ले जाकर उसे बरबाद कर दिया।"

"ठीक है। कलकत्ता ले जाकर उसका बुरा किया। अब वह पुरानी लड़की नहीं लगेगी।" शंकरन दालान की ओर आते हुए बोला।

"अरी बच्ची, वहां नए चावल का भात खाती हो, या पुराने चावल का ?"

"वहां राशन का चावल है ! बालामणि अम्मा ने ही कहा है कि वहां राशन की दुकान से चावल खरीदी जाती है। वहां लड़ाई छिड़ गई है ?" शंकरन बोला।

"क्या कलकत्ते में भी लड़ाई होती है ?" शंकुण्णि नायर ने पूछा।

"लड़ाई की बात मत करना। लड़ाई का नाम सुनते ही मेरे पेट में जलन महसूस होने लगेगी।" देवकी बोली।

"यहां लड़ाई छिड़ जाए तो ?" शंकरन ने पूछा।

"शंकरन ने अच्छा सवाल पूछा। लड़ाई छिड़ जाएगी, अम्राल क्या करेंगी ?" आंगन से उण्णिमाया ने पूछा। वह हंस रही थी।

"मैं बड़ी बहन के यहां चली जाऊंगी।" देवकी ने कहा।

"लड़ाई तो नन्नंमुक्क में भी हो जाएगी। सैनिक तुम्हारे घर आकर पूछताछ करेंगे।" शंकरन बोला।

"हाय, मैं परेशान हूं। मेरे पांव थक रहे हैं।" देवकी बोली। दालान में पांव फैलाकर बैठती हुई वह मेरी ओर देखकर आंसू बहाने लगी।

"देवकी रो रही है।" मैंने कहा।

"अम्राल हमेशा रोती-चिल्लाती रहती है। लड़ाई की बात सुनकर अब से क्यों रोने लगती हो ? यहां जनम लिया तो एक न एक दिन मरना ही पड़ेगा। सब मर जाएंगे। उसके बारे में सोचकर अभी से रोने लगोगी तो उससे क्या फायदा ?" उण्णिमाया ने पूछा।

"उण्णिमाया ठीक ही कह रही है।" शंकरन बोला।

"पीने के लिए थोड़ा मट्ठा मिलेगा क्या ? बड़ी प्यास लगी है।" शंकुण्णि नायर बोला।

"मट्ठा तो मौसी पनसाल ले गईं। जो बाकी है वह यहां वालों के भोजन में इस्तेमाल करना है।"

"छि ! छि ! यहां के लोगों को क्यों बदनाम कर रहे हो ? कमरे के भीतर कांड़ में मट्ठा भरा पड़ा है। मैं ले आता हूं।" शंकरन बोला।

"शंकरन कंजूस नहीं है। पर देवकी अम्राल बड़ी कंजूस हैं।" उण्णिमाया बोली।

शंकुण्णि नायर ने मुझे अपने शरीर से सटाते हुए मेरे कानों में फुसफुसाया, "थोड़ा-सा खुशबूदार तंबाकू ले आओगी ? मामाजी के पानदान में होगा। मामाजी की आंखें बचाकर ले आओगी ?"

"नहीं।" मैं बोली।

"बच्ची मुझसे क्यों इतनी नाराज है। मैं बच्ची को गाड़ी बनाकर देता हूं न ? कल नारियल के पत्ते से पिपहरी बना दी है न ? इसलिए थोड़ा तंबाकू ले

आओगी न ?"

"नहीं।"

"अरी बच्ची, पानदान से एक चुटकी तंबाकू ले आने पर आकाश टूटकर गिरेगा क्या ?"

"तुम्हें तंबाकू चाहिए तो उस बच्ची को क्यों परेशान करते हो ? मैं मौसी के पानदान से तंबाकू ला दूंगी।" देवकी बोली।

"वह तो मामूली तंबाकू है न ? मैं खुशबूदार तंबाकू खाना चाहता हूं। थोड़े दिनों से मेरा गला सूखा पड़ा है। लगता है किसी ने मेरे गले में बालू भर दिया हो। यह एक बीमारी है। मैं शंकुण्णि पणिक्कर से मिला। काढ़े के लिए नुस्खा लिख दिया है। शंकुण्णि पणिक्कर सभी बीमारियों का इलाज जानता है। पर क्या बताऊं ? उसके इलाज का कोई परिणाम नहीं निकलता। उसे गुरु का श्राप मिला है। सुना है कि उसने अपने गुरु का अपमान किया था। इसलिए उसके इलाज का कोई परिणाम नहीं निकलता है।"

"इलाज का परिणाम नहीं निकलता तो तुम क्यों उसके पास जाते हो ?"

"कैसे न जाऊं ? शंकुण्णि पणिक्कर हमारे ही गांव का है न ? मेरे घर में कोई विशेष बात होती है तो वह जरूर आ जाता है। हम दोनों के बीच बहुत लगाव है। शंकुण्णि पणिक्कर सभी बीमारियों का इलाज जानता है। वह बड़ा चिड़चिड़ा है। इसलिए ही उसे गुरु का श्राप भी मिला। शंकुण्णि पणिक्कर के जीते जी मैं किसी दूसरे गांव के वैद्य के पास कैसे जाऊं ?"

इलाज का कोई फायदा न होने पर भी तुम शंकुण्णि पणिक्कर का काढ़ा ही पिओगे, है न ?" देवकी ने पूछा।

उसके बढ़ाए मट्ठे को शंकुण्णि नायर ने जल्दी पी लिया और अंगोछे से मुंह पोंछते हुए मुस्कुराया।

"मेरा जन्म इसी गांव में हुआ है। मैं इसी गांव के वैद्य का काढ़ा पिऊंगा। मैं शंकुण्णि पणिक्कर से विरोध मोल नहीं लेना चाहता। इस जिंदगी में उसके लिए तैयार नहीं हूं। मेरी आदत ही ऐसी है।"

"तो तुम मर जाओ। बीमारी बढ़ाकर मर जाओ।"

"शंकुण्णि नायर मर जाएं तो तुम्हें कोई हर्ज नहीं ?" शंकरन ने पूछा।

"कोई भी मर जाए, मुझे कोई हर्ज नहीं।"

"क्या किसी के भी मर जाने से कोई हर्ज नहीं ?"

"मेरे ही यहां का कोई मर जाए तो मुझे हर्ज होगा।"

"तब तुम वह चंद्रिका हो ? तुम भी रमणन को धोखा देने वाली चंद्रिका की श्रेणी में हो ?"

"बकवास मत करो। बच्ची सुनेगी।"

शंकरन ने मेरे बालों को धीरे से सहलाया।

"यहां की अम्मिणिअम्मा का गीत बच्ची सुनती है न ? एक रमणन का गीत। 'शरीर से दो होने पर भी हम दिल से एक हैं, तू मेरी जान है' वाला गीत ! वह फूहड़ गाना है क्या ?"

"वह अच्छा गाना है।" मैं शंकरन से बोली।

"तब ?" देवकी की ओर लक्ष्य कर शंकरन ने प्रश्न किया। देवकी ने काछनी के छोर को ठीक से खोंस लिया। फिर बालों को खोलकर ठीक से जूड़ा बांध लिया।

"गाना अच्छा ही होगा। पर मैंने इतना ही कहा कि मुझे पंसद नहीं है। स्त्री-पुरुषों का प्रेम गीत मुझे पंसद नहीं।"

"फिर तुम्हें कौन-सा गीत पंसद है ?"

"कार्तायनी टीचर का पढ़ाया गीत देवकी को पसंद है ?" मैंने पूछा।

"वह कौन-सा गीत है ?" शंकुण्णि नायर ने पूछा।

"बालकृष्णन चेयत लीलये पारटी सखी।"

पारटी सखी अंत कोरेटी सखी।" मैंने गाया।

"यह कैसा गाना है ? इस बच्ची को यहां के स्कूल में क्यों भेजते हैं ? बच्ची बिल्कुल बिगड़ जाएगी। शंकुण्णि नायर जोर से बोल उठा। वह इस उद्देश्य से जीने की ओर नजर डालते हुए ऊंचे स्वर में बोलने लगा कि उसकी बात को नानी सुन लें।

"क्यों इस बच्ची को जोनोनों के बीच बैठकर पढ़ने भेजते हैं ?"

"ये 'जोनोन' कौन हैं ?" मैंने पूछा।

"बच्ची के अगल-बगल बैठनेवाले लड़के। वे ही जोनोन हैं। मैंने अपनी आंखों से देखा है। कल सबेरे मैं थोड़ा दही मांगने एरत्त के कुंजुनायर के घर जा रहा था। तभी स्कूल की घंटी बजाने के बाद लोहे की छड़ी उठाकर अय्यपु लौट रहा था। ठीक दस बजे थे। मैंने देखा कि यह बच्ची पहली बेंच पर दो जोनोनों के बीच बैठ रही थी। बाईं ओर वह मुंडा मोयदीन बैठा था। समुद्र तट के मुसलमान लोग हैं न ? मोयदीन उनके बीच रहता है। जानते हो ? दाईं ओर कौन बैठा था ? हमारे समुद्र तट के मूस्सा का बेटा अव्वुण्णि। मूस्सा सुशील और इज्जतदार आदमी जरूर है, तो भी जाति देखना ही चाहिए न ? शायद बच्चों को जाति के बारे में जानकारी नहीं होगी। पर उन्हें समझाने का काम अध्यापकों का है न ? इस खानदान की एक लड़की को मुसलमानों के बीच बैठने की क्या जरूरत पड़ी ? पढ़ाई-लिखाई तो जान गई है न ? अब स्कूल भेजने की क्या जरूरत ? उस कुञ्ञुण्णि नंबीशन को अब यहां बुलाकर थोड़ी संस्कृत सिखाना काफी नहीं है ? यहां के किसी ने भी घर के बाहर जाकर पढ़ाई नहीं की है। चाहे तो भेज दें, पर बदनामी सुननी पड़ेगी। जो कहना है मैंने वह कह दिया।"

"इस बच्ची के सात बरस पूरे नहीं हुए। अरे शंकुण्णि नायर, क्या सोचकर बता रहे हो कि बच्ची अब ही बदनाम हो जाएगी ?" शंकरन ने पूछा।

"स्कूल भेजना है तो भेज दें। वहां मुसलमान, ईसाई तथा पुलय जाति के बच्चे इस बच्ची से सटकर बैठें। उससे यहां के लोगों को कोई परेशानी नहीं है तो मुझे क्या एतराज है ?"

"शंकुण्णि नायर का चेहरा क्यों लाल-लाल दिखाई पड़ता है ?" मैंने पूछा।

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मुझे शंकुण्णि पणिक्कर से मिलना है। उसी रास्ते से मुझे जाना है। वैलेरी कृष्णन कुट्टि नायर की दुकान से दो अंगोछे खरीदने हैं। उसके बाद शंकुण्णि पणिक्कर से भी मिल लूंगा। ठीक से मल त्याग हुए दो दिन हो गए। इसलिए बड़ी परेशानी हो रही है। पेट में कुछ गड़बड़ी महसूस हो रही है। कल चार केले खाए। पर कोई फायदा नहीं हुआ। शंकुण्णि नायर किसी काढ़े के लिए नुस्खा लिख देगा।"

"तुमने तो कहा कि शंकुण्णि नायर की दवा से कोई फायदा नहीं !" देवकी हंसती हुई बोली।

"मैंने कहा। वह सही भी है। कोई फायदा नहीं होगा। कैसे होगा ? उसे गुरु का श्राप है न ?"

"फिर क्यों इस धूप में शंकुण्णि पणिक्कर से मिलने जाते हो ?"

"ठीक से मल त्याग हुए दो दिन हुए। इसीलिए शंकुण्णि पणिक्कर से मिलने जा रहा हूं।" सीढ़ियां उतरते हुए मटप्पिलाई शंकुण्णि नायर ने कहा।

कई सालों पहले जब मैं बच्ची थी तब फोन करते वक्त चोगा उठाकर नंबर लगाने की पद्धति मौजूद नहीं थी। पिताजी के दफ्तर पर फोन करना है तो चोगा उठाते ही 'नंबर प्लीज' कहनेवाली स्त्री-आवाज से कहना पड़ता था—पी. के. वन-सिक्स-टू-ओ (पी. के 1620) उसके बाद कनक्शन मिलने तक इंतजार करना पड़ता। पिताजी के दफ्तर का फोन-आपरेटर भट्टाचार्य नामक एक अधेड़ व्यक्ति थे। उनकी आवाज स्त्री-आवाज से मिलती-जुलती थी। अप्पुवेट्टन अपने दोस्त पिच्चिरिक्काट बालन नायर से कहते सुना था कि स्त्री समझकर कुछ लफंगे छोकरे भट्टाचार्य से फोन पर शृंगारिक बातें करते थे। यह अप्पुवेट्टन और बालन नायर के लिए हंसानेवाली बात थी। उन दिनों मैं मां से पूछती थी कि वे क्यों इस प्रकार खुश होकर हंस रहे हैं ?"

"शृंगार से क्या मतलब है ?" मैंने मां से पूछा।

"औरतों से, उनके सौंदर्य की सराहना करते हुए बातें करना, श्लोक के द्वारा उनके सौंदर्य का बखान करना...ये सब शृंगार हैं।"

फिर एक दिन नाश्ता करते वक्त मैंने पिताजी से कहा, "पिताजी के दफ्तर के भट्टाचार्य को कोई श्लोक सुनाते हैं।"

"भट्टाचार्य को श्लोक सुनाते हैं ! तू क्या बकवास करती है ? इस बच्ची का सिर फिर गया है क्या ?"

"पिच्चिरिक्काट के बालन नायर और अप्पुवेट्टन ने कहा है।"

अप्पुवेट्टन और बालन नायर जल्दी घर से बाहर निकल गए। उस दिन अप्पुवेट्टन ने मुझसे कहा कि अइंदा उनकी बातों पर ध्यान मत दे। यदि ध्यान दे तो वे बातें मां-बाप से न कह दे।

"हमारी बातें बच्चों के सुनने लायक नहीं है।" अप्पुवेट्टन ने मुझसे कहा।

ऐसे प्रस्तावों ने मेरे मन में एक तरह की उत्कंठा पैदा कर दी। चौके में रसोइया और नौकरानी के आपस में फुसफुसाते वक्त यदि मैं वहां पहुंचती तो उनमें कोई कहता, "हमारी बातें बच्चों के सुनने लायक नहीं है। बच्ची दालान में जाकर खेलो।"

छत पर मां-बाप के बीच हो रही बातचीत के समय यदि मैं वहां पहुंच जाती तो पिताजी कहने लगते, "नीचे जाकर किताब पढ़ ले। बड़ों की बातों को सुनना अच्छा नहीं है। पिटाई होगी।"

सिर्फ कुञ्जात्तु ही बच्चों के सुनने लायक बात करते थे। पेशाब की बदबूवाले कमरे में एक चारपाई पर बड़ी बनियन तथा खाकी नीकर पहने पीठ के बल पर लेटते हुए एक बार उन्होंने मुझसे कहा, "थोड़ा सरसों का तेल मिल जाता तो पांवों पर मालिश कर लेता। रात को नींद टूटने पर पेशाब करने के लिए उठता हूं तो पांव फर्श पर रखना मुश्किल हो जाता है। कठिन दर्द महसूस होता है। अरी बच्ची, मुझसे रहा नहीं जाता। मुझे लगता है कि मरने का वक्त आ गया है। मेरी उम्र सत्तर साल की हो गई है। पर मैंने कहा कि साठ साल है। मैंने सोचा कि आयु के पूरा होते समझकर दफ्तर से दरख्वास्त न करे। मेरे वेतन के बल पर ही कोट्टप्पटि का एक परिवार पलता है। क्या बच्ची को इसका पता है ?"

कुञ्जात्तु ने मुझे उनकी चारपाई के सिरहाने बैठने की इजाजत दे दी। मुझे लगा कि कमरे का अंधकार धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। फिर उस कमरे की सारी चीजें मेरी नजर में आने लगीं। एक कोने पर बंधी अलगनी पर नीली लकीरवाला कुर्ता, खाकी रंग के मोजे, काला अंगोछा आदि टंगा पड़ा था। दूसरे कोने में हरे रंग का एक संदूक पड़ा था, जिस पर तीन गुलाबों का एक चित्र अंकित था। उसके पास ही दौड़ पड़ने के लिए तैयार खड़े जूते पड़े थे। जूतों के भीतर कुंड़ली मारकर पड़े हुए लाल मोजों की बू बीच-बीच में मेरी नाक तक बह आई। चारपाई के नीचे तेल के खाली कनस्तर, एक ढक्कन हीन कंडा, एक टूटी चप्पल आदि फैलाकर रखे गए थे।

"कुञ्ञातु ने क्यों इन खाली कनस्तरों को चारपाई के नीचे रखा ?" मैंने पूछा।

"अरी बच्ची, इसकी जरूरत अवश्य पड़ेगी। किस चीज की कब जरूरत पड़ेगी, यह कौन जानता है ? कुञ्ञातु कोई भी चीज यूं ही फेंक नहीं देता। औरों से फेंकी जानेवाली चीजों को मैं ले आता हूं। इन कनस्तरों में चावल, दाल आदि डाल सकते हैं न ?"

मैंने सिर हिलाया।

"ठीक है।" मैं बोला।

"बच्ची, कुञ्ञातु छुट्टी पर कोट्टप्पटि जाते वक्त ये सब ले जाएगा।"

"क्या पिताजी की टूटी चप्पल भी ले जाएंगे ?"

"क्यों नहीं ? जरूर ले जाऊंगा। बच्ची के पिता एक बड़े इंसान हैं। उनकी रहमदिली से ही हमारे परिवारवाले जिंदगी गुजारते हैं। उनकी चप्पलों को मैं अपने पूजा-गृह में रख दूंगा। मेरे बच्चे उन्हें चूम लेंगे। यदि मेरी छाती को फाड़ दें तो उसमें बच्ची के पिता का रूप दिखाई पड़ेगा। बच्ची के बाप भगवान हैं। अपने पिता की हैसियत क्या तुम जानती है ?"

"पिता कौन है ?" मैंने पूछा।

यह तो मजे की बात हुई ! मेरी बात समझ में नहीं आई ! रामायण की कथा पूरा का पूरा सुन लेने के बाद एक ने पूछा कि राम सीता का कौन है ? बच्ची का सवाल भी ठीक ऐसा ही है। बच्ची के पिता की हैसियत क्या है ? यह मुझे ही कहना पड़ेगा ! इस दुनिया में कोई ऐसा नहीं जिसने बच्ची का नाम न सुना हो। लड़ाई की वजह से जब पेट्रोल की तंगी पड़ गई तो बच्ची के पिता ने ही कार और लॉरी में रखने वाले गैस प्लांट का आविष्कार किया था। कार के पीछे एक गैस प्लांट को रख दिया जाए तो पेट्रोल की जरूरत नहीं पड़ेगी। इस आविष्कार के लिए पिता को ही पहली वीर शृंखला देनी चाहिए। पुराने जमाने में राजा लोग कवियों तथा सैनिकों को वीर-शृंखला प्रदान करते थे। अट्ठाईस पवन के सोने से वीर-शृंखला बनाई जाती है। वह टूटेगी भी नहीं।"

"क्या कुञ्ञातु के हाथ में वीर-शृंखला है ?"

"हाय, मेरी बच्ची, कुञ्ञातु को वीर शृंखला कौन देगा ? कुञ्ञातु को एक बीड़ी देने के लिए भी इस दुनिया में कोई नहीं। कुछ दिनों पहले मैंने एक आदमी से एक बीड़ी मांगी। उसने मेरी और देखकर बंदर की तरह मुंह बनाया।"

"किसने मुंह बनाया ?" मैंने पूछा।

"मैं किसी का नाम नहीं बताऊंगा। मेरी वजह से कोई बदनाम न हो जाए। किसी से उलझे बिना मुझे यहां जिंदगी गुजारनी है। मैं किसी के मामले में दखल देना नहीं चाहता। मेरे मामले में भी कोई दखल न दे। यह जरूरी है। बच्ची को

यह मालूम है ?"

मैंने सिर हिलाया।

बच्ची के साथ ही मैं वक्त गुजारता हूं। किसी से गपशप करते रहना मेरी आदत है। नहीं तो दम घुटने लगेगा। हम इंसान हैं न ? हमारे मन में तरह-तरह की परेशानियां होती हैं। किसी से कहे बिना उन्हें भीतर ही रहने दें तो दम घुट जाएगा। बच्ची ने कोषि़क्कोड के डा. वी. बी. मेनोन के बारे में सुना नहीं ? वे मेरे मालिक थे। वे कहते थे कि रोना अच्छा है। बिना रोए दुख को मन में ही रहने दे तो दिल का दौरा पड़ जाएगा।"

" 'दिल का दौरा' माने क्या है ?" मैंने पूछा।

"बच्ची यह जानती है कि सभी मनुष्यों का हृदय होता है। हृदय से मतलब है, एक गेंद के आकार की एक वस्तु। वह लाल गेंद की तरह है। हमारे विचार उसके भीतर रहते हैं। बच्ची ने भाप देखी नहीं ? विचार भाप की तरह होते हैं। वे हृदय में भरे रहते हैं। जब उसके भीतर रहना उनके लिए असंभव हो जाता है तब गेंद की तरह वह फट जाता है। हथगोले की भांति हृदय जोर से फट जाता है। कोषि़क्कोड के जनरल अस्पताल में मेरी बीवी के एक मामा को दाखिल किया गया था। तब हृदय के फटने की आवाज मैंने सुनी थी। वह हथगोले के फटने की तरह थी। मेरे भगवान, मैं कांप गया। अगले वार्ड का एक रोगी मरा था। एकाएक उसका गेंद फट गया था। वहां रोने-पीटने की शोर मच गई। उसकी बीवी और बच्चे छाती पीटकर रोने लगे। तब मेरी बीवी के मामा ने बताया कि वह जल्दी घर जाना चाहता है। वह घबरा गया था। उसका गेंद भी फट जाए तो ! ह...ह ...ह।"

"क्या कुञ्ञात्तु का हृदय फटने का समय आ गया ?"

"मेरे खयाल में मेरा हृदय फटने में थोड़ा समय लगेगा। औरों के फटने के बाद ही मेरा गेंद फटेगा। अब मुझे अपनी बीवी की चिंता है। वह हमेशा रोती-पीटती रहती है। बच्चे परीक्षा में हार जाएं तो रोती है, पास हो जाएं तब भी रोती है। जब छोटी बेटी परीक्षा में पास हो गई तो वह रो पड़ी। उसका कहना है कि खुशी के मारे वह रो पड़ी थी। रो-रोकर वह इतनी कमजोर हो गई कि कोई फूंक मारे तो उड़ जाएगी। वह झुलस गई है। पहले, मेरे बच्चों को जन्म देने के पहले वह कितनी सुंदर थी। कदली फल की तरह उसका रंग सोने का था। यह सच है। मेरी बीवी का रंग सोने का था। अब वह तपेदिक की शिकार है। रात को नींद टूटते ही खांसने लगती है। पर क्या ? कफ बाहर नहीं आता है। छाती पर कफ अटका पड़ा है। पत्थर की तरफ कफ जम गया है। डा. चाक्कुण्णि ने मुझसे कहा कि कफ बाहर निकालने का कोई रास्ता नहीं है। छाती का ऑपरेशन करे तभी बचने की संभावना है। ऑपरेशन के वक्त भी सांस रुक सकती है। डॉक्टर ने

यह भी कहा कि जो करना है, उसका फैसला कर ले। ऑपरेशन करे तो कफ निकल जाएगा। पर बीमार की जान चली जाएगी। मैंने कहा कि ऑपरेशन की जरूरत नहीं है। मैं उसे देखते ही रहना चाहता हूं। वह दिन-रात खांसती रहे, तो भी कोई एतराज नहीं। बच्चों को 'मां' कहकर पुकारने के लिए एक देह तो रहेगी न ! बस। उसकी छाती का ऑपरेशन न हो।''

''तब छाती का कफ ?''

''कफ वहीं पड़ा रहे। वह खांसती रहेगी तो खांसने दे। जो खांसी सुन नहीं सकता वह कानों में उंगली डाल दे। हा...हा...हा..।''

''कुञ्ञात्तु की बीवी मर जाए तो ?''

''मरना है तो मरने दे। जनम लिया तो किसी न किसी दिन मरना ही पड़ेगा न ? घर से तार आ जाए तो जाने के लिए रुपया संभालकर रख लिया है। यह बात बच्ची किसी से मत कहना। उस हरे रंग के संदूक में कागज में लपेटकर रख लिया है। कुल मिलाकर सौ रुपए हैं। यहां के कुछ गंदे लोग—बच्ची को मालूम हैं न कि मैं किसके बारे में बता रहा हूं ?—जान लें तो मेरे संदूक का ताला तोड़कर चुरा ले जाएंगे। तार आ जाए तो मुझे खबर कर दे। यदि मैं कंपनी में रहूं तो मुझे फोन कर देना। पी. के. वन-सिक्स-टू-ओ कहने पर जल्दी मिल जाएगा। तब कह देना कि 'आइ वॉन्ट सी. के मैथ्यूस।' चपरासी कहने की जरूरत नहीं है। सब लोग मुझे अच्छी तरह जानते हैं। मैं ही सबको चाय देता हूं। इसलिए सब मुझे पंसद करते हैं। मेरे बारे में उस काली बाबू से पूछ ले तो वह जरूर कहेगा कि 'सी. के. मैथ्यूस वेरी गुड मैन।' फिर के. ए. मेनोन की बात करूं तो उनके लिए मैं जान से प्यारा हूं। हर आधे घंटे में मुझे देख न लें तो मेनोन का इधर-उधर भागना शुरू हो जाता है। वे मेनोन बच्ची के लिए काठ का एक घरौंदा बनाने जा रहे हैं। बच्ची की वर्षगांठ होने तक उसका काम पूरा हो जाएगा। उसकी खूबसूरती देखने से ही बनती है। उस घरौंदे के चार कमरे हैं। सभी कमरों में कुरसी, मेज, चारपाई, सोफा, अलमारी आदि सब कुछ हैं। किसी से मत कहना कि यह बात मैंने ही बच्ची को बता दी है। भाग्यवान बच्ची ! मेरी कही बात किसी से मत कहना।''

मैं कहानियां सुन-सुनकर ही बड़ी हो गई। मेरी मां मुझे और मेरे बड़े भाई को यूरोपीय साहित्य-रचनाओं से चुनी हुई कहानियां सुनाती थीं। सांझ के वक्त परनानियां एकादशी महात्म्य, महाभारत, भागवत्, रामायण आदि की कहानियां बता देती थीं। छोटी मां 'रमणन', 'नलिनी', 'लीला', 'करुणा', 'बंदी अनिरुद्ध' आदि काव्यों को पढ़कर सुनाती थीं। एक दिन इन सबसे सुनी हुई कथाओं के नायकों से अलग ढंग के नायक

का परिचय मालतिकुट्टि ने मुझे प्रदान किया। मीनाक्षी दीदी ने पालक्काट की, तमिल बोलनेवाले ब्राह्मणों की एक बस्ती में अपना बचपन बिताया था। मवाद पीनेवाले राजा की कहानी उस बाल्यावस्था में एक अद्‌भुत कहानी थी। एक बंदर ने अपने गले के एक फोड़े से निकलनेवाले मवाद को मिट्टी के एक घड़े में जमाकर बेचना शुरू किया। एक राजा ने उसे खरीद लिया और भात में मिलाकर खा लिया। बंदर ने उस राजा को 'मवाद पीनेवाला राजा' कहकर हंसी उड़ाई। फिर क्या हुआ ! मालति-कुट्टि को पता नहीं था। मीनाक्षी दीदी भी कहानी का आखिरी हिस्सा नहीं जानती थी।

"फिर क्या हुआ ?" मैंने पूछा।

मालतिकुट्टि ने मीनाक्षी दीदी से गुस्से में पूछा, "फिर क्या हुआ ?"

मीनाक्षी दीदी दालान में बैठकर पान खा रही थीं। सवाल को अनसुना कर उन्होंने उत्तरी अहाते की ओर नजर डाली। वहां खड़े इमली के पेड़ों तथा धतूरे के पौधों को उन्होंने अपनी अधखुली निगाहों से सहलाया।

"मीनाक्षी दीदी, बोलो न ? फिर राजा ने क्या किया ? फिर बंदर ने क्या किया ?" मालतिकुट्टि ने पूछा।

मीनाक्षी दीदी हंस पड़ी।

"मवाद पी लिया तो फिर क्या करना है ?" उन्होंने पूछा।

"राजा ने बंदर को मारा नहीं ?"

"बंदर को कोई मार नहीं सकता। वह पेड़ पर चढ़ जाएगा न ? पेड़ के ऊपर रहना उसके लिए खुशी की बात है न ? कोई उसे पकड़ेगा भी नहीं। उसने पेड़ के ऊपर खुशी से जीवन बिताया।" मीनाक्षी दीदी बोलीं।

"तब बंदर के फोड़े का क्या हुआ ? क्या वह ठीक हो गया ?"

"फोड़ा भर गया होगा। मैं नहीं जानती।"

"मीनाक्षी दीदी कुछ नहीं जानती तो कहानी सुनाना क्यों शुरू किया ?" मालतिकुट्टि ने पूछा।

"आइंदा मीनाक्षी दीदी कहानी नहीं सुनाएगी। बच्ची मुझसे इतनी नाराज है तो मैं कहानी क्यों सुनाऊं ?"

उस दिन का वाद-विवाद भी आखिर मालतिकुट्टि की रुलाई में समाप्त हुआ। मालतिकुट्टि की मां सालों पहले मर चुकी थीं। इसलिए मालतिकुट्टि कुट्‌योप्पु नाम से पुकारी जानेवाली मेरी बड़ी मामी की देखरेख में पल रही थी। मीनाक्षी दीदी की कहानी ने मालतिकुट्टि के मन में नाखुशी पैदा कर दी थी। इसलिए उसी दिन कुट्‌योप्पु हमें पेशमटंदा की कहानी सुनाने के लिए मजबूर हुई। पेशमटंदा की कहानी सुन लेने के बाद एलियंगाट स्कूल में पढ़नेवाली जानकी ने कहा, "यह झूठी कहानी है।"

"कहानी झूठी होने पर भी सुनने में मजेदार है।" कोट्टयम की तंकम बोली।

"इस दुनिया में सबसे बड़ा मजा क्या है ? जानती हो ?" के. के. देवकी ने पूछा।

"स्कूल से घर पहुंचने के बाद पेशाब करने पर जो मजा मिलता है, वह सबसे बड़ा मजा है।" तंकम बोली।

"उंडाटी जाकर आंवला खा ले और ढाबे से पानी भी पी ले। वही सबसे बड़ा मजा है।" देवकी बोली।

"तब पानी का स्वाद और मीठा हो जाएगा।" जानकी बोली।

मैंने नानी से कहा कि मैं उंडाटी जाकर आंवला खाने के बाद ढाबे से पानी पीना चाहती हूं।

"यहां के आंवले के पेड़ पर आंवले हैं न ? फिर उंडाटी जाकर आंवला खाना चाहती है ?" नानी ने पूछा।

नालाप्पाट में, उत्तरी आंगन और ट्रीखाने के बीच आंवले का एक बड़ा पेड़ था। उसकी शाखाओं पर आंवले भरे पड़े थे।

फिर भी मैंने उंडाटी नंबीशन के घर के पास खड़े आंवले के पेड़ से ही आंवला खाने की जिद की।

"कमला पागल हो गई है।" नानी बोलीं।

"मैं ढाबे से पानी पीना चाहती हूं।" मैं बोली।'

ढाबा नाम से पुकारी जानेवाली जगह कुञ्ञुण्णि नंबीशन का मकान था। वे संस्कृत के पंडित एवं वैद्य थे। जब-जब मैं नानी से कहती कि मुझे पेट दर्द है तब-तब नानी नंबीशन से बनाए गए मूलासव को बड़े चम्मच में भरकर मेरे मुंह में उड़ेल देती थीं। अक्सर नानी नंबीशन से शिकायत करती थी कि मैं भोजन करने में रुचि नहीं दिखाती हूं। इसे सुनने पर एक बार नंबीशन ने कहा, "पिपल्यासव बनाकर ले आऊंगा। अतिसार शांत हो जाए।"

"अरे नंबीशन, उसे अतिसार है क्या ?" नानी ने पूछा।

"ऐसा लगता है। हाथ-पैर कमजोर हो गए हैं। पिपल्यासव का सेवन कर ले। दो महीने में वह काफी तंदुरुस्त हो जाएगी। यह आसव पिपली, चंदन, आंवला, इलायची आदि को मिलाकर बनाया जाता है। जरूर उसका परिणाम निकलेगा। बच्ची काफी तदुरुस्त हो जाएगी। कर्कट के महीने से दवा पीना शुरू हो जाए। है न ?"

नानी को कुञ्ञुण्णि नंबीशन की चिकित्सा में पूरा भरोसा था। एक बार 'ऊरांपुलि'[1] का विष लग जाने से नानी के चेहरे पर लाल सूजन दिखाई पड़ी तो

---

1 **ऊरांपुलि**—एक विशेष प्रकार का मकड़ा, जो बड़ा विषैला होता है।

नानी ने नंबीशन की दी गई जड़ी-बूटियों को पीसकर सूजन पर लगा दिया। मलहम लगाने पर नानी का चेहरा वीभत्स दिखाई पड़ा था। उन दिनों वे नीचे की उत्तरी कोठरी में एकांत कैदी की तरह पड़ी रही थीं। अनेक बार विनती करने पर भी उन्होंने कमरे का दरवाजा नहीं खोला था।

नानी दरवाजे के पीछे से कहती थी कि बच्ची डर जाएगी।

"कहना ठीक है। देखने पर डर जाएगी। चेहरा काला पड़ा हुआ है। कटहल की तरह चेहरा सूज भी गया है।" देवकी बोली।

"देवकी ने कैसे देख लिया ?" मैंने पूछा।

"यह तो मजे की बात हुई ! मैं ही उन्हें भोजन ला देती हूं न ? फिर देखूं कैसे नहीं ?"

"ऊरांपुलि माने क्या है ? ऊरांपुलि देखने में कैसा लगेगा ?" मैंने देवकी से पूछा।

'ऊरांपुलि' माने एक बड़ा पुलि (बाघ) है। वह रात में जंगल से बाहर निकलता है। दिनभर जंगल के भीतर पड़ा रहता है। रात होते ही वह घरों में घुस आता है और सोनेवालों को काटता है। वह बड़ा विषैला है। उसका दांत सांप के दांत की तरह विषैला होता है।"

"यहां पास में कोई जंगल नहीं है। फिर ऊरांपुलि छिपा कहां रहता है ?"

"खेत के कोने में एक पुल है न ? बारिश के मौसम में उसके नीचे से भुं...भुं आवाज करते हुए पानी बहता है न ? उस पुल के नीचे ऊरांपुलि छिपा रहता है। वहां देखने मत जाना। वह मनुष्य को देखना पसंद नहीं करता।"

"मैं देखने नहीं जाऊंगी।"

"किसी से मत कहना कि ये बातें मैंने ही तुम्हें बताई है। मौसी मुझे गालियां देंगी। वे कहेंगी कि मैं बच्ची को डरा रही हूं। क्या मैं तुम्हें डराती हूं ? तुम तो मेरी जान है। तुम मुझे पंसद नहीं करती ?"

"मैंने सिर हिलाया। देवकी ने पसीने सने अपने हाथों से मेरा आलिंगन किया। उसकी बगल से निकलनेवाली बदबू ने मुझे परेशान कर दिया। मैंने ओकाई करना चाहा।"

"देवकी, मुझे छोड़ो न ?" मैं बोल उठी।

"अरी बच्ची, मौसी को मत जगा देना। वे उठेंगी तो मुझे फटकारेंगी। तुम्हें चियां भूनकर दे दूं ? तुमने कभी चियां भूनकर खाया है ? मैं भूनकर दूं। वह शंकरन नायर उठ न आ जाए ! वह मौसी से कह देगा। मैं चुगलखोरों को पसंद नहीं करती। उन्हें मैं देखना तक नहीं चाहती। अपना-अपना काम करें और उसके बाद कहीं पड़े रहें। नहीं तो नाम जपते रहें। इसके बदले चुगलखोरी कर आपस में लड़वाना मुझे पसंद नहीं। मेरी ऐसी आदत नहीं है। मेरे मामा ने मुझे ऐसे ही पाला है।

मामाजी कहते थे कि जुबान है तो वह अपने मुंह में ही रहने दे। मैं कुछ नहीं बोलती हूं। मेरी आवाज तक कोई नहीं सुनेगा। कोई मेरे बारे में शिकायत नहीं करेगा कि देवकी जोर से हंसती है। इस दुनिया में कोई भी ऐसा नहीं कहेगा कि देवकी चुगलखोर है। मेरी आदत ऐसी नहीं है। मेरे मामा ने मुझे और मेरे भाई को कड़े अनुशासन में पाला है। बच्ची ही बता दे, यह देवकी क्या बुरी है ?''

''नहीं। देवकी बुरी नहीं है।'' मैंने कहा।

पेटू मास्टर के उपनाम से विख्यात बूढ़े आदमी मेरे छोटे भाई को भूगोल पढ़ा रहे थे। मैं अपने नटखट मित्रों की प्रशंसा पाने के उद्देश्य से साहस बटोरकर उस कमरे में घुस गई।

मेरे मित्र सरोज, विश्वनाथ, बुच्चु उर्फ किरण, शांतु बनर्जी आदि दरवाजे के पीछे छिपकर खड़े रहे।

''सर, आपने कहा था न कि यह धरती एक धुरी पर चक्कर काट रही है ! वह धुरी किस देश में, किस नगर में, किस सड़क पर मौजूद रहती है ?'' मैंने पूछा।

मास्टर के सांवले चेहरे का रंग एक जंबू फल की भांति ऊदा हो गया। गले के पार्श्वों की नसें उभर आईं। आंखें फूल गईं। उन आंखों की लाल डोरियों ने एक नक्शे की नदियों की याद दिलाई।

''इस धरती की धुरी कहां है ? यह जानना चाहती हो न ?'' मास्टर अपनी नकली दंत-पंक्तियों को किटकिटाते हुए पूछा। मैं उनके मुंह के कोनों में अटक पड़ी थूक के झाग को देखती खड़ी रही।

''जी हां सर, मैं जानना चाहती हूं कि इस धरती की धुरी कहां है ?''

''देख, धुरी यहां स्थित है।'' मास्टर गरज उठे। कुरसी के पीछे टंगी हुई छड़ी बड़ी आवाज के साथ नीचे गिर पड़ी। मैंने या मास्टर ने उसे उठाकर पूर्ववत रखने की चेष्टा नहीं की।

''सर, आपके अनुसार धुरी इसी कमरे में है ?'' मैंने पूछा।

''हां। इस कमरे में इस कुरसी पर वह मौजूद है।''

शायद मास्टर की ऊंची आवाज को सुनकर रसोईघर तथा धुलाई खाने से लोग दौड़ आए और कमरे की ओर झांककर देखने लगे।

मैंने दरवाजे की ओर नजर डाली। वहां अर्धचंद्राकार खड़े जो चेहरे दिखाई पड़े, वे मेरे साथियों के थे। पूर्वाधिक साहस बटोरते हुए मैं मास्टर की ओर मुड़ गई।

''सर, क्या हमें यकीन करना है कि इस दुनिया की धुरी आपकी कुरसी पर है ? इस दृष्टि से आप ही धुरी हुए, है न ?'' मैंने पूछा।

"हां, मैं ही इस दुनिया की धुरी हूं।" उन्होंने कहा।

उदास बैठे हुए मेरे छोटे भाई की आंखें भर आईं।

"आपने जो बात बता दी उसके लिए धन्यवाद।" मैंने कहा। जब मैं उस कमरे से निकलकर दालान की ओर चल पड़ी तो मेरे साथियों और नौकरों ने चुपचाप मेरा अनुगमन किया।

"अब तुम लोग जान गए न कि वह पेटू मास्टर पागल है ? मैंने कितनी बार इनके पागलपन के बारे में तुमसे कहा था !" मैंने कहा।

यह काफी पुरानी बात थी। उन दिनों मेरा खयाल था कि मास्टर पागल है। फिर मुझे मालूम हुआ कि उनका कहना ठीक था। एक व्यक्ति की दुनिया की धुरी वह खुद है। इस दुनिया के घुमाव की गति को और कोई संभाल नहीं सकता। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक काल्पनिक दुनिया होती है और उसके पास ही एक यथार्थ दुनिया भी रहती है। धीरे-धीरे मैं जान गई कि यथार्थ दुनिया से प्राप्त की गई ऊर्जा का इस्तेमाल काल्पनिक दुनिया में और काल्पनिक दुनिया से इकट्ठी की गई ऊर्जा का इस्तेमाल यथार्थ दुनिया में हो सकता है। काल्पनिक दुनिया से प्राप्त शक्ति की तुलना छाया से एकत्रित शक्ति से कर सकते हैं। परंतु 1944 में, लान्डस डाऊन रोड पर स्थित हमारे मकान में रहते वक्त मुझे गलतफहमी हुई थी कि मिस्टर फ्रांसिस सेक्यूरा एक मानसिक रोगी है। उन दिनों पिताजी के दफ्तर में चपरासी का काम करनेवाले कुञ्ञात्तु हमारे मकान में ही रहते थे। वे मास्टर से घृणा करते थे। क्रिसमस के दिनों में पिताजी को मित्रों से शराब की बोतलें उपहार में मिलती थीं। मास्टर चिकनी चुपड़ी बातें करके पिताजी से ये बोतलें प्राप्त कर लेते थे। कुञ्ञात्तु इस हरकत से नाराज थे। शायद इसलिए ही उस बूढ़े ने मुझसे कहा, " इस पेटू मास्टर को यहां से निकालकर उसके बदले किसी अच्छे टीचर को क्यों नहीं रखते ? सुशिक्षित होने पर भी क्या फायदा ? नमक हराम है। तनख्वाह देनेवाले मालिक की बच्ची से नाराज होता है ! नालायक ! क्या बच्ची को फटकारने के लिए इसे माहवार चालीस रुपए दिए जाते हैं !"

कुञ्ञात्तु ने अपनी हथेली से सूंघनी लेकर जोर से सूंघते हुए अपनी गंदली आंखें उठाकर मुझे देखा।

"मुझे काला कोट और पतलून तो नहीं, पर मैं नमक हराम नहीं हूं। इस परिवार के प्रति मैं एहसानमंद हूं। यहां के लोगों के लिए मैं अपनी जान तक कुर्बान करने को तैयार हूं। कहीं से आ धमकनेवालों को मास्टर बनाने पर उन्हें लगेगा कि वे भी मालिक के समान बड़े हैं। हर व्यक्ति की अपनी हैसियत होती है, उसे वहां ही रहना चाहिए। वह वहां न बैठे तो वहां कुत्ता आकर बैठने लगेगा ...क्या बच्ची को इसका पता है ?" कुञ्ञात्तु ने रूखी आवाज में कहा।

"नहीं।" मैंने सिर हिलाते हुए कहा।

"क्या बात हुई ? पेटू मास्टर ने तुमको क्यों फटकारा ? तुमने क्या किया था ?" नौकरानी ने पूछा।

"मैंने कुछ नहीं किया।" मैं बोली। नौकरानी कल्लू ने बड़े प्यार के साथ मेरे बालों को समेटकर बांध दिया।

"मैंने कुछ नहीं किया। पर मुझे डांटना सबको पसंद है।" मैं बोली।

"डांट खाना मंझले बेटे की नियति है। बड़े को कोई नहीं डांटता। सीमंत संतान है न ? सबसे छोटों को डांटना भी कोई नहीं चाहता। मंझले को ही हमेशा डांट खानी पड़ती है। यह उसकी नियति है। मेरी हालत भी ऐसी है। मेरे ऊपर दो बहनें हैं। मेरे नीचे भी दो बहनें हैं। इसलिए मुझे कोई पसंद नहीं करते। गलती कोई भी करे, पर डांट मुझे ही खानी पड़ती है। मुझे कितना दुख भोगना पड़ा ! मेरी पुन्नोक्काविल अम्मे, अगले जनम में मुझे सीमंत पुत्री बना दे। मुझे और कुछ नहीं चाहिए।" कल्लू आकाश की ओर दोनों हाथ उठाकर बोल उठी। कल्लू की आंखें भर आई थीं। उसके दुख में मैं भी आंसू बहाती हुई शामिल हुई।

"कल्लू अम्मे, तुम क्यों बच्ची को रुला देती हो ? वह बच्ची किसी का दुख नहीं देख सकती। तुम्हारी हरकतें देखकर वह रोने लगी।" कुञ्ञात्तु तल्खी ने बोला।

"मुझे अपना दुख याद आया। कभी-कभी मुझे उसकी याद आ जाती है ...मैं क्या करूं ?" कल्लू ने पूछा।

"मुझे लगता है कि तुम्हें रोने के लिए किसी विशेष कारण की जरूरत नहीं। अरी मेरी कल्लू अम्मे, तुम्हारी तरह सभी सुख-सुविधाएं यहां और किसको प्राप्त होती हैं ? समय-समय पर भात, सब्जी, मछली, पकवान, कॉफी, चाय, दूध, मट्ठा आदि सब कुछ...सिर पर मलने के लिए नारियल का तेल भी। शरीर पर मलने के लिए तिल का तेल। शरीर के स्वास्थ्य के लिए बालामणि अम्मा टॉनिक भी खरीद देती हैं। पहनने के लिए अनेक धोतियां और चोली के लिए कपड़े भी खरीद देती हैं। गले और कान में पहनने के लिए गहने, वह भी थोड़ा-सा नहीं है। एक-एक पवन के स्टड। गले की माला तो दो पवन की ! चांदी की पाजेब। इन सबके होते हुए यदि तुम दुख की बात करोगी तो लोग हंसेंगे। यदि कोई न भी सुने तो भगवान तो जरूर सुनेगा ?" इतना कहकर कुञ्ञात्तु ने मेरी ओर देखकर पलक मारी।

"कल्लू का कहना ठीक है।" मैंने कहा। "मंझली संतानों को कोई पसंद नहीं करते। शायद इसलिए मेरे मां-बाप मुझे पसंद नहीं करते हैं न ?"

"तुम्हारे मां-बाप तुम्हें प्यार करते हैं। पर उसे दिखा नहीं पाते। वह उनकी आदत है न ?" कुञ्ञात्तु ने पूछा।

"क्या कुञ्ञात्तु अपने बच्चों से प्यार नहीं दिखाते ?" मैंने पूछा।

"अरी बच्ची, किसी से प्यार दिखाने और बंदर की तरह दांत निपोरने का वक्त मुझे कहां मिलता है ? दो सालों में एक ही बार छुट्टी लेकर गांव जाता हूं। जाते समय उन सबके लिए कुर्तों और बंडियों के लिए कपड़े ले जाता हूं। पर आराम से बैठकर उनसे बातें करने की फुरसत मुझे नहीं मिलती है। अरी बच्ची, मुझे कोट्टप्पटि के मेरे रिश्तेदारों से मिलना है न ! सभी सगे-संबंधियों से मिलते ही छुट्टी खतम हो जाती है। फिर कलकत्ते की ओर रवाना होता हूं। अरी बच्ची, मुझे कोट्टप्पटि के मेरे रिश्तेदारों से मिलना है न ! सभी सगे-संबंधियों से मिलते ही छुट्टी खतम हो जाती है। फिर कलकत्ते की ओर रवाना होता हूं। अरी बच्ची, क्या बताऊं ? बच्चों के चेहरों को आंख भर देखने की इच्छा पूर्ण होने के पहले ही वापस आना पड़ता है। मैं साठ रुपए पाने के लिए ही घर-बार छोड़कर बंगालियों के इस प्रदेश में सब कुछ सहकर जी रहा हूं।"

"तुम खुशनसीब हो ! कंजूसी करके पैसा कमाते हो न ? मेरे पास तो कुछ भी नहीं।" कल्लू बोली।

"कंजूसी दिखाने से ही मैं डाकघर में चार पैसा जमा कर पाता हूं। कंजूसी न करूं तो कोट्टप्पटि की ओर मैं कैसे रुपए भेज सकूं ? मेरी रकम से कोट्टप्पटि में एक परिवार का खर्च चलता है। यहां रुपए खर्चकर मैं आराम से जी लूं तो वहां छः जने भूखे-प्यासे मर जाएंगे। अरी कल्लू अम्मे, मैं सुखी जीवन बिताना भी जानता हूं पर मेरा दिल उतना कड़ा नहीं है। इसीलिए मैं सुखी जीवन नहीं बिताता हूं।" कुञ्ञात्तु बोला।

"मास्टर की तरह तुम्हें भी शराब पीने की लालसा होगी !" कल्लू बोली।

"अरी कल्लू-अम्मे, मेरे गले से भी शराब उतरेगी। उस काले-कलूटे भूत, मालिक की चापलूसी कर शराब की बोतलें हड़पते देखकर मेरा दिल फट जाता है। पर मैं क्या करूं ? मैं उसकी तरह अंग्रेजी और परंद्रीस में चापलूसी करना नहीं जानता।"

"वह पागल है।" कल्लू बोली, "वह सुंदरन से बादल गरजने की तरह गला फाड़ता है न ? वह लड़का ही इसे बर्दाश्त कर सकता है। अन्य लड़कों की अपेक्षा वह बड़ा भोला-भाला है। मुंह में उंगली डाल देने पर भी वह नहीं काटेगा।"

उसी दिन रात के वक्त सोने के पहले मैंने पेटू मास्टर के बारे में शिकायत की। मैंने मां से कहा कि उस मास्टर को हटाकर उसके बदले सुंदरन को पढ़ाने के लिए एक औरत को रखना उचित होगा।

"आमी को उससे इतना विरोध क्यों है ?" मां ने पूछा।

"पेटू मास्टर मुझे पसंद नहीं करते।" मैंने कहा।

वह आमी को पसंद नहीं करता तो आमी इससे क्यों परेशान होती है ? मां ने पूछा।

"जो मुझे पसंद नहीं करता, वह इस घर में न आए।" मैं बोली।

"वह बेचारा आदमी है। वह गरीब है। पिताजी उसे नौकरी से निकाल दें तो वह और उसकी पत्नी भूखे मर जाएंगे न ?" मां ने कहा।

"तो न निकालें। मैं ही यहां से नालाप्पाट चली जाऊंगी।" मैं बोली। मां जोर से हंस पड़ीं। मेरा खयाल था कि मेरा फैसला सुनकर वे दुखी हो जाएंगी।

बाद में पिताजी ने मास्टर से कहा कि "कमला को मत सताएं।"

"मैं कभी भी कमला को सताना नहीं चाहता।" मास्टर ने कहा। "श्यामसुंदर को पढ़ाने के बीच कमला कमरे में घुस आती है और सवाल पूछकर मुझे परेशान करती है। सवाल तो निरर्थक भी हैं।"

"तू प्रश्न पूछना चाहती है तो अप्पू से पूछ ले।" पिताजी ने मुझसे कहा।

अप्पुवेट्टन मेरे चाचा थे। उन दिनों वे हमारे मकान के निचली मंजिल के दक्षिणी-पूर्वी कमरे में रहते थे। जनरल मोटर्स नामक एक अमरिकी कंपनी की भारतीय शाखा में काम कर रहे थे।

"क्या पेटू मास्टर इस धरती की धुरी है ?" मैंने अप्पुवेट्टन से पूछा।

"आमी से यह बात किसने कही ?" पान में चूना मिलाते हुए उन्होंने पूछा।

"मास्टर ने बताया।" मैं बोली।

वे जोर से तीन बार छींक मारे। फिर कंधे से अंगोछा लेकर उन्होंने अपना चेहरा पोंछ लिया।

"लगता है पेटू मास्टर को कुतिरवट्टम[1] भेजने का वक्त आ गया है।" अप्पुवेट्टन ने गंभीरता के साथ अपना विचार प्रकट किया।

"कुतिरवट्टम कहां है ?" मैंने उनसे पूछा।

"कोषिक्कोड के निकट है।"

"वहां की क्या खासियत है ?" मैंने पूछा।

"वहां मास्टर के दोस्त होंगे।"

"कौन ? फिरंगी !"

फिरंगी, नायर, तीय्यर, ईसाई, मुसलमान, वेट्टुवर आदि सभी प्रकार के लोग वहां में रहते होंगे। उनके नाच, गाने, नाटक, सरकस आदि सब कुछ होंगे। सब मिलकर वहां बहुत मजा आएगा।"

"मैं भी कुतिरवट्टम जाना चाहती हूं।" मैंने कहा।

"आमी कुछ बड़ी हो जाए। फिर वहां ले जाऊंगा। ठीक है ?"

---

1. कुतिरवट्टम—केरल का प्रसिद्ध पागलखाना, जो कोषिक्कोड के पास स्थित है।

मैंने सहमति प्रकट करते हुए सिर हिलाया। कुञ्ञात्तु हंसी रोकने का प्रयास करते हुए खांसने लगे।

कलकत्ते में रहते समय मेरी कवयित्री मां ने कभी-भी गृहस्थी नहीं संभाली। पिताजी मां को 'कुट्टी' कहकर पुकारते थे। उन्होंने मां को एक कुट्टी (बच्ची) के रूप में मानते थे। चौके में घुसने या घरेलू काम करने की आजादी मां को नहीं दी गई थी। पिताजी की धारणा थी कि चौके में आग, चाकू, मिर्च का चूर्ण, गरम पानी आदि के रूप में खतरा छिपा रहता है। इसलिए पिताजी ने गृहस्थी का भार कारिंदा नारायणन नायर को सौंप दिया था। नारायणन नायर के साथ हमारे परिवारवालों का रिश्ता अत्यंत सुदृढ़ और सुदीर्घ था। हम बच्चे उन्हें बड़े आदर के साथ ना ना ना (नारायणन नायर) पुकारते थे। हम उनके गुस्से से घबराते थे।

ना ना ना हमेशा सफेद कपड़े ही पहनते थे। अखबार पढ़ना उनके रोजमर्रे जिंदगी का प्रमुख कार्यक्रम था। अर्थात् 'मातृभूमि' अखबार पढ़ना। करीब ग्यारह बजते-बजते वे सड़क की ओर खुलनेवाला दरवाजा खोलकर सीढ़ियों पर एक अंगोछा बिछाकर अखबार पढ़ने की तैयरी करते थे। अखबार पढ़ते वक्त बीच-बीच में, फाटक और घर के बीच मौजूद मैदान में, गमलों के बीच खेलनेवाले हम पर और सड़क से जानेवाली गाड़ियों पर दृष्टि डालते रहते थे। यदि जान-पहचानवालों की कार सड़क से जाएं तो नारायणन नायर ऊंची आवाज में उसके मालिक का नाम हमें बता देते थे।

दरभंगा महाराज की रोल्स रोयस कार उस सड़क से गुजर गई तो नारायणन नायर ऊंची आवाज में बोल उठे, "वह देखो, दरभंगा महाराज की गाड़ी जा रही है।"

तब मैंने कहा कि पिछली सीट पर कोई आंखें मूंदकर उठंग लेटा हुआ है।

"मैंने ठीक से नहीं देख पाया। क्या राजा के सिर पर मुकुट है ?" मैंने पूछा।

नारायणन नायर ने एक व्यंग्य भरी हंसी के साथ कहा, "अब केवल एक मुकुटधारी राजा ही मौजूद है, वह जॉर्ज छठा। हमारे राजाओं के सिर पर कौन-सा मुकुट है ! हमारे राजा लोग पराजय की पगड़ी बांधे हुए हैं न ?"

"मुकुट के बगैर ना ना ना ने कैसे समझ लिया कि कार के भीतर एक राजा बैठे हैं ?"

"बच्ची के पिताजी की कंपनी के सबसे बड़े अंशभागी डायरेक्टर दरभंगा *महाराज हैं। मैंने कितनी बार उन्हें देखा है !* जब मैं वालफोर्ड्स गया था तब कई बार वह कार भी देखी है। वह कार वालफोर्ड्स से खरीदी गई है। बच्ची अपने पिताजी के दफ्तर जाकर देख लें तो ऐसी अनेक कार देख पाएगी। ऐसी कार राजा

लोग ही खरीद सकते हैं। इसे देखने पर सभी के मन में यह खरीदने की इच्छा होती है, पर इच्छा होने से क्या फायदा ? रुपए चाहिए न ? इसकी कीमत क्या है ? बच्ची को पता है ? सुना है कि डेढ़ लाख रुपए हैं ! डेढ़ लाख !

"ना ना ना को डेढ़ लाख रुपए मिल जाएं तो क्या रोल्स-रोयस खरीद लेंगे ?" भावुक होकर मैंने पूछा।

"मुझे एक लाख नहीं, दस लाख भी मिल जाएं तो भी मैं कार नहीं खरीदूंगा। मुझे रुपए मिल जाए तो मैं इस कलकत्ते में एक होटल खोल लूंगा। हमारे स्वाद का भोजन मिलनेवाला होटल कलकत्ते में नहीं है। अविवाहित नायर कलकत्ते में रह नहीं सकते। बंगालियों का भोजन हम खा नहीं पाते। अंग्रेजी साहबों का भोजन खरीदने के लिए हमारे पास पैसा भी नहीं। हां बच्ची, नायरों के लिए यह कलकत्ता जहन्नुम ही है। कुछ दिनों पहले हमारे पल्लियत के बालन नायर कह रहे थे कि बंगाली लोग मछली के व्यंजन में भी चीनी डालते हैं। बालन नायर क्या करें ! बच्ची के अप्पुवेट्टन का कहना है कि प्राण को शरीर में बनाए रखने के लिए कुछ न कुछ खाना ही पड़ता है न ? हम मर नहीं सकते। रविवार को शाम होते ही यहां कोई-कोई दांत निपोरते आते हैं, यह किसके लिए है ? बच्ची को पता है ?

मैंने सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं।"

हर रविवार यहां जो लोग आते हैं वे यहां के लोगों के प्रति प्रेम होने से नहीं, यहां के भोजन की तैयारी देखकर आ जाते हैं। एक बार कोई यहां से भोजन कर ले तो वह कभी उसका स्वाद भूल नहीं सकता। यहां का भोजन सभी प्रकार के लोग पसंद करेंगे। शोरबा है, कट्लट है, चपाती है, भात है, कालन् है, एलिश्शेरी है, बच्ची की मां के लिए सांभर है, पापड़ है, अचार है, सलाड है और पुड्डिंग भी हैं। केले, संतरे और अंगूर हैं। फिर क्या चाहिए ? ये तैयारियां किस होटल में होंगी ? इसलिए ही मैं कह रहा हूं कि यहां पार्क स्ट्रीट या एलजिन रोड पर एक होटल खोलना चाहिए। वहां से नायर और अन्य जाति के लोग खूब भोजन करें।

"एक होटल खोलने के लिए कितने रुपयों की जरूरत पड़ेगी ?" मैंने पूछा।

नारायणन नायर ने चश्मा उतारकर जेब में रख दिया। फिर ऊपरी होंठ को दांतों से दबाकर भाल सिकोड़ते हुए कुछ देर चुप रहे। शायद सोच में पड़ने के कारण घनी भौहोंवाला माथा और घना महसूस हुआ।

"होटल खोलने के लिए ना ना ना को कितने रुपए चाहिए ?" मैंने पूछा।

"कम से कम पांच हजार रुपए।" उन्होंने कहा।

"उससे काम चलेगा ?"

"उस रकम से छोटे प्रकार का एक होटल खोल सकता हूं। बच्ची के पिताजी चाहें तो यह काम आसान हो जाएगा। परंतु उनसे मैं नहीं मांगूंगा। यह काम उन्हें

खुद समझकर करना चाहिए। वे बाकी सब की मदद करते ही हैं पर मेरी बात याद नहीं। कुछ दिन पहले केरल महिला संगठन की कुछ औरतें आई थीं न ? लालची औरतें। उनके मांगते ही बच्ची की टेबल टेनीस की बड़ी मेज बच्ची से पूछे बिना पिताजी ने उन्हें दे दी थी न ? बच्ची कैसे उसे देखती रही ? जोर से क्यों नहीं रोई ? ऐसी लालची औरतें अटक-मटककर आ जाएंगी और यहां की सभी सामग्रियां लेकर चली भी जाएंगी। बच्ची की मां चुप रहेंगी और बच्ची भी। मेरे पास उसे रोकने का अधिकार तो नहीं।

महिला संगठन द्वारा ले ली गई मेज के बारे में सोचकर एकाएक मेरी आंखें भर आईं।

"यहां आनेवाली औरतें अच्छी तरह चुलबुलाना जानती हैं। इसलिए ही वे घर-घर भटककर कुछ न कुछ कमा पाती हैं। मेरी बच्ची, औरत हो तो थोड़ी चतुर होनी ही चाहिए। इसके बदले बच्ची की मां की तरह बेचारी होने से क्या फायदा ? अपने-अपने पति द्वारा कमा कर लानेवाले रुपयों को उनके हाथ से प्राप्त करने की हिम्मत रखनी चाहिए। नहीं तो हाथ में कुछ शेष नहीं रहेगा। यदि हाथ में रुपया नहीं तो कुत्ता तक उनकी ओर ध्यान नहीं देगा।"

"क्या मेरी मां चुलबुलाना नहीं जानती ?"

बच्ची की मां वह नहीं जानती। वे इस जनम में सीख भी नहीं पाएंगी। अरी बच्ची, यह कुलीन औरतों के वश की बात नहीं। बच्ची की मां एक अच्छे खानदान में पैदा हुई थीं न ? वे इस जनम में अटक-मटक कर चल नहीं सकती।"

नारायणन नायर हंस पड़े। मेरा मन मसोसने लगा। मैं घबरा गई कि आखिर मेरी मां घोर गरीबी की शिकार हो जाएंगी।

"मेरी मां को कल नौ रुपए मिल गए। उन्होंने एक कविता भेज दी थी। उसके लिए नौ रुपए मिल गए।" मैं बोली।

"नौ रुपए ! अंदाजा लगा लें कि बच्ची की मां एक साल में दस कविताएं लिख दें तो नब्बे रुपए मिल जाएंगे। दस साल तक लगातार कविता लिख दें तो बच्ची की मां को नौ सौ रुपए मिल जाएंगे। इससे क्या फायदा ? चाय की एक दुकान खोलने के लिए भी एक हजार रुपए की जरूरत पड़ेगी। सोच लें कि यदि बच्ची के पिताजी को कुछ हो गया तो...आखिर इंसान हैं न ? कौन जाने कि ऊपर से भगवान का बुलावा कब आ जाएगा ! ऐसा सोच लें कि यदि पिताजी मर जाएं तो बच्ची की मां क्या करेंगी ? दो वक्त का भोजन करना ही है न ? दो चाय पीनी है न ? पहनावा-ओढ़ावा चाहिए न ? नौकरों को मजदूरी देनी है न ? बच्ची की मां ने क्या विचार कर रखा है ? थोड़ी होशियारी चाहिए। औरत हो तो अपने पति द्वारा कमाकर लाने वाले रुपयों को उनके हाथ से प्राप्त कर लेने की हिम्मत रखनी चाहिए। मेरा मतलब यह नहीं कि वह बैंक में जमा कर ले। इसके बदले

तकिए के भीतर एक पुड़िया बनाकर रख दें। तकिए का किनारा सी लें तो कोई जान नहीं पाएगा। फिर वह सिरहाने रखकर सो भी सकती हैं। जरूरत पड़े तो उसे फाड़कर ले भी सकती हैं। वे थोड़ी जमीन खरीद सकती हैं न ? नहीं तो कलकत्ते में एक मकान खरीद सकती हैं !''

मैंने सिर हिलाया। कुञ्ञात्तु पौधों में पानी डाल रहे थे। नारायणन नायर का भाषण सुनकर वे मेरे पास आ गए।

''क्या बच्ची अमीर बनना चाहती है ?'' कुञ्ञात्तु ने हंसते हुए पूछा।

''नहीं।'' मैं बोली।

''तब तो तुम्हारा भाषण बेकार हुआ, है न ? यह बच्ची नालाप्पाट की है। यह मत भूलना। उस खानदान के लोगों को धन की लालच नहीं होती। डॉक्टर ने मुझसे कहा था कि अप्पुण्णि मेनोन को शादी करना है तो सिर्फ नालाप्पाट से ही लड़की मिलेगी। तब मैंने कहा कि हुजूर, उस खानदान की लड़कियों को धन की लालच नहीं है। अन्य खानदान की लड़कियां हों तो अपने पति को चैन से रहने भी न देंगी। 'पैसा दो', 'पैसा दो' कहती रहेंगी। मेरी बात सही है न ? वे शिव-पार्वती की तरह जी रहे हैं न ? पिछली छुट्टी पर जब मैं गांव गया था तब तेंडियत्त गया। मुझे पांच रुपए और एक धोती दे दी।''

''कौन ?'' ना ना ना ने पूछा।

''अम्मिणिअम्मा, नालाप्पाट की अम्मिणिअम्मा। मुझे पांच रुपए और धोती और कौन देंगे ?''

''मैं कमला की आंखों में 'तण्णीर कुटम' डाल दूं ?'' पुन्नयूरकुलम के स्कूल में मेरे साथ चौथे दर्जे में पढ़नेवाली जानकी ने पूछा।

उसके दाहिने हाथ में दूब के सदृश एक तृण दिखाई पड़ा। उसके छोर पर ओस की एक बूंद बिना टपके अटक पड़ी थी।

अरे देख, यह बूंद ही 'तण्णीर कुटम' है।'' जानकी आगे बोली, ''इसे डालने पर आंखें तेज हो जाएंगी। मैं अपनी आंखों में डाल देती हूं। इसलिए ही मेरी आंखें इतनी तेज हैं।

मैंने जानकी की आंखों की ओर देखा। मैं उत्कंठा के साथ उसकी, भूरे रंग की पुतलियों को भी देखती रही।'' मेरी आंखें शायद बिल्ली की आंखें जैसी होंगी, पर मेरी आंखें काफी तेज हैं। क्लास में बैठते समय मैं दूर अय्यप्पु के आंगन में केले पर बैठकर फूल से शहद पीनेवाली गिलहरी को स्पष्ट देख सकती हूं। नंद्यार वट्टम के फूल हाथ से मरोड़कर उसकी निचोड़ आंखों में डालना बहुत अच्छा है। मैं उसे कमला की आंखों में डाल दूंगी। कमला की आंखें भी तेज हो जाएंगी। तू भी अय्यप्पु के केले पर बैठकर शहद पीनेवाली गिलहरी को देख पाएगी।''

स्कूल की उत्तरी सीमा पर एक नाला था। बरसात के समय, उस नाले से

चाय के रंग का पानी उफनते हुए बहता था। बरसात के आखिरी दिनों में वह नदी कमजोर होकर बालू पर रेंगनेवाले केंचुए की तरह पतली धाराओं का रूप धारण कर लेती थीं। तब बालू का रंग भी बदल जाता था। वह काले और हल्के लाल रंग का हो जाता था। हम शंख के भीतर दिखाई पड़नेवाले हल्के लाल रंग के बालूकण उठाकर घर ले जाती थीं। नाले के दोनों पार्श्वों में घने झाड़-झंखाड़ उग आए थे। उसमें तरह-तरह की जड़ी-बूटियां और अनेक फालतू पौधे मौजूद थे। जड़ी-बूटियों को पहचान पाने के उद्देश्य से मैं कर्कट के महीने में नानी के साथ अहाते में घूमती-फिरती रहती थी। कर्कट के महीने की पहली तारीख से महीने के अंत तक नालाप्पाट के पूजा-गृह के द्वार पर हम एक चौकी पर दशपुष्प, चंदन, आईना, सिंदूर, पानी भरा कांसे का गडुआ, दीया आदि श्री भगवती को आकर्षित करने के लिए सजाकर रखते थे। सबेरे नहाकर आते ही मुकुट्टि के पत्तों को निचोड़कर टीका लगाती थी। देवकी कहती थी कि चार फूलोंवाले एक मुकुट्टि-पौधे को प्राप्त करना सौभाग्य की बात है। वह और मैं काफी समय तक चार फूलोंवाले मुकुट्टि-पौधों की खोज में अहाते में भटकती रहती थीं।

"क्या तेरी आंखों में नहीं डालना है ?" जानकी ने बेचैनी से बार-बार पूछा।

"नहीं।"

"तब तू अपनी आंखों को तेज करना नहीं चाहती ? आंखें तेज नहीं होंगी तो किसी अंधकूप में गिर पड़ेगी। कभी-कभी अनजाने में विषैले सांप पर पैर रख देगी। वह तुझे काटेगा। फिर विष उतारने के लिए विष वैद्य को ढूंढना पड़ेगा। कभी-कभी वे मिल नहीं पाएंगे। वे काशी गए होंगे। तब विष न उतर पाने से तू मर जाएगी। क्या तू मरना चाहती है ?"

"मैं मरना नहीं चाहती।"

"तो समय बरबाद न कर। आंखें खोल दे। तेरी आंखों में मैं तण्णीर कुटम् डाल देती हूं।"

मैं मुंह मोड़कर नाले से ही भाग खड़ी हुई। तब मुझे लगा कि गीले बालू कण सांप के खुले मुंह की तरह मेरे कदमों को निगलने की चेष्टा कर रहे हैं। स्कूल की सीढ़ियों के पास पहुंचकर धड़कते हृदय के साथ एक क्षण के लिए मैं रुकी।

जानकी काफी दूर पर तण्णीर कुटम वाले घास को पकड़ी हुई निश्चल खड़ी थी। वह ऊदे रंग की लकीरदार कुर्ती और लहंगा पहनी हुई थी। नाले की फीकी रोशनी में उसकी आंखें चमक उठीं।

सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंची तो बरगद के नीचे मूंगफली वाला आदमी मेरी ओर देखकर हंसा। मैंने देखा कि उसके सामने एक छाज में थोड़ी मूंगफली और चार हरी इमलियां फैलाकार रखी गई थीं।

"हरी इमली चाहिए ?" उसने पूछा।

मैंने सिर हिलाया।

"तुम क्यों हांफ रही है ? किसी भैंस ने तुम्हें दौड़ाया क्या ?"

"नहीं।"

"पैसा नहीं तो कोई बात नहीं। थोड़ी मूंगफली खा ले।"

"मुझे नहीं चाहिए।"

जानकी का सिर प्रत्यक्ष हुआ तो मैं क्लास की ओर भाग गई। अय्यप्पु उत्तरी दालान पर टंगे हुए लोहे के टुकड़े पर एक छड़ी से मारता रहा। लोहे का वह टुकड़ा एक रेल पटरी का अवशेष था। हेडमास्टर ने ध्यान से दो बार घड़ी देखी और सातवें दर्जे में प्रविष्ट हुए।

"अरी लड़की, सच-सच बता। क्या तू मुझसे नाराज है ? क्या तू कोट्टयम की तंकम को ही पसंद करती है ?" जानकी ने पूछा।

मैं जवाब देने को उद्यत न हुई। मेरी बेंच पर बैठनेवाला मोय्दीन उस दिन हाजिर नहीं था। तंकम ने कहा कि मोयदीन को विषम ज्वर लग गया है। अप्पुण्णि ने कहा कि वह मर गया। तब गणित सिखाने वाले मास्टर नाराज हो उठे।

"क्या सुनी-सुनाई बातों को फैलाने के लिए ही तू स्कूल आ रहा है ?" ताच्चु मास्टर ने बेंत उठाते हुए पूछा।

फिर मोयदीन के बारे में किसी ने कुछ नहीं कहा।

उस दिन शाम को मालतिकुट्टि बोली, "अंबाषत्त में दो लोग विषम ज्वर लगने से मर गए हैं। चेरियोप्पु की बेटियां।"

मामी की बड़ी बहन को सभी चेरियोप्पु पुकारते थे। एक ही साल में उनकी सुंदर बेटियां टाइफाइड की शिकार होकर मर गईं। मालतिकुट्टि ने मीनाक्षी दीदी से यह खबर जान ली। सत्रह और अठारह साल की लड़कियां थीं। बड़ी लड़की मंदिर दर्शन के बाद वापस आई तो उसने सिर दर्द के बारे में शिकायत की। तीसरे ही दिन उसकी मृत्यु भी हो गई। कुन्नमकुलम से बर्फ लाया गया था पर कोई फायदा न हुआ। बुखार चढ़ता ही गया था।

मैं और मालतिकुट्टि ने उस लड़की की रेशम की कुर्ती लोहे का संदूक खोलकर बाहर निकल ली और कौतूहल के साथ उसे परख लिया। उसके गले और हाथ पर सिलवटें बनाई गई थीं। मालतिकुट्टि के दो मामा विलायत से शिक्षा प्राप्त कर आए हुए थे। शायद इसलिए ही अंबाषत्त की लड़कियां भी मेम साहबों की तरह कपड़े पहनने लगी थीं। रेशम की वह कुर्ती मिठाई की तरह लाल रंग का था। मैंने उसे पहन लिया तो वह मेरे घुटनों तक लंबी पड़ी।

"देखने में कितनी सुंदर थी !" मीनाक्षी दीदी बोलीं। उन्होंने आगे कहा, "किसी की बुरी नजर पड़ी थी। टाइफायड की बात तो झूठ है। असल में बुरी नजर ने

ही उस बच्ची को मार डाला। इस गांव में अनेक बुरी नजरवालियां मौजूद हैं। उनकी एक ही नजर में आम और कटहल तक झुलस जाएंगे। बच्ची ने मंदिर जाते वक्त यह लाल कुर्ती और किनारेदार धोती पहन रखी थीं। उसके गले में सोने का हार था, आंखों में काजल और माथे पर सिंदूर की टिकुली लगाई हुई थी। इस प्रकार सजधज कर वह तैयार हो गई...तब उसे दखने के लिए चार आंखों की जरूरत थी। तब ही मुझे लगा था कि उस पर किसी की बुरी नजर लग जाएगी। उसके घर लौटते ही बुखार चढ़ गया।''

उसके बाद मैं और मालतिकुट्टि घबराहट के साथ ही टाइफायड और बुरी नजर के बारे में बात करती थीं। जब मैंने किसी को कहते सुना कि मक्खियों के द्वारा ही टाइफायड के कीटाणु फैल जाते हैं तब मैं घबरा गई। नालाप्पाट के मोदीखाने तथा चाय बनानेवाले पूर्वी कमरे में बहुधा मक्खियां भनभनाती, मंडराती थीं। उनके पंखों से उठनेवाली भनभनाहट मुझे मृत्यु की आवाज सी लगी।

जब मैंने नानी से मृत्यु के बारे में पूछा तो वे परेशान हुईं। उन दिनों नानी 'मृत्युभय' नामक एक किताब पढ़ रही थीं।

''मृत्यु के बाद क्या नानी मुझे देख पाएंगी ?'' मैंने पूछा।

''मरे हुओं की दुनिया काफी दूर है न ? इसलिए देख पाना असंभव होगा।'' नानी बोलीं।

''आंखें तेज हो तो देख पाएंगी, है न ?''

''शायद देख सकेंगी।'' नानी बोलीं।

मैं अगले दिन जानकी को बुलाकर नाले में उतर गई।

''थोड़ा 'तण्णीर कुटम' चाहिए।'' मैंने कहा।

''क्या अब आंखों को तेज करना चाहती है ?'' जानकी ने पूछा।

''मेरे लिए नहीं, मेरी नानी के लिए चाहिए।'' मैं बोली।

''नानी को किसलिए ?''

''यदि नानी मर जाएं तो भी मुझे देखने के लिए।'' मैंने धीमी आवाज में कहा। जानकी ठठाकर हंस पड़ी।

''यह लड़की कुछ नहीं जानती ! मृतकों को जला दिया जाता है न ? तब उनकी आंखें भी जल जाएंगी न ? हड्डी के सिवा और कुछ भी शेष नहीं रहता।''

''क्या मेरी नानी को भी जला दिया जाएगा ?''

''तेरी नानी को जरूर जला दिया जाएगा। सबको जला दिया जाता है। इस दुनिया के सभी लोगों को जला दिया जाएगा। सुना है कि छोटे बच्चों तथा नायाड़ियों को गाड़ दिया जाता है। बाकी सबको जला दिया जाता है।''

''क्या मुझे भी जला दिया जाएगा ?''

"यदि तू मर जाए तो तुझे भी जला देंगे। मृतकों को घर में नहीं रख सकते। मृतकों के शरीर से बदबू आ जाएगी। तू यह नहीं जानती ? हमारे घर में कोई चूहा मर जाए तो बदबू नहीं आती ? उसी तरह हम मर जाएं तो हमसे भी बदबू निकलेगी।"

"यदि मैं नहीं मरूं तो ? मेरी नानी भी नहीं मरें तो ?"

मेरा सवाल सुनकर केवल जानकी ही नहीं, वहां खड़े सभी लड़के-लड़कियां ठठाकर हंस पड़ी।

"अमर रहने के लिए तू और तेरी नानी क्या कोई देवी-देवता हैं ?" जानकी ने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम।" मैंने कहा। मेरे जवाब को सुनकर सब बच्चे हंस-हंसकर बेंच और फर्श पर लोट-पोट होने लगे। हंसते वक्त उनके चेहरे भद्दे दिखाई पड़ रहे थे।

उस दिन घर लौट आते ही नानी ने पूछा, "क्या कमला रोई है ? आंखें गंदली हो गई हैं।"

"हम मानवी है या देवियां ? शूलपाणि वारियर ने कहा था न कि मैं देवगण हूं। तो हम देवियां हैं, है न ?"

"अरी कमला, हम इंसान है। कमला क्यों ऐसे प्रश्न पूछ रही है ?"

"हम मर जाएंगी, है न ?" मैंने रुद्ध कंठ से पूछा। नानी ने सिर हिलाया।

"तब आंखें तेज होने पर भी कोई फायदा नहीं। है न ? नानी जितना भी मोह लें, मरने के बाद, मुझे देख नहीं सकती, है न ? मृतकों की दुनिया से देखने पर यह दुनिया दिखाई नहीं पड़ेगी, है न ?"

"अरी कमला, इन सवालों का जवाब मैं नहीं दे सकती। मैं उतनी समझदार नहीं हूं।"

नानी ने अपने अंगोछे से आंखें पोंछ लीं।

एक बार पिताजी छुट्टी पर आए। मामा को एक शालिग्राम उपहार में दे दिया। नेपाल से कलकत्ता आए हुए एक मेहमान ने वह सांवला चिकना पत्थर पिताजी के हाथ सौंप दिया था। शालिग्राम की विभूति पर भरोसा रखनेवाले मामा को एक निधि प्राप्त होने की खुशी महसूस हुई होगी। क्योंकि एक महीने के भीतर उसकी पूजा के लिए मालाप्पाट के दक्षिणी कमरे में ही पीले काठ का एक मंदिर बनाया गया था। मामाजी खुद शालिग्राम के पुजारी बन गए। अंबाषत्त के केशव मेनोन, एलियंगाट के कोच्चुण्णि तंपुरान आदि मित्रों ने यह राय प्रकट की कि शालिग्राम की पूजा के लिए ब्राह्मण को रखना ही वाजिब है पर पूजा संबंधी ज्ञान के हिसाब

के तौर पर सभी ने मान लिया कि पुन्नयूरकुलम् में मामा से अधिक योग्य और कोई पुजारी नहीं हो सकता। मारात्ताट के शंकरन नायर और अंबाषत्त के कुञ्जुण्णि मेनोन ने यह राय प्रकट की कि शालिग्राम की पूजा मामा को ही करनी चाहिए।

पूजा की सामग्रियों को तैयार कर रखना मां की जिम्मेदारी थी। सबेरे गीले कोरे कपड़े पहनकर उन्होंने मंदिर में घी का दीया जलाया और चंदन भी घिस लिया। उन दिनों नानी के चेहरे पर एक विशेष शोभा दिखाई पड़ी थी। उनके चेहरे का रंग भी चंदन का था।

कई लोगों से यह राय मैंने सुनी कि शालिग्राम की पूजा करने से नालाप्पाट घर में काफी संपदा आ गई है। परनानी ने मुझसे कहा कि संपदा का मतलब काफी धन का होना है।

उसे सुनने पर बड़े भैया सिर हिलाकर मुस्कुरा उठे।

''हमें भी एक मंदिर बनाना चाहिए।'' बड़े भैया ने मुझसे कहा।

''अंजक्कालन बना देगा।'' मैंने कहा।

''अंजक्कालन कैसे मंदिर बनाएगा ?''

''क्या याद नहीं कि अंजक्कालन ने नारियल के पत्तों से हमें एक छोटा मकान बना दिया था ?''

''नारियल के पत्तों से मंदिर नहीं बना सकता। बढ़ई ही मंदिर बना सकता है।''

''बढ़ई कुंजु। कल ही उससे कहना है कि एक मंदिर बना दे।''

''एक दिन में कौन मंदिर बना सकता है ? मंदिर बनाने के लिए कम से कम एक महीने की जरूरत पड़ेगी। विग्रह की प्रतिष्ठा करनी है। उसके लिए मूर्ति की जरूरत है। मूर्ति दुकान से खरीद नहीं सकते। उसे मिट्टी के भीतर से प्रकट होना चाहिए। तभी मंदिर को शक्ति मिलेगी।''

अंजक्कालन ने पश्चिमी आंगन को खोद डाला। तब हमें चक्र के आकार का, ईंट का एक टुकड़ा मिला।

''मूर्ति मिल गई।'' बड़े भैया उसे हाथ में उठाते हुए बोल उठे।

उस मूर्ति को चक्रपाणि नाम दिया गया। यह नाम बड़े भैया ने दिया या मामा ने, मुझे स्पष्ट याद नहीं। हमारा चक्रपाणि मंदिर तीनों ओर से काली चिक से ढका हुआ था। मूर्ति के दोनों भागों में एक-एक बेंच रख दी गई। इसके द्वारा हमने भक्तों को आराम से बैठकर पूजा देखने की सुविधा प्रदान की। दीप जलाना, फूल चढ़ाना, घंटी बजाना आदि बड़े भैया के काभ थे। फूल एकत्रित करना, मंदिर का फर्श झाड़-बुहारकर साफ करना आदि मेरे काम थे। मैंने गीले वस्त्र पहनकर मंदिर में घुसना चाहा। परंतु खांसी लग जाने की बातकर नानी ने मुझे इस प्रयास

से पीछे हटाया।

पूजा के समाप्त होते ही मूर्ति को सिर पर उठाकर हम मंदिर की परिक्रमा करते थे। बड़े भैया के सिर पर रखी टोकरी में मूर्ति मौजूद रहती थी। मैं, मालतिकुट्टि, माराताट के अनियन, तंकम, मारात की राधा आदि भक्तिगीत गाते हुए मूर्ति का अनुगमन करते थे। एक दिन मामाजी हमारे मंदिर में आ गए। उन्होंने नैवेद्य का फल खा भी लिया।

मामाजी ने हमें बता दिया कि चक्रपाणि शब्द महाविष्णु का पर्यायवाची है। तब तक मेरा विश्वास था कि चक्रपाणि एक नया देवता है।

चक्रपाणि के मंदिर में भेंट चढ़ाने के लिए माराताट की अम्मायम्मा हमें खील और नारियल दे देती थीं। बुजुर्गों में केवल अम्मायम्मा ने ही हमारे मंदिर को एक देवालय के रूप में मान लिया था। सिर्फ अम्मायम्मा ही गुप्त रूप से चक्रपाणि को भेंट चढ़ाती थीं।

अम्मायम्मा का जन्म पालघाट के पष़यन्नूर नामक गांव में हुआ था। उनका असली नाम मुकामी था। अंबाषत्त की कल्याणिअम्मा के भाई करुणाकर मेनोन अपने अकेलेपन को दूर करने के उद्देश्य से मुकामी को शादी कर पुन्नयूरकुलम् ले आए। माराताट का मकान उनको रहने के लिए बनाया गया था। माराताट घर की-सी सफाई और पाबंदी पुन्नयूरकुलम के किसी भी घर में देखने को न मिलती थी। रोज गोशाला के चबूतरे तक को साफ करना अम्मायम्मा का दस्तूर था। घर का सारा काम नौकरों से करवाकर खुद आराम से बैठे रहना अन्य गृहिणियों की आदत थी। पर अम्मायम्मा कभी विश्राम नहीं करती थीं। सांझ के वक्त दीप की बत्ती बनाते समय ही थोड़ी देर के लिए उनके दुबले पैर विश्राम करते थे। बत्ती बनाते वक्त वे रामायण जपती रहती थीं।

मंदिर में चढ़ाने के लिए आधा नारियल देते समय अम्मायम्मा ने कहा, "यह तंकप्पा का पेट दर्द दूर होने के लिए है।"

शंकरन नायर अम्मायम्मा के बड़े बेटे थे, उन्हें अम्मायम्मा तंकप्पा कहकर पुकारती थीं। वे पान खाने से लाल हुए अपने दांतों को दिखाते हुए हंसते थे। हम बच्चों को देखते वक्त, आम के पेड़ पर यदि पके आम हो तो उन्हें पत्थर से मार गिराकर खाने की इजाजत उन्होंने हमें दी थी। माराताट घर की छत पर एक दालान, अंधकार भरा एक शयन-कक्ष और एक बड़ा खुला कमरा मौजूद था। खुले कमरे के दक्षिणी ओर पर एक झूला डाला गया था। उस पर बैठकर दीवार को पैर से धक्का देते हुए घोड़े पर सवार होने की कल्पना करना हमारा प्रमुख मनोरंजन था।

"दीवार को मत तोड़ो।" शंकरन नायर की पत्नी ओप्पु उर्फ जानकी अम्मा बीच-बीच में ऊपर आकर हमसे अनुरोध करती थी। हमारे पांव के कीचड़ और

मिट्टी से मारात्ताट की दीवार पर धब्बा लग जाता था।

खेल समाप्तकर नीचे उतरते ही अम्मायम्मा हमसे पूछ लेती, "दीवार को तोड़ा तो नहीं ?"

"नहीं।"

"अच्छे बच्चे हो।"

"हां।"

अनियन, तंकम्, मालतिकुट्टि तथा मारात की राधा चक्रपाणि के मंदिर के स्थाई भक्त थे। बाकी सभी ने उस मंदिर को केवल 'गुड़िया-घर' पुकारा। कुछ लोग ऊंचे स्वर में 'अरे बच्चो, तुम्हारा चक्रपाणि कहां है ?' पूछकर हमारी मूर्ति की निंदा करने की चेष्टा करते थे।

मैंने चक्रपाणि को मौलसिरी फूल की मालाएं पहना दीं। फर्श पर पारिजात, चमेली आदि फूलों को बिखेर दिया। बड़े भैया ने कपूर जलाकर अर्चना की।

"गुड़िया घर के अंदर कुछ भी नहीं है। वहां देवता आकर नहीं बैठेगा।" अंबाषत्त के उण्णिदा ने एक बार कहा था।

मटप्पिलाई शंकुण्णि नायर ने कहा कि देवता के प्रतिष्ठान के लिए पहले पहल उस ब्राह्मण को बुला लेना चाहिए।

"देवता का आवाहन कर ले आना चाहिए। हम नायर हैं न ? हम देवता का आह्वान कर सकते हैं ? अरी बच्ची, नहीं, उसके लिए नंबूदरी ही चाहिए।"

"कहां से आवाहन कर ले आएंगे ?" मैंने उस बूढ़े से पूछा।

"किसी मंदिर से आवाहन कर ले आना है। शिव हो तो वैक्कम से या काशी से। विष्णु हो तो गुरुवायूर से या गोविंदपुरम से। किसी के जाने बिना ले आना चाहिए। सुना है कि एलियंगाट के वेट्टक्कारन ने एक छाते में आवाहन कर ले आया था। शायद सच होगा। मैं पूछने नहीं गया। क्योंकि सुनार के यहां बिल्ली का क्या काम है ! मैं उसे क्यों जानूं ! बड़ी-बड़ी बातों में मैं दखल नहीं देता हूं। मुझे नारियल तुड़वाने का काम सौंप दिया गया है। उसके सिवा और कोई काम मैं नहीं संभाल सकता। बच्ची किसी नंबूदरी से पूछ ले। नंबूदरी लोग सारी विद्याएं जानते हैं। वे देवता का आवाहन कर ले आएंगे। नंबूदरी लोग साक्षात् गुरुवायूरप्पन को भी आवाहन कर ले आ सकते हैं।"

जब वी.टी. भट्टतिरिप्पाड मामाजी से मिलने आए तो मैंने शंकुण्णि नायर की बात याद की। एक दिन सबेरे वी.टी. पश्चिमी अहाते के शौचालय से वापस आ रहे थे तब मैंने उनसे पूछा, "हमारा मंदिर देखना चाहते हैं ? चक्रपाणि नामक भगवान भी उसके भीतर मौजूद हैं।"

वी.टी. ने मंदिर के द्वार पर खड़े होकर भीतर के अंधकार की ओर देखा।

"क्या यह बैठनेवाला विद्वान ही चक्रपाणि है ?" उन्होंने मुझसे पूछा।

"बड़े शक्तिशाली भगवान हैं। वे बीमारी को दूर कर देंगे और परीक्षा में पास कर देंगे।"

वी.टी. जोर से हंस पड़े। मैंने उनसे यह अनुरोध करना चाहा कि कहीं से देवता को आवाहन कर ले आएं। पर उनकी हंसी ने मुझे अधीर कर दिया।

वी.टी. ने खद्दर की एक धोती और बैंगनी रंग का एक कुर्ता पहन रखे थे। उस कुर्ते पर सफेद पतली लकीरें थीं। वे सांवले रंग के दुबले-पतले, छोटे कद के व्यक्ति थे। फिर भी वे हमारे मंदिर के द्वार पर जरूरत से ज्यादा झुक गए।

"परीक्षा लिखने का अवसर मिल जाए तो आ जाऊंगा।" वी.टी. बोले। फिर वे ऐसे खिलखिलाकर हंस पड़े जैसे उन्होंने कोई विशेष लतीफा सुना दिया है। उनके दांतों पर पान के धब्बे थे।

मैंने नानी से अपनी इच्छा प्रकट की तो उन्होंने कहा, "वी.टी. उन बातों में विश्वास नहीं करते। वी.टी. से कहने से कोई फायदा नहीं। वी.टी. ने जनेऊ धारण किया है या नहीं, यह भी शंका की बात है। ईश्वर पर पूरा भरोसा रखनेवाले को ही प्रतिष्ठापन कार्य के लिए ढूंढना चाहिए।"

अगले दिन माराताट के अम्मायम्मा ने कहा, "कमला और उण्णि को भरोसा है। वही काफी है। चक्रपाणि असली देवता ही हैं। विश्वासियों द्वारा प्रतिष्ठापित मूर्ति में अवश्य शक्ति रहेगी।"

"अरी बच्ची, लाल जवाकुसुम से पूजा कर लो।" देवकी बोली। उसने आगे कहा, "लाल फूल डालने पर शक्ति बढ़ जाएगी। एक और बात भी है। फूल चढ़ाते रहने पर शक्ति भी बढ़ती जाएगी। फिर वह बेकाबू हो जाएगी। बच्ची के सभी दुश्मनों का सर्वनाश हो जाएगा। तब ही देवता की शक्ति की मात्रा सभझ में आएगी।"

"कौन है मेरा दुश्मन ?"

"क्या बच्ची को किसी का नाम याद नहीं ? बच्ची की बुराई करनेवालों को ही मैंने दुश्मन कहा। बच्ची को फटकारनेवाले मास्टर लोग। बच्ची को बेंच पर चढ़ानेवाली अध्यापिकाएं। वे सब बच्ची के दुश्मन हैं। बच्ची यदि मन लगाकर प्रार्थना करे तो एक-एक कर सभी मरते दिखाई पड़ेंगे। आखिर इस दुनिया में बच्ची का कोई भी दुश्मन शेष नहीं रहेगा।"

"मुझे किसी का मरना पसंद नहीं है।"

"मेरी मूक्कोल भगवती, इस बच्ची को समझाना मेरे वश की बात नहीं। दुश्मनों को पकड़कर गोद में बैठा ले। मुझे क्या ? मैंने बच्ची की भलाई के लिए ही यह तरकीब बता दी। जवाकुसुम तो रक्तकुसुम है। उससे कुसुमांजलि कर दे तो दुश्मन मर जाएंगे। मैं बच्ची को चैन मिलने के लिए यह बता रही हूं। पर बच्ची को दुश्मन ही पसंद है। बच्ची मुझे पसंद नहीं करती। बच्ची को प्रेम करनेवाले को बच्ची देखना नहीं चाहती। मैं अपना दुख, किससे कहूं ? बच्ची को कोई बेंच

पर चढ़ा देता है तो मेरा हृदय फटने लगता है। अरी बच्ची, तुझे इसका पता है ?"

देवकी के आंसू उसके गालों से बहकर मेरे माथे पर टपक पड़े। मुझे भी अकारण दुख महसूस हुआ।



शिवम् ऑफसैट प्रेस, ए-12/1, नरायणा इंडिस्ट्रयल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित